बयानात

मौलाना तारिक़ जमील साहब

2

तर्तीब

मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर मेमन

बयानात

मौलाना

तारिक़ जमील साहब

मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर मेमन

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

बयानात मौलाना तारिक़ जमील साहब

(दूसरा हिस्सा)

तर्तीबः मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर मेमन

प्रस्तुत-कर्ताः
जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशकः

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street,
Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002
Tel.: 011-23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in www.faridexport.com, faridbook.com

Bayanat Maulana Tariq Jameel Sahab (2)
Muhammad Arslan bin Akhtar Maman

Edition: 2014

Pages . 460

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Delhi-13 Ph. 65851762, 9990438635

Printed at Farid Enterprises, Delhi-6

विषय-सूची

○ ○ ○

अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर का हुक्म

○ ○ ○

इत्तिबाए सुन्नत

○ ○ ○

अल्लाह तआला की अज़्मत

○ ○ ○

अल्लाह तआ़ला की तारीफ़

○ ○ ○

अल्लाह के अपने बन्दों पर इनाम

○ ○ ○

अल्लाह की बड़ाई और तौबा

○ ○ ○

हिदायत अल्लाह के हाथ में है

○ ○ ○

निज़ामे काएनात

○ ○ ○

दुनिया की नेमतें

○ ○ ○

शाने ख़ुदावन्दी

○ ○ ○

काएनात के अजाइबात

○ ○ ○

अर्ज़-ए-नाशिर

अल्लाह तआला का सबसे ज़्यादा महबूब और पसन्दीदा बन्दा वह है जो अल्लाह के बन्दों की फ़िक्र में लगा रहता है।

रब्बे काएनात का बहुत बड़ा एहसान है कि हम को उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती बनाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुनिया में अल्लाह तआला का दीन उसके बन्दों को पहुँचाने के लिए तशरीफ़ लाए। आपके बाद यह ज़िम्मेदारी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अन्जाम दी, उनके बाद ताबईन रह०, तबे ताबईन रह०, यहाँ तक कि आज तक यह तबलीग़ का सिलसिला जारी है। क़ुरआन व हदीस में इसकी बड़ी फ़ज़ीलत आई है।

क़ुर्बान जाइए उस नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जिसकी अज़्मत क सदक़े मे इस दीन का वारिस उम्मत के आलिमों को बनाया गया क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿ان العلماء ورثة الانبياء﴾ बेशक उलमा अंबिया के दीन के वारिस हैं।

तबलीग़ी जमात भी इस सिलसिले की एक कड़ी है। अल्लाह तआला ने तबलीग़ वालों से इतना बड़ा कारनामा अन्जाम दिलाया है जिसका हम और आप तसव्वुर नहीं कर सकते। ये अल्लाह के

नेक बन्दे शहर शहर, गाँव गाँव, देहात देहात, बस्ती बस्ती, गली गलीद्ध कूचे कूचे बोरिया बिस्तर उठाए फिरते हैं और राह से भटके हुए इन्सानों को (अल्लाह के) एक होने का पैग़ाम सुनाते हैं, अल्लाह के घर में आने की दावत देते हैं, नमाज़ व रोज़े की बातें सुनाते हैं और सीधे रास्ते पर चलने को कहते हैं। यह नबियों वाला काम जो इस उम्मत के उलमा ख़ैर और ख़ूबी के साथ अन्जाम दे रहे हैं। इसी तबलीग़ी काम की मुनासिबत से हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब ने कुछ बयान कहे हैं जो बहुत ही दिलचस्प, क़ुरआन व हदीस से आरास्ता बयानात हैं जो कैसिटों के ज़रिए जमा किए हैं। पाकिस्तान के नामवर और बेशुमार किताबों के लिखने वाले मौलाना अरसलान साहब ने उनके बयानात की यह दूसरी जिल्द लिखी है। पहली जिल्द छपकर आम व ख़ास के बीच पसन्द की गई। अल्लाह तआला से दुआ है कि यह दूसरी जिल्द भी अल्लाह तआला अपने बन्दों की इस्लाह का ज़रिया बना दे ताकि इस किताब के ज़रिए लोगों में दीन आ जाए। यही इसकी इशाअत का मक़सद है। इस किताब से जिन लोगों का फ़ायदा पहुँचे उन लोगों से अदब के साथ गुज़ारिश है कि इस काम से लगे तमाम लोगों के लिए दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह तआला हम सबको ईमान के साथ ख़ात्मा नसीब फ़रमाए। (आमीन)

وما ذلك على الله بعزيز

❑ ❑ ❑

तमहीद

तक़रीर व ख़ुत्बात की दुनिया से ताल्लुक़ रखने वाले लोगों के यहाँ "हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब मद्‌देज़िल्लुहु" का नाम बताए जाने का मोहताज़ नहीं है। वह जल्सों में अपनी ज़बान की ताक़त से दम तोड़ते महफ़िलों में नई रूह फूंकते की कोशिश करते हैं। आपके बयानों की ख़ास बात यह है कि सुनने वाला अपने अन्दर एक बड़ा बदलाव महसूस किए नहीं रह पाता। तारीफ़ के लायक़ मौलाना की तक़रीरों में दावत व तबलीग़ का जो अन्दाज़ होता है वह ज़हनों में इन्क़लाब पैदा कर देता है और दिलों की दुनिया ऊपर नीचे कर देता है। अलफ़ाज़ की जादूगिरी और माईनों की जलवागिरी से पत्थर दिल भी मोम हो जाते हैं। बोल बोल से उम्मत की फ़िक्र और उनकी आख़िरत के संवारने का जज़्बा झलकता है। यही वजह है कि आम व ख़ास सभी पर उनके बयान का जादू असर करता है।

मगर अफ़सोस कि उनके बयानात इस क़द्र क़ीमती होने के बावजूद एक लम्बी मुद्दत से ख़्याली दुनिया में गश्त कर रहे थे और बहुत मुमकिन था कि अगर इन पर तवज्जोह न की जाती तो उनसे फ़ायदा उठाने का रास्ता बन्द हो जाता मगर अल्लाह तआला बेहतरीन बदला दे "मौलाना अरसलान बिन अख़्तर मैगन

साहब" को कि उन्होंने अवाम के ज़हनों से गुम हो चुके मौलाना बेशुमार बयानों को एक जगह करके किताबी शकल में चाहने वालों के सामने पेश करने के बोझ को अपने ऊपर लिया और इस काम को अच्छी तरह अन्जाम दे रहे हैं। उनकी बहुत ज़्यादा तवज्जोह के नतीजे में बहुत पहले "बयानात मौलाना तारिक़ जमील साहब" के नाम से एक तक़रीरी मजमूआ सामने आ चुका है और चाहने वाले हज़रात से दाद शुक्रिया हासिल कर रहे हैं। आम और ख़ास जिस तरह इसको हाथों हाथ ले रहे हैं उससे इस मजमूए की क़ीमत का अन्दाज़ा हो सकता है।

इस वक़्त जो किताब हमारी निगाहों के सामने है वह मौलाना के बयानों का दूसरा मजमूआ है। यह मजमूआ किस क़द्र अहम है इसका सही अन्दाज़ा तो पढ़ने के बाद ही लगाया जा सकता है फिर भी तर्तीब देने वाले ने इस मजमूए के लिए जिन जिन उनवानों को चुना है वे ख़ुद इसकी अहमियत को साफ़ करने के लिए काफ़ी हैं। मिसाल के तौर पर "अल्लाह की तख़्लीक़ पर ग़ौर करने की दावत, इत्तेबाए सुन्नत, अल्लाह तआला की तारीफ़, अल्लाह तआला की बड़ाई और तौबा, शाने ख़ुदावन्दी, अच्छाइयों का हुक्म करना और बुराईयों से रोकने का हुक्म, अल्लाह तआला की अज़्मत, अल्लाह के अपने बन्दों पर ईनामात, हिदायत अल्ला के हाथ में है, दुनिया की नेमतें, काएनात के अजाएबात" इस मजमूए में शामिल वे अहम उनवानात हैं जो हमें पढ़ने की दावत देते हैं और जिनसे हमारी ज़िन्दगियों में इन्क़लाब उठ सकता है। इस मजमूए को तर्तीब देकर न सिर्फ़ मौलाना ने हिदायत की राह से भटके लोगों को सही रास्ता बतलाने की कोशिश की है बल्कि

उर्दू पढ़ने वालों के लिए फ़ायदा की राह भी आसान कर दी है।

तर्तीब देने वाले ने बड़ी ज़िम्मेदारी और बड़े अच्छे अन्दाज़ में मौलाना के बयानों को एक जगह किया है। उम्मीद की जानी चाहिए कि अवाम और इल्मी गिरोह में पहले मजमूए की तरह इस मजमूए की भी क़द्र होगी।

❑ ❑ ❑

अर्ज़-ए-मुरत्तिब

तबलीग़ जोड़ और ताल्लुक़ की वजह से इस नाकारा को मौलाना तारिक़ जमील साहब मद्देज़िल्लुहुल-आली के बयानों को सुनने का मौक़ा बहुत ज़्यादा मिला। जिनमें से पन्द्रह बीस बयान आमने सामने और तक़रीबन सौ बयानों से बन्दे ने कैसिटों से नफ़ा हासिल किया है। इन बयानों को सुनकर बन्दे के दिल में यह बात पैदा हुई कि मौलाना के बयानात को कैसिटों से काग़ज पर कर दिया जाए।

इस ख़्याल को पूरा करने के लिए बन्दे ने कोशिशें शुरू कर दीं और सिर्फ़ अल्लाह के फ़ज़ल व करम से आज जुमेरात की रात 25 मई सन् 2005 ई० को "बयानात मौलाना तारिक़ जमील" की पहली जिल्द का काम पूरा हुआ और अल्लाह तबारक व तआला ने उन बयानों को उम्मीद से ज़्यादा क़ुबूलियत अता की और असरदार होने का नायाब करिश्मा देखने में आया। इसी वजह से दिल में यह जज़्बा उठा इस सिलसिले को आगे बढ़ाने का और अल्लाह तआला ने दूसरी जिल्द की तैयारी पर लगाया और पूरा कराया। यह सिर्फ़ अल्लाह तआला का फ़ज़ल व करम है।

मुझे क़वी उम्मीद है कि इन बयानात के ज़रिए बेशुमार लोगों को अल्लाह के साथ ताल्लुक़ में इज़ाफ़ा होगा और यह किताब

बयान करने वाले हज़रात और तबलीग़ी हज़रात की इस्लाही कोशिशों में मददगार साबित होगी।

जिन हज़रात को इस किताब से नफ़ा हो वह हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब को, इस नाकारा को और इस किताब में साथ देने वाले को अपनी ख़ास दुआओं में याद रखें।

अर्ज़गुज़ार

मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर

❑ ❑ ❑

अल्लाह की तख़्लीक़ पर ग़ौर करने की दावत

मेरे भाइयों और दोस्तों! अल्लाह तआला ने इस जहां को बेकार पैदा नहीं फ़रमाया। ﴿ما خلقنا السموت والارض وما بينهما باطلا﴾ तो यह सारा जहां बेकार नहीं है और फिर कहा ﴿ما خلقنا السموت والارض وما بينهما لا عبين﴾ जो कुछ बनाया है वह कोई खेल तमाशा भी नहीं है बेकार भी नहीं खेल तमाशा भी नहीं। यह हमारे चारों तरफ़ के माहौल के बारे में फ़रमाया, फिर हमारे बारे में फ़रमाया ﴿افحسبتم انما خلقنكم عبثا﴾ तुम्हारा क्या ख़्याल है कि तुम बेकार पैदा हुए हो, कोई मक़्सद सामने नहीं, खाना पीना और बस मर जाना यही ज़िन्दगी है फिर दूसरी जगह फ़रमाया ﴿ايحسب الانسان ان يترك سدى﴾ क्या ख़्याल करता है इंसान कि उसको कोई नहीं पूछेगा। ﴿يترك سدى﴾ ऐसे छोड़ दिया जाएगा कोई नहीं पूछने वाला। ﴿ايحسب الانسان ان يترك سدى﴾ क्या ख़्याल है उसको कोई पूछेगा नहीं क्या मर कर मिट्टी हो जाएगा। ﴿الم يك نطفة من منى يمنى﴾ वह ज़माना याद नहीं जब तुम टपकता हुआ गंदे पानी का क़तरा थे। ﴿ثم كان علقة فخلق فسوى﴾ फिर मैंने उसको एक लोथड़ा

बनाकर इंसान बनाया ﴿فجعل منه الزوجين الذكر والانثى﴾ फिर किसी को मर्द बनाया और किसी को औरत बनाया, किसी पर तजल्ली पड़ी तो लड़का बन गया किसी पर तजल्ली पड़ी तो लड़की बन गई। यह पिछली बात को अल्लाह तआला आगे समझा रहा है कि क्या तुम बेकार पैदा किए गये हो, क्या तुम्हें कोई नहीं पूछेगा जो मर्ज़ी करते रहो कोई पूछने वाला नहीं, अब अल्लाह तआला उसको तर्तीबवार समझा रहे हैं कि एक ज़माना तुम पर वह था कि जब तुम मनी थे और उससे भी पहले का एक ज़माना है ﴿لم يكن شيئا مذكورا﴾ कि जब तुम कुछ भी न थे फिर उससे अगला ज़माना कि जब तुम्हें अल्लाह ने वजूद बख़्शा तो उसको अल्लाह बता रहे हैं कि एक ख़ून का क़तरा, एक मनी का क़तरा, फिर उस पर अल्लाह की तजल्ली पड़ी, अल्लाह का अम्र मुतवज्जोह हुआ और तीन अंधेरों के अन्दर यह परवरिश का निज़ाम चला। ﴿ثم كان علقة فخلق فسوى﴾ फिर ठीक ठाक बनाया। ﴿فجعل منه الزوجين الذكر والانثى﴾ फिर तुम्हें मर्द और औरत बनाया। अब अगली बात जो पिछले से अल्लाह तआला से मुताल्लिक़ करके कह रहा है ﴿اليس ذالك بقدر على ان يحى الموتى﴾ तो क्या यह सब कुछ करने वाले को यह ताक़त नहीं है कि तुमको दोबारा ज़िन्दा कर दे तुम जब मर जाओगे तो तुमको दोबारा ज़िन्दा कर दे क्या उसको यह ताक़त नहीं है ﴿اليس ذالك﴾ क्या उसको क़ुदरत नहीं है? इसके जवाब में ﴿بلى﴾ कहना ठीक है। कोई यह आयत पढ़े ﴿اليس ذالك بقدر على ان يحى الموتى﴾ तो जवाब में कहना चाहिए ﴿بلى﴾, ﴿بلى﴾ का मतलब है कि बेशक क़ादिर है कि सब मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा तो अल्लाह तआला ने यह जहाँ न बेकार

बनाया, न बातिल बनाया, न खेल कूद के लिए बनाया, फिर हमें भी न बेकार बनाया, न हमें छोड़ दिया कि जो मर्ज़ी करो, न बिल्कुल आज़ादाना इख़्तियार दिया है, ख़बर दी है। ﴿وما تيسبن الله غافلا عملا يعمل الظالمون﴾ तुम्हारे ज़ुल्म से तुम्हारा रब ग़ाफ़िल नहीं है, ज़ालिम ज़ुल्म कर रहा है कोई पकड़ता नहीं, क्या इस अंधेरे में कोई है। नहीं नहीं इस अंधेरे में कोई नहीं है, दुनिया और आख़िरत सुनसान हो रहा है लेकिन देखने वाला देख रहा है और हमें ख़बर सुना दी है कि ज़ालिम को बताओ कि तुमसे भी बड़ा एक है जो तुम्हें देख रहा है। एक दिन तेरी गर्दन मरोड़ देगा, सारे कस बल निकल जाएंगे फिर इंसान जो कुछ अमाल करता है उन सबकी अल्लाह ख़बर दे रहा है।

अल्लाह तआ़ला से कोई चीज़ भी छिपी हुई नहीं

कमरे में बन्द हो गया, कुन्डियां लगा दीं, पर्दे लगा दिए कि अब तो कोई नहीं देख रहा, ऐसा तो कोई नहीं देख रहा, अब उसको अल्लाह ने ख़बर दी ﴿ما يكون من النجوى الا هو رابعهم﴾ तुम तीन बेठे हुए हो, तो चौथा अल्लाह है ﴿ولا خمسة الا هوا سادسهم﴾ तुम पांच हो तो छठा अल्लाह है ﴿ولا ادنى من ذالك﴾ इससे थोड़े हो चार-पांच तीन-दो, एक ﴿ولا اكثر﴾ पाँच-पाँच हज़ार हों ﴿الا هو معهم أين ما كانو﴾ तुम्हारा रब तुम्हारे साथ है। ﴿ثم ينبئهم بما عملوا﴾ फिर जो कुछ तुमने किया एक दिन तुम्हें दिखा देगा कि यह क्या था तुम से फिर अल्लाह तआ़ला कह रहे हैं ﴿واسروا قولكم﴾ आहिस्ता बोलो ﴿او اجهروا به﴾ ज़ोर से बोलो ﴿انه عليم بذات الصدور﴾ वह

तुम्हारे दिल के अन्दर को भी जानता है। ﴿ونعلم ما توسوس به نفسه﴾ कुछ बातें ऐसी हैं जो आदमी अपने दिल ही दिल में करता है जिसको वह ख़ुद भी नहीं सुनता न उसके कान सुनते हैं तो पराया कैसे सुनेगा। वह जो ख़ुद नहीं सुन रहा उसको हदीसुन नफ़्स भी कहते हैं और इसको इख़्फ़ा कहते है। अल्लाह तआ़ला यह कह रहे हैं कि यह जो तुम अपने दिल में अपने आप से बातें करते हो मैं उसको भी सुनता हूँ, अब अल्लाह से कोई बात कैसे छुपे। ख़्याल में भी नज़र यूँ उठी या यूँ उठी कि फ़रिश्तों को भी पता नहीं चलता कि यह बद-नज़र है या अच्छी नज़र है या बुराई की नज़र से देखा या नेक नज़र से देखा किसी को इज़्ज़त से देखा, किसी भी चीज़ को देखा, फ़रिश्तों को भी पता नहीं चलता, ज़ेहन में जो बातें घूम जाती हैं जिसके साथ चालाक बनते हैं अल्लाह तआ़ला उसको अलग समझ रहा है। ﴿يعلم خائنة الاعين﴾ कि तुम्हारी नज़र ग़लत हुई, तेरे रब ने उसको भी देख लिया। ﴿وما تخفى الصدور﴾ नज़र के ग़लत होने से दिल में ग़लत ख़्याल आया, उसको भी अल्लाह ने देख लिया और पकड़ लिया जो कुछ इंसान कर रहा है ﴿ويعلم ما جرحتم بالنهار﴾ दिन में जो कुछ तुम करते हो अल्लाह जानता है सिर्फ़ दिन में करने को नहीं रात को नहीं

سواء منكم من اسر القول ومن جهر به ومن هو مستخف باليل
وسارب بالنهاره له معقبات منين يديه منه يحفظونه من امر الله.

कि यह नहीं कि रौशनी होगी तो अल्लाह को पता चलेगा या लाउड़ स्पीकर का ऐलान होगा तो अल्लाह को पता चलेगा। अल्लाह तआ़ला यह नहीं फ़रमा रहे कि तुम ज़ोर से बोलो तुम आहिस्ता बोलो बल्कि अल्लाह ने वह सबकुछ सुना जो तुमने दिन

में कहा अल्लाह ने वह सब कुछ देखा जो तुमने रात को किया अल्लाह ने देखा ﴿مستخف بالليل﴾ रात तो छिपी हुई है ﴿وسارب بالنهار﴾ दिन में कर रहा है अल्लाह पाक के यहाँ रात का अंधेरा और दिन की रौशनी बराबर है। अल्लाह तआ़ला के लिए अंदर कमरे में आदमी अकेला और एक लाख की भीड़ बराबर है, अल्लाह के लिए समुन्दर के नीचे की दुनिया और अर्श की दुनिया ऊपर और नीचे बराबर है, जैसे वह जिब्रील को देख रहा है उसी तरह इस ज़मीन पर चलने वाली च्यूंटियों को भी देख रहा है और वह जिब्रील, इस्राफ़ील, मीकाईल की भी सुनता है और समुन्दर में तैरने वाली मछलियों की भी सुनता है और वह अपनी जन्नत को अपने सामने देख रहा है उसके सामने दूर दराज़ और क़रीब बराबर है बल्कि दूर क़रीब कुछ नहीं सारा ही क़रीब है, वह अपनी ज़ात में इतना दूर है कि ﴿لا يراه العيون﴾ कि आँखें नहीं देख सकतीं फिर आँख तो बस यहां तक देखती है ﴿لا تخالطه الظنون﴾ कि आदमी ख़्याल करे या तसव्वुर करे फिर उसको भगाए, दौड़ाए। अल्लाह तआ़ला यही कहता है कि तुम्हारा ख़्याल भी अल्लाह तक नहीं पहुंच सकता, भई जब अल्लाह इतना दूर हो गया तो काम कैसे बनेगा तो यूँ इर्शाद फरमाया उसका ऊपर होना उसे तुमने दूर नहीं करता ﴿نحن اقرب اليه من حبل الوريد﴾ वह तुम्हारी शहे रग से ज़्यादा तुम्हारे क़रीब है। तो सारा जहां उसके सामने बराबर है। ज़ालिम ज़ुल्म कर रहा है, मज़्लूम ज़ुल्म सह रहा है, आदिल अदल कर रहा है और ज़ालिम ज़ुल्म कर रहा है, दियानत दार दियानत से चल रहा है, बद-दियानत बद-दियानती कर रहा है, सच्चा सच बोल रहा है, झूठा झूठ बोल रहा है, ज़ानी ज़िना कर

रहा है, पाकदामन अपनी इज़्ज़त के साथ चल रहा है, हराम खाने वाला हराम में चल रहा है, हलाल खाने वाला अपनी ज़रूरतों में पिस रहा है।

अल्लाह की शान

सब अल्लाह देख रहा है क्यों (उसे)﴿لا تأخذه سنة﴾ न ऊंघ है ﴿ولا نوم﴾ न सोना ﴿ولا غافل﴾ और न ग़ाफ़िल ﴿ولا جاهل﴾ और न जाहिल ﴿لا يعزب عنه مثقال ذرة﴾ एक ज़र्रा उससे छिप नहीं सकता, एक लम्हे के लिए वह आराम नहीं करता, करवट बदले न पहलू बदले, मशिरक़-मग़्रिब उसके लिए बराबर, शुमाल-जुनूब बराबर, ऊंचे-नीचे बराबर, माज़ी-हाल बराबर और आने वाला कल बराबर, अर्श और फ़र्श बराबर, उसके लिए सब बराबर है, न वह खाने का मोहताज है और न पीने का मोहताज, और न सोने का मोहताज, न थके, न सोए न रोए, न आराम करे, न करवट बदले, न पहलू, न रुख़ बदले, वह न आँखें झपकाए, न बन्द करे, न वह ग़ाफ़िल हो, सारी काएनात को एक पल में इस तरह देखे जैसे अपने अर्श को देखे, अपनी मख़्लूक़ को देखे और अर्श फ़र्श लोहो क़लम कुर्सी और सात समुन्दर, सात ज़मीनें, सारे जंगल, सारे दरिया, सारे पहाड़, सारे इंसान, सारे चरिन्द-परिन्द, चौपाए, रेंगने वाले, उड़ने वाले तैरने वाले, सब उसके सामने खुली किताब की तरह हैं और न वह उन सब से एक पल के लिए ग़ाफ़िल है, न जाहिल है, न आजिज़ है, न थकता है, न अंगड़ाई लेता है कि बहुत थक गया हो, हर चीज़ से पाक, सुब्हान बे-ऐब, बे-ऐब भी पूरा तर्जुमा नहीं है, सुब्हान, सुब्हान ही है। सुब्हान हर ऐब से पाक, हर ज़ोफ़ से

पाक, हर कमी से पाक, हर सिफ़्त में कामिल, बड़ाई में कामिल, क़ुव्वत में कामिल, जबरूत में कामिल, हैबत में कामिल, क़ुदरत में कामिल, मुल्क में कामिल, शहंशाहियत में कामिल, महाल्बियत में कामिल, मग़्फ़िरत में कामिल, फ़ख्र में कामिल, आज़ादी में कामिल, बख़्शिश में कामिल, देने में कामिल, इल्म में कामिल, क़ुव्वत में कामिल, हर कमाल अल्लाह पर जाके ख़तम होता है उसके आगे कोई कमाल नहीं तो यह सारा जहां बेकार बनाकर बैठा हुआ है, ज़ालिम ज़ुल्म कर रहा है, ज़ानी ज़िना कर रहा है और शराबी शराब पी रहा है और सियासतदान मुल्क को लूट रहे हैं तो क्या यह सारा तमाशा अल्लाह तआ़ला देख रहा है और चुप बैठा हुआ है, नहीं ऐसा नहीं है ख़बर आई है।

क़ियामत की हौलनाकी

ان یوم الفصل کان میقاتا یوم ینفخ فی الصور فتأتون افواجا
وفتحت السماء فکانت ابوابا وسیرت الجبال فکانت سرابا.

ख़बर आई है

ان یوم الفصل میقاتهم اجمعین. یوم لا یغنی مولیً عن مولیً شیئا
ولا هم ینصرون.

अल्लाह के रसूल ने ख़बर दी क्या ख़बर आई कि मेरे हबीब आप इनको बताएं एक दिन फ़ैसले का तुम्हारे रब ने मुक़र्रर कर दिया है, एक लाइन खींच दी है इससे न आगे होगा और न इससे पीछे होगा, एक लाईन है वह एक दिन है ऐसा ही एक दिन है जैसा यह दिन चढ़ता है एक दिन है जो ज़मीन को हिला देगा

अल्लाह का फैसला बदल जाएगा

ما ينظرون الا صيحة واحدة تأخذ هم وهم يخصمون فلا
يستطيعون توصية ولا الى اهلهم يرجعون

एक चीख़ सुनने वाला यही सुनेगा, सारा जहां पाकिस्तान, पंजाब, बलूचिस्तान, अमरीका, मलेशिया, अफ़्रीक़ा, ऐशिया, आस्ट्रेलिया, यूरोप, रूस, जब आवाज़ तेज़ होगी तो माँए अपने दूध पीते बच्चे उठाकर फैंक देंगी। ﴿يوم ترونها تذهل كل مرضعة عما ارضعت﴾ अल्लाह तआला कहता है, दूध पीता बच्चा, दूध पीता बच्चा क्यों कहा है कि यह ज़्यादा प्यारा लगता है जो बड़ा हो जाता है वह भी प्यारा होता है लेकिन वह वक़्त जो माँ की गोद में हो वह ज़्यादा दिल से क़रीब होता है और जब वह आवाज़ तेज़ होगी और फिर दीवारें हिलने जुलने लगेंगी और पेड़ गिरने लगेंगे और पहाड़ उड़ने लगेंगे तो उस वक़्त माएं अपने बच्चे उठाकर फैंक देंगी और हर रूह कहेगी कि मेरी जान बच जाए चाहे मेरा बच्चा ग़ाइब हो जाए, माँ, बाप, भाई, बहन, दोस्त, अलग। ﴿فاذا جاءت الطامة الكبرى﴾ अल्लाह कह रहा है वह बहुत बड़ा शौर होगा कितना बड़ा शौर होगा उसको अल्लाह बता रहा है बहुत बड़ा शौर होगा, अल्लाह अकबर ﴿فاذا جاءت الصاخة﴾ जब वह चीख़ आएगी तो वह नाफ़रमान वक़्त गुज़ारने के साथ साथ सब भूल रहा है मगर उसका अमल महफ़ूज़ हो रहा है, अदल हो रहा है, ऊपर महफ़ूज़ हो रहा है, नमाज़ पढ़ी जा रही है, ऊपर महफ़ूज़ है, नमाज़ छोड़ी जा रही है ऊपर महफ़ूज़ हो रहा है रोज़े रखे जा रहे हैं या छोड़े जा रहे हैं, हलाल कमाया जा रहा है हराम कमाया जा रहा है सब ऊपर महफ़ूज़ हो रहा है, सिस्टम मौजूद और तैयार है, अब

एक दिन आया जब यह निज़ाम अल्लाह ने तोड़ा, सूरज टूटा ﴿اذا الشمس كورت﴾ सितारे टूटे ﴿واذا النجوم انكدرة﴾ चाँद टूटा ﴿وانشق القمر﴾ ज़मीन फटी ﴿اذا زلزلت الارض زلزالها، واذا الارض مدت والقت ما فيها وتخلت﴾ पहाड़ उड़ गए ﴿ربى نفسا﴾ समुन्दर में आग लग गई ﴿واذا البحار فجرت﴾ और आसमान टूटा ﴿واذا السمآء انفطرت﴾ सितारे बिखर गए ﴿واذا الكواكب انتثرت﴾ इंसान पतंगों की तरह उड़ गए ﴿وتكون الجبال كالعهن المنفوش﴾ पहाड़ हो गए रूई के गालों की तरह, इंसान हो गए ﴿كالفراش المبثوث﴾ पतंगे उड़ते हुए परवानों की तरह यह अल्लाह के नबी की ख़बर हम तक आई है कि यह दिन मौजूद है और वह दिन आने वाला है। यह सोचने की जगह नहीं है दस आदमी का क़ातिल जिसको दस क़तल के बदले में दस बार क़तल करना चाहिए वह सिर्फ़ एक बार फांसी चढ़ता है और मर कर ख़तम हो जाता है अब नौ का बदला कैसे लिए जाए, नही ले सकते और जो आदमी माल लूटता है फिर ख़ुद ही फ़क़ीर हो जाता है अब उससे माल वापस कैसे लिया जाए, सज़ा की जगह जज़ा तो हुई आगे गिनें आप, अल्लाह ने ज़मीन तोड़ी, फिर आसमान तोड़ा, फिर इंसान मारे, फिर फ़रिश्तों को मारा फिर काएनात के ज़र्रे-ज़र्रे को मौत दे दी, जिब्रील, मीकाईल को कहा कि मर जाओ तो अल्लाह का अर्श भी कांप गया, सिफ़ारशी बन गया ऐ अल्लाह जिब्रील मीकाईल को तो छोड़ दो, फिर अल्लाह का ऐलान हुआ उस वक़्त ﴿فقد كتبت الموت على من كان تحت العرش﴾ मेरे अर्श के नीच कोई ज़िन्दा नहीं रह सका सबको मरना है ﴿لو كانت الدنيا تدوم لواحد لكان رسول الله فيها مخلداً﴾ अगर दुनिया में किसी को बाक़ी रहना होता तो अल्लाह का हबीब होता जो क़ियामत

तक बाक़ी रहता, अल्लाह ने उसको भी मौत का प्याला पिला दिया फिर जिब्रील, मीकाईल फिर इस्राफ़ील वह सूर फूंकने वाला भी गया और सूर उसका अर्श पर लगा फिर अर्श के फ़रिश्ते भी गए फिर ऊपर अल्लाह नीचे अर्श। फिर अल्लाह फ़रमाएंगे तू भी मर जा, तू भी मेरी एक मख़्लूक़ है मेरे एक हुक्म से पैदा हुआ था वह भी गया।

واحد لا شريك له، لا مشير له، لا وزير له، لا عديل له، لا
بديل له، لا بدله، لا ندله، لا عزيز له، لا مثل له، لا شريك
له، لا مثال له، ليس كمثله شيء وهو السميع العليم

अल्लाह की बादशाहत

उस जैसा कोई है ही नहीं, वह अकेला, आज भी अकेला, फिर भी अकेला, पहले भी अकेला ﴿لم يتخذ صاحبة﴾ बीवी से पाक ﴿ولا ولدا﴾ बच्चे से पाक। कोई उसके काम में हाथ बटाने वाला नहीं, कोई उसको सहारा देने वाला नहीं, कोई उसको मशवरा देना वाला नहीं, कोई उसकी ज़ात में शरीक नहीं, कोई उसके मुल्क में शरीक नहीं, कोई उसकी ताक़त में शरीक नहीं, उसकी क़ुदरत में शरीक नहीं, कोई उसकी किबरियाई में शरीक नहीं, कोई उसकी किसी सिफ़्त में शरीक नहीं, वह हर चीज़ से पाक ज़ात ﴿وقال﴾ हां भई ﴿الم تريد بعد في الدنيا لم تكن شيئا وانا يعيدها﴾ मैं ही हूँ जिसने दुनिया को बनाया और फिर मिटा दिया मैं दोबारा बनाऊंगा फिर अल्लाह ज़मीन और आसमान को मुट्ठी में लेकर झटका देगा ﴿انا ملك﴾ मैं बादशाह हूँ, फिर दूसरा झटका देगा ﴿وانا قدوس السلام المؤمن﴾ मैं हूँ कुद्दूसुस्सलामुल मोमिन फिर तीसरा झटका देगा ﴿انا المهيمن العزيز

﴿الجبار المتكبر﴾ मैं हूँ मुहईमिन, अज़ीज़, जब्बार, मुतकब्बिर, फिर अल्लाह तआला कहेगा ﴿اين المالك؟﴾ बादशाह कहाँ है? ﴿اين الجابرون؟﴾ वह ज़ालिम कहाँ है? ﴿اين المتكبرون؟﴾ वह तकब्बुर करने वाला कहां हैं? ﴿اين الملوك﴾ बादशाह, वज़ीर, मुशीर, वह ताजिर, वह ज़मींदार, वह काशतकार, वह सियासतदान, वह साइंसदान, वह डाक्टर, वह इन्जिनियर, आज कोई भी नहीं है, अल्लाह ही अल्लाह है। ﴿لمن الملك اليوم﴾ अल्लाह पूछेगा किसका हुक्म है कोई जवाब नहीं देगा फिर खुद कहेगा ﴿لله الواحد القهار﴾ आज अकेले अल्लाह की हुकूमत है, यह ख़बर आई है कि यह होगा फिर से अगले दिन आया ﴿ان يوم الفصل﴾ यह लो आ गया क़ियामत का दिन।

क़ियामत का मंज़र

अब आ गया फ़ैसले का दिन ﴿ونفخ في الصور﴾ फिर आवाज़ पड़ेगी फिर कहेगा ﴿فاذاهم من الاجداث الى ربهم ينسلون﴾ फिर वह अपनी क़ब्रों से निकलेंगे अपनी क़ब्रों से उठ रहे हैं ﴿فتاتون افواجا﴾ फ़ौज दर फ़ौज निकल रहे हैं ﴿وفتحت السماء﴾ आसमाल खुला ﴿فكانت ابوابا﴾ दरवाज़ा बन्द ﴿وسيرت الجبال﴾ पहाड़ चले गए ﴿فكانت سرابا﴾ रूह बन गए, इंसान सामने आ गए, कैसे निकले क़ब्र में से, कुछ क़ब्रों से निकले, नाफ़रमान उस दिन पुकारेगा ﴿ليويلنا من بعثنا من مرقدنا﴾ हाए किसने हमें उठा दिया क्यों उठा दिया, क़ियामत का पहला सूर, और फिर फ़ैसले के दिन का सूर उसके दर्मियान का जो वक़्त है उसमें सब बेहोश होंगे, सज़ा जज़ा ख़तम हो जाएगी, सज़ा जज़ा ख़तम, सब बेहोश नेक भी बेहोश,

बुरे भी बेहोश, सबकी रूहों पर बेहोशी छा जाएगी, इसलिए सज़ा वाले की सज़ा ख़तम, जज़ा वाले की जज़ा ख़तम, इससे बेहोश को कोई पता नहीं चलता फिर दूसरी आवाज़ उस पर अल्लाह ने क़ब्रों से उठाया उठते ही नाफ़रमान पुकारेंगे वह दिन आ गया जिससे लोग हमें डराते थे और हम कहते थे जो होगा वह देखा जाएगा अब वह कहेंगे ﴿من بعثنا﴾ हाए हमें किसने उठा दिया ﴿من مرقدنا﴾ हमारी क़ब्रों से फिर, हम तो आराम में आ गए थे, फिर जो दर्मियान का वक़्त था वह आराम से गुज़रा इसलिए वह कहेंगे क्यों उठाया इसका जवाब वह लोग देंगे जो ज़िन्दगी में अल्लाह से डर कर रहे, वह इसका जवाब देंगे ﴿هذا ما وعد الرحمن﴾ यही वह दिन है जिसका रहमान ने वादा किया था ﴿وصدق المرسلون﴾ और रसूलों ने सच कहा था यह वही दिन आ गया यह तो आपने सुनीं अच्छों की और बुरों की बातें, इसके जवाब में अल्लाह फ़रमाएगा। अर्श के ऊपर से आवाज़ आएगी ﴿الم اعهد اليكم يبني آدم﴾ ऐ आदम की औलाद, मैंने तुम्हें कहा नहीं था ﴿الا تعبدو الشيطن﴾ शैतान की ग़ुलामी न करना ﴿انه لكم عدو مبين﴾ यह तुम्हारा बड़ा दुश्मन है ﴿وان اعبدونی﴾ मेरी इबादत करना मेरे बन्दे बनना, मेरे ग़ुलाम बनना ﴿هذا صراط مستقيم﴾ यह सीधा रास्ता है हर कोई कहता है, मोटर-वे से जाओ, साफ़ सड़क से जाओ, अपने लिए ज़िन्दगी के लिए उलटे रास्ते इख़्तियार क्यों करते हैं, खड्ढे वाले रास्ते। इस्लाम को छोड़कर हर रास्ता टेढ़ा रास्ता है, सिरातल मुस्तक़ीम सिर्फ़ एक रास्ता है जिसको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आए बाक़ी सब टेढ़े रास्ते हैं, उलटे रास्ते हैं, ग़लत रास्ते हैं, सिरातल मुस्तक़ीम एक है जिस पर हज़रत

मुहम्मद सल्ल० खड़े हुए जिसकी तरफ़ जिसकी तरफ बुलाया ﴿انك لعلى هدى الى صراط مستقيم﴾ अल्लाह के नबी की सब तारीफ़ फ़रमाथिए, ऐ मेरे नबी आप हैं सीधा रास्ता दिखाने वाले, आप हैं सीधे रास्ते पर क़ायम। ﴿لعلى هدى مستقيم﴾ और आपने कहा ﴿تركتكم على ما حجتم بيبان ليلها نهار ال يزيد عنها الا﴾ मैं तुमको ऐसे रास्ते पर छोड़कर जा रहा हूँ जिसकी रात भी इस तरह रौशन है जैसे दिन रौशन होता है, जो इसको छोड़ेगा वह हलाक हो जाएगा, बरबाद हो जाएगा, यह अल्लाह की तरफ़ से फ़ैसले का दिन आ गया। ﴿عـراة ننك حفاة جوتا﴾ कोई नहीं ﴿غراخته﴾ कोई नहीं, अकेले अकेले। ﴿لقد احصٰهم﴾ घेरा डाला हुआ है, ﴿وعدهم عدا﴾ गिनती की हुई है, न कोई भाग सकेगा, ﴿اين المفر﴾ न कोई छुप सकेगा, ﴿فانفذوا لا تنفذون الا بسلطن﴾ तीन रास्ते हैं दुनिया में निकलने के, भाग जाए, क़ाबू में न आए, छिप गया पता नहीं चला, ताक़त वर था टकराया और अपनी ताक़त पर रास्ता ले लिया। अल्लाह तआला ने तीनों रास्ते बन्द किए। ﴿اين المفر﴾ आज भाग कर दिखाओ।﴿لا تخفى منكم خافية﴾ आज छिपके दिखाओ, ﴿فنفذوا﴾ आज निकल कर दिखाओ ताक़त है तो आ जाओ, ﴿فليدع ناديه﴾ बुलाओ अपनी उस जमात को ﴿نادوا شركاءي﴾ बुलाओ जिन्होंने मुझे शरीक ठहराया था, बुलाओ उनको फिर सारे टूट गए।

मैदाने हशर का मन्ज़र

अकेला तो अल्लाह तआला का अर्श आएगा सिरों के ऊपर ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية﴾ अल्लाह का अर्श सिरों पर आ

गया, जब अल्लाह का अर्श आएगा सब बेहोश होकर गिर जाऐंगे। यह दूसरी बेहोशी होगी। जब अल्लाह का अर्श सिर पर आएगा फिर सब बेहोश हो कर गिर जाऐंगे। बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सबसे पहले मुझे होश आएगा।﴿حتی اذا جاؤها فتحت ابوابها﴾ काफ़िरों को हांका जाएगा जहन्नुम की तरफ़, जब वे दरवाज़े पर आऐंगे तो वह दरवाज़ा खुल जाएगा और वे सीधे जहन्नुम में चले जाएंगे। अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथी मुनाफ़िक़ीन हैं। ईमान वालों को जन्नत में पहुँचाना है तो पुल सिरात आख़िरी घाटी है, जिससे गुज़रेगा ईमान वाला, कुछ बिजली की तरह, कुछ हवा की तरह, कुछ घाड़े की तरह, कुछ ऊँट की तरह, कुछ तेज़ चलने वाले की तरह, कुछ आहिस्ता आहिस्ता, कुछ रफ़्ता रफ़्ता और कुछ गिरते पड़ते और कई ऐसे होंगे जिनको काँटें चुभेगें और कई ऐसे होंगे कि जिनके कपड़े फटेंगे और बहुत सो को ज़ख़्म लगेंगे और बहुत सों के वे छुरियाँ आर पार हो जाएंगी और उनको क़ीमा क़ीमा करके जहन्नुम में डाल देंगे। कुछ ऐसे भी होंगे जब पुल सिरात से गुज़रेंगे तो नीचे दोज़ख़ की आग कहेगी कि अल्लाह के वास्ते जल्दी गुज़रजा तेरे ईमान से मुझे ठंडक आ गई और कोई कहेगी ﴿جز جز﴾क्या कहेगी जल्दी करो जल्दी करो ﴿فقد اطفاء نورك لهبی﴾ तेरे ईमान ने तेरे नूरे ईमान ने मुझे ठंडा कर दिया, मुझे बुझा दिया, दोज़ख़ कहेगी अल्लाह के वास्ते जल्दी गुज़र जाओ और कुछ ऐसे नाफ़रमान गुज़रेंगे कि उनको उठाकर नीचे पटख़ देगी। यह पुल सिरात उनके लिए है और फिर मुनाफ़िक़ गुज़रेंगे।

मुनाफ़िक़ों का हशर

﴿يوم يقول المنفقون والمنفقت للذين امنوا انظرونا﴾ यह पुल सिरात की बात हो रही है। ﴿نقتبس من نوركم قيل ارجعوا وراءكم فالتمسوا نورا، فضرب بينهم بسور له باب، باطنه فيه الرحمة وظاهره من قبله العذاب ينادونهم الم نكن معكم﴾ जब ये ईमान वाले अपने नूर में चलेंगे ﴿يسعى نورهم بين ايديهم وبايمانهم﴾ ईमान वाले का नूर है। सबसे थोड़ा नूर जिसको पुल सिरात पर मिलेगा उसके पाँव के अगूंठे में से रौशनी निकलेगी और उसकी रौशनी पुल सिरात पर चलेगी और कुछ ऐसे होंगे कि सूरज की तरह उनके ईमान का नूर चमकता हुआ उनके साथ होगा तो वे मुनाफ़िक़ कहेंगे ठहर जाओ हमारा इन्तिज़ार करो हम को भी नूर दे दो। वे कहेंगे हम तो पीछे से लेकर आऐं हैं तुम भी वहीं से ले आओ। जब वे पीछे मुड़ेंगे तो दरवाज़े बन्द हो जाएंगे। इस पर मुनाफ़िक़ उनसे कहेंगे ﴿الم نكم معكم﴾ अरे भाई हम भी तो दुनिया में तुम्हारे साथ रहा करते थे, नमाज़ पढ़ते थे, रोज़ा रखते थे, सब कुछ करते थे तो क्या हुआ, हमें भी तो साथ लेकर जाओ। ﴿قالوا بلى ولكنكم فتنتم انفسكم وتربصتم وارتبتم وغرتكم الاماني﴾ ठीक है मगर तुम नफ़्स के धोके का शिकार हो गऐ थे, शैतान के दाँव में आ गए थे, शैतान के फंदे में आ गए थे और दुनिया को मक़सद बना लिया था और आख़िरत को भूल गए थे अब कुछ भी नहीं हो सकता आज तुम्हारे लिए।

मैदाने अदूल और जन्नती इन्साफ़ का तराज़ूः

उधर पुल सिरात, इधर जहन्नुम, उधर जन्नत, इधर अर्श, उधर

अल्लाह, इधर इन्सान, उधर फ़रिश्ते, इधर तराज़ू, उधर मीज़ान, इधर पुकार पड़ी फ़लाँ को लाओ भई, फ़लाँ फ़लाँ का बेटा आजाऐ, फ़लाँ फ़लाँ की दुख़्तर आ जाए। गर्दन में हाथ देकर फ़रिशते खींच कर ला रहे हैं, तराज़ू के सामने खड़ा कर रहें हैं। इधर नेकी रखी जा रही है उधर बुराई रखी जा रही हैं, अगर नेकी घट जाती है, बुराईयाँ बढ़ जाती हैं तो साथ ही ऐलान होता है फ़लाँ इब्ने फ़लाँ, फ़लाँ फ़लाँ का बेटा उसकी नेकियां कम निकलीं, ले जाओ इसको जहन्नुम में। उसका चेहरा काला पड़ गया, जिस्म बढ़ गया, कपड़े आग के, टोपी आग की, लिबास आग का, शलवार आग की कुर्ता आग का, हाथ में हथकड़ी, पाँव में बेड़ी, गर्दन में तौक़, फिर फ़रिशतों ने उसको ख़ींचा और उसको घसीट कर ले गए जहन्नुम में, वह कहेगा मेरे ऊपर रहम करो। फ़रिशते उसको कहेंगे तुम पर सबसे बड़े रहीम ने रहम नहीं किया, हम कैसे रहम करें ये किधर को जा रहे हैं ﴿وسيق الذين كفروا الى جهنم زمرا﴾ ये जहन्नुम को जा रहे हैं ﴿اعمى وابكم واصم﴾ वे अन्धे, वे बहरे, वे गूंगे और उनके हाथ पाँव बन्धे हुए और उसकी नेकियों का पलड़ा झुकता है बढ़ता है।

मैदाने हशर में नेकियों का तोला जाना

तो फ़रिशतों का ऐलान होता है ﴿من ثقلت موازينه﴾ फ़लाँ इब्ने फ़लाँ के बेटे की नेकियां बढ़ गयीं, फ़लाँ की बेटी की नेकियां बढ़ गयीं वे कामयाब हो गए। अब दोज़ख़ नहीं देखेंगे, अब नाकामी नहीं देखेंगे। इस ऐलान के होते ही उनका क़द आदम अलैहिस्सलाम के क़द पर साठ हाथ ऊँचा हो जाएगा। क़द आदम

अलैहिस्सलाम, युसुफ़ अलैहिस्सलाम का हुस्न, अय्यूब अलैहिस्सलाम का दिल, दाऊद अलैहिस्सलाम की मीठी ज़ुबान, ईसा अलैहिस्सलाम की उमर, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ और लिबास पहनाने वाला जन्नत के जोड़े ला रहा ﴿يلبسون﴾ रेशमी जोड़े, दुनिया में अल्लाह तआला ने सोना मर्द के लिए हराम किया औरतों के लिए हलाल किया। क्या लज़्ज़त है, किसी ने सोने की अगूंठी पहनी हुई है भाई आग पहनी हुई है आग। आप सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने कहा जिसने दुनिया में सोना पहना वह जन्नत में सोने से महरूम हो जाएगा। जिसने दुनिया में शराब पी वह जन्नत की शराब से महरूम हो जाएगा। जो यहाँ की शराब पी ले बदबू दस फ़िट से उसकी आती है खुद उस पागल को पता नहीं होता पेशाब अन्दर ही कर रहा होता है। कभी इधर कर रहा होता है कभी उधर कर रहा है।

जन्नत की नेमतें

जन्नत की शराब क्या है, एक क़तरा उगंली पर लगा लें और आसमान पर बैठ जाएं। आसमान कितनी दूर है, आज तक कोई नहीं जान सका, फिर उँगली को नीचे कर दिया तो यह सारी काएनात इस एक क़तरे से खुशबूदार हो जाएगी। यह जन्नत की शराब है तो जिसने दुनिया में शराब पी ली, अल्लाह तआला जन्नत की शराब से महरूम कर देगा। यहाँ का पिया हुआ तो वहाँ की तसनीम से और अल्लाह के अमूर से तैयार की हुई शराब से महरूम हो गया। यहाँ ज़िना किया वहाँ की पाक दामन औरतों से महरूम हो गया जिनकी एक उँगली सूरज को दिखा दी जाए

उगंली नहीं उँगली तो बहुत ज़्यादा है इतना हिस्सा बनान, उँगली में तीन जोड़ होते हैं यह जो ऊपर वाला जोड़ है इसको बनान कहते हैं और उर्दू में पोरा। अल्लाह का हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहता है, इतना हिस्सा सूरज को दिखा दिया जाए तो सूरज उसके सामने नज़र नहीं आएगा। ऐसी ख़ूबसूरत औरतों से महरूम हो गया। अब वे थूकती नहीं। जन्नत की औरत का थूक नहीं लेकिन अगर उसके मुहँ में थूक आ जाए और वह थूक सात समंदर में फेंक दे तो सातों समंदर शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएं। यह उसके थूक की मिठास है, अगर मुर्दों से बात करे तो उनमें ज़िदगी की लहर दौड़ जाए और आसमान पर बैठे बैठे अपने चेहरे को खोल दे और हम यहाँ हों और इतने फ़ासले हों दर्मियान में जिनकी कोई इन्तेहा नहीं, काएनात कितनी बड़ी है? तो वह आसमान पर बैठ कर हमें देखें, हम ज़मीन पर वह आसमान पर। हम यहाँ से उसे देखें तो उसके हुस्न को कोई बर्दाश्त नहीं कर सकेगा, सब मर जाएंगे, दिल फट जाएंगे, ख़ुशी से मर जाएंगे, बर्दाशत नहीं कर सकेगें और वह आग, पानी, मिट्टी, हवा से नहीं बनी मुश्क अम्बर, ज़ाफ़रान, काफ़ूर से अल्लाह ने उसको बनाया है। उसमें कोई गंदी चीज़ इस्तेमाल नहीं हुई। मुश्क है पाँव से घुटने तक, ज़ाफ़रान घुटने से छाती तक, मुश्क है छाती से गर्दन तक, अम्बर है गर्दन से सिर तक काफ़ूर है। सिर के बाल पाँव की ऐड़ी तक हैं। दो बाल तोड़कर ज़मीन पर डाल दिए जाएं तो सारा जहान रौशन हो जाए। काले बालों में ऐसा नूर है कि सारे जहान रौशन हो जाए, ऐसी खुशबू है कि सारा जहान मौत्तर हो जाए। फ़रमाया जिसने नापाक ज़िदंगी गुज़ारी वह इन पाक

बीवियों से महरूम हो जाएगा।﴿يحلون فيها من اساور من ذهب﴾ और अल्लाह सोने के कंगन पहना रहा है कि आओ भई, मैं पहनाता हूँ। ﴿يلبسون ثيابا خضرا﴾ तुम्हें रेशमी लिबास पहने का शौक़ है ना तो मैं पहनाता हूँ और शराब पीने का शौक़ है तो अब मैं पिलाता हूँ। शराब पीने वालों के दर्जे सुनों तो वे तीन दर्जे हैं:

﴿يشربون من كاس مزاجها كافورا﴾ कुछ ऐसे हैं जो ख़ुद पी रहे होंगे काफ़ूरी शराब, एक दर्जा। फिर उससे ऊपर वाला दर्जा ﴿يسقون فيها كاسا كان مزاجها زنجبيلا﴾ कुछ होंगे जिनको जन्जबील वाली शराब पिलाई जाएगी। वे पी रहें हैं, उनको पिलाई जाएगी। पिलाने वाले मजहूल है यानी ख़ुद्दाम हैं, बीवियां, हूरें, फ़रिश्तें हैं। फिर उससे ऊपर का दर्जा ﴿وسقاهم ربهم شرابا طهورا﴾ कुछ ऐसे होंगे जिनको उनका रब पिलाएगा, अल्लाह पिलाएगा। क्या पिलाएगा ﴿شرابا طهورا﴾ पाक शराब, यह नहीं गन्दी नहीं पाक शराब। पिलाने वाला अल्लाह, मैदाने जन्नत, हाथ अल्लाह का, जाम जन्नत का, शराब जन्नत की, आदमी जन्नत का, पड़ौस नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का। इससे आला चीज़ और क्या होगी भई? ﴿وسقاهم ربهم شرابا طهورا﴾ क्यों? ﴿ان هذا كان لكم جزاء﴾ यह तुम्हारी मेहनत के सिले में तुम्हें दे रहा हूँ। यह क़ियामत का मन्ज़र है जो अल्लाह दिखाएगा। ﴿كان سعيكم مشكورا﴾ तुम्हारी मेहनत हम ने क़ुबूल कर ली जाओ चले जाओ जन्नत में।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्नत का दरवाज़ा खुलवाना

सब जमा हो रहें हैं एक तरफ़ जन्नत वाले, एक तरफ़ दोज़ख़

वाले। दोज़ख़ वाले दोज़ख़ को चले, जन्नत वाले जन्नत को चले। जन्नतियों को घोड़ियों पर सवारियों पर, दोज़ख़ी मुजरिम बनकर जाऐंगे और जन्नती ये वफ़्द बन कर जाऐंगे। वे मुजरिम बन कर ये मेहमान बन कर, वे जेल में जा रहें हैं ये जन्नत में जा रहे हैं। दोनों के रुख़ अलग अलग हो रहे हैं, एक वफ़्द ठहरा फ़रिश्तों का, एक के लिए इस्तिक़बाल है फ़रिश्तों का, जब पुल सिरात से उतरे तो सामने सवारियां खड़ी हुई हैं वे सब अपनी अपनी सवारियों पर सवार होंगे। वे सवारियां उड़ाकर जन्नत के दरवाज़े पर ले जाऐंगी। जन्नत के दरवाज़े पर सारी उम्मतें उतर रहीं हैं। सब उतर रहें हैं मगर आगे दरवाज़ा बन्द है और दरवाज़े पर ताला लगा हुआ है। दो चश्में जन्नत के दरवाज़े पर हैं। एक चश्में के लिए जन्नतियों से अल्लाह तआला फ़रमाएगा इसका पानी पियो। वे पानी पिएगें तो सीने का सारा खोट ख़त्म हो जाएगा। अब हसद, बुग़ज़, लड़ाई, फ़साद सब ख़त्म, झगड़े, मुक़द्दमें, अदालतें सब ख़त्म। क़त्ल ग़ारत, लूट सब ख़त्म। वह पानी जब पेट में जाएगा तो पाख़ाना ख़त्म, पेशाब ख़त्म, थूक ख़त्म, नज़ला ख़त्म, बलग़म ख़त्म, अन्दर की सब गन्दगी ख़त्म। सब जन्नती पाक हो गए। फिर अल्लाह तआला दूसरे चश्में से वुज़ू करवाएगा कि वुज़ू करो। जन्नती वूज़ू करेंगे तो चेहरे तर व ताज़ा बारी के बग़ैर। जन्नत में बारी नहीं होगी तो वहाँ बारी के बग़ैर अल्लाह तआला कहेगा वूज़ू करो तो वे वुज़ू करेंगे तो चेहरा तर व ताज़ा ऐसा हो जाएगा कि सूरज भी उनके सामने नज़र नहीं आएगा। अब ये पाक साफ़ हो कर बैठ गए मगर जन्नत की तरफ़ जाओ तो दरवाज़ा बन्द है। सब हैरान परेशान कि अन्दर कैसे जाएं दरवाज़ा ही नहीं खुला हुआ। तो जाऐंगे अब्बा जान आदम अलैहिस्सलाम

के पास कि अब्बा जान दरवाज़ा खुलवाइए। वह कहेंगे कि मेरे इख़्तियार में नहीं है किसी और से बात करो। फिर आऐंगे नूह अलैहिस्सलाम के पास। वह कहेंगे कि मैं नहीं कर सकता। फिर लोग आऐंगे इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास। वह कहेंगे कि मैं नहीं कर सकता। फ़लॉ नबी फ़लॉ नबी। सब नबी इन्कारी हो जाऐंगे तो सारा मजमा कहेगा सय्यदुल कौनैन ताज दारे मदीना हबीबुल मुस्तफ़ा हबीबुल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास चलो। सब आऐंगे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास, अल्लाह के महबूब।

अल्लाह की अपने हबीब से मुहब्बत

जिस से मुहब्बत होती है तो उसको आदमी कई नामों से पुकारता है। अल्लाह तआला ने हर नबी को एक नाम दिया लेकिन अपने नबी को दस नाम दिए। ﴿كان عند الله عشرة اسماء﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे अल्लाह ने मेरे दस नाम रखे। ﴿انا محمد واحمد والماحی والحاشر والعاقب و الخاتم وابوالقاسم وطه ويٰس﴾ ये मेरे अल्लाह ने मेरे नाम रखें हैं कि मैं मुहम्मद हूँ, मैं अहमद हूँ, मैं माही कुफ़्र को मिटाने वाला, मैं आक़िब पीछे आना वाला, मैं हाशिर मेरे क़दमों पर हश्र होने वाला मैं पहले पैदा होने वाला, मैं ख़ातिम, पैदाइश में सबसे पहले और आने में सबसे आख़िर में। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप को नबुव्वत कब मिली? मतलब यह था कि चालिस साल की उमर में पचास साल की उमर में। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया मुझे

नबुव्वत उस वक़्त मिली जब आदम अलैहिस्सलाम का गारा बन रहा था नहीं नहीं बल्कि ﴿كنت﴾ मैं बन गया था। इससे कितना अरसा पहले बने इसका पता अल्लाह को है या उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है। यह इल्म इन्सानों में से किसी को नहीं। आपसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ﴿كنت﴾ मैं था वह भी कब! जब आदम अलैहिस्सलाम का गारा बन गया था तो उस वक़्त मैं नबी बन चुका था। कितना पहले इसका इल्म अल्लाह ही जानता है। अल्लाह ने दस नाम रखे। मुहम्मद व अहमद व माही व हाशिर व आक़िब व फ़ातेह व ख़ातिम, पहल करने वाला, इन्तिहा करने वाला, पहले भी आख़िर भी, नबुव्वत की मोहर लेकर आए। ताहा, यासीन, अबू क़ासिम। अबू क़ासिम का वाक़िया। अबू क़ासिम सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का लम्बा क़िस्सा है। इसका आख़िरी टुकड़ा सुनाता हूँ। वह इसाई राहिब के पास रहते थे कि अब आप तो मर रहे हैं तो मैं अब किसके पास जाऊँ? उन्होंने कहा कि बेटा अब दुनिया से सच मिट गया अब तू आख़िरी नबी का इन्तेज़ार कर। वह आने वाला है। जब वह आजाए तो उसका साथ देना। कहा उसकी निशानियां कौन सी हैं? राहिब ने कहा कि वह ज़कात नहीं खाएगा, सदक़ा नहीं खाएगा। हदिये का माल क़ूबूल करेगा और उसकी कमर के दर्मियान सीधे कन्धे के क़रीब मुहर होगी नबुव्वत की। ये तीन निशानियां याद रखो। बस वह नबी हैं। फिर एक लम्बी कहानी चली। बहरहाल वह मदीने पहुँचे। इधर रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी मदीने पहुँच गए। अब सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला कि हज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए हैं। अब पहले दिन सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु आए और कहा कि यह मैं आप के लिए सदक़ा लाया हूँ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उठाकर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को दे दिया, कहा आओ भाई खाओ। तो उन्होंने दिल में कहा ﴿هذا اولى﴾ यह पहली निशानी है। फिर खुजूरें लेकर आए और कहा कि यह मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हदिया लाया हूँ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद भी खायीं और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को कहा तुम भी खाओ। तो उन्होंने कहा ﴿هذا ثانية﴾ यह दूसरी निशानी हो गई। अब सोच में पड़ गए कि तीसरी निशानी कैसे देखूं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीसरी दिखा दूँ? आओ देख लो। कुर्ता उठाया, कहा यह देख लो तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातिम फ़ातेह भी और ख़ातिम अव्वल भी, आख़िर भी, ताहा भी, यासीन भी, अबू क़ासिम भी, हाशिर भी, आक़िब भी, माही भी। तो सारी इन्सानियत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर अर्ज़ करेगी, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दरवाज़ा खुलवायिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहेंगे मैं ही खुलवा सकता हूँ, आज मेरे बग़ैर कोई नहीं खुलवा सकता। अब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की बारगाह में सज्दा करेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, मांगो मिलेगा। तो कहेंगे या अल्लाह दरवाज़ा खोल दे। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, तेरे बग़ैर दरवाज़ा नहीं खुल सकता तू जाएगा तो खोलूंगा। सारे नबियों पर हराम है जन्नत। जब तक तू न चला जाए कोई नबी जन्नत में नहीं जा सकता। जब तक आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत में न चले जाएं कोई नहीं जा सकता, कोई उम्मत नहीं जा सकती, जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत न चली जाए। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ऊँटनी लाई जाएगी जन्नत में, उस पर सवार होंगे। उसकी रस्सी नीचे होगी। सब की तमन्ना होगी कि रस्सी मेरे हाथ में हो। ऐलान होगा कि रस्सी हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को दी जाए। वह सबसे आगे निकल गए।

ईमान का बदला

न क़ुरैशी, न हाशमी, न सय्यद, न पठान, न राजपूत, कुछ भी नहीं। बे हसब, बे नसब, बस एक नसल है, बस मुहम्मदी हैं। बअू लहब सगा चचा था हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मगर उसके बारे में क़ुरआन ने कहा ﴿تبت يدا ابى لهب وتب﴾ अबू लहब बर्बाद हो गया और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु जिनके दादा का नाम मैंने आज तक किसी किताब में नहीं देखा। ऐसा बेनाम इन्सान मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी की लगाम पकड़ कर साथ साथ, क्योंकि उनका नसब मुहम्मदी बन गया। और एक मर्तबा ग़ज़वाए ख़न्दक़ के मौक़े पर सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में बहस हो गई। जब सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ख़न्दक़ खोदने लगे तो हांलाकि ये तो ईरानी थे और अरबों को अपने नसब पर बड़ा नाज़ था और होना भी चाहिए कि सबसे आला ख़नदान अरब है फिर उसमें भी आला क़ुरैश हैं फिर इसमें सबसे आला बनू अब्दुल मुनाफ़ है फिर इसमें सबसे आला बनू अब्दुल मुत्तलिब, फिर उनमें सबसे

आला बनू हाशिम है, फिर उसमें सबसे आला हज़रम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। अल्लाह ने उनका इन्तिख़ाब किया, तो अब वह तो ईरानी थे लेकिन उनके ईमान, अमल, ज़ौक़ की वजह से उनको यह दर्जा मिला कि ख़न्दक़ खोदने के लिए एक हिस्सा अन्सार को मिला यानी मदीने वालों को, एक हिस्सा मुहाजिरीन को मिला मक्का वालों को कि मक्का वाले यह हिस्सा खोदें, मदीने वाले यह हिस्सा खोदें। अब सलमान किस में जाएं? तो अन्सारे मदीना कहने लगे ﴿سلمان منا﴾ सलमान हम में से हैं यहीं रहते हैं। मुहाजिरीन ने कहा ﴿سلمان منا﴾ सलमान हम में से हैं हिजरत करके गए हैं। अब यहीं सख़्ती आ गई बात बढ़ गई। वह कहते हैं हमारे साथ होगा वह कहते हैं हमारे साथ होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं फ़ैसला करता हूँ। ﴿سلمان من اهل البيت﴾ सलमान हम अहले बैत में से है जबकि वह तो फ़ारसी हैं तो किस चीज़ ने उन्हें अहले बैत में से बना दिया (यहाँ हक़ीक़ी अहले बैत मुराद नहीं) यह सलमान कैसे अहले बैत में से बन गया। ﴿سلمان منا اهل البيت﴾ सलमान हम में से है अहले बैत में से है किस वजह से? अपने ईमान की वजह से, अपने तक़वे की वजह से, अपने ज़ुहद व फ़ज़्ल की वजह से, हांलाकि अबू लहब भी तो सय्यदों में से था तो बिलाल हबशी रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जन्नत की तरफ़ जा रहे हैं। दरवाज़े पर दस्तक हुई, अन्दर से पूछा रिज़वान ने कौन? कहा मैं हूँ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, तो कहेंगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपका इन्तेज़ार हो रहा है। रब का हुक्म था जब तक आप न आएं दरवाज़ा न खोला जाए। दरवाज़ा

खुलेगा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब से पहले दाख़िल होंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आपकी उम्मत के फ़ुक़रा मसाकीन दाख़िल होंगे।

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का जन्नत में मुक़ाम

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा मैं एक साथी को जानता हूँ और उसके माँ बाप को भी जानता हूँ। जब जन्नत के दरवाज़े पर आएगा तो सारे दरवाज़े उनके लिए खुल जाएंगे और हर दरवाज़ा पुकारेगा, इधर इधर, मरहबा मरहबा। सलमान फ़ारसी ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह कौन हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह अबूबक्र है जिसके लिए जन्नत के सारे दरवाज़े तक खुलेगें। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा मैंने जन्नत में महल देखा जिसकी एक ईंट याक़ूत की एक ईंट ज़मर्रद की। मैंने पूछा कि यह महल किसका है तो मुझे कहा गया कि एक क़ुरैशी का है। मैं समझा कि मेरा है, मैं भी क़ुरैशी हूँ। जब मैं अन्दर जाने लगा तो मुझे फ़रिश्ते ने कहा उमर बिन ख़त्ताब का है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ऐ उस्मान! जन्नत में हर नबी का एक साथी है मेरा जन्नत का साथी तू है। फिर आपसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली का हाथ पकड़ा और थोड़ा अपने क़रीब किया और फ़रमाया ﴿يا علی اترضی ان يكون منزلك مقابل منزلی فی الجنة﴾ ऐ अली तू राज़ी है कि जन्नत में तेरा घर मेरे घर के सामने

होगा? तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा जी मैं राज़ी हूँ। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा जन्नत में हर नबी का एक हवारी होगा। मेरे जन्नत में दो हवारी होंगे। एक हवारी बाडी गार्ड कह लो, पूरा तर्जुमा नहीं है इसका मददगार है, बाडी गार्ड, उर्दू के अल्फ़ाज़ बड़े तंग हैं अरबी को पूरा ले नहीं सकते। तो आप इसको बाडी गार्ड के लफ़्ज़ में ले लें। हर नबी का एक होगा मेरे दो होंगे, तल्हा व ज़ुबैर दो होंगे, तो इस तरह यह उम्मत जन्नत में जा रही होगी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे।

आज का मुसलमान ज़ुल्म की चक्की में पिस रहा है

तो मेरे भाईयों! अल्लाह ने ये दो अन्जाम बता दिए, दो ठिकाने बता दिए और ज़िन्दगी को बेकार नहीं बताया। यहाँ करने वाला न करने वाला, यहाँ ज़ुल्म करने वाला, अमल करने वाला आम तौर पर नहीं पूछा जाएगा। अल्लाह कभी कभी पकड़ लेता है ज़ालिम को, दुनिया में भी कभी पकड़ लेता है, आम तौर पर छोड़ देता है। लोग कहते हैं कि अल्लाह करता कुछ नहीं मुसलमान पिस रहे हैं, हाँ भाई यह जगह नहीं करने की, दोज़ख़ की एक चट्टान सारी दुनिया के पहाड़ों से बड़ी है। दोज़ख़ के पानी का एक लोटा, एक लोटे में कितना पानी आएगा, एक किलो दो किलो। अगर सात समुन्दरों में डाल दिया जाए तो सातों समुन्दर उबलने लगेंगे,

खौलने लगेंगे। तो यहाँ सज़ा नहीं दी जा सकती। आने दो। ﴿يوم الفصل﴾ फ़ैसले का दिन आ गया। ﴿ان الاولون الآخرون لمجموعون﴾ जिसने अव्वल और आख़िर को जमा कर दिया। उस दिन की तैयारी के लिए अल्लाह ने हमें भेजा है।

तबलीग़ी जमात की दावत इल्लल्लाह

मेरे भाईयों! तबलीग़ का जो काम हो रहा है यह कोई तबलीग़ी जमात नहीं। भई, कोई तबलीग़ी जमात वाले हमारे पास आएं हैं कोई हमारा मख़सूस नज़रिया है कोई ख़ास ख़्यालात हैं कि हमें अपने मेम्बर बनाते हैं कोई अपने मुरीद बनाते हैं या अपने साथी बनाते हैं नहीं सिर्फ़ इस बात की मेहनत है कि हर मुसलमान अल्लाह को अपने सामने रखे कि मेरा अल्लाह मुझ से क्या चाहता है। इस वक़्त हम अपने अल्लाह को सामने रखकर नहीं चल रहे हैं बल्कि अपनी ख़्वाहिशात को अपनी ज़रूरियात को सामने रखे हुए हैं कि मैं जो चाहता हूँ वह मैं करना चाहता हूँ, जो मैं करना चाहता हूँ वह मैं करूंगा चाहे अल्लाह नाराज़ हो चाहे अल्लाह का रसूल नाराज़ हो। यह जहन्नुम का रास्ता है। हम क्या कह रहे हैं कि अल्लाह को सामने रखो। या अल्लाह तू क्या चाहता है? मैं तेरी चाहत को पूरा करूंगा फिर चाहे कुछ मेरा रहे या न रहे कि रुख़ मुड़ना चाहिए। यह मेहनत इस बात की मेहनत है तबलीग़। यह जो हम जानते हैं तबलीग़ी जमात का मेम्बर बनने नहीं जा रहे हैं। वह तो हमें कुछ भी नहीं देते, हां वहाँ से चले हमने यहाँ भेज दिया तो हमने तीन चार घन्टे का सफ़र किया। यहाँ आए, मोटर वग़ैरह भी अपनी लेकर आए। पैट्रोल भी अपना जलाया। राएविन्ड

वालों ने एक धेला भी नहीं दिया तो हम उनके मेम्बर कैसे बन गए? फिर या तो वे हम को कुछ पैसे दें या तनख़्वाह दें या कुछ चन्दा दें कि जाओ भाई तबलीग़ करो, फिर तो बात बनी। वे तो कुछ देते भी नहीं फिर हमारा क्यों दिमाग़ ख़राब है कि हम उनके कहने पर कभी अमरीका जा रहे हैं कभी यूरोप जा रहे हैं। पैसे भी घर से उठाकर ले जा रहे हैं। भाई किस लिए आ रहे हैं? वहाँ से तो कुछ मिलता नहीं। किस लिए आ रहे हैं? उनसे कोई वास्ता नहीं। वास्ता अल्लाह और उसके रसूल का है। उनकी मिसाल सिर्फ़ याद दिहानी करवाने वाले की है। एक आदमी याद दिहानी करवा रहा है, भाई यह चीज़ आपकी है, अगर मेरी है तो मैं उसका शुक्रिया अदा करूंगा, तेरी बड़ी मेहरबानी है कि तूने यह चीज़ मुझे दे दी। तबलीग़ का जो यह काम हो रहा है यह किसी जमात की दावत नहीं, किसी फ़िरक़े की दावत नहीं, किसी तहरीक की दावत नहीं। दो बातों की दावत है सिर्फ़ दो बातों की, हर मुसलमान अल्लाह को सामने रखकर चले या अल्लाह तू क्या चाहता है और अल्लाह की चाहत कलिमे का दूसरा हिस्सा है ﴿لا اله الا الله محمد رسول الله﴾ "ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" ख़ुद अल्लाह तो नहीं बताएगा न अल्लाह को बराहे रास्त कोई जान सकता। अल्लाह को जानने का रास्ता रसूल हैं अबिंया हैं। अल्लाह तक पहुँचने का रास्ता अल्लाह के रसूल हैं। हम तो अल्लाह को बराहे रास्त नहीं जानते। अल्लाह बराहे रास्त हम से बात नहीं करता, अपना हाथ नहीं दिखाता, न जन्नत दिखाई न दोज़ख़ दिखाई, न फ़रिश्ते दिखाए, न अर्श दिखाया, न आसमान दिखाया, न अपनी किताब दिखाई।

हमारे लिए मुबारकबाद

अच्छा हमने तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी नहीं देखा। एक दफ़ा एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा या रसूलुल्लाह ﴿طوبیٰ لمن رٰئك وامن بك﴾ मुबारक हो उसको जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया। क़ुरबान जाइए उस रसूल और उस महबूब के कि जिसने हमें उस वक़्त भी हमें अपनी रहमत में शामिल किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿طوبیٰ، ثم طوبیٰ، ثم طوبیٰ، ثم طوبیٰ، ثم طوبیٰ، ثم طوبیٰ﴾ कितनी दफ़ा कहा सात दफ़ा कहा मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो, मेरे इस उम्मती पर जिसने मुझे न देखा और मुझ पर ईमान ले लाया। हमें सात दफ़ा मुबारक बाद मिली तो हमने तो उनको भी नहीं देखा हमने तो सिर्फ़ उनकी बातों को सुना और उनकी किताब को देखा है। एक तसलसुल से हमारे पास आपकी ज़िन्दगी पहुँची है और इतनी पाक ज़िन्दगी और महफ़ूज़ ज़िन्दगी किसी नबी की नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक एक हरकत घर से मस्जिद तक, मैदाने जंग से लेकर मस्जिद के मुसल्ले तक। एक एक चीज़ को अल्लाह तआला जज़ा दे अल्लाह के नबी के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को जिन्होंने एक एक चीज़ को उम्मत तक पहुँचा दिया। जिस काम को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़िन्दगी में कभी एक दफ़ा किया वह भी किताबों में मौजूद लिखा हुआ है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान बज़ुबाने रब काएनात

अल्लाह ने हमें बताया कि मैं अपने नबी की ज़िन्दगी पर राज़ी हूँ तुम भी उस ज़िन्दगी को अपना लो। ﴿قل ان كنتم تحبون الله فتبعونى يحبيكم الله﴾ अल्लाह ने अपने नबी की क़सम खाई ﴿لعمرك﴾ ऐ, मेरे नबी तेरी जान की क़सम। जिस जान की अल्लाह क़सम खाएगा वह जान कितनी क़ीमती होगी और उस जान से निकलने वाला अमल कितना क़ीमती होगा? अल्लाह ने आपके शहर की क़सम खाई ﴿وهذا البلد الامين﴾ सुब्हानल्लाह एक अजीब बात है जब कभी लोगों की तरफ़ से नबियों पर इल्ज़ाम लगा तो नबियों ने खुद जवाब दिया। नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ने कहा ﴿انا لنرك فى ضلل مبين﴾ तू गुमरह है नूह अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿يا قوم ليس بى ضلالة﴾ ऐ मेरी क़ौम मैं गुमराह नहीं हूँ। हूद अलैहिस्सलाम से उनकी क़ौम ने कहा ﴿انا لنرك فى سفاهة﴾ यह सब क़ुरआन से बता रहा हूँ कि लोगों ने हूद अलैहिस्सलाम से कहा तू पागल है तो हूद अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿يا قوم ليس بى سفاهة﴾ ऐ मेरी क़ौम मैं पागल नहीं हूँ। अब इधर सुनो काफ़िरों ने कहा ﴿لست مرسلا﴾ हमारे नबी से कह रहे हैं क़ुरैश मक्का तुम रसूल नहीं हो, तुम रसूल नहीं हो तो इससे पहले कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जवाब देते कि मैं रसूल हूँ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवाब देने से पहले अल्लाह ने जवाब दिया और क़सम खा कर कहा ﴿يس والقران الحكيم انك لمن المرسلين﴾ क़सम है मुझे क़ुरआने हकीम की तू मेरा रसूल है। यह नहीं कहा कि तू रसूल है, क़सम है मुझे

क़ुरआन की कि तू मेरा रसूल है। फिर काफ़िरों ने कहा ﴿ياايها الذى نزل عليه الذكر انك لمجنون﴾ ऐ, भाई तू तो हमें पागल नज़र आता है यानी हूद अलैहिस्सलाम वाली बात कही तो हूद अलैहिस्सलाम ने कहा था नहीं मैं पागल नहीं हूँ लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से अल्लाह तआला ने ख़ुद ही जवाब दिया और यह नहीं कहा कि तू पागल नहीं है बल्कि फिर कसम खाई ﴿ن والقلم وما يسطرون ما انت بنعمة ربك بمجنون﴾ मुझे क़सम है क़लम की और उसके लिखे हुए की कि आप पागल नहीं हैं। अल्लाह जवाब दे रहा है ख़ुद काफ़िरों ने कहा﴿انا لتاركوا الهتنا لشاعر مجنون﴾ हम शाइर की वजह से अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें। अब शाइर का इल्ज़ाम लगाया या शाइर कहा। फिर अल्लाह तआला ने क़सम खाई। वाह! वाह! क्या हबीब महबूब की शान है। अल्लाह ने फिर क़सम खाई ﴿فلا اقسم بما تبصرون، انه لقول رسول كريم، وما هو بقول شاعر قليلا ما تؤمنون، ولا بقول كاهن، قليلا ما تذكرون، تنزيل من رب العالمين﴾ क़सम है मुझे देखे अन देखे की कि यह शाइर नहीं है रसूल है तो भाई अल्लाह तआला क्या कह रहा है कि यह मेरा हबीब है तुम उसकी सुन्नत पर आ जाओ तो मेरे महबूब बन जाओगे।

अपने ज़ाहिर और बातिन को बनाने कि फ़िकर करें

तबलीग़ में यही बात हो रही है कि हर मुसलमान ज़ाहिर और बातिन को अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ताबे करे। ज़ाहिर को भी ताबे करे बातिन को भी ताबे करे। ज़ाहिर का

बातिन पर असर पड़ता है, बातिन का ज़ाहिर पर असर पड़ता है। बाहर का अन्दर पर और अन्दर का बाहर पर असर पड़ता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि सफ़ें सीधे करो, अगर सफ़ें टेढ़ी होंगी तो तुम्हारे दिल भी टेढ़े हो जाऐंगे। यह अजीब बात है, सफ़ों के टेढ़े होने से हमारे दिल भी टेढ़े हो जाएंगे कि बाहर की ग़लती अन्दर को गन्दा करती है। उन्होंने कहा अन्दर ठीक होना चाहिए ज़ाहिर की ख़ैर है नहीं। अन्दर ठीक नहीं हो सकता जब तक ज़ाहिर ठीक न हो। जब तक यह हुलिया मुहम्मदी न हो तो अन्दर से मुहम्मदी नहीं बन सकता। पहले ज़ाहिर बनता है फिर बातिन बनता है। पहले बच्चा बनता है फिर रूह पैदा होती है। पहले मस्जिद बनी फिर कारपेट बिछाया गया, फिर पंखे लगाए गए, फिर रंग व रोग़न किया गया, पहले ज़ाहिर बनता है फिर बातिन बनता है। यह ज़ाहिर न बने तो बातिन भी नहीं बन सकता। इस लिए ज़ाहिरन व बातिनन नबी के सांचे में ढले। क्या पता अल्लाह को ज़ाहिर पसन्द आ जाए और मॉफ़ कर दे। जादूगरों ने मूसा अलैहिस्सलाम की शक्ल बनाई। अल्लाह ताआला ने उनको भी हिदायत दे दी, तो अगर हम ज़ाहिर को बना लें तो बातिन भी कभी बन जाएगा। फिर इसके लिए जो नमाज़ पर मेहनत करेगा अल्लाह तआला उसके एक एक अमल को नबी के अमल के ताबे करता चला जाएगा। यह नमाज़ अजीब अमल है। सारी उम्मतों को दो नमाज़ें मिलीं। आपको पाँच मिलीं और उनकी नमाज़ दो रक्आत। आपकी कोई भी नमाज़ दो रक्आत नहीं। दो रक्आत फ़ज्र दो रक्आत अस्र की फिर छुट्टी और उसमें वे किताब नहीं पढ़ा करते थे क्योंकि उन्हें किताब याद नहीं होती

थी। तौरात, इन्जील और ज़ुबूर की तिलावत नमाज़ में नहीं होती थी सिर्फ़ तस्बीह सुब्हानल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह, अल्लाहु-अकबर और ला इलाहा इलल्लाह। फिर इसमें कोई रुकू नहीं था, तिलावत नहीं थीं। जिससे ताल्लुक़ न हो उसको बाहर से टरख़ा दिया जाता है जिससे ताल्लुक़ हो उसको अन्दर बुला कर बिठाया जाता है। हमारे ऊपर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ कीं और कोई भी दो रकूआत नहीं कम से कम चार रकूआत। दो सुन्नतें ऐसी कर दीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी सफ़र में भी फ़ज्र की दो सुन्नतें नहीं छोड़ीं। फ़ज्र की नमाज़ दो रकूआत है मगर दो सुन्नतें ऐसी लाज़िम हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी सफ़र में भी फ़ज्र की दो सुन्नतें नहीं छोड़ीं शायद किसी ग़ज़्वे में या किसी मारके में छोड़ी हों।

ख़ुशू ख़ुज़ू वाली नमाज़

फ़ज्र की नमाज़ में हम तो पढ़ते हैं चार आयतें पाँच आयतें और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ज्र की नमाज़ में सूरहः यूसुफ़ पढ़ते थे, सूरहः ताहा पढ़ते थे, सूरहः कहफ़ पढ़ते थे। इस लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ अन्धेरे में शुरू होती थी और सूरज निकलने से थोड़ी देर पहले ख़त्म होती थी, तो इमाम शाफ़ई रह० ने कहा है कि पहले वक़्त में पढ़ना अफ़ज़ल है। हमारे इमाम साहब ने कहा है आख़िरी वक़्त में पढ़ना अफ़ज़ल। दोनों ठीक हैं फिर हमें कहा क़ुरआन पढ़ो तो हमें क़ुरआन याद करवाया। उनको याद नहीं होता था हमें याद करवाया, फिर हमें रुकू दे दिया। सारी काएनात की नमाज़

इकठ्ठी कर दी। सारे दरख़्त क़याम में खड़े हुए हैं। हमारा क़याम भी है चाहे सारी रात क़याम में खड़े रहो, पूरा क़ुरआन पढ़ दो। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु एक रकअत में पूरा क़ुरआन ख़त्म करते थे दूसरी रकअत के लिए कुछ नहीं छोड़ते थे एक रकअत में क़ुरआन ख़त्म। हमने तो ﴿قل هو الله﴾ से ठेका किया हुआ है हर रकअत में ﴿قل هو الله﴾ पढ़ कर छुट्टी। ठेका कर लिया है अल्लाह तआला से। ﴿قل هو الله﴾ पढ़ी बाक़ी छुट्टी, बाक़ी क़ुरआन उतरा ही नहीं हमारे ऊपर या आदमियों के लिए उतरा नहीं सिर्फ़ ﴿قل هو الله﴾ कि दुआए क़ुनूत में भी ﴿قل هو الله﴾ यह अनोखी शरियत आई है यहाँ। पूरा क़ुरआन पढ़ दे, सारे दरख़्तों की नमाज़, क़याम हमारी नमाज़ में क़याम भी है। सारे चार पाए चौपायों की नमाज़ रुकू। हमारी नमाज़ में रुकू भी है। सारे ज़मीन पर रेंगने वाले जिनके पाँव नहीं हैं उनकी नमाज़ सज्दा है, हमारी नमाज़ में सज्दा भी है। सारे पहाड़ों की नमाज़ अत्तहिय्यात तशह्हुद है, हमारी नमाज़ में अत्तहिय्यात भी है। सारे परिन्दों की नमाज़ तस्बीह है तो हमारी नमाज़ भी तस्बीह है। "सुब्हा-न-रब्बि-यल-अज़ीम", "सुब्हा-न-रब्बि-यल-आला", "रब्बना-लकल-हम्द", "अल्लाहु अक्बर"। सबकी नमाज़ इकठ्ठी करके हमें दे दी और हमारे ऊपर पाँच नमाज़ें बतायीं और कहा अगर नमाज़ सीख लो तो हर बुराई से निकल जाओगे। इस लिए हम कहते हैं कि नमाज़ को सीखो। पंजाबी में नमाज़ न पढ़ो। अरबी में नमाज़ पढ़ो सीखो। अल्लाह कैसे सिखाता है नमाज़ सीखो। भाईयों अल्लाह की कसम अल्लाह सुन रहा है, फ़रिश्तें भी गवाह हैं जो नमाज़ सीख जाएगा उसके मुसल्ले से सारे काम होने लग जाएंगे। उसको न किसी अमीर की ज़रूरत है न किसी वज़ीर की ज़रूरत है न

किसी चेयरमैन की ज़रूरत है। चेयरमैन उसके पीछे फिरेंगे जूतें उठाके। उसको मच्छरों की तरह हक़ीर नज़र आएंगे। मियाँ मीर मुहम्मद लाहौर वाले बैठे हुए थे तो उनका एक मुरीद बाहर से अन्दर आया हज़रत, हज़रत कहता हुआ। उन्होंने पूछा क्या हुआ? बताया शाहजहाँ आ रहा है। उन्होंने कहा तेरा भला हो जाए मैं समझा तूने कोई जूँ मारी है जो कह रहा है हज़रत मैंने बड़ी जूँएं मारी हैं। शाहजहाँ उनको जूँओं से भी कम नज़र आ रहा था। जिसको नमाज़ पढ़नी आ गई उसके सारे काम मुसल्ले से हो जाएंगे। नमाज़ सीख लें। नमाज़ का सीखना क्या है? अलफ़ाज़ सीखें, इसका इल्म हो और फिर अल्लाहु अकबर से लेकर सलाम फेरने तक अल्लाह के सिवा कोई और न आए। यह नमाज़ घर बैठे नहीं आएगी। नहीं आ सकती। अल्लाहु अकबर, अब किसी को मत आने दो, दरवाज़े बन्द कर दो दिल के। इसके लिए घर छोड़ना पड़ेगा नहीं होगा, नहीं हो सकता। यह मुफ़्त सौदा नहीं है कि अल्लाह घर में बैठे बैठे दे दें। धक्के खाने पड़ेंगे तब जाकर अल्लाह नसीब फ़रमाएगा, तो वह करो जो अल्लाह चाहता है। अल्लाह की चाहत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चाहत में है और इस पर आने का आसान रास्ता नमाज़ है कि नमाज़ को ढ़ग से पढ़ना सीखे। पैसों के बग़ैर काम। दुआओं से वे काम होंगे जो काएनात में किसी से नहीं हो सकते, दुआओं से वे काम होंगे। रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपना सब कुछ अपनी उम्मत को दे गए बाक़ी सब सारे नबी साथ ले गए। इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग ने नहीं जलाया। अबू मुस्लिम ख़ौलानी अल्लाह के नबी के सहाबी नहीं हैं। सहाबी के सहाबी हैं। नबी के ग़ुलाम के ग़ुलाम हैं। उनको यमन के काफ़िर नबुव्वत का

पहला झूठा दावा करने वाले ने आग में डाला। वह आग में नमाज़ की नियत बांध कर खड़े हो गए। आग भी जलती रही और उनकी नमाज़ भी चलती रही। आग उनके बाल को न जला सकी। यह तो गुलामों का हाल है उम्मत तो दूर है लेकिन एक शर्त है वह यह कि ख़ज़ाने की चाबी तलाश करो। वह चाबी मुहम्मदियत है। मुहम्मदी बनना और वह करना जो अल्लाह के नबी ने करके दिखाया। उसके लिए नमाज़ मश्क़ है, नमाज़ पर मेहनत करे और मैंने बता दिया कि अल्लाहु अकबर से लेकर सलाम फेरने तक किसी को न आने दे। यह नमाज़ पढ़ने से नहीं आएगी, सीखने से आएगी और घर छोड़े बग़ैर नहीं आएगी और घर में तो अल्लाहु अकबर, ओहो! फ़लॉं जगह जाना है, फ़लॉं से बात करनी है, फ़लॉं से यह लेना है, फ़लॉं से वह लेना है। यह पचास साल हो गए ऐसी नमाज़ पढ़ते हुए, पचास और भी गुज़र जाऐं तो इससे आगे नहीं जा सकता। दस साल की उमर में भी नमाज़ शुरू की और आज पचास साल का हुआ बैठा है। दस साल की उमर में जो नमाज़ थी तो पचास साल की उमर में भी वही नमाज़ है। एक इचं भी उसमें इज़ाफ़ा नहीं हुआ। नमाज़ बनानी है तो घर छोड़ दो। अल्लाह और रसूल से मुहब्बत पैदा करनी है तो घर छोड़ो। यह सारा जहाँ पागल नहीं है जो बिस्तर उठा उठा कर फिर रहा है।

ख़ालिक़े काएनात को पहचानिए

तो भाईयों! हम तौबा करें यह पहली बात है कि अल्लाह के रास्ते में निकलो और तौबा करो और अपने अल्लाह को राज़ी

करो। अल्लाह की रज़ा उसके नबी का तरीक़ा है। आज तक जो हुआ ऐ अल्लाह हमारी तौबा। नमाज़ छोड़ीं, ज़कात छोड़ी, किसी का हक़ मारा, किसी से लड़ाई की, किसी से मुक़द्दमा किया, किसी से झगड़ा किया, मॉफ़ करो, कब्र में ले जाना है, मॉफ़ करो। जन्नत को सामने रखो। यहाँ ज़ुल क़रनैन की ख़्वाहिश पूरी नहीं हुई तो आप की क्या पूरी पड़ेगी जो सारी दुनिया की हुकूमत करके मर गया। ज़ुल क़रनैन को छोड़ो सुलेमान अलैहिस्सलाम जैसे तख़्त छोड़ कर मर गऐ हम क्या करें। सारे पाकिस्तान में क्या रखा है, सारी दुनिया में क्या रखा है। सब कुछ मिल भी जाए तो छोड़ कर चले जाना है तो इसके पीछे पीछे मारे मारे कहाँ की अक़लमन्दी है तो इस लिए भाईयों! आज तक जो कुछ हुआ उससे तोबा कर लें। फ़राइज़ की कोताही, हक़ूक़ुल इबाद की कोताही, पड़ौस के हक़ में, साथी के हक़ में। इन सारी चीज़ों में जो अल्लाह की नाफ़रमानी कीं उससे तौबा करें। क्या यह सिर्फ़ तबलीग़ी जमात का काम है? हर मुसलमान का काम नहीं है? क्या यह सिर्फ़ हमारे ज़िम्मे है आप के ज़िम्मे नहीं है? तोबा करना, जो ग़लत हुआ या अल्लाह! मॉफ़ कर दे और अल्लाह को मॉफ़ करना इतना पसन्द है कि अल्लाह यूँ कहता है कि अगर तुम गुनाह करना छोड़ दो और सारे नेक बन जाओ तो मैं तुम सबको जन्नत में बुला लूं और फिर एक ऐसी क़ौम पैदा करूं जो गुनाह करे फिर रोए, तोबा करे, फिर मैं उनको मॉफ़ करूं और कहा कि अगर दुनिया में किसी को अज़ाब देता तो सब से पहले उसको अज़ाब देता हूँ जो मेरी रहमत से नाउम्मीद हो कर बैठ जाता है।

अल्लाह की बन्दों से मुहब्बत पर एक वाक़िया

एक क़िस्सा सुनाता हूँ। जब अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को इजाज़त दे दी कि ज़मीन तेरे ताबे है तू क़ारून को धंसा दे तो मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़मीन को कहा कि इसको पकड़ो तो जब ज़मीन ने पकड़ा और वह अन्दर धंसा तो उसने कहा मूसा अलैहिस्सलाम मॉफ़ कर तेरी बड़ी मेहरबानी तो मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़मीन से कहा और पकड़ लो वह अन्दर चला गया फिर उसने मॉफ़ी मांगी, मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा और पकड़ तो वह और अन्दर चला गया फिर मॉफ़ी मांगी (सारा दिन) वह मॉफ़ी मांगता रहा वह कहते रहे और अन्दर और अन्दर। जब वह सारा धंस गया तो अल्लाह तआला ने कहा ऐ मूसा! तेरा दिल कितना सख़्त है, वह मॉफ़ी मांगता रहा तू ने मॉफ़ ही नहीं किया। ﴿وبعزتی وجلالی﴾ मेरे इज़्ज़त व जलाल की क़सम एक दफ़ा मुझ से मॉफ़ी मांगता मैं मॉफ़ करके उसको बाहर कर देता। ले भाई जो क़ारून को मॉफ़ कर दे तो हमें कैसे नहीं मॉफ़ करेगा? हम तो क़ारून नहीं हैं। अल्लाह के फ़ज़्ल से हम तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती हैं। इतनी बात में कौन सी चीज़ है जो सिर्फ़ तबलीग़ी जमात के ज़िम्मे है और आपके ज़िम्मे नहीं जो आए बैठे हैं कोई एक बात तो उँगली रख कर बता दें कि यह आप की बात है हमारी कोई बात नहीं।

ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा

दूसरी बात जो तबलीग़ में कह रहें हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम हमारे नबी आख़िरी हैं, आपके बाद कोई नबी नहीं। यह वह अक़ीदा है अगर कोई छोड़ दे तो सारा कलिमा कुफ़्र में तबदील हो जाए और जो झूठे नबूव्वत का दावा करते रहे सिर्फ़ वही काफ़िर नहीं जो उसको मान ले वही काफ़िर नहीं। एक आदमी यूँ कहे मैं किसी नबी को नहीं मानता सिर्फ़ अल्लाह का नबी नबी है लेकिन मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरी नहीं मानता तो इतने पर भी वह काफ़िर हो जाएगा यह नहीं कि वह किसी और नबी को माने तो काफ़िर हो जाएगा। ख़त्मे नबुव्वत का इन्कार कर दे, किसी झूठे नबी का कलिमा नहीं पढ़ता, सिर्फ़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहता है कि आप आख़िरी नहीं हैं तो इतने पर भी वह काफ़िर हो जाएगा।

आख़िरी उम्मत होने की वजह से दूसरों तक दीन पहुँचाना हमारी ज़िम्मेदारी है

तो आप आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आख़िरी नबी होने का जो अक़ीदा है इसकी वजह से यह हमारे ज़िम्मे तबलीग़ का काम लगा हुआ है। हम रायविन्ड वालों की वजह से आप लोगों के पास नहीं आते, हम ख़त्में नबुव्वत की वजह से आप के पास आए। हमें हमारे नबी ने बराहेरास्त कहा है, आपको कहा है, आप सबको कहा है, मिना की वादी में। कब? दस ज़िलहिज्ज को अपने दुनिया के जाने से 83 दिन पहले, मिना की वादी में जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुज़्दलफ़ा से आए थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कन्कर मारे। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने चादर से साया किया और हज़रत उसामा

रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऊँटनी की नकेल को पकड़ा फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस तशरीफ़ लाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 63 ऊँटों की कुर्बानी दी। 37 हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़िब्हा किए और 63 आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किए फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलवाया सिर मुंढ़ने के लिए। सीधे हाथ के बाल पहले मुंढ़वाए। पहले इधर के बाल मुंढ़वाने चाहिएं, फिर इधर के। उस्तरा फिरवाया और कहा कि यह सारे बाल सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में तक़सीम कर दो। वे सारे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में तक़सीम किए, फिर उल्टी तरफ़ से बाल मुंढ़वाए वह सारे के सारे अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु को दे दिए और कहा कि यह तेरी उजरत है। वे सारे उनको अता फ़रमाए फिर उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहाँ ख़ुत्बा दिया। जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐलान फ़रमाया ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ और उस वक़्त अक्सर मजमा सामने था। कुछ ख़ेमों में बैठे हुए थे लकिन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम कहते हैं कि हर आदमी को ऐसे आवाज़ पहुँच रही थी जैसे सामने खड़ा हुआ सुन रहा हो। मैं भी ऐसे ही ख़ेमे में बैठा हुआ सुन रहा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कह रहें हैं कि मेरा पैग़ाम आगे पहुँचा दो तो जितना तबलीग़ का काम हो रहा है इसकी बुनियाद यह हदीस पाक है कि मेरा पैग़ाम आगे पहुँचाओ।

मेरे भाईयों! कोई तहरीक किसी से घर से नहीं छुड़वा सकती सिवाए लालच के या पैसा देकर या कुर्सी देकर या कोई जाएदाद

दे, या कोई ओहदा दे। यहाँ घर छोड़ो, बीवी छोड़ो, बच्चे छोड़ो, मुल्क छोड़ो, पैसा भी अपना लो, धक्के भी खाओ, चौलिस्तान में भी फिरो, रेगिस्तान में भी फिरो, तुर्किस्तान में भी फिरो, ईरान में भी फिरो और किसी से कुछ न मांगो। यह कोई जमात नहीं कर सकती। यह अन्दर की चीज़ है, ख़त्मे नबुव्वत है जो मुसलमानों को उठाकर चला रही है।

मुसलमानों की बेदीनी का तज़किरा

वहाँ राएविन्ड में एक जमात ने बलूचिस्तान से ख़त लिखा कि जब उन्होंने आज़ान दी तो बस्ती के लोगों ने कहा कि आज यहाँ कोई सौ साल के बाद आज़ान दी गई। यूरोप की नहीं बता रहा हूँ। बलूचिस्तान में, जो पाकिस्तान का हिस्सा है, साथ ही पाक लगा है, सारी नापाकियां हो रहीं हैं। तो नाम रखने से या ग़ुलाम रसूल रखने से कोई ग़ुलाम रसूल तो नहीं बनता। ग़ुलामी से ग़ुलाम रसूल बनता है नाम रखने से ग़ुलाम रसूल नहीं बनता नाम रखने से ग़ुलाम रसूल नहीं बनता, ग़ुलाम मुहम्मद से ग़ुलाम नहीं बनता वजूद को ग़ुलामी में डालने से ग़ुलाम मुहम्मद बनता है। एक अरबों की जमात गई तजाकिस्तान। जब वे निकलने लगे तो कहने लगे कि आज से सात सौ साल पहले हमारे पास अरब आए थे। वे हमें कलिमा दे गए थे। आज सात सौ साल के बाद तुम्हें देखा है। अल्लाह के वास्ते अब दोबारा सात सौ साल के बाद मत आना बल्कि बार बार आते रहना। सारे रास्ते आज़ाद हैं। मुसलमान कलिमा नहीं जानते कोई पता नहीं कलिमे का। सौ सौ दफ़ा उनसे कलिमा दोहराते हैं कलिमा उनकी ज़ुबान पर नहीं

चढ़ता। रोते हैं, दीवारों पर टक्करें मारते हैं कि हमें कलिमा क्यों नहीं आता। उनको किसने सिखाना है? कौन ज़िम्मेदारी ले? क्या आपके ज़िम्मे नहीं, मेरे ज़िम्मे भी कोई नही तो फिर किसके ज़िम्मे है इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी? सब से बड़ा अज़ीमुश्शान इन्सान जो इस काएनात का सरदार है, वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है और आप इस फ़िकर के लिए पत्थर खाते फिर रहें हैं और दांत तुड़वा रहे हैं, घर छोड़ रहें हैं, पेट पर पत्थर बांध रहे हैं, काफ़िरों की गालियां सुन रहे हैं, कमर पर ओजड़ी डाली जा रही है, गर्दन में चादर डाल कर मरोड़ा जा रहा है, पत्थर पड़ रहें है, गालियां पड़ रही हैं, ज़ख़्म लग रहे हैं तबलीग़ के लिए। अब इस उम्मत को समझाना पड़ रहा है कि तबलीग़ तुम्हारा काम है। तबलीग़ी जमात किसी एक की जमात नहीं, बल्कि हर मुसलमान मुबल्लिग़े इस्लाम है, करे या न करे उसकी मर्ज़ी लेकिन हर मुसलमान तबलीग़ वाला है। हर मुसलमान के ज़िम्मे नमाज़ फ़र्ज़ है नहीं पढ़ता तो उसकी नमाज़ मॉफ़ नहीं होगी। हर मुसलमान के ज़िम्मे रोज़ा फ़र्ज़ है न रखे तो रोज़ा मॉफ़ नहीं हो गया। हर मुसलमान तबलीग़ वाला है न करे तो तबलीग़ उससे मॉफ़ तो नहीं हुई। दुनिया में चार अरब काफ़िर हैं एक अरब मुसलमान हैं। चार अरब काफ़िरों के लिए कोई नहीं। एक अरब मुसलमान हैं उन से तौबा करवाने के लिए कोई नहीं आएगा और वे कहते हैं कि काफ़िरों को तबलीग़ करो। अल्लाह के बन्दों को कोई समझाए कि मुसलमान जब बिगड़ जाता है तो अल्लाह ने बिगड़े हुए मुसलमानों में भी नबी भेजे हैं। नबी सिर्फ़ काफ़िरों में नहीं आए बल्कि नबी बदकार मुसलमानों को भी तबलीग़ करने के लिए आए। जितने बनी इसराइल में,

इसराइल के नबी हैं सारे के सारे मुसलमानों में आए ﴿ولقد ارسلنا موسى بايتنا﴾ हमने मूसा अलैहिस्सलाम को भेजा किस लिए भेज? ﴿ان اخرج قومك﴾ अपनी क़ौम को निकालो। ﴿من الظلمت الى النور﴾ ज़ुलमत से रौशनी में, अन्धेरों से रौशनी की तरफ़ उनको लेकर आओ तो यह मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के पास ही गए हैं या बनी इसराइल के पास भी गए। मूसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत फ़िरऔन के लिए भी है और बनी इसराइल के लिए भी है। बनी इसराइल बिगड़ चुके हैं और फ़िरऔन काफ़िर है। काफ़िर को कहा कलिमा पढ़ो, अपनी क़ौम से कहा तौबा करो। यही काम इस उम्मत का है। इस लिए मूसा अलैहिस्सलाम का क़िस्सा 27 पारों में आता है बाक़ी इतना किसी नबी का नहीं आया। 136 दफ़ा मूसा अलैहिस्सलाम का नाम क़ुरआन में मौजूद है और 27 पारों में उनका नाम है सिर्फ़ चौथा पाँचवा और चौदहवाँ सिपारा। इसमें नहीं बाक़ी सारे क़ुरआन में है क्योंकि इस उम्मत की मुशबिहत थी। मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन पर मेहनत कर रहे हैं, कलिमा पढ़ो और अपनी क़ौम से कह रहे हैं तोबा करो। हमारे भी यह दो काम हैं। हम सारी दुनिया से कहें कि कलिमा पढ़ो, अपनों से कहेंगे तोबा करो। अपनों से तौबा करवाना खुद तोबा करना और सारी दुनिया के काफ़िरों को कलिमे की दावत। यह इस उम्मत की ज़िम्मेदारी है किस वजह से? ख़त्मे नबुव्वत की वजह से, तबलीग़ी जमात की वजह से नहीं ख़त्मे नबुव्वत की वजह से।

मेरे भाईयों! आप के पास भी इस लिए आए हैं कि इन दो बातों को समझें अच्छी तरह। कोई दुनिया निजात नहीं पा सकता जब तक कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

के तरीके पर न आ जाएं। लिहाज़ा हर मुसलमान इसको सीखे और अब दुनिया में नबी नहीं आएगा दीन की मेहनत के लिए। तो मेरे भाईयों! इस्लाम कोई विरासत नहीं है। नबियों की औलाद काफ़िर हो गई। औलिया, ग़ौस, क़ुतुब व अब्दाल की औलाद काफ़िर हो गयीं। कोई रियासत नहीं चलती। इस्लाम मेहनत से आता है। मेहनत करेगा मिलेगा। बाप आलिम तो बेटा आलिम नहीं हो सकता जब तक खुद कोशिश व मेहनत न करे। मेहनत करेगा तो मिलेगा। बाप अल्लाह का वली है तो बेटा अल्लाह का वली नहीं हो सकता। मेहनत करेगा तो मिलेगा। शाह अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० बहुत बड़े चिशतिया सिलसिले के बुज़ुर्ग गुज़रे हैं उनका बेटा कबूतर बाज़ और उनके ख़लीफ़ा चले गए बलख़। एक मर्तबा एक मिरासी ने उनके बेटे को सबक़ सिखाने के लिए पीर का भेस बदला। अब वह चोग़ा पहने आगे आगे चलने लगा और उसके पीछे पीछे मुरीद, आगे वह पीर बनकर जा रहा है तो उन्होंने ऊपर से देखकर मज़ाक़ किया कि यह मिरासियों ने गद्दियां कब से संभाल लीं तो उस मिरासी ने कहा जब गद्दी वाले ने कबूतर संभाले मिरासियों ने गद्दियां संभाल लीं। यह विरासत नहीं कि अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० का बेटा शाह अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० बन जाए। जो जान लगाएगा उस को मिलेगा जो नहीं लगाएगा गुमराह हो जाएगा। अब उनको चोट लगी नीचे आए माँ से पूछा मेरे वालिद की विरासत कहाँ है। कहा वह तो बलख़ चली गई। कहा किस के पास? कहा निज़ामुद्दीन बलख़ी। वहाँ से पैदल चले। हिन्दुस्तान से बलख़ पहुँचे। जब उनको पता चला कि मेरा पीर ज़ादा आया है तो उन्होंने इस्तिक़बाल किया

गद्दी से उठ गए उनको वहाँ बिठाया, खुद नीचे बैठे। इकराम हो गया। पूछा बेटे कैसे आए हो? कहा जी मैं तो अपने बाप की विरासत लेने के लिए आया हूँ। फ़ौरन रंग बदल गया खड़े हो गए एक लात मारी उठ यहाँ से या तो उसको गद्दी पे बिठाया या लात मारी। उठो यहाँ से। चल तो दरी में जाकर बैठो। वहाँ से उठाया जूतों में बिठाया और फिर कई दिन पूछा ही नहीं कौन था कौन नहीं था। फिर कहा इसका बिस्तर हमारे अस्तबल में लगा दो। घोड़ों के अस्तबल में बिस्तर लगवाया। एक ताक़ दे दिया, एक झोली दे दी और फिर इसमें बिठा कर ज़िक्र में लगा दिया। एक साल ज़िक्र करवाया एक साल के बाद एक बान्दी को भेजा। कहा इस के पास से घोड़े की लीद लेकर गुज़रो और उसके सामने गिरा दो और देखो क्या करता है? तो उसने लीद गिराई तो कहने लगा अन्धी हो नज़र नहीं आता। उसने आ कर बताया कि यह कह रहा है। उन्होंने कहा कि कमी है एक साल और रगड़ दिया। साल के बाद फिर उसको टोकरा दिया कि उसके सामने गिरा दो तो उन्होंने जाकर गिरा दिया। तो उसको यूँ देखा, बड़ी तेज़ नज़रों से, बोले कुछ नहीं। बस यूँ ही देखा गुस्से में। उसने फिर आकर बताया तो कहा कि अभी कम है। एक साल और रगढ़ दिया। तीन साल गुज़र गए। पगड़ी बांधने से आदमी को विरासत थोड़े मिल जाती है। जान लगानी पड़ती है तो मिलती है। यह दुनिया की पगड़ियां नहीं हैं कि बाप मर गए बेटे को पगड़ी बांध दो। चल भई ज़मीन हो गई, मिल भी हो गई, कारोबार भी हो गया। यह दीन है विरासत में नहीं आता, कुर्बानी से आता है। तीन साल गुज़र गए फिर भेजा बांदी को कि अब फिर उसके सामने लीद

गिराओ, अब उसने लीद गिराई तो वह एक दम उठ गए, खड़े हो गए और सारी लीद उठाकर दोबारा उसके टोकरे में डाली फिर टोकरा उठा लिया और कहा कि कहाँ ले जाना है मुझे बता दो? मैं छोड़ आऊँ। तीन साल में यह तब्दीली आई। जब उसने जाकर बताया तो कहा कि अच्छा बस ठीक है तो अगले दिन बुलवाया और कहा कि आज हम शिकार को चल रहे हैं तुम हमारे साथ चलो। शिकार पर चले तो शिकारी कुत्ते उनको पकड़ा दिए। कुत्ते से शिकार जाएज़ है। हज़रत अदी बिन हाकिम शिकारी थे और यह सारे शिकार के मसाइल उनसे रिवायत हैं। उन्होंने रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछ कर सारी उम्मत का भला कर दिया। तो कुत्ते से शिकार जाएज़ है। तो कुत्ते उनको पकड़ा दिए। कहा छूटने न पाएं, ख़रगोश निकलने न पाए, इनको ख़्याल आया कि कुत्ते हैं जान्दार हैं। तीन साल की रगड़े खा खा कर मेरे अन्दर अब वह ताक़त तो है ही नहीं अगर कुत्तों ने झटका लगाया तो कुत्ते छूट जाएंगे तो उन्होंने रस्सी अपनी कमर से बांध ली। आगे ख़रगोश निकले, कुत्तों ने लगाया ज़ोर, तो इतनी ताक़त तो थी नहीं कि उनको साथ लेकर चल सकते और इतनी जान भी उनमें नहीं थी कि खड़े हो सकते, गिर गए और घिसटते चले गए। बहुत सारी ख़राशे आ गयीं। इतने में हज़रत निज़ामुद्दीन रह० आ गए। वह चौंक पड़े। हाथ से कहा हुज़ूर क़ुसूर हो गया मॉफ़ कर दीजिए। उसी वक़्त हुक्म दिया छुड़ा दो कुत्ते। कुत्ते छुड़ा दिए अब दूसरा रुख़ आया हज़रत निज़ामुद्दीन रह० उसके पाँव चूम रहे हैं और हाथ चूम रहें हैं माथा चूम रहे हैं। कहा बेटा जो कुछ तेरे बाप ने मुझे दिया था मैं ने तुझे दे दिया। अब तुम मुझे मॉफ़

करना। इसी तरह यह चीज़ मिलती है। इस के बग़ैर मिलती नहीं और कोई रास्ता है ही नहीं मिलने का।

फ़ज़ाइले तबलीग़

घर छोड़े बग़ैर कुछ नहीं आता। इस उम्मत ने घर छोड़ा तो कलिमा दुनिया में फैला। अपने घरों को अलविदा कहा तो काएनात में इस्लाम गूंजा। इस लिए भाई सारी दुनिया के इन्सान अल्लाह के हुक्मों पर आएं, यह इस पूरी उम्मत के ज़िम्मे है। घर बैठने वाला और अल्लाहक के रास्ते में फिरने वाला कभी बराबर नहीं होंगे। जन्नत में नूर की चमक उठेगी। सारी जन्नत रौशन हो जाएगी। नीचे वाले जन्नती कहेंगे या अल्लाह! यह कैसा नूर है। फ़रिश्ते कहेंगे यह जन्नतुल फ़िरदौस का जन्नती है। वह अपने घर से निकला यह उसके चेहरे का नूर है। जिसने सारी जन्नत को रौशन कर दिया, तो नीचे वाले कहेंगे या अल्लाह! इसको यह दर्जा क्यों दिया? तो अल्लाह तआला कहेंगे तुम घर बैठते थे यह मेरे रास्ते में फिरता था तो तुम और यह कैसे बराबर हो सकते हैं।

तबलीग़ एक अज़ीम मेहनत है

मेरे भाईयों! इस तबलीग़ के काम को जमात मत समझें। यह दो बातों की मेहनत है। उन दो बातों में कोई ऐसी चीज़ नहीं जो मेरी ज़रूरत है आपकी ज़रूरत नहीं है। जिस इन्सान ने दुनिया में आँख खोली है उसकी ज़रूरत है कि अल्लाह और रसूल का फ़रमाबरदार बनकर चले और यह काएनात का क़ानून है कि कोई

काम सीखे बग़ैर नहीं आता। मुसलमान घर में पैदा होने से इस्लाम नहीं आता। इस्लाम सीखा जाता है। डाक्टर के घर में पैदा होने से बच्चा डाक्टर नहीं बनता। उसे डाक्टरी सीखनी पड़ती है। इसको (इस्लाम को) सीखें और कोई भी नहीं आएगा। इसको आगे फैलाएं। यह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जो हमारे ज़िम्मे नमाज़ लगा गए, रोज़ा ज़िम्मे कर गए, हज ज़िम्मे कर गए, ज़कात ज़िम्मे कर गए, तबलीग़ भी ज़िम्मे कर गए। सारी दुनिया से लोग आ रहें हैं। अरब भी आ रहा है अजम भी आ रहा है। छः बर्रे आज़म के मुसलमान हर राएविन्ड में होते हैं। बाज़ ऐसे लोगा आते हैं जो ज़ुबान नहीं जानते। चार महीने लगाते हैं। अब गूंगा न समझे न सुने चार महीने लगा रहा है। भई उसको क्या चीज़ लेकर चल रहा है? भई यह ख़त्मे नबुव्वत है जो अन्दर बैठी हुई है वह लेकर चल रही है। गूंगे माज़ूर, पाँव से, टांगों से माज़ूर चल रहे हैं। अरब के उलमा आ रहे हैं। क़ुरैश आ रहें हैं, मक्के वाले आ रहे हैं, मदीने वाले आ रहे हैं। पिछली सदियों में कोई ऐसी मेहनत नहीं हुई जिसने छः बर्रे आज़म को लपेट में ले लिया हो। पूरी दुनिया कोई ख़ित्ता इस वक़्त ख़ाली नहीं जहाँ पैदल जमातें न चल रही हों। अपने पैसों से धक्के खाते हैं। एक दफ़ा हम कोयटा से वापस आ रहे थे। दर्जा हरारत जो सिफ़र से नीचे था। चार पाँच डिगरी नीचे था। बर्फ़ जमी हुई थी सारे पहाड़ों पर। ज़ियारत के क़रीब से हम गुज़र रहे थे। वहाँ कोयटा से भी ज़्यादा ठंडक थी और गाड़ी का जो मीटर था वह काम नहीं कर रहा था। इंजन बिल्कुल ठंडा हुआ पड़ा था। मेरी नज़र ऊपर पड़ी तो पहाड़ की चोटी पर एक जमात पैदल चल रही थी। हमें

मोटर में बैठकर ठंड लग रही थी और वे इस शदीद सर्दी में पहाड़ के ऊपर चल रहे थे। कौन उनको चला सकता है? अन्दर का ईमान है और ख़त्मे नबुव्वत का यक़ीन है कि मेरा नबी आख़िरी है और कोई नबी नहीं आएगा, मुझे जाना है।

तबलीग़ी काम की बरकात और समरात

मेरे भाईयों! सारी दुनिया में नियत करके चार-चार महीने इसको लगा कर सीख लें फिर सारे आलम में फिर कर इसकी दावत कर दो। अफ़रीक़ा और अमरीका में बड़ी दुनिया पड़ी है, जहाँ आज तक कोई नहीं गया और जाना हमारे ज़िम्मे है। एक जज़ीरा था आस्ट्रेलिया। वहाँ पाकिस्तान की नहीं जुनूबी अफ़रीक़ा की एक जमात गयी। वहाँ दस हज़ार की अरब आबादी थी लेकिन वे सब ईसाइ हो चुके थे। उन्होंने एक जगह आज़ान देकर नमाज़ पढ़ी। जब सलाम फेरा तो एक बूढ़ी औरत ने उनसे बात की कि यह जो तुम ने काम किया मेरे बाप दादा किया करते थे। हम अरब हैं लेकिन हम भूल चुके हैं सब कुछ। तो उन्होंने कहा कि तुम हमारे पास आओ। हम इस लिए आए हैं कि अपने भाईयों को भूला हुआ सबक़ याद दिलाएं। वह बूढ़ी औरत गई और मकानों से लड़के लड़कियों, बड़े छोटे सब को लेकर आई और उन्होंने पूरा ग्राउंड भर दिया। आगे उन्होंने उनको दावत दे देकर सब को कलिमा दोबारा पढ़ाया। पिछले साल हम अमरीका गए तो शिकागो से एक जमात टैक्सी ड्राइवरों की जो टैक्सी चलाते हैं वे भी तबलीग़ में वक़्त देते हैं। एक चिल्ले के लिए ब्राज़ील गए। 800 आदमी उनके हाथ पर मुसलमान हुए। आठ

सौ। पूरा क़बीला था आठ सौ अफ़राद का। जो क़बीले का सरदार था। उसको दावत दी वह मुसलमान हुआ। सारे क़बीले को इकठ्ठा करके दावत दी तो सब मुसलमान हो गए। तो यह थोड़े थोड़े काम की बरकत है। जब सब मुसलमान तबलीग़ का काम करने लगें तो सारी दुनिया में इस्लाम फैल जाएगा। बताओ भाई कौन हिम्मत करेगा हौसले के साथ। हाँ भाई! सुना है यहाँ से नक़द जमात निकल रही है। कोई बाहर नाम लिखे, कोई अन्दर लिखे। भाई कोई मेरी बात भी समझ में आई कि नहीं (आ रही है)

हज़रत मौलाना इलयास साहब रह० का वाक़िया

एक बूढ़े से मौलाना इलयास साहब रह० ने कहा चार महीने लगा। वह कहने लगा कि क्या चार महीने लगाऊं मुझे तो कलिमा भी नहीं आता। तो उन्होंने कहा कि ऐसा कर बस्ती बस्ती जाओ। लोगों से यूँ कहो कि मेरी उमर सत्तर साल गुज़र गई मैंने कलिमा भी नहीं सीखा तुम यह ग़ल्ती न करना, तुम कलिमा सीख लो। उसका नाम मौजू मेराती था। इस मौजू को जो कलिमा नहीं जानता था उसके हाथ पर अठ्ठारह हज़ार आदमी नमाज़ी बने और ताएब हुए।

सबसे पहली चीज़ तौबा है

अगर तीन दिन के लिए जाएं तो ख़ुद भी तौबा करें औरों से भी तौबा करवाएं। अल्लाह से काम करवाना है तो पूरे पाकिस्तान से तौबा करवाएं। यह हुकूमत कुछ भी नहीं कर सकती। ये तो

हम से भी ज़्यादा बेचारे ज़रूरत मन्द हैं। हम तो इन से थोड़े ही ज़रूरत मन्द हैं। ये हम से भी ज़्यादा ज़रूरत मन्द हैं। इन से कुछ नहीं होगा, अल्लाह से होगा और अल्लाह से करवाना है तो तौबा करें और करवाएं। बोलो भाई! कल से कौन भाई हिम्मत करता है। अल्लाह फ़रमाते हैं जो लोगों के दिलों में मेरी मुहब्बत बिठाए वे मेरे महबूब हैं, तो हम लोगों से तौबा करवाएं तो अल्लाह के महबूब बन जाएंगे।

एक जादूगर का वाक़िया

भाई! समझ में नहीं आ रहा है कि एक डाक्टर था वह एक मिनट की एक हज़ार डालर फ़ीस लिया करता था। दुनिया के बड़े बड़े होटलों में उसके प्रोग्राम हुआ करते थे। अरब का शामी और उसने मुसख़्ख़र किये हुए थे शयातीन और पता नहीं क्या चीज़। अजीब चीज़ था वह। हमें भी उसने बहुत सी चीज़ें दिखायीं। तो एक दिन मुझसे कहने लगा, जुमे की नमाज़ के बाद मेरे पास आकर कहने लगा मेरा शैतान आया था मेरे पास और आकर बैठ कर मेरे पास रोने लगा कहने लगा डाक्टर राकी, राकी उसने अपना नाम रखा हुआ था। अब्दुल क़ादिर था। वैसे वह अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० की नसल में से था। नसल अरबी, हस्नी, क़ादरी और काम यह कर रहा था। तो कहने लगा आज मेरा शैतान मेरे पास आया था और कह रहा था कि डाक्टर राकी तुमने बीस साल की दोस्ती को पाँच मिनट में तोड़ दिया, तो मैंने उससे कहा बीस साल मैंने झूठ को आज़माया अब कुछ दिन सच को भी आज़माने दो। आगे मुझसे कहता है कि बात तो तुम्हारी

ठीक है सच ही में निजात है लेकिन फिर भी जल्दी क्या है बाद में तौबा कर लेना। यहाँ आकर मार देता है कि अभी जल्दी क्या है फिर तौबा कर लेना। इसमें बहुत से बग़ैर तौबा के मर जाते हैं। दूसरा कहता है तौबा का क्या फ़ायदा इधर करूंगा उधर टूट जाएगी। ऐसी तौबा से क्या फ़ायदा।

तौबा करने से इन्सान बिल्कुल पाक साफ़ हो जाता है

मेरे भाईयों! शैतान ने कहा जब अल्लाह तआला ने उसको मरदूद किया कि ﴿ابری اغوی عبادك﴾ मैं तेरे बन्दों को गुमराह करता रहूँगा। अल्लाह ने फरमाया ﴿ما أبری اغفرلهم مااستغفرونی﴾ मैं भी जब तक वे तौबा करते रहेंगे मॉफ़ करता रहूँगा। इसमें एक बात और समझने की है कि अल्लाह तआला की ज़ात असर से पाक ज़ात है असर से बाला तर ज़ात है। आप मुझ से ज़्यादती करें, मॉफ़ी मांगे। मैं मॉफ़ कर दूँगा। फिर ज़्यादती करें, फिर मॉफ़ी मांगे तो मैं कुछ देर लगाऊँगा चूँकि मेरे ऊपर असर हुआ है इस ज़्यादती का। फिर कुछ देर बाद मॉफ़ कर दूँगा। फिर मेरे ऊपर ज़्यादती करें फिर मॉफ़ी मांगे तो फिर शायद मैं मॉफ़ न करूँ कि तूने क्या खेल बनाया हुआ है। इधर बेइज़्ज़ती करते हो, इधर मॉफ़ी मांगते हो क्यों? मेरे ऊपर असर है। मैं जब गुनाह करता हूँ तो उसका अल्लाह पर कोई असर नहीं होता, जो नेकी करता है अल्लाह पर उसका कोई असर नहीं होता। ﴿لن تبلغوا ضری فتضرونی ولن تبلغوا نفعی فتنفعونی﴾ तुम्हारी नेकी से मुझे कोई नफ़ा नहीं होता, तुम्हारे गुनाह

से मुझे कोई नुक़सान नहीं होता। तुम सारे नेक हो जाओ मेरा मुल्क ज़्यादा नहीं होता, तुम सारे बदकार हो जाओ, मेरा मुल्क घटता नहीं। लिहाज़ा जब तौबा टूटे फिर आदमी सच्चे दिल से तौबा करे। अल्लाह क़ुबूल करता है ﴿استتبنی﴾ मुझ से तौबा मांगता है ﴿تبت علیہ﴾ मैं उनको मॉफ़ कर देता हूँ। ﴿ان استطلقنی﴾ फिर यह तोड़ कर आ जाता है या अल्लाह यह टूट गई फिर कर रहें हैं हम ﴿عقلت لہ﴾ मैं फिर जोड़ देता हूँ, चल मॉफ़ कर दिया लेकिन तौबा सच्चे दिल से हो। फिर टूट जाए, फिर कर ले, फिर टूट जाए, फिर कर ले। एक दिन यह तौबा करना इसको तौबा पर ले आए तो यह भाई यह तो सारे भाई नियत कर लें कि तौबा करके जाना है यहाँ से। अगर नमाज़ नहीं पढ़ी तो आज से नमाज़ शुरू कर दें। रोज़ा नहीं रखते हैं तो अब के आएंगे तो रखेगें और सर्दी आए तो उसकी क़ज़ा शुरू कर दें जो नहीं रखे तो उसकी क़ज़ा शुरू कर दें। जो नमाज़ें छोड़ी हैं तो हर नमाज़ के साथ एक नमाज़ क़ज़ा पढ़नी शरू कर दें। जिसकी नमाज़ें क़ज़ा हों वह सुन्नतों के बजाए क़ज़ा नमाज़ पढ़ें उसको यह हुक्म नहीं है तो क़ज़ाऐं पढ़ता रहे पूरी हो गयीं तो ठीक है नहीं तो अल्लाह मॉफ़ कर देंगे। किसी का हक़ मारा है तो या मॉफ़ी मांग लें, किसी का माल तबाह किया है तो वापस कर दें। किसी से लड़ाई की है तो सुलह कर लें। ये हक़ूक़ुल इबाद में आ गया। किसी बड़े का, छोटे का, बीवी का, माँ का, बाप का, भाई का, बच्चों का, पड़ौसी का। जिसके कारोबार में ग़ल्ती है वह आज तौबा करे। वह तौबा ऐसी है जो आदमी आहिस्ता आहिस्ता उससे निकलता है। कारोबारी पेचीदगियां हैं उनसे अगर आज तौबा कर ले और कल मर जाए

तो उसे पकड़ नहीं होगी। लेकिन तौबा ही न करे तो मारा जाएगा। आज तौबा करली, अल्लाह आज के बाद अपने कारोबार से हराम निकाल दूँगा। यह एक दिन में नहीं निकलेगा। अब इसको निकालना है। शुरू करें सौ से निन्नानवे पर आए, निन्नानव से अठ्ठान्नवे पर आए, अठ्ठान्नवे से सत्तान्नवे पर आए, सत्तान्नवे से पिच्चान्नवे पर आए। फिर करते करते सिफ़र पर आए। न एक दम कर सकता है और न एक दम करना चाहिए। हिम्मत नहीं होगी, छोड़ देगा। आहिस्ता आहिस्ता पीछे हटना शुरू करें तो एक दिन आएगा कि अल्लाह पाक उसे हर चीज़ से निकाल देगा।

ज़िक्र की कम से कम मिक़्दार

ऐ भाई! अपनी मस्जिदों को आबाद करें। नमाज़ के वक़्त में सारे गांव में कोई आदमी बाज़ारों और घरों में न बैठे। सब मस्जिद में आ जाएं। औरतें घरों में मुसल्ले पर और मर्द मस्जिद में सफ़ों पर, मसाइल उलमा के लिए हैं फ़ज़ाइल सब के लिए हैं। जन्नत क्या है? दोज़ख़ क्या है? इसके लिए कोई पेचीदगी नहीं। यह जन्नत है, यह जहन्नुम है। कुछ वक़्त बैठ कर ज़िक्र किया करें। इसका अदना दर्जा है एक है तीसरे कलिमे की ﴿سبحان الله والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر﴾ एक तस्बीह इस्तिग़फ़ार की। अस्तग़फ़िरुल्लाह भी पूरा इस्तिग़फ़ार भी ﴿استغفر الله ربى من كل ذنب اتوب اليه﴾ इस से अच्छा यह है ﴿استغفر الله الذى لا اله الا هو الحى القيوم واتوب اليه﴾ एक तस्बीह इस्तिग़फ़ार की, एक तस्बीह तीसरे कलिमे

की, और एक दरूद शरीफ़ की, एक सुबह एक शाम तो ये तीन सौ हो गए। तीन सौ सुबह तीन सौ शाम और सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। पूरा दरूद शरीफ़ ﴿اللهم صلى على محمد وبارك وسلم﴾ भी पूरा दरूद शरीफ़ है। ﴿اللهم صلى على محمد وآله واصحابه وبارك وسلم﴾ भी पूरा दरूद शरीफ़ है और दरूदे इब्राहीमी जो नमाज़ का है वह सबसे अफ़ज़ल है वह सबसे आला है तो कोई पढ़ ले तो दो सौ दफ़ा हो गया। सुबह सौ दफ़ा, शाम सौ दफ़ा, दो सौ दफ़ा हो गया तो यह ज़िक्र करने वाला बन जाएगा। अपने घर वालों को भी सिखाए, बच्चों को भी, बेटियों को भी औरों को भी, औरतों को भी सब सिखाएं। हर मुसलमान ज़िक्र करने वाला हो गया। और अपनी कमाइयों में ज़मींदार है तो अश्र निकाले। पैसा जमा पड़ा हुआ तो ज़कात दे मसाइले तिजारत मालूम करें, मसाइल ज़राअत मालूम करें। अल्लाह ज़मींदारों से क्या चाहता है? अल्लाह ताजिरों से क्या चाहता है? उसके मुताबिक़ करें तो हमारा हर अमल जन्नत का रास्ता बन जाएगा। ठीक है न भाई करेंगे नां अच्छा।

❑ ❑ ❑

अम्र बिल मारूफ़ नही अनिल मुन्कर का हुक्म

وقال اللّٰه تعالىٰ يأيها الناس ان وعد الله حق فلا
تغرنكم الحيوة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور ○

وقال النبى ﷺ انكم علىٰ بينة من ربكم من مالم يغرغرفيكم
سكرتان، سكرة الجهل وسكرة قبل رانتم تجاهدون فى سبيل
الله، وتامرون بالمعروف تنهون عن المنكر فاذاغيركم حب
الدنيا فلا تجاهدون فى سبيل الله ولا تأمرون بالمعروف ولا
تنهون عن المنكر والقائلون يومئذ بالكتاب والسنة كالصادقين،
الأولين من المهاجرين والأنصارأوكما قال ﷺ (الحديث)

सब अल्लाह की क़ुदरत है

मेरे मोहतरम भाईयों और दोस्तों! अल्लाह तबारक व तआला ने अपनी ज़ात को पर्दा-ए-ग़ैब में रखा और असबाब को ज़ाहिर फ़रमाया। चीज़ों को ज़ाहिर फ़रमाया और उनके असरात को ज़ाहिर फ़रमाया। इसमें जो अल्लाह की क़ुदरत जो काम कर रही है उसको छुपा दिया। पानी का चलना, बुख़ारात बन के उठना,

बादल की शकल में बदलना, कतरे बनकर बरसना, यह सब ख़ुद नहीं इसमें अल्लाह की क़ुदरत चलती है वह क़ुदरत नज़र नहीं आती, यह ज़ाहिर निज़ाम नज़र आता है, ज़मींदार बीज को ज़मीन में डालता है वह फटता है, कोंपल निकलती है, जड़ नीचे को चलती है, शाख़ें निकलती हैं, डालियां बनती हैं, फल आता है, फूल लगते हैं, शगूफे फूटते हैं, यह सब नज़र आता है। इसमें अल्लाह की क़ुदरत है, अल्लाह का इरादा है। वह इसमें नज़र नहीं आता, बरक़ी चमक नज़र आती है, अल्लाह की क़ुदरत नज़र नहीं आती, चाँद की चाँदनी नज़र आती है, अल्लाह का इरादा उसमें नज़र नहीं आता, दिन का उजाला नज़र आता है, उसमें अल्लाह की क़ुदरत नज़र नहीं आती। काएनात की चीज़ें सामने हैं, बनाने वाला अपनी क़ुदरत और ताक़त और अपने ग़ैबी लश्करों के साथ हमारी नज़रों से ग़ाएब हो जाता है। इन्सान कमज़ोर है। वह यह समझता है जो कुछ हो रहा है चीज़ों के जोड़ तोड़ से हो रहा है और जो कुछ हुआ है सोने चाँदी, रेल-पेल, पैसे से गड्डियों से हो रहा है। यह अक़ीदा ग़लत है। अल्लाह तआला के नबियों की ख़बर यह है कि ज़मीन पर कोई चीज़ वजूद में नहीं आती जब तक आसमान पर फ़ैसला न हो। पहले अल्लाह तआला आसमान पर तय फ़रमाते हैं फिर ज़मीन पर उसको वजूद मिलता है। इसलिए अल्लाह तआला अपने बन्दे से यह चाहता है कि इन चीज़ों का बन के मत चले। कारोबार का ग़ुलाम बन के मत चले बल्कि अल्लाह को ग़ुलाम बन के चले। याद रखिए यहाँ वह होगा जो अल्लाह चाहता है, वह नहीं होगा जो हम चाहते हैं। ﴿عبدی انت تريد وانا اريد ولا يكون الا ما اريد﴾ ऐ इन्सान एक तेरा इरादा है

एक मेरा इरादा है। अरे इन्सान! जो तू चाहता है वह मेरे बग़ैर नहीं हो सकता। जो अल्लाह चाहता है, अल्लाह कहता है जो मैं चाहता हूँ वह तुम सब के बग़ैर मैं कर लेता हूँ, जो मैं चाहता हूँ पहले तुम वह कर दो फिर जो तुम चाहते हो वह मैं कर दूँगा। ﴿وان لم تسلمنى فيما اريد أطعتك فيما تريد ولا يكون إلا ما اريد﴾ अगर तूने मेरी चाहत के ताबे अपनी चाहत को नहीं रखा तो मैं तेरी चाहतों में थका दूँगा और होगा फिर भी वही जो अल्लाह चाहता है। मेरे भाइयों! अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत के साथ नज़रों से ओझल है लेकिन अपनी निशानियों से पहचाना जाता है। ﴿سنريهم ايتنا فى الأفاق وفى انفسهم﴾ अल्लाह निशानियां दिखाएगा हमारे अन्दर भी और बाहर भी। अपनी क़ुदरत पर वह पहचाना जाएगा कि ज़मीन और आसमान में बादशाही भी अल्लाह ही की है, बनाने वाला भी अल्लाह तआला है। ﴿هو الذى جعل الشمس ضياءً والقمر نورا﴾ और अल्लाह तआला ही ने सूरज को रौशनी बख़्शी और चाँद को चाँदनी बख़्शी, वह भी अल्लाह ही का काम है। ﴿الم تر كيف خلق الله سبع سمٰوٰت طباقا﴾ सात आसमान अल्लाह तआला ने बनाए। ﴿وجعل القمر فيهن نورا وجعل الشمس سراجاً﴾ सूरज चाँद का उसी ने निज़ाम चलाया कोई चाँदी दी है ऊपर रौशनी दी है। ﴿والله انبتكم من الارض نباتا﴾ हमें भी अल्लाह तआला ही ने पैदा किया, ज़मीन को भी अल्लाह ने बनाया। ﴿ثم يعيدكم فيها﴾ फिर ज़मीन में वापस ले जाएगा। ﴿ويخرجكم اخراجاً﴾ ज़मीन से फिर निकालेगा। ﴿والله جعل لكم الارض بساطا﴾ अल्लाह ही ने ज़मीन को बिछौना बनाया। ﴿الم نجعل الارض مهادا﴾ कौन है मेरे सिवा जिसने ज़मीन को बिछौना बनाया हो। मैं ही तो हूँ जिसने ज़मीन को बिछौना बनाया।

﴿والجبال اوتادا﴾ मैं ही हूँ जिसने पहाड़ लगाए। ﴿وجعلنا الليل لباسا﴾ और रात को छिपने की चीज़ बनाया, तो अल्लाह तआला ने बनाई। ﴿وجعلنا النهار معاشا﴾ दिन को काम के लिए बनाया, तो अल्लाह तआला ने बनाया, रात अल्लाह के इरादे से आई, दिन अल्लाह के इरादे से निकला। फिर रात अल्लाह के इरादे से खड़ी हो जाए तो कोई उसे दिन में बदल नहीं सकता। ﴿قل ارأيتم ان جعل الله عليكم الليل سرمدا الى يوم القيامة﴾ अगर मैं रात को खड़ा कर दूँ (कब तक) क़यामत तक बारह घन्टे के बजाए छः घन्टे, सात घन्टे, आठ घन्टे नहीं। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं अगर इस रात को क़यामत तक खड़ा कर दूँ तो? ﴿من إله غير الله يأتيكم بضياء افلا تسمعون﴾ तो लाओ मेरे अलावा कोई और ख़ुदा जो तुम्हारे लिए दिन को ला सके, तुम्हें कोई दिन नहीं दे सकता जब तक तुम्हारा अल्लाह न चाहे। फिर अल्लाह अपनी क़ुदरत को बताता है। ﴿قل ارايتم جعل الله عليكم النهار سرمدا﴾ अगर मैं दिन को खड़ा कर दूँ, दिन के बारह बजे सूरज को दर्मियान में खड़ा कर दूँ और उसको निकलने न दूँ, रात को आने न दूँ कब तक? ﴿الى يوم القيامة﴾ क़यामत तक। ﴿من إله غير الله﴾ कोई है मेरे अलावा? ﴿يأتيكم بليل﴾ जो कोई रात को ले आए। ﴿تسكنون فيه﴾ ताकि तुम आराम कर सको। ﴿افلا تبصرون﴾ और क्यों नहीं डरते हो, देखते क्यों नहीं हो? ﴿جعل لكم الليل والنهار﴾ तेरा अल्लाह है।

अल्लाह ने हर चीज़ को बग़ैर नमूने के बनाया

जिसने अपनी रहमत के सदक़े में दिन को बनाया, रात को बनाया। यह सब अनोखी बात हैं। ﴿لتسكنوا فيه﴾ रात को आराम

करो। ﴿ولتبتغوا تشكرون﴾ और दिन में काम करके रिज़्क़ को तलाश करो। ﴿ولعلكم تشكرون﴾ शायद कि अल्लाह का शुक्र अदा कर सको। अल्लाह का ख़ालिक़ होना इन आयात से समझ आ रहा है। ﴿والجبال ارسها﴾ पहाड़ लगाए। ﴿والى الارض كيف سطحت﴾ ज़मीन पर ग़ौर करके देखो तो सही! ﴿افلا ينظرون الى الابل﴾ ऊँट में ग़ौर क्यों नहीं करते हो, क्या ग़ौर करें? ﴿كيف خلقت﴾ बनाने वाले ने बनाया कैसे? ﴿والى السماء كيف رفعت﴾ आसमान की तरफ़ निगाहें उठाकर ग़ौर क्यों नहीं करते हो कि इसके बनाने वाले ने इसको कैसे बनाया? ﴿والسماء بنينها﴾ तेरे रब ने बनाया अपने हाथों से। ﴿وانا لموسعون﴾ और उसको फैला दिया वुसअत दे दी। चारों तरफ़ इसको हमारे ऊपर छत बना दिया। ﴿ءانتم اشد خلقا ام السماء بنها﴾ तुम्हारा बनाना सख़्त है या आसमान का बनाना। ﴿رفع سمكها فسوها﴾ इसकी छत को ऊँचा किया बराबर किया। ﴿واغطش ليلها واخرج ضحها﴾ फिर उसमें से दिन को निकाला, रात को निकाला। ﴿والارض بعد ذلك دحها﴾ ज़मीन को बिछाया। ﴿والجبال ارسها﴾ पहाड़ों को लगाया। ﴿اخرج منها ماءها ومرعها﴾ इसमें पानी को निकाला, इसमें चारे को निकाला। ﴿والجبال ارسها﴾ इसमें पहाड़ों को कील बनाके गाड़ा, किसके लिए? ﴿متاعا لكم﴾ तुम्हारे लिए। ﴿ولانعامكم﴾ तुम्हारे जानवरों के लिए। काएनात में तख़्लीक़ अल्लाह की ज़ात को हासिल है। अल्लाह ख़ालिक़ है सारी काएनात का, पूछना था अल्लाह ने सब कुछ बनाया फिर अल्लाह बारी है। ﴿الخالق البارى﴾ बारी उस ज़ात को कहते हैं जो बग़ैर चीज़ों के कील बना दे। हमने लोहे से ये सब कुछ बनाया, लकड़ी से मेम्बर बनाया, लोहे से सारा स्टील बनाया। लोहे से ये बार्डर

बनाये, पंखे बनाए। अल्लाह पाक ने बग़ैर लोहे के लोहा बनाया, पानी के बग़ैर पानी बनाया, सोने के बग़ैर सोना बनाया, इन्सान के बग़ैर इन्सान बनाया, जिन्नात के बग़ैर जिन्नात को पैदा फ़रमाया, जन्नत के बग़ैर जन्नत को बनाया, मिट्टी के बग़ैर मिट्टी को बनाया, हवा के बग़ैर हवा को बनाया, पानी के बग़ैर पानी बनाया, पत्थर के बग़ैर पत्थर, आग के बग़ैर आग को बनाया, चौपाए के बग़ैर चौपाए बनाए, दो पाए के बग़ैर दो पाए बनाए, रेंगने वालों के बग़ैर रेंगने वाले बनाए, तैरने वालों के बग़ैर तैरने वाले बनाए, उड़ने वालों के बग़ैर उड़ने वाले बनाए। ﴿بلٰى وهو الخلاق العليم﴾ वह ज़बर्दस्त पैदा करने वाला है, ज़बर्दस्त इल्म वाला है, चीज़ों से चीज़ें बनायीं। दरख़्त से दरख़्त पैदा फ़रमाया, आम से आम बनाया, अगूंर से अगूंर बनाया, अनार से अनार बनाया। पहला आम ख़ुद बनाया, पहला अगूंर ख़ुद बनाया, पहला अनार ख़ुद बनाया, पहली ख़ुजूर को ख़ुद बनाया, पहली नारंगी ख़ुद बनाया, यह अपनी क़ुदरत से बराहे रास्त बना दे। चीज़ों से चीज़ें बना दें। यह ख़ालिक़ है, बारी है। ﴿المصور﴾ तस्वीर बनाने वाला। बग़ैर नमूने के तस्वीर बनाई, बग़ैर किसी मॉडल के बनाया।﴿البديع﴾ बदीअ कौन सी ज़ात है? जिसके सामने कोई नमूना न हो और अपने इल्म से नमूना अता फ़रमा दे। इन्सान की शक्लों के नमूने, पहाड़ों के नमूने, चौपाए के नमूने, दो पाए के नमूने, पतंगों के नमूने, तितलियों के नमूने। यह मकड़ी सिर्फ़ एक मकड़ी जैसी ख़फ़ीफ़ मख़लूक़ दस हज़ार क़िस्में हैं। एक मकड़ी जैसी मख़लूक़ से दस हज़ार क़िस्म की मकड़ीं पैदा फ़रमा लीं। बग़ैर मॉडल के मॉडल बनाया। मक्खी का मॉडल बनाया, पतंगे का मॉडल बनाया,

इन्सान का मॉडल बनाया, दरख़्तों का मॉडल बनाया, फलों के रंग बनाए, मॉडल बनाए, बदीअ। ﴿هو الله الذى لا اله الا هو﴾ वह एक है, वह अकेला है उसका शरीक नहीं, उसका वज़ीर नहीं, उसका मुशीर कोई नहीं। ﴿ولم يتخذ صاحبة﴾ उसकी बीवी कोई नहीं। ﴿ولا ولد﴾ उसका बच्चा कोई नहीं। ﴿ولم يكن له شريك﴾ उसका शरीक कोई नहीं। ﴿ولم يكن له ولى من الذل﴾ उसकी किसी कमज़ोरी की वजह से मददगार कोई नहीं, दोस्त कोई नहीं, अपनी ज़ात में अकेला, अपनी सिफ़ात में अकेला, अपनी क़ुदरत में अकेला, अपनी बादशाही में अकेला, अपनी किबरियाई में अकेला और सारी काएनात का अकेला, ख़ालिक़ है, तख़लीक़ उसका ख़ास्सा है और कोई उसकी ख़िलक़त में, उसकी तख़लीक़ में कोई उसका शरीक नहीं है। सारे निज़ाम को बनाकर खिलाया भी अल्लाह तआला ने, मालिक भी अल्लाह तआला है। यह सारे निज़ाम को बना के न वह थकता है न वह थका, न वह सोया। पेट में क्या है अंडा, अंडे में क्या है? सब अल्लाह के इल्म में है, पूरी किताब की तरह। ﴿كل شئى عنده بمقدار﴾ हर चीज़ अन्दाज़े के साथ है। ﴿عالم الغيب﴾ ग़ैब का जानने वाला। ﴿والشهادة﴾ हाज़िर का जानने वाला। ﴿الكبير المتعال﴾ बड़ी ज़ात, ऊँची ज़ात, बुलन्द ज़ात। ﴿سواء منكم من اسر القول ومن جهر به﴾ तुम ज़ोर से बोलो, आहिस्ता बोलो, वह जानने वाला है। ﴿ومن هو مستخف باليل﴾ रात को छिप के चलने वाला अल्लाह से नहीं छिप सकता। इन्सान तो दिन में लोगों से छिप जाता है। अल्लाह तआला कहता है रात के अन्धेरे में भी छुपना चाहो तो मुझ से नहीं छुप सकता। ﴿وسارب بالنهار﴾ दिन में चले या रात में चले, आहिस्ता चले, ज़ोर से चले, आहिस्ता बाले,

ज़ोर से बोले, ख़ालिक़ अल्लाह है फिर मालिक अल्लाह है। ﴿الله مالك السموات والارض﴾ ज़मीन अल्लाह की, आसमान अल्लाह का। ﴿الله ما فى السموات وما فى الارض﴾ ज़मीन भी अल्लाह की, आसमान भी अल्लाह का, जो कुछ ज़मीन व आसमान में वह भी अल्लाह तआला का, सारी काएनात। ﴿الا ان الله من فى السموات﴾ पूरी काएनात में ज़मीन के अन्दर, ज़मीन के ऊपर, आसमान के नीचे, आसमान के ऊपर, जो भी है सब अल्लाह का है। ﴿له ما فى السموات﴾ आसमान, जो आसमानों में है। ﴿وما فى الارض﴾ ज़मीन, जो ज़मीन में है। ﴿وما بينهما﴾ ज़मीन व आसमान के दर्मियान जो कुछ हे वह अल्लाह तआला का है, कोई उसका शरीक नहीं। ﴿الله لا اله الا هو﴾ वह एक अकेला अल्लाह है। ﴿الحى القيوم﴾ वह ज़िन्दा है, वह क़ायम है। ﴿فان تولوا فقل حسبى الله لا اله الا هو﴾ अगर यह तेरा साथ छोड़ दे तो कह दे मेरा अल्लाह मुझे काफ़ी है, जो अकेला है जिसका कोई शरीक नहीं। ﴿رب المشرق﴾ मशरिक़ ﴿رب المغرب﴾ वह मग़रिब का रब है। ﴿لا اله الا هو﴾ कोई उसका शरीक नहीं। ﴿رب المشرقين﴾ वह मशरिक़ैन का रब ﴿ورب المغربين﴾ वह मग़रिबैन का रब ﴿رب المشارق و المغارب﴾ वह मशारिक़ का रब वह मग़ारिब का रब ﴿رب السموات والارض وما بينهما﴾ ज़मीन का रब आसमान का रब, ज़मीन व आसमान के दर्मियान का रब। अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाता है ﴿قل لمن الارض ومن فيها﴾ इनसे पूछो ज़मीन आसमान किस का है? ﴿فيقولون الله﴾ कहेंगे अल्लाह का है, अल्लाह की बादशाही है। ﴿افلا تذكرون﴾ फिर तुम नसीहत क्यों नहीं पकड़ते? उनसे पूछो ﴿قل من رب السموات والارض ورب العرش العظيم﴾ कौन है सातों आसमानों का रब और कौन है अर्शे अज़ीम का

रब? ﴿سيقولون الله﴾ कहेंगे अल्लाह ही है। ﴿افلا تتقون﴾ और उनसे कहो डरते क्यों नहीं? ﴿قل من بيده ملكوت كل شئ﴾ इन से पूछो कौन है जिसके हाथ में काएनात की बादशाही है? ﴿وهو يجير﴾ जो पनाह दे सकता है ﴿ولا يجار عليه﴾ जिसको वह पनाह न दे काएनात में कोई उसको पनाह नहीं दे सकता ﴿ان كنتم تعلمون﴾ अगर तुम समझ रखते हो तो बताओ कौन है ज़मीन व आसमान का बादशाह? किस के हाथ में है ज़मीन व आसमान की लगाम? ﴿سيقولون الله﴾ कहेंगे अल्लाह ही के हाथ में है। पस तुम उनसे पूछो तुम पर किस ने जादू कर दिया? रूपए की छंक ने सोने चाँदी की चमक ने, माल की मुहब्बत ने तुम पर जादू कर दिया, अल्लाह से हटा दिया, मालिक भी अल्लाह है।

अल्लाह जो चाहता है वही होता है

मेरे भाईयों! यहाँ सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की चलती है किसी और की नहीं चलती। बादशाह भी अल्लाह, मालिक भी अल्लाह, ख़ालिक़ भी अल्लाह और होता यहाँ वह है जो अल्लाह चाहता है। ﴿يفعل ما يشاء﴾ जो चाहे तेरा अल्लाह करे। ﴿وربك يخلق ما يشاء ويختار﴾ तेरा अल्लाह जो चाहे कर दे जो चाहे पसन्द करे। ﴿ما كان لهم الخيرة﴾ तुम्हें कोई इख़्तियार नहीं, अल्लाह को सारा इख़्तियार है। ﴿فعال لما يريد﴾ जो चाहता है कर देता है। ﴿يهدى من يشاء﴾ जिसे चाहे हिदायत दे, ﴿يضل من يشاء﴾ जिसे चाहे गुमराह कर दे, ﴿يغفر لمن يشاء﴾ जिसको चाहे मॉफ़ कर दे। ﴿يفتح الرزق لمن يشاء﴾ जिसकी चाहे रोज़ी खोल दे। ﴿تؤتى الملك من تشاء﴾ जिसको चाहे बादशाही दे

दे, ﴿وتنزع الملك ممن تشاء﴾ जिससे चाहे बादशाही को ले ले, ﴿وتعز من تشاء﴾ जिसको चाहे इज़्ज़त दे दे, ﴿وتذل من تشاء﴾ जिसको चाहे ज़लील कर दे, ﴿بيدك الخير﴾ सारी भलाईयों का अकेला अल्लाह मालिक है। जन्नत में डाले उसकी मर्ज़ी, दोज़ख़ में डाले उसकी मर्ज़ी। ﴿يختص برحمته من يشاء﴾ जिसको चाहे अपनी रहमत के साथ ख़ास कर ले। ﴿ينصر من يشاء﴾ जिसकी चाहे मदद कर ले, जिसको चाहे छोड़ दे।

अल्लाह की चाहत पर अपनी चाहत क़ुर्बान करो

मेरे भाईयों! यहाँ अल्लाह की चाहत चलती है, बादशाहों की चाहत नहीं चलती, ताजिरों की चाहत नहीं चलती, मेरी चाहत नहीं चलती, आपकी चाहत नहीं चलती, हुकूमत पाकिस्तान हो, हुकूमत अमरीका हो, सात बर्रे आज़म के इन्सानों की हुकूमत हो, यहाँ जिबराइल की चले न मीकाइल की चले, यहाँ न फ़रिश्तों की चले, न नबियों की चले, यहाँ सिर्फ़ अल्लाह की चलती है, क़ुरआन की आयत खोल खोल कर बता रही है:

يفعل الله ما يشآء، يخلق ما يشآء، وربك يخلق ما يشآء ويختار، ويعذب من يشآء، يغفر لمن يشآء، ويعذب من يشآء، تؤتى الملك من تشآء، وتنزع الملك ممن تشآء، وتعز من تشاء و تذل من تشآء، يفتح الرزق لمن يشآء، وينصر من يشآء، يختص برحمة من يشآء، وما تشاوون الا ان يشآء الله رب العالمين.

यह सारी आयतें बता रही हैं कि इस जहाँ में अल्लाह का चाहा चलता है, पैसे वालों की चाहत नहीं चलती, ग़रीबों की नहीं चलती, मालदारों की नहीं चलती, बादशाहों की नहीं चलती,

अल्लाह की चलती है, अल्लाह की, जो अल्लाह चाहे कर दे, हम भी तो अपनी चाहत को पूरा करना चाहते हैं न, हम अपनी चाहत को उसके बग़ैर पूरा नहीं कर सकते। उसके बग़ैर हम ज़िन्दा ही नहीं रह सकते। एक रास्ता है अपनी चाहत को पूरा करने का, ﴿مَن يَشَآءُ﴾ जो जी में आए कर लो। एक रास्ता है नबियों ने बताया, जो अल्लाह ने बताया, अपनी किताब में बताया कि मेरी मान के चलो, इज़्ज़त चाहते हो अल्लाह देगा, अल्लाह से ले लो, माल चाहते हो, अल्लाह देगा, ज़िन्दगी चाहते हो तो अल्लाह देगा, रिज़्क़ चाहते हो तो अल्लाह देगा, औलाद चाहते हो तो अल्लाह देगा, इज़्ज़त चाहते हो तो अल्लाह देगा, सेहत चाहते हो तो अल्लाह देगा, मुहब्बत चाहते हो तो अल्लाह देगा, औलाद चाहते हो तो अल्लाह देगा, कारोबार की बरकत चाहते हो तो अल्लाह देगा, दुश्मन से बचना है तो अल्लाह बचाएगा, फ़रवानी लाएगा तो अल्लाह लाएगा, बरकत लाएगा तो अल्लाह लाएगा, ज़मीन के ख़ज़ाने निकलेगें तो अल्लाह के इरादे से निकलेंगे, बारिश बरवक़्त होगी तो अल्लाह लाएगा, बादल रहमत के आए तो अल्लाह के इरादे से आएंगे, अज़ाब की हवाए न चलें तो अल्लाह की चाहत से रुकेंगी, रहमत की हवा चले तो अल्लाह की चाहत से चलेगी, अल्लाह के इरादे से चलेगी, मुसीबतों के बादल थम जाएं तो अल्लाह के इरादे से थमेंगे, मुहब्बतें क़ायम हों जाए तो अल्लाह के इरादे से होंगी, दुश्मनों पर रौब पड़े तो अल्लाह के इरादे से होगा, दुश्मन मरऊब हो जाए तो अल्लाह पाक के इरादे से होगा, औलाद फ़रमा बरदार होगी तो अल्लाह के इरादे से होगी, मियाँ बीवी में मुहब्बत होगी तो अल्लाह के इरादे से होगी, अड़ौस पड़ौस अच्छा

मिलेगा तो अल्लाह के इरादे से होगा, हमारा रौब छा जाए तो अल्लाह पाक के इरादे से होगा, हमारी ज़िन्दगी में बरकत हो तो अल्लाह के पाक के इरादे से होगी, क़ब्र के अज़ाब से बचना है तो अल्लाह बचाएगा, ईमान पर मरना है तो अल्लाह ईमान पर मारेगा, जन्नत चाहिए तो अल्लाह देगा, दोज़ख़ से बचना है तो अल्लाह बचाएगा, हिसाब से बचना है तो अल्लाह बचाएगा, हिसाब को आसान करवाना है तो अल्लाह करवाएगा, पुल सिरात से गुज़रना है तो अल्लाह गुज़ारेगा, फ़िरदौस लेनी, जन्नत लेनी है, बख़्शिश लेनी है यह अल्लाह के इरादे से होगा, काम अल्लाह ही से होगा, पैसे से नहीं होता, नोटों से काम नहीं बनता।

अल्लाह तआला की इबादत हर वक़्त करनी चाहिए

काम अल्लाह बनाते हैं, दुनिया का दस्तूर कुछ और है, आख़िरत का कुछ और है। यहाँ फ़रमा बरदार को भी देगा नाफ़रमान को भी देगा। ﴿عبدی یا بن آدم﴾ ऐ इब्ने आदम! एक काम तेरे ज़िम्मे है तू मेरी मान कर चल। यह तेरे ज़िम्मे है मैं तुम्हें रोज़ी दूँ यह मेरे ज़िम्मे है। मुझे ऐसा लगता है जैसे यह शर्त है अल्लाह की मानेगा तो अल्लाह देगा, अगर अल्लाह की नहीं मानेगा तो अल्लाह नहीं देगा। अल्लाह ने आगे बात फ़रमाई तू अपना काम छोड़ भी दे तो मैं अपना काम नहीं छोड़ूंगा, तू मेरी इबादत करना छोड़ दे, मेरी इताअत करना छोड़ दे तो जो मेरे ज़िम्मे है, मैंने अपने ऊपर फ़र्ज़ कर लिया है वह मैं नहीं छोड़ूंगा।

मौत तक तुझे रिज़्क़ दूँगा, मौत के बाद क्या होगा? ﴿وامتازوا اليوم ايها المجرمون﴾ ऐ मुजरिमों! आज तुम नेकों से अलग हो जाओ, आज फ़रमा बरदारों से अलग हो जाओ। ﴿يوم ياتی﴾ जब वह दिन आ जाएगा। ﴿لا تكلم نفس الا باذنه﴾ उस दिन अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर कोई बोल नहीं सकेगा। ﴿فمنهم شقی وسعيد﴾ आज कुछ नेक बख़्त, आज कुछ बद बख़्त, कुछ जहन्नुम जा रहे, कुछ जन्नत को जा रहे, वह मसूअला भी अल्लाह हल करेगा, यह मसूअला भी अल्लाह हल करेगा। अल्लाह को राज़ी किए बग़ैर मसूअला हल नहीं होगा। अल्लाह की क़सम पैसे से चार दिन मसूअला हल होगा, मरते ही पैसा पराया और दुनिया में पराया हो रहा है। पैसे से हम मुहब्बत नहीं ख़रीद सकते, पैसे से सुकून नहीं ख़रीद सकते, हम पैसे से माँ बाप की मुहब्बत नहीं ख़रीद सकते, पैसे अमन, चैन, सकून नहीं ख़रीद सकते, तो अल्लाह तआला ही क़ादिरे मुतलक़ ज़ात। ﴿المؤمن﴾ अमन देने वाला, ﴿السلام﴾ कोई है सलामती देने वाला, ﴿المهيمن﴾वह निगेह बान हिफ़ाज़त करने वाला, न पैसे से हिफ़ाज़त, न हथियारों से हिफ़ाज़त, न दवाओं से सेहत, न पैसे से इज़्ज़त, न ग़ुरबत से ज़िल्लत बल्कि मुहिब अल्लाह की ज़ात, मन्ज़िल अल्लाह की ज़ात, अल्लाह की ज़ात मुहीन, अल्लाह की ज़ात जब्बार, अल्लाह की ज़ात क़ादिर।

अल्लाह का अपने बन्दों से ख़िताब

अल्लाह की ज़ात वह क़ादिर, हम मक़्दूर, वह जाबिर हम मजबूर, वह ख़ालिक़ हम मख़लूक़, वह राज़िक़ हम मरज़ूक़, वह रब हम मरऊब, वह मालिक हम ममलूक, हम उसके बन्दे हैं, हम

उसके गुलाम हैं, उसने हमें अपने अम्रे कुन से बनाया है, गन्दे पानी से बनाया है। ﴿الم يك نطفة من منى يمنى﴾ ऐ इन्सान! तू गन्दे पानी से बना, तुम वह दिन भूल गए, तू अपनी पैदाइश को भूल गया है कभी इस पर गौर तो कर। ﴿خلق من ماء دافق﴾ तू उछलते हुए पानी से पैदा हुआ। ﴿من نطفة امشاج﴾ मर्द औरत के पानी से पैदा हुआ। ﴿من حما﴾ गन्दगी बदबूदार मनी से पैदा हुआ, आज तू मेरा दुश्मन बन गया। ﴿يا ابن آدم من اوصل اليك الغذاء وانت في بطن امك﴾ मेरे बन्दे वह दिन याद कर जब तू माँ के पेट में था तुझे रोज़ी किसने पहुँचाई थी, ﴿لم ازل ادبر فيك تدبير﴾ मेरा निज़ाम चला मेरी तदबीर चली, ﴿حتى انفذت ارادتي فيك﴾ मेरा इरादा तेरे अन्दर दाख़िल हो गया, ﴿اخرجتك الى دار الدنيا﴾ मैं तुझे दुनिया में लाया फ़रिश्ते के पर पर लाया और तूने मेरे साथ क्या मामला किया जब तू जवान हुआ, परवान चढ़ा, ﴿فلما تراك و عبدك السوء﴾ अरे बुरे इन्सान तू मेरा नाफ़रमान बन गया, ﴿اهكذا جزاء احسن اليه﴾ अहसान करने वाले का यही बदला होता है कि मैं तेरे ऊपर एहसान करूँ और तू एहसान का बदला यह दे कि मेरा नाफ़रमान हो जाए, ﴿مع ذلك ان سالتى اعطيك﴾ तेरी इन सारी नाफ़रमानियों के बाद तू मांगता है मैं देता हूँ, ﴿ان ستغفرتنى غفرت لك﴾ तू मॉफ़ी मांगता है मैं मॉफ़ करता हूँ, ﴿ان ستقلتني فاقبلت لك﴾ तू कहता है या अल्लाह पिछली तौबा मैं ने तोड़ दी अब मैं दोबारा तौबा कर रहा हूँ, मैं तेरी तौबा दोबारा क़ुबूल कर लेता हूँ, यह नहीं कि एक दफ़ा तौबा क़ुबूल करता हूँ फिर नहीं करता हूँ तू ने एक दफ़ा की मैं ने मॉफ़ कर दिया, ﴿ان ستقالي﴾ फिर तू ने तोड़ कर दोबारा तजदीद चाही, ऐ अल्लाह दोबारा हो जाए तौबा पिछली टूट गई, ﴿فاقبلت لك﴾ मैं

फिर तेरी तौबा क़ुबूल कर लेता हूँ। कोई है मुझसे बड़ा सख़ी, सख़ावत करने वाला, कोई है मुझसे बड़ा करीमकरम करने वाला, तू मुझे छोड़ कर कहाँ जा रहा है? ﴿يا ابن آدم ان ذكرتني ذكرتك وان نسيتني ذكرتك﴾ तू मुझे याद रखता है मैं तुझे याद रखता हूँ तू मुझे भूल जाता है मैं फिर भी तुझे याद रखता हूँ, तू मेरी तरफ़ चल कर आता है, ﴿من تقرب الى﴾ जो मेरी तरफ़ चल कर आया, ﴿فلقيه عن بعيد﴾ मैंने आगे बढ़ कर उसका इस्तिक़बाल किया। ﴿ومن اعرض عني﴾ और जिसने मुझसे मुँह मोड़ लिया, पीठ फेर ली और फिर नाफ़रमानी के रास्ते की तरफ़ चल पड़ा मैं फिर भी उसका ख़्याल करता हूँ, मैं क़रीब जाकर उसको आवाज़ देता हूँ कि मेरे बन्दे मेरी तरफ़ आ जा, तुझे यहाँ पनाह मिलेगी, शैतान के साए में पनाह नहीं, ख़्वाहिशात और लज़्ज़ात के पीछे दौड़ने वाले हमेशा तबाही व बरबादी का शिकार हुए, उधर को मत चल, इधर को आ, तेरी निजात मेरे हाथ में है, मेरे साए में है, मेरे दामन में है, मेरा बन जा सब कुछ तेरा हो जाएगा। ﴿من كان لله كان الله له﴾ जो अल्लाह का हो जाता अल्लाह उसका हो जाता है।

अल्लाह को तौबा बहुत पसन्द है

मेरे भाईयों! हम अल्लाह के बन जाएं फिर सारे मस्अले का हल अल्लाह के हाथ में है। हमारे मसाइल तिजारत से हल नहीं होते, ज़मींदारी से हल नहीं होते, ऐटमी ताक़त बनने से हमारा मस्अला हल नहीं होगा, हुनैन का दिन याद करो मेरे भाईयों! जब बारह हज़ार मुसलमानों ने कहा आज हमें कोई नहीं हरा सकता और ये बारह हज़ार हमारे जैसे नहीं थे। ये सहाबा थे सहाबा

किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम जिनके जैसा न धरती ने देखा न देखेगी। ﴿خير الخلائق بعد الانبياء﴾ जो नबियों के बाद सबसे अफ़ज़ल तरीन मख़लूक़ थी, उनकी ज़ुबान से निकला हम ताक़तवर हैं, हमें कोई हरा नहीं सकता, अल्लाह पाक ने ऐसी शिकस्त दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अकेला छोड़ कर भाग गए। ऐटमी ताक़त बनने से मस्अला हल नहीं होगा, तौबा करने से मस्अला हल होगा, अल्लाह की तरफ़ झुकने से मस्अला हल होगा, अल्लाह के दामन में पनाह लेने से मस्अला होगा, तौबा करें मेरे भाईयों अल्लाह को तौबा कितनी पसन्द है, अल्लाहु अकबर, अल्लाह की शान यह है अल्लाह यूँ नहीं चाहेगा कि अब आए तौबा करने, पहले कहाँ गए थे? अल्लाह यूँ नहीं कहेगा अब आए मॉफ़ी मांगने, पहले कहाँ गए थे? बाप कहेगा, भाई कहेगा, दोस्त कहेगा, बीवी कहेगी, ख़ाविन्द कहेगा, अल्लाह यह नहीं कहता। हज़ार साल की ज़िन्दगी हो, दस हज़ार साल की ज़िन्दगी हो, एक लाख साल की ज़िन्दगी हो और वह गुनाह में गुज़ारी हो तो अल्लाह यह नहीं कहेगा तूने दस साल मेरी नाफ़रमानी की और मैं तुझे दस मिनट की तौबा पर मॉफ़ कर दूँ

मेरे दोस्तों वहाँ ऐसा मामला नहीं है बल्कि हदीस क़ुदसी में आता है ﴿يا ابن آدم يوم لو بلغت ذنوبك عنان السماء﴾ ऐ मेरे बन्दे! तू इतने गुनाह करे कि सारी ज़मीन भर दे, फिर ख़ला को भर दे, आसमान तक तेरे गुनाह चले जाएं, इतने गुनाह करने के लिए कितनी ज़िन्दगी चाहिए? करोड़ों साल भी कम हैं इतने गुनाह करने के लिए, तो अल्लाह क्या कह रहा है तुझे इतनी ज़िन्दगी दूँ, इतने असबाब दूँ और इतनी ढील दूँ कि तू इतने गुनाह करे कि

ज़मीन भर जाए, समन्दर भर जाएं, पहाड़ों के ऊपर चले जाएं, सूरज काला हो जांए, चाँद की चाँदनी कहीं चली जाए, सितारों में भी गुनाह भर जाएं और ख़ला में भी भर जाएं और आसमान की छत के बराबर जाकर तेरे गुनाह चले लग जाएं तो कितने करोड़ साल होंगे और कितना बड़ा यह मुजरिम होगा और अल्लाह तआला कहता है कि सिर्फ एक बोल बोल दे कि या अल्लाह मॉफ कर दे तो मैं तेरे सारे गुनाह मॉफ़ कर दूँगा मुझे कोई परवाह नहीं। ﴿غفرت لك ولا ابالى﴾ हमारा मामला भी किसी दुनियावी बादशाह से नहीं, किसी थाने दार से नहीं, सिर्फ़ अल्लाह करीम की ज़ात से है। अल्लाह तआला की सिफ़ात की कोई हद नहीं।

अहले इल्म हज़रात दो सिफ़्तों में अल्लाह की तारीफ़ लिखते हैं। कहर और ग़सब, यूँ समझ लीजिए ﴿قهار، غفار﴾ ये दो सिफ़्ती नाम अल्लाह की तमाम सिफ़ात को घेरे डालती हैं, ग़सब करने वाला, गुस्से वाला, रहम वाला, करम वाला, फिर अल्लाह तआला इन दोनों सिफ़्तों को मुक़ाबला डाला कि ऊपर एक बहुत बड़ी तख़्ती है। उसकी लम्बाई चौड़ाई अल्लाह पाक के सिवा कोई नहीं जानता तो अल्लाह ने ख़ुद अपने इरादे से इसके ऊपर लिखा हुआ है ﴿ان رحمتى سبقت غضبى﴾ मेरी रहमत मेरे गुस्से से आगे है।

अल्लाह तआला की नेमतें

मज़े हो गए भाई, क्या करें? भाई तौबा कर लें। शैतान क्या कहता है अल्लाह बड़ा ग़फ़ूरुर-रहीम है, लिहाज़ा बस काम करो, झूठ भी बोलो, शराब भी पियो, रिशवत भी लो। बस ये काम

करो, क्यों करो कि अल्लाह बड़ा ग़फ़ूरु रहीम है। यह अजीब फ़लसफ़ा चल पड़ा है। अल्लाह बड़ा मेहरबान है जी, लिहाज़ा सब झूठ, रिशवत, बदयानती, ख़्यानत तमाम काम करो क्योंकि अल्लाह बड़ा मेहरबान है। हाँ भई कुत्ते से सबक़ लो एक रोटी के साथ वह वफ़ा करता है कि सारी ज़िन्दगी आपका दर नहीं छोड़ता, आप उसको मारें तो आगे टूं करता है काटता नहीं है। आपके सामने लेट जाता है और पिटने को तैयार हो जाता है। दो दिन रोटी न डालो आपके दर को छोड़ कर दूसरे के दर पर नहीं जाता। अल्लाह थोड़ा उसे झटकारा दे दे तो सब की हाए हाए, हम ही मिलें हैं अल्लाह को और कोई मिला ही नहीं। तो भाई अल्लाह करीम है तो हम क्या करें? हम तौबा करें, जो मेरे ऊपर इतना एहसान कर रहो है तो मैं भी इस एहसान का बदला दूँ जिसने हवाओं को हुक्म दिया कि चलों मेरे बन्दे के लिए, कभी बादलों के टोले लेकर कभी कशतियों को लेकर, जिसने ज़मीन को हुक्म दिया कि निकालो अपने ख़ज़ाने, कभी सोने की शकल में, कभी चाँदी की शकल में, कभी पीतल की शकल में, कभी लोहे की शकल में, कभी तांबे की शकल में, कभी खोट की शकल में, कभी तलवारों की शकल में। जिस तरह बादलों का हुक्म दिया कि बरसों मेरे बन्दों पर क़तरा क़तरा बन के।

انّا سبینا المآء صبا ثم شققنا الارض شقا فانبتنا
فیھا حبا وعنبا وقضبا وزیتونا و نخلا و حدآئق
غلبا وفاکھۃ وابا متاعا لکم ولانعامکم

हवाएं चलीं, बादल उठे, फ़र्श से क़तरा क़तरा बन के ज़मीन पर फैली, दाना पानी अन्दर गया, बुलबुल ज़रख़ेज़ हुई फिर हमने

दाना डाला उसकी एक शाख़ ऊपर गई, उसकी जड़ नीचे गई, उसको ग़िज़ा पहुँचाई। ज़मीन की रगों से पानी समेट कर जड़ तक ग़िज़ा को पहुँचाया फिर उसको ऊपर उठाया जो ऊपर उठाया है कहीं शाख़ निकली, कहीं डाली निकली, कहीं फूल निकले, कहीं शगूफ़ा निकला, कहीं फल निकला, उसमें मिठास डाली, उसमें रस भरा, इसमें ज़ाएक़े बदले, इसमें ज़ाएक़े भरे, हर रंग अलग, मिठास अलग, ख़ुशबू अलग। हद एक पर नाम लिखा, फ़रिश्तों को मुक़र्रर किया कि जब तक यह आम मेरे बन्दे के मुँह में चला न जाए मेरे पास लौट कर मत आना। इतने बड़े रहम करम के निज़ाम चलाने वाले के सामने सिर झुकाने के बजाए शैतान के सामने झुकाएंगे तो कहाँ जाएंगे?

अल्लाह तो तौबा क़ुबूल करने के लिए तैयार है

तो भाईयों! हम अल्लाह के सामने झुक जाएं, तौबा कर लें। तबलीग़ कोई पेचीदा चीज़ नहीं है, यह कोई फ़लसफ़ा नहीं है, अपने अल्लाह को राज़ी करने की आसान सी मेहनत है, हाँ भाई हम अल्लाह को राज़ी कर लें वह तो राज़ी होने को तैयार बैठा है। क्या कहा?

ولا یرضیٰ لعبادہ الکفر، مایفعل اللّٰہ بعذابکم إن شکرتم وامنتم
وکان اللّٰہ شاکراً علیماء ان تشکروا یرضہ لکم (القران)

वह तो राज़ी होने को तैयार बैठा है कि तुम आओ और देखो रहमत को।

बनी इसराईल में क़हत आ गया। लोग आए मूसा

अलहिस्सलाम के पास कि जी दुआ करो, बारिश नहीं हो रही है, वह सत्तर हज़ार आदमियों के साथ निकले या अल्लाह! बारिश दे दो, नफ़िल पढ़े धूप तेज़ हो गई। मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की या अल्लाह! हमने बारिश मांगी, आपने धूप को तेज़ कर दिया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया इस मजमे में एक आदमी है। वह चालीस साल से मेरी नाफ़रमानी कर रहा है, जब तक वह इस मजमे में मौजूद है तो मैं बारिश नहीं दूँगा, वह यहाँ से निकल जाए तो तब बारिश करूंगा, तो मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐलान किया कि भाई जो इस क़िस्म का आदमी है वह मजमे से निकल जाए, सब को महरूम न करे। अब इस आदमी को पड़ गई मुसीबत, दाएं देखा तो कोई नहीं निकला, बाएं देखा तो कोई नहीं निकला, आगे पीछे देखा कोई नहीं निकला। सोच में पड़ा। ﴿لو خرجت ففتحت نفسه﴾ बाहर निकलूं तो मारा जाऊंगा, ज़लील हो जाऊंगा, रुसवा हो जाऊंगा और खड़ा रहूँ तो बारिश नहीं हो, करूं तो क्या करूं, अब तौबा का ख़्याल आया। अब यह जो तौबा कर रहा है तो यह तौबा नम्बर एक नहीं यह तो दो नम्बर है। अल्लाह की मुहब्बत में तौबा नहीं, अपनी बेइज़्ज़ती के डर से तौबा करना चाहता है, यह ज़हन में रहे कि यह तो अल्लाह के डर के लिए नहीं। यह तौबा तो अपनी बेइज़्ज़ती, अपनी ज़िल्लत के डर से तौबा और अल्लाह का मामला इसके बावजूद क्या है, कहने लगा या अल्लाह! ﴿يا الله ان يتك اربعين سنة فتمهلني فا قبلني﴾ ऐ अल्लाह! मैंने चालीस साल तेरी नाफ़रमानी की और तू मुझे मोहलत देता रहा। मेरे पर्दे रखे, मुझे बेइज़्ज़त नहीं किया, ऐ अल्लाह अगर आज तूने मॉफ़ न किया तो मैं ज़लील हो जाऊँगा, या अल्लाह मेरी तौबा

क़ुबूल फ़रमा ले, अभी इसके अलफ़ाज़ पूरे भी नहीं हुए थे कि हवा चली घटा उठी, अब्र आया, बरसा, सारा रिम झिम पानी ही पानी। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह! निकला तो कोई नहीं, बारिश कैसे हो गई? अल्लाह तआला ने फ़रमाया जिसकी वजह से रुकी थी उसकी वजह से कर दिया, तो अल्लाह तो इतनी जल्दी मान जाता है, इतना करीम है। इन्सान क्या कहता है? नहीं मैं ने अभी मॉफ़ नहीं करना, पहले इनको ठीक करना है। अपनी तो होश कोई नहीं। मेरे ऊपर शैतान कितना ग़ालिब है। अल्लाह को देखो कैसे मॉफ़ कर रहा है। मूसा अलैहिस्सलाम बड़े हैरान हुए कहा या अल्लाह! वह कैसे? अल्लाह ने बड़ा ख़ूबसूरत सा जुमला बोला ﴿تاب الی وتبت علیه﴾ उसने तौबा कर ली हमने सुलह कर ली। चल भई चालीस साल का गुनाह कबीरा, अब देखें कितने बड़े गुनाह थे कि उन गुनाहों ने मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ रोक दिया। फिर और एक मज़े की बात कि अल्लाह ने खुद पहल की, अगर अल्लाह बारिश कर देता तो कोई बात नहीं मगर वह शख़्स गुनाह में चलता रहता। अल्लाह ने बारिश को रोका, बहाना बनाया, भई यह ज़िल्लत से डरता था। यक़ीनन मेरी तरफ़ को आएगा। तो भई हम भी अल्लाह की बारगाह में तौबा करने वाले बनें, कारोबार के ग़ुलाम न-बने, कारोबार का ग़ुलाम बनने का क्या मतलब? मतलब यह है कि लूट कर सब चलाओ, ग़लत हो या सही सब चलाओ, नहीं वह करें जो अल्लाह चाहता है। ज़मींदारी वह करें जो अल्लाह चाहता है, हुकूमत में वह करें जो अल्लाह चाहता है, ज़राअत में वह करें जो अल्लाह चाहता है और शादी में वह करें जो अल्लाह चाहता है, बीवी के साथ वह सुलूक

करें जो अल्लाह चाहता है, माँ बाप के साथ वह करें जो अल्लाह चाहता है, भाई के साथ वह करें जो अल्लाह चाहता है, पड़ोसी के साथ वह सुलूक करें जो अल्लाह चाहता है, छोटों के साथ वह करें जो अल्लाह चाहता है, बड़ों के साथ वह सुलूक करें जो अल्लाह चाहता है, जो अल्लाह कहे वह करें जिससे अल्लाह रोके उससे रुक जाएं यह ला इलाहा इलल्लाह है।

अल्लाह तआला का महबूब बनने का तरीक़ा

तो यह जब तक यक़ीन न होगा कि मेरे अल्लाह से मेरे काम बनते हैं, पैसे से नहीं बनते तो कोई आदमी अल्लाह का पाबन्द बन के चलता नहीं, तो हम इस बात की मेहनत कर रहे हैं कि हर मुसलमान भाई अल्लाह की मान कर चले, अल्लाह का बन्दा बन कर चले। उसके तरीक़े के मुताबिक़ चलें, उसके तरीक़ों के मुताबिक़, उसके हुक्मों के मुताबिक़ चलें। अल्लाह ने अपनी चाहत को बताया हैं, अपनी किताब में ज़ाहिर फ़रमाया और अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी लेकर हमारे अन्दर भेजा कि यह मेरा हबीब है। ﴿لقد كان لكم في رسول الله اسوة حسنة﴾ यह मेरा हबीब है इसके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो मेरे महबूब बन जाओगे, अगर इसके मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारोगे तो मेरे महबूब नहीं बन सकते।

क़ुबूले इस्लाम की वजह से इज़्ज़त

अबू लहब चचा भी, क़ुरैशी भी, हाशमी भी, शुरका भी उसके

बावजूद ﴿تبت يدا ابی لهب وتب﴾ हो गया अबू लहब, दोज़ख़ में चला गया, हाथ टूट गए, बीवी भी गयी और वह भी गया और बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु, हब्शी हो के, हब्शी का बेटा हो ने के बावजूद, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मैं जन्नत में जाऊँगा तो मेरी सवारी की लगाम पकड़ के जन्नत में मेरे साथ दाख़िल होगा। सलमान फ़ारसी हैं, जो ईरान से आए हैं, अबू लहब चचा है, क़ुरैशी है, ख़ानदान का है, वह ख़ानदान से निकल गया ﴿تبت يدا ابی لهب وتب﴾ सलमान फ़ारस के हैं, ईरान के हैं, बाहर से हैं, अजमी हैं, अरबी भी नहीं हैं, क़ुरैशी होना तो दूर की बात है, अरबी भी नहीं हैं, लेकिन जंगे ख़न्दक़ के मौक़े पर जब ख़न्दक़ खोदी गई, अन्सार कहें सलमान हम में से हैं, मुहाजिरीन कहें सलमान हम में से हैं। दोनों में झगड़ा हो गया। अन्सार कहते हैं कि हमारे साथ इनका नाम लिखो, मुहाजिर कहते हैं कि हमारे साथ इनका नाम लिखो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल ने फ़रमाया ﴿السلمان من اهل البيت﴾ तुम आपस में मत झगड़ो सलमान मेरे अहले बैत में से हैं। अब यह अहले बैत में से कैसे हो गए? यह अल्लाह के हबीब की ज़िन्दगी अपनी ज़िन्दगी बनाने से हो गए।

तो मेरे भाईयों! हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सांचे में ढलने की कोशिश करें और इसी के लिए हम कोशिश करते हैं। अल्लाह तआला ने एक हबीब बनाया एक महबूब बनाया या एक ही बनाया या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रसूल बनाया, अपना महबूब बनाया, सारे नबियों से पहले बनाया ﴿اول ما خلق الله﴾ अल्लाह ने मुझे सबसे पहले बनाया

﴾وآخرهم بعثا﴿ अल्लाह ने मुझे सबसे आख़िर में भेजा ﴾ان لي عند الله عشرة اسماء﴿ अल्लाह ने मेरे दस नाम रखे।

अल्लामा सयुती रह० ने एक रिवायत में नक़ल किया है कि जिस दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए, उस दिन से लेकर अगले पूरे साल तक अल्लाह ने किसी औरत को बेटी नहीं दी। सबको बेटे अता फ़रमाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए ख़त्ना के साथ पैदा हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़त्ना नहीं किया गया ﴾ولد مختونا﴿ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़त्ना के साथ पैदा हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाक पैदा हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़िलाज़त नहीं लगी हुई थी, जैसे ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए सारा कमरा रौशन हो गया। हज़रत आमना फ़रमाती हैं कि मग़रिब से मशरिक़ मेरे सामने खुल गए, शाम के महल देखे, मदाइन के महल देखे, हिरा और यमन के महलात अल्लाह पाक ने दिखाया, सारी काएनात को रौशन कर दिया। अभी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए सारी दुनिया के बुत ज़मीन पर जा गिरे, बादशाहों के तख़्त उलट गए और बुत ज़मीन पर जा गिरे, ख़ुद ब ख़ुद ज़मीन पर गिर गए। क्या हुआ बुतों का तोड़ने वाला आ गया, बुत शिकन आ गया, तौहीद का दावत देने वाला आ गया, अल्लाह से मिलाने वाला आ गया, ज़ुलमत का मिटाने वाला आ गया, अन्धेरों को दूर करने वाला आ गया, सारी काएनात को निजात का रास्ता दिखाने वाला आ गया। तूझे भी ज़िन्दगी गुज़ारनी है तो अल्लाह के नबी के तर्ज़ पर गुज़ार जो अल्लाह के महबूब हैं

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान बज़ुबान क़ुरान मजीद

अल्लाह के हबीब हैं। अल्लाह ने क़ुरआन में किसी नबी की क़सम नहीं उठाई सिवाए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ﴿لعمرك﴾ ऐ मेरे नबी तेरी जान की क़सम ﴿انهم لفی سکرتهم یعمهون﴾ यह अल्लाह ने अपने हबीब की क़सम खाई है, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर की क़सम खाई, किसी नबी के शहर की क़सम नहीं खाई ﴿وهذا البلد الامین﴾ फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की क़सम खाई, किसी नबी की रिसालत पर क़सम नहीं खाई ﴿یٰس والقرآن الحکیم انك لمن المرسلین﴾ क़सम है क़ुराने हकीम की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे रसूल हैं फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देते हुए क़सम उठाई क़ुरैशे मक्का की। वही नहीं आई छः महीने तो क़ुरैश कहने लगे इसके रब ने इसे छोड़ दिया, इसका रब इससे नाराज़ है तो अल्लाह तआला ने फ़ौरन क़ुरआन उतारा ﴿والضحی﴾ कसम है दिन की ﴿واللیل﴾ और रात की ﴿اذا سجی﴾ जब वह आ जाए, छा जाए, काली हो जाए ﴿ما ودعك ربك﴾ आप के रब ने आपको हर्गिज़ नहीं छोड़ा आपका रब आपसे बिल्कुल नाराज़ नहीं। आपकी सफ़ाई पेश करते हुए क़सम खाई ﴿والنجم اذا هوی﴾ क़सम है मुझे सितारे की जब वह अपने मदार पर चलता है, जब वह टूटता है कि मेरा नबी गुमराह नहीं है, मेरा नबी वह अपने रास्ते से हटा नहीं बल्कि सही रास्ते पर है, सिराते मुस्तक़ीम पर है। अल्लाह तआला ने किसी नबी के

अख़्लाक़ पर क़सम नहीं खाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदात व अख़्लाक़ की क़सम खाई। क्या फ़रमाया? ﴿نٓ والقلم وما يسطرون﴾ क़सम है कलम की और क़सम है कलम के लिखे हुए की

ما انت بنعمت ربك بمجنون ۝ وان لك لا جرا
غير ممنون ۝ وانك لعلى خلق عظيم ۝

आप बड़े ऊँचे अख़्लाक़ वाले हैं। यह तो क़ुरआन अल्लाह के नबी की सीरत बयान कर रहा है

मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला से तौरात लेने के लिए जल्दी जल्दी आए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जल्दी क्यों आए हो? तो मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ﴿عجلت اليك رب لترضى﴾ या अल्लाह मैं जल्दी आया हूँ ताकि आप राज़ी हो जाएं ﴿لترضى﴾ आप राज़ी हो जाएं। अल्लाह तआला ने अपने हबीब को इर्शाद फ़रमाया ﴿ولسوف يعطيك ربك فترضى﴾ ऐ मेरे हबीब मैं आप को इतना दूंगा कि आप राज़ी हो जाएं। अल्लाह तआला ने दाऊद अलैहिस्सलाम को हुकूमत दी तो इर्शाद फ़रमाया ﴿لا تتبع الهوى﴾ ऐ दाऊद ख़्वाहिश का गुलाम मत बनना। दाऊद अलैहिस्सलाम को नसीहत फ़रमाई कि बाहर की गुलामी न करना, और अल्लाह तआला ने अपने हबीब की सफ़ाई पेश की ﴿وما ينطق عن الهوى﴾ मेरा हबीब ख़्वाहिश की गुलामी में बोलता ही नहीं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की ﴿واجعلني من ورثة جنة النعيم﴾ या अल्लाह जन्नत दे दे। अल्लाह तआला ने अपने हबीब को फ़रमाया ﴿انا اعطينك الكوثر﴾ हमने आप को कौसर अता की ﴿ويطهركم تطهيرا﴾ ऐ मेरे हबीब मैं आपको और आपके घर को

किलियर करके, पाक करना चाहता हूँ।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की ﴿حسبی اللہ ونعم الوکیل﴾ अल्लाह मुझे काफ़ी हो जा, अल्लाह तआला ने अपने हबीब को बिन मांगे फ़रमाया ﴿یا ایھاالنبی حسبك اللہ﴾ ऐ मेरे नबी तेरा अल्लाह तुझे काफ़ी है। अल्लाह तआला की बारगाह में आप ने अर्ज़ किया:

اتخذت ابراهیم خلیلا وموسٰی کریما و علمت لداؤد الحدید
وسخرت لسلیمان ریاحا واحییت لعیسٰی الموت فماذا جعلت لی

या अल्लाह! इब्राहीम अलैहिस्सलाम आपके ख़लील, मूसा अलैहिस्सलाम आपके करीम, दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए लोहा ताबे, सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए हवा ताबे, ईसा अलैहिस्सलाम के लिए मुर्दा ज़िन्दा करने की ताक़त, मेरे लिए क्या है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿اولیس قد اتیت افضل من کل ذلك﴾ ऐ मेरे हबीब मैं ने आपको सबसे आला चीज़ अता फ़रमाई है, वह क्या है? क़यामत तक आपका और मेरा नाम इकठ्ठा चलेगा, जुदा नहीं हो सकता, इकठ्ठा रहेगा। अब यह नहीं बदल सकता, इकठ्ठा रहेगा।﴿نشرح لك صدرك﴾ आपका सीना खोल दिया ﴿ووضعنا عنك وزرك﴾ आपके बोझ हटा दिए ﴿ورفعنا لك ذكرك﴾ आपके ज़िक्र को ऊँचा कर दिया ﴿وجعلت﴾ आपको ख़ातिम बनाया ﴿وجعلت امتك خیر امة یامرون بالمعروف وینھون عن المنكر﴾ आपकी उम्मत को सबसे बेहतरीन उम्मत बनाया कि ये भलाइयों को फैलाते हैं और बुराइयों को मिटाते हैं।

अल्लाह तआला से डरते रहो सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी बन जाओगे

तो भाईयों! ज़िन्दगी गुज़ारनी है तो बिरादरी के तरीक़े पर मत चलिए, फ़ैसला बाद के तरीक़े पर मत चलिए, पाकिस्तान के तरीक़े पर मत चलिए, कौम के तरीक़े पर मत चलिए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर चलिए, आप अल्लाह से रौशन रास्ता ले कर आए।

﴿ليلها كنهارها لا يزيد عنها مالك﴾

इसकी रात भी रौशन, इसका दिन भी रौशन, जो छोड़ेगा, हलाक हो जाएगा, आप ने दुनिया का रास्ता भी बताया और आख़िरत का रास्ता भी बताया, यहाँ कैसे कामयाब होना, वहाँ कैसे कामयाब होना है? अमीर ग़रीब सबके लिए आसान कर दिया।

एक बद्दू आता है या रसुलुल्लाह! ﴿اريد ان اكون اعلم الناس﴾ मैं अल्लामा बनना चाहता हूँ, बड़ा आलिम। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اتق الله تكن اعلم الناس﴾ तू तक़्वा इख़्तियार कर, अल्लाह से डर जा, सबसे बड़ा आलिम बन जाएगा। या रसूलुल्लाह! ﴿اريد ان اكون اغنى الناس﴾ मैं चाहता हूँ सबसे ज़्यादा पैसे वाला बन जाऊँ, सबसे ज़्यादा मालदार बन जाऊँ। हम क्या कहेंगे मिल लगा लो, कारोबार कर लो, तिजारत कर लो, हम लोग तो यही कहेंगे, कपास में यह कर लो, गन्दुम में यह कर लो, हम यही कहेंगे लेकिन अल्लाह के नबी ने क्या कहा ﴿اقنع تكن اغنى الناس﴾

क़नाअत इख़्तियार कर ले सबसे बड़ा मालदार बन जाएगा। या रसुल्लाह! ﴿اريد أن اكون اخص الناس﴾ मैं चाहता हूँ मेरी ख़ुसूसियत क़ायम हो जाएगा, वी आइ पी बन जाऊँ, मेरे ऊपर झंडे के बग़ैर झंडा लग जाए, झंडे वाले के बग़ैर मेरी इज़्ज़त क़ायम हो जाए, मेरी ख़ुसूसियत क़ायम हो जाएगा, लो भाई कैसा आसान नुस्ख़ा बताया ﴿اكثر من ذكر الله تكن من اخص الناس﴾ अल्लाह का ज़िक्र कसरत से किया कर अल्लाह तुझे ख़ुसूसियत अता फ़रमा देगा। अब अल्लाह के हबीब से ज़िन्दगी ले लो। भाईयों उन्होंने कहा या रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿اريد ان اكون اكرم الناس﴾ मैं चाहता हूँ मेरी सबसे ज़्यादा इज़्ज़त हो, बेचारा जो फुट पाथ पर जूती गांठ रहा है वह भी कहता है मेरी सबसे ज़्यादा इज़्ज़त हो, इज़्ज़त हर आदमी के अन्दर की तलब है। अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह रास्ता बताया कि जूती गांठने वाला भी उसको हासिल कर सकता है और महल और बंगले में रहने वाला भी उसको हासिल कर सकता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿لا تشك من امرك شيئا تكن اكرم الناس﴾ अपनी हाजत अल्लाह के सिवा किसी को न बताओ अल्लाह तुझे सबसे ज़्यादा इज़्ज़त देगा। कितना आसान नुस्ख़ा बताया और कहा या रसूलुल्लाह! ﴿اريد ان يوسع على رزق﴾ मैं चाहता हूँ मेरा रिज़्क़ कुशादा हो जाए, मेरा रिज़्क़ बढ़ जाए। कौन नहीं चाहता? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿علم الطهارة يوسع عليك رزقا﴾ तू बावुज़ू रहा कर तेरा रिज़्क़ बढ़ जाएगा, या रसुलुल्लाह! ﴿اريد لا يخسفني ربى﴾ मैं चाहता हूँ मेरा अल्लाह मुझे ज़लील न करे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

﴿احفظ فرجك من الزنا﴾ तू ज़िना करना छोड़ दे, अल्लाह तुझे सारी ज़िल्लतों से बचा लेगा। या रसूलुल्लाह! ﴿اريد ان يكمل ايمانى﴾ मैं चाहता हूँ मेरा ईमान कामिल हो जाए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿حسن خلقك يكمل ايمنك﴾ ईमान को कामिल करना है तो अच्छे अख़लाक़ कर ले, अख़लाक़ के बग़ैर ईमान मुकम्मिल नहीं हो सकता। ईमान का सीखना फ़र्ज़, इबादात फ़र्ज़, अख़लाक़ फ़र्ज़, अख़लाक़ का बनाना फ़र्ज़, इख़लास फ़र्ज़।

हुस्ने अख़लाक़ का हुक्म और अज्र

ये चार फ़र्ज़ हैं, ईमान का लाना फ़र्ज़ है, ईबादत फ़र्ज़ और अपने अख़लाक़ का बनाना फ़र्ज़ है, वरना नमाज़ें कोई और ले जाएगा, तबलीग़ कोई और ले जाएगा, हज कोई और ले जाएगा, ज़कात कोई और ले जाएगा और यह ज़ालिम ख़ाली हाथ खड़ा होगा। तो ईमान की तकमील के लिए फ़रमाया अख़लाक़ को ऊँचा करो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया ﴿يا اباهريرة عليك بحسن الاخلاق﴾ ऐ अबू हुरैरह अपने अख़लाक़ को ख़ूबसूरत बना ले। कहा या रसूलुल्लाह! ﴿وما حسن الاخلاق﴾ अख़लाक़ की ख़ूबसूरती क्या है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿صل من قطع﴾ जो तोड़े उससे जोड़, ﴿واعط من حرمك﴾ जो न दे उसको दे, ﴿وعف عمن ظلمك﴾ जो ज़ुल्म करे उसे मॉफ़ कर दो।

بعث لا تمم مكارم الاخلاق، بعث لا تمم محاسن الاخلاق

मैं अख़लाक़ की तकमील के लिए भेजा गया हूँ, मुझे अख़लाक़ की ख़ूबियों की तकमील के लिए भेजा गया है, अख़लाक़ के हुस्न

की तकमील के लिए मुझे भेजा गया है।

मेरे भाईयों! नमाज़ पढ़नी आसान है, अख़लाक़ बनान मुश्किल है। ज़िक्र करना आसान है, अख़लाक़ बनाना मुश्किल है, चिल्ले लगाना आसान है, अख़लाक़ बनाना मुश्किल है, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿حسن خلق يكمل ايمان﴾

एक बदवी आया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बैठा, कहने लगा या रसूलुल्लाह! ﴿ما الدين﴾ दीन क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿حسن الاخلاق﴾ अच्छे अख़लाक़। वह यहाँ से उठा और दाएं तरफ़ आ के बैठा, या रसूलुल्लाह! ﴿ما الدين﴾ दीन क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿حسن الاخلاق﴾, अच्छा वह यहाँ से उठा, बायीं तरफ़ आया या रसूलुल्लाह! ﴿ما الدين﴾, दीन क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿حسن الاخلاق﴾ अच्छे अख़लाक़। फिर वह यहाँ उठा, पीछे जाकर बैठा। कोई तगड़ा ही था। या रसूलुल्लाह! ﴿ما الدين﴾ दीन क्या है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यों पीछे मुड़ कर देखा भाई तू कब समझेगा अच्छा, दीन यह है गुस्सा मत हुआ कर ﴿وهو الا تغضب﴾ दीन यह है कि गुस्सा मत हुआ कर। जिसके अख़लाक़ ठीक नहीं हैं उसकी सारी नेकियां दूसरे उठा कर ले जाएंगे। जिसका बोल मीठा नहीं वह मुँह के बल जहन्नम में जाएगा ﴿الا ادلك على ملاك الامر كل﴾ ऐ माल! अपने माल से फ़रमाया कि यह काम की छोटी सी चीज़ बता दूँ? सारी चीज़ों में से छोटी चीज़ बता दूँ, फिर अपनी ज़ुबान को बाहर निकाल कर यों पकड़ लिया और कहा ﴿امسك عليك لسانك﴾ अपनी ज़ुबान को पकड़ कर रख कि किसी मुसलमान के

ख़िलाफ़ तुम्हारी ज़ुबान न चले। या रसूलुल्लाह! क्या ज़ुबान की वजह से भी पकड़े जाएंगे तो फ़रमाया:

अरे रोने वालियां तुझ पर रोयें तू क्या कह रहा है ﴿وهل يكب الناس على مناخرو وجوههم الا سنتهم﴾ इन्सानों को दोज़ख़ में नाक के बल गिराने सबसे बड़ी चीज़ वाली ज़ुबान का बोल होगा। किसी को ज़लील कर देना, किसी की इज़्ज़त, किसी की पगड़ी उछाल देना, किसी की इज़्ज़त उतार देना, छोटे की तमीज़ मिट गई, अख़लाक़ बनाने पड़ेंगे। भाईयों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारा रास्ता बता कर गए हैं। एक सहाबी ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿اريد ان اكون احب الله ورسوله﴾ मैं चाहता हूँ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का महबूब बन जाऊँ ﴿احسن ما احبه الله ورسوله فكن من احبابهما﴾ तो जो अल्लाह और उसका रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चाहता है ना तू भी वह चाहत अपनी चाहत बना ले, तू अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का महबूब बन जाएगा। कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿الذين نجو من الذنوب﴾ गुनाहों से क्या चीज़ बचाती है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया आंसुओं का बहाना गुनाहों का धो देता है ﴿ولقذوع﴾ आजज़ी मसकनत को इख़्तियार करना गुनाहों को धो देता है ﴿ولا امراض﴾ बीमारियां भी गुनाहों को धो देती हैं। सबसे बड़ी बुराई क्या है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿سوء الخلق﴾ बद अख़लाक़ होना सबसे बड़ी बुराई है ﴿وسخ المطاع﴾ और बख़ील होना सबसे बड़ी बुराई है। ﴿كايهن من اعظم يا رسول الله﴾ सबसे बड़ी नेकी क्या है? आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ﴿الحسن الخلق﴾ अच्छे अख़लाक़ बनाना सबसे बड़ी नेकी है, ﴿وصبر على البلاء﴾ और मुसीबत में सब्र करना सबसे बड़ी नेकी है।

इत्तेबाए सुन्नत की तरग़ीब

भाईयों! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा हम अपनी ज़िन्दगी में ले आएं। नमाज़ पढ़ना, ज़िक्र करना, तिलावत करना, हज करना, ज़कात देना, ये तो हो गए फ़राईज़। पूरी ज़िन्दगी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर हो, पूरी ज़िन्दगी अल्लाह के हबीब के रास्ते पर चल रही हो और सुन्नत सिर्फ़ मिसवाक करना ही नहीं है, आँखों में सुरमा लगा लिया और भाई दाएं हाथ से खा लिया और भाईयों दाएं हाथ से पानी पी लिया और बैठ कर पी लिया। इसी को सुन्नत आसान कहते हैं। इनको सुन्नत समझा है। एक और सुन्नत भी है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया

يا بنى ان اصبحت ان سطعت ان تصبح
وتؤسى ولجت فى قلبك غش لا حدا

ऐ बेटा! सुबह शाम इस तरह गुज़ारा कर कि तेरे दिल में किसी मुसलमान के बारे में खोट न हो, बुग़ज़ न हो, गुस्सा न हो, नफ़रत न हो फिर आगे फ़रमाया ﴿بنى انه من سنتى﴾ ऐ मेरे बेटे! यह मेरी सुन्नत है। इसको कोई सुन्नत नहीं समझता। मैं अपने दिल को मुसलमानों की बदगोई और बदख़ोई वग़ैरह से साफ़ कर दूँ ﴿انه من سنتى﴾ यह मेरी सुन्नत में से है। ﴿ومن احب سنتى فقد احبنى﴾ जिसने

मेरी सुन्नत से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की, ﴿ومن احبنی كان معی فی الجنة﴾ और जो मुझसे मुहब्बत करेगा मेरे साथ जन्नत में जाएगा। मुहब्बत कम है यहाँ इताअत ज़्यादा है। ग़ुलाम नबी से आदमी ग़ुलाम नहीं बनता। नाम ग़ुलाम नबी रखने से ग़ुलाम नहीं बनता, ग़ुलामों वाले काम करने से ग़ुलाम नबी बनता है। ग़ुलाम रसूल नाम रखने से ग़ुलाम रसूल नहीं बनता, ग़ुलामी इख़्तियार करने से ग़ुलाम रसूल बनता है। हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम बन जाएं दुनिया आख़िरत की सरदारी अल्लाह तआला तशतरी में रख कर पेश कर देगा। ऐ मेरे बन्दे दुनिया भी तेरी, जन्नत भी तेरी, रज़ा भी तुझ को मिल जाएगी तो अल्लाह जल्ले जलालूहु ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना हबीब बनाया, बहर व बर पर आपकी नबुव्वत का नक़्श जमाया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऊँट का शिकायत करना

क़यामत तक आने वालों इन्सानों का नबी बनाया, जिन्नात का नबी बनाया, चौपायों का नबी बनाया। ऊँट आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आकर कहता है कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा मालिक मुझे मारता है। मेरी जान बचाइए। ऊँट भी आकर पनाह मांग रहा है, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा मालिक मुझे चारा नहीं खिलाता। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सीधे जा रहे हैं एक ऊँट बंधा

हुआ है, कूदने लगा, वह बिलबिलाने लगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चलते चलते रुक गए। कहा इसका मालिक कौन है। एक ने कहा मैं हूँ। कहा यह मुझसे शिकायत कर रहा है, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा मालिक मुझे चारा थोड़ा खिलाता है, वज़न ज़्यादा डालता है, मेरी सिफ़ारिश तो फ़रमा दीजिए मुझे पेट भर के खिलाया करे (सुब्हानल्लाह)

इब्ने कसीर रह० ने एक वाक़िया लिखा है कि एक बद्दू गुज़र रहा था आपकी महफ़िल से तो उसने कहा यह कौन है? कहा यह वही है जो आसमान की ख़बरें देता है, नबी अपने आप को बताता है तो लौट आया। अरब जो थे वे गोह खाया करते थे जो जंगल का जानवर होता है एक शतर की तरह गोह कई गुना बड़ा होता है वह खाया करते थे। वह गोह शिकार करके लाया था उनके साथ बात न की अपनी गोह को उतारा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने फेंक दिया और बद्दू कहने लगा कि यह मेरा मुर्दा गोह कहे कि तू नबी है फिर तो मैं नबी मानूंगा वरना तो मैं नहीं मानता। अपनी तरफ़ से उसने नामुमकिन बात डाल दी। मुर्दा जानवर, जानवर भी और मुर्दा भी। दो बातें नामुमकिन हो गयीं। न जानवर बोले न मुर्दा बोले तो दो बातें इकट्ठी हो गयीं। ऐसा हो ही नहीं सकता यह कहे कि तू नबी है तो मैं तुझे नबी मान जाऊँ या नहीं (कहे) तो नहीं मानता। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गोह को देखा, एक दम गोह ने सिर उठाया और अरबी ज़ुबान में उसने कलाम किया ﴿لبيك وسعديك يا فيمن بعث يوم القيامة﴾ लब्बैक मैं हाज़िर सअदैक मेरी

सआदत ऐ क़यामत के दिन को ख़ूबसूरत बनाने वाले, कैसा प्यारा लफ़्ज़ कहा ऐ क़यामत के दिन को ख़ूबसूरत बनाने वाले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿من انت من ربك﴾ तू कौन है, तेरा रब कौन है? किसकी बन्दगी करनी है? कहाः

من فی السمآء عرشه، وفی الارض سلطانه ومن
البحر سبيله وفی الجنة رحمه، وفی النار عقابه

मुझे उसकी बन्दगी करनी होगी जिसका अर्श आसमान में, सलतनत ज़मीन में है, रास्ते समंदर में, रहमत जन्नत में, अज़ाब जहन्नुम में। क्या ख़ूबसूरत कलाम है गोह का। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿من انا﴾ मेरे बारे में क्या कहते हो ऐ गोह? ﴿من انا﴾ उसने कहा

انت رسول رب العلمين والخاتم النبين قد
افلح من صدقك وقد خاب من كذبك

आप रब्बुल आलमीन के रसूल हैं, आप ख़ातिमुन्नबीयीन हैं जो आपको मानेगा वह कामयाब हो जाएगा, जो नहीं मानेगा नाकाम होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वापस फ़रमाया बोल अब क्या कहता है? कहने लगा अब तो मानता हूँ।

हम कैसे उम्मती है?

मुरदार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ पर लब्बैक कहे और हम उम्मती होकर लब्बैक न कहें तो कैसा उम्मती है। मुनादी ने आज़ान दी और पाँच फ़ी सद लोग भी उठ कर दुकानों से मस्जिद को न जाएं तो यह कैसा मुहम्मदी पना है। बाज़ार

खुले, दुकानें खुलीं, दफ़्तर खुले, खेत में काम हो रहा है और एक आदमी भी हुक्में इलाही से डर के अल्लाह की शरियत के मुताबिक़ और नबी के तरीक़े के मुताबिक़ न तिजारत करने वाला, न ज़राअत करने वाला तो यह कैसा मुहम्मदी पना है? हम किन के लिए अल्लाह व रसूल को नाराज़ कर रहे हैं? मेरे बच्चे के बारे में है कि बड़े फ़रमा बरदार हैं। मैं उनके लिए कमाके लाता हूँ। आज तो माँ बाप के लिए औलाद आँखों की ठन्डक नहीं है आज भी तो औलाद नाफ़रमान है, उनके लिए अल्लाह की नाफ़रमानी क्यों करे? मौत पर आदमी सब कुछ भूल जाता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जब मौत का वक़्त आया तो जिबरईल अलैहिस्सलाम ने अन्दर आने की इजाज़त मांगी कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इज़राईल अलैहिस्सलाम बाहर खड़े हैं इजाज़त दें तो अन्दर आ जाएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि आ जाइए। इज़राईल अलैहिस्सलाम अन्दर आए और कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैंने आज तक किसी से इजाज़त नहीं ली और न आइन्दा लूँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अल्लाह तआला ने कहा था इजाज़त मिले तो अन्दर जाना वरना वापस आ जाना। अल्लाह तआला ने किसी को आज तक इख़्तियार नहीं दिया। आपसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात को इख़्तियार दिया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रहना चाहें तो रह लें और अगर दुनिया में नहीं रहना चाहते हैं तो चलें और आइन्दा किसी को यह इख़्तियार अल्लाह नहीं देगा और न यह इख़्तियार पहले किसी को दिया तो जिबरईल अलैहिस्सलाम से आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने पूछा क्या कहते हो? तो कहा अल्लाह तआला भी आपसे मिलना चाहते हैं। अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुलाक़ात का मुश्ताक़ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा अच्छा पहले मेरे अल्लाह से पूछ कर आओ कि मेरे बाद मेरी उम्मत के साथ क्या करेगा फिर मैं जवाब दूँगा हांलाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता है कि मेरे बाद मेरी औलाद के साथ क्या होगा, मेरा नवासा शहीद किया जाएगा, उसके मासूम बच्चे शहीद किए जाएंगे। सब पता है। बताया एक कुत्ता मेरी औलाद का ख़ून चाट रहा है, ख़ुद बताया लेकिन उनके लिए दुआ नहीं की कि या अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमा। उनको अल्लाह की मशियत के सुपुर्द कर दिया। अपनी उम्मत के लिए मांगा कि जिबराइल जाओ मेरी उम्मत के लिए पूछ कर आओ कि मेरे बाद मेरी उम्मत के साथ क्या करेगा? जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ओहद की लड़ाई में पत्थर पड़े तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेहोश हो कर गिरे। उतूबा बिन वक़्क़ास, हज़रत साद बिन अबि वक़्क़ास का जो भाई था उसने पत्थर मारा था। उस लड़ाई में क़त्ल हो गया, ओहद की लड़ाई ही में क़त्ल हो गया था लेकिन पत्थर उसने मारा था जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इतनी ज़र्ब लगी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नीचे गिर गए और बे होश हो गए। ग़शी थोड़ी देर के लिए आई उसमें ﴿اللهم اغفر قومى فانهم لا يعلمون﴾ ऐ अल्लाह मेरी क़ौम को अज़ाब न देना मॉफ़ कर देना, उनको पता कोई नहीं। पत्थर खाकर भी बद्दुआ नहीं की और मौत के वक़्त कह रहें हैं मेरी उम्मत का पूछ कर आओ क्या करेगा फिर

मैं जवाब देता हूँ। जिबराईल अलैहिस्सलाम वापस गए, लौट के आए, जवाब लेकर आए या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला फ़रमा रहें हैं कि अल्लाह आपकी उम्मत को आप के बाद तन्हा नहीं छोड़ेंगे तो फ़रमाया ﴿الآن قرت عيني﴾ अब मेरी आँखें ठण्डी हैं। ﴿اللهم رفيق الأعلى﴾ अब मैं ऊपर वालों का साथ चाहता हूँ। मौत पर भी नहीं भूले और हम औलाद की ख़ातिर अल्लाह को भुलाते हैं। यह तो औलाद की नाफ़रमानी आँखों से देख रहे हैं।

तबलीग़, अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करने की मेहनत है

तो मेरे भाईयों! हम अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करें तबलीग़ कुछ नहीं है। अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करने की ज़रा सी मेहनत है, आसान सी मेहनत है। भाई अपने घरों से निकलिए और वह तरीक़ा सीखिए जिस पर अल्लाह का रसूल राज़ी होता है। ﴿والله ورسوله احق أن يرضوه﴾ अल्लाह कहता है कि मुझे राज़ी करो मेरे रसूल को भी राज़ी करो। अब कोई नबी नहीं आएगा। सारी दुनिया के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत है। इन्सानों के लिए, जिन्नात के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत है। आने वाली नस्लों के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत है तो लिहाज़ा जब कोई नबी नहीं आएगा तो पूरी दुनिया के इन्सानों को अल्लाह का पैग़ाम सुनाना और बताना और समझाना अल्लाह तआला ने आपके ज़िम्मे किया है। मेरे ज़िम्मे भी किया है।

तबलीग़ का काम हमारे ज़िम्मे तबलीग़ी जमात की वजह से नहीं है। तबलीग़ का काम हमारे ज़िम्मे ख़त्मे नबुव्वत की वजह से है। जब हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरी नबी मानते हैं तो उसके साथ साथ हमारे ज़िम्मे यह लग जाता है कि पूरी दुनिया में इस्लाम का पैग़ाम पहुँचाना तुम्हारे ज़िम्मे है, (सिर्फ़) हमारे ज़िम्मे क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तेरह बरस तक मक्का में मेहनत फ़रमाई ढाई सौ से ज़्यादा मुसलमान नहीं हुए। थक गए, जोड़ जोड़ में दर्द हो गया। नबुव्वत का ग्यारहवां साल आया तो छः आदमी मिना की वादी में हज्ज के मौसम में जौलाई का महीना है मुसलमान हुए। उबादा बिन रवाह, साद बिन रबी, असद बिन ज़रारा, नौमान बिन हादिमा, अब्दुल्लाह बिन रवाहा, अबुल ख़सीम रज़ियल्लाहु अन्हुम। यह छः आमदी मदीने के मुसलमान हुए और हिजरत की बुनियाद पड़ी। नबुव्वत के बारहवें साल, जून का महीना है और बारह आदमी आए और रात को बैत की जिसे बैत ऊला कहते हैं। अल्लाह तबारक तआला ने मदीने के लिए इस्लाम का दरवाज़ा खोल दिया फिर नबुव्वत का तेरहवां साल और जून का महीना है, बहत्तर आदमी मदीने से आए, सत्तर मर्द और दो औरतें उम्मे अम्मारा व उम्मे मुत्लेबा, बैत हुए और उन्होंने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब आप मदीने तशरीफ़ लाइए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा अल्लाह जब इजाज़त देगा तब आऊँगा। नबुव्वत का चौदहवां साल आया सत्ताईस सफ़र की रात को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से निकले, सिद्दिके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के घर गए कि

हिजरत फ़रमाई जाए। दोनों ग़ारे सौर पहुँचे तीन रातें दो दिन क़याम फ़रमाया। यकुम रबिउल अव्वल को निकले आठ रबिउल अव्वल को मदीने पहुँचे। दो हफ़्ते क़याम फ़रमाया मस्जिद बनाई। जुमे के दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने को चले रास्ते में बनू सालिम का मुहल्ला था वहाँ जुमा की नमाज़ पढ़ाई और अस्र की नमाज़ के क़रीब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने में दाख़िल हुए। अब जो यसरिब की बस्ती थी मदीना बन गया है। तबलीग़ का काम यहाँ इजतिमाई शुरू हो गया। अब तलवार भी उठी, क़िताल भी हुआ, जिहाद भी हुआ, दावत भी चली, तबलीग़ भी चली, तालीम भी चली, तदरीस भी चली, तज़किया भी चला और सारी ख़िदमात चलीं, इकराम भी चला, सारे दीन के शोबे। अवामिर आते चले गए दीन मुकम्मल होता चला गया। आख़िरी साल नबुव्वत का। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज का ऐलान फ़रमाया। ज़ुलहुलैफ़ा से एहराम बान्धा, बारह हज़ार सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का पहुँचे तो एक लाख चौबीस हज़ार का मजमा हो चुका था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अरफ़ात में आए तो

اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم
نعمتى و رضيت لكم الاسلام دينا (القرآن)

यह आयत उतर गई फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुज़दलफ़ा में रात गुज़ारी, मिना में आए और कन्कर मारे और उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुर्बानी की फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर मुंढाया फिर आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुत्बा दिया। इस ख़ुत्बे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया आख़िर में ﴿الا فليبلغ الشاهد الغائب﴾ अब मेरा पैग़ाम आगे पहुँचाना तुम्हारे ज़िम्मे है तो तबलीग़ का काम इस वजह से हमारे ज़िम्मे हुआ है, तबलीग़ जमात की वजह से नहीं बल्कि ख़त्मे नबुव्वत की वजह से ज़िम्मे है, नबी कोई नहीं आएगा तो सारी दुनिया को पैग़ामे इलाही की ख़बर देना हमारे ज़िम्मे है, दुनिया को पता नहीं मौत के बाद क्या होने वाला है। यह ज़िन्दगी आसान नहीं है, यह खेल तमाशा नहीं है। मेरे बोल का सुनाना या मेरी जन्नत बनाता है या मेरी दोज़ख़ बनाता है। मेरे क़दम का उठाना या मेरी जन्नत को बनाता है या दोज़ख़ का बनाता है। मेरा सौदा करना या जन्नत को बनाता है या दोज़ख़ को बनाता है।

जहन्नुम के ख़ौफ़नाक मनाज़िर

मेरे भाईयों! अल्लाह की क़सम नबियों की रातों की नींद उठती है दिन का क़रार उठता, है। इस लिए नहीं कि वे रोटी से परेशान होते हैं। इसलिए कि वे जन्नत और दोज़ख़ को देखते हैं फिर इन्सानियत की नाफ़रमानी को देखते हैं फिर वे बेक़रार हो जाते हैं कि इनको कैसे अज़ाब से बचाऊँ? ﴿ان عذابها كان غراما عذاب﴾ कोई छोटा मोटा अज़ाब नहीं है वह भड़कती आग है, खाल को उतार देने वाली वह आग है। ﴿فانذرتكم نارا تلظى﴾ अल्लाह कहता है मैं तुम्हें उस आग से डराता हूँ जो भड़कने वाली आग है, मैं तुम्हें उस आग से डराता हूँ। ﴿سيصلى نارا ذات لهب﴾ वह अंगारों वाली, वह भड़कने वाली आग है। ﴿في عمد ممددة﴾ वह बड़े बड़े सुतूनों में

भरी हुई आग है। ﴿لهم من جهنم مهاد﴾ उनके बिस्तर अंगारों के हैं उनकी चादरें अंगारों की हैं। ﴿فى عمد ممددة﴾ उनके पर और सुतून भी आग के हैं। ﴿يسقى من ماء صديد﴾ उनका पानी पीप है, पीने को दिया जाएगा जो ज़ख़्मों से पीप निकलेगी उसको जमा करके गर्म किया जाएगा फिर वह पीने को दिया जाएगा। फ़रिश्तें कहेंगे पियो। ﴿يتجرعه ولا يكاد يسيغه﴾ पीना चाहेगा पी नहीं सकेगा। ﴿ويأتيه الموت من كل مكان﴾ चारों तरफ़ से मौत आती हुई दिखाई देगी। ﴿وما هو بميت﴾ लेकिन वह मरेगा नहीं मौत पुकारेगा, मौत आएगी नहीं। पीने को पानी है तो ऐसा ज़बरदस्त कि जिन प्यालों में वह पानी है मुँह के क़रीब लाएगा तो प्याले की तपिश और पानी तपिश से होंट सूझ कर नीचे वाला होंट लटक कर पाँव तक चला जाएगा और ऊपर वाला होंट सूझकर सिर के ऊपर चला जाएगा न पी सकेगा, न उगल सकेगा, न निगल सकेगा और फिर फ़रिश्ते मारेंगे पियो। पिएगा तो आंते कटकर पाख़ाने के रास्ते से बाहर निकलेंगी। फ़रिश्ते उठाकर सारी आंतों को फिर उसके मुँह में ठूस कर उसके नीचे भर के फ़िट कर देंगे। उसकी खाल बयालिस हाथ मोटी खाल होगी और उसके सिर के ऊपर जब पानी डालेंगे ﴿ذق انك انت العزيز الكريم﴾ की तफ़सीर में लिखा है, फ़रिश्तें पकड़ेंगे काफ़िर को, और उसके सिर के ऊपर रखेंगे कील और फिर मारेंगे हथौड़ा उसकी खोपड़ी पर और खोपड़ी फट जाएगी और उसके ऊपर डालेंगे पानी, अन्दर चला जाएगा तो आंतों को काट के बाहर फेंक देगा और उसके ऊपर गिरेगा तो बयालिस हाथ मोटी खाल उधड़कर ज़मीन पर गिर जाएगी। अल्लाह कहेगा ﴿ذق انك انت العزيز الكريم﴾ चखो इसको दुनिया में बड़ा मुतकब्बिर था। अब किसी आदमी को सारा जहाँ मिल गया और मर कर दोज़ख़ में

चला गया तो क्या देखा उसने? हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद है ﴿لا خير فی خیر تاتهم النار﴾ वह भलाई कोई भलाई नहीं जिस को दोज़ख़ मिल जाए जब देखेंगे अज़ाब ने घेरा डाल दिया तो फिर कहेंगे मालिक (फ़रिश्ता दारोग़ा) या मालिक अपने रब से कह दो हमें मौत दे दें वह कहेगें ﴿انكم ماكثون﴾ मौत नहीं आ सकती अब तो यहीं रहना पड़ेगा कहेंगे ﴿يخفف عنا يوما من العذاب﴾ ऐ फ़रिश्तों अपने रब से कहो कि थोड़ा अज़ाब तो कम कर दे तो जवाब आएगा ﴿اولم تك تاتيكم رسلكم بالبينت﴾ तुम्हें किसी बताने वाले ने नहीं बताया था कि जो होने वाला है। कहेगा बताया तो था फिर तुम ने क्या किया? ﴿ما نزل الله من شئی ان انتم الا فی ضلال کبیر﴾ हम ने कहा सब झूठ है कोई नहीं जो होगा देखा जाएगा, उन्होंने कहा अब चखो। ﴿فلن نزيدكم الا عذابا﴾ अज़ाब बढ़ता जाए, ﴿ان جهنم كانت مرصادا﴾ जहन्नुम जहन्नुमी का इन्तेज़ार कर रही है, ﴿للطغين﴾ सरकशों के लिए, ﴿مابا﴾ वह ठिकाना है, ﴿لبثين فيها احقابا﴾ इसमें रहना हमेशा है, ﴿لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا﴾ न पानी न ठण्डक, ﴿الا حميما وغساقا﴾ खौलता हुआ पानी, कांटे दार झाड़ियां, ﴿جزاءً وفاقا﴾ पूरा पूरा बदला, ﴿انهم كانوا بايتنا كذابا﴾ उन्होंने मेरी निशानियों को झुठलाया, ﴿وكل شئی احصينه كتابا﴾ मैं ने एक एक चीज़ को लिखा है, ﴿فذوقوا﴾ आज चखो, ﴿فلن نزيدكم الا عذابا﴾ तुम्हारा अज़ाब बढ़ता जाएगा, बढ़ता जाएगा, जहन्नुम मुसलमानों के लिए है वह मुसलमान जो तौबा किए बग़ैर मर गए गुनाह करते हुए, तौबा किए बग़ैर मर गए, जहन्नुम उनके लिए है, इन्सानों के लिए, यहूदियों के लिए सईर, मजूसियों के लिए सक़र, सितारों के पुजारियों के लिए है जहीम, मुशरिकीन के लिए है हाविया,

मुनाफ़िक़ीन के लिए है और हर नीचे वाला दर्जा ऊपर वाले दर्जे से ज़्यादा शदीद है, ज़्यादा सख़्त ,ज़्यादा ख़ौफ़नाक है, ज़्यादा हैबत नाक है। जहन्नुम में से किसी आदमी को निकाल कर एक लाख इन्सानों के दर्मियान बिठा दिया जाए और वह सांस ले तो उसकी हरारत से एक लाख आदमी जल के ख़त्म हो जाएंगे।

या अल्लाह! हमको रोना सिखा दे

तो मेरे भाईयों! यह बात नबियों को रुलाती है यह बात हमें भी रुलाए कि या अल्लाह हमने तेरे बन्दों को दोज़ख़ से बचाना है, हमारा रोना है कारोबार का, बीवी बच्चों का, सेहत का, बीमारी का, मुक़द्दमें का, हम एक रोना और सीख लें। हमारा रोना क्या रोना हो? ख़त्मे नबुव्वत वाला रोना, क्या नबियों वाला रोना। क्या हो? या अल्लाह तेरे बन्दे दोज़ख़ में जा रहे हैं, मैं उनको कैसे दोज़ख़ से बचाऊँ? अल्लाह की क़सम यह आंसू आप के कितने बड़े कितने लम्बे चौड़े मुजाहिदों पर, ये आंसू भारी हो जाएंगे। क़यामत के दिन नबियों वाला रोना, रोना सीखे।

इन्सानियत अज़ाब के मुँह में

भाईयों! इतने बड़े अज़ाब की तरफ़ इन्सानियत क्यों जा रही है जिस अज़ाब से अल्लाह डराता हो ﴿وانذر الناس يوم ياتيهم العذاب﴾ आप भी उनको इस अज़ाब से डराएं, ﴿وانذرهم يوم الازفة﴾ आप उनको क़रीब आने वाले दिन से डराएं, ﴿فذالك يومئذ يوم عسير على الكفرين غير يسير﴾ वह दिन बहुत सख़्त है, बड़ा तंग है, ﴿يوم تشقق

﴿السمآء بالغمام ونزل الملئكة تنزيلا﴾ आज फ़रिश्ते आ रहे हैं आसमान फट रहा,

الملك يومئذ ن الحق للرحمٰن وكان يوما على الكفرين عسيرا

आज का दिन सख़्त अल्लाह की हुकूमत, ﴿ويوم يعض الظالم على يديه﴾ आज आदमी अपने हाथ चबाएगा अपने दांतों से और चबाते चबाते पूरी कोहनी चबा जाएगा, ﴿يقول يليتني اتخذت مع الرسول سبيلا﴾ हाय मैं रसूल के रास्ते पर चलता।

मैं फलाँ की न मानता, अब एक दूसरे को गालियां देंगे, ﴿يلعن بعضهم ببعض﴾ उनकी पुकार होगी हाय ﴿يا ويلتى﴾ यह नबुव्वत का दर्द है। लोगों को अल्लाह के अज़ाब से बचा लिया जाए। यह ख़त्मे नबुव्वत का दर्द अल्लाह तआलाह हमें नसीब फ़रमा दे कि इन्सान जहन्नुम से बच जाएं और जन्नत में जाने वाला बने।

आज हमारे दिलों से इन्सानियत का ग़म निकल गया

मेरे भाईयों, दोस्तों! अब क्या हुआ भूल गए कल ही इन्सानियत को दर्द व ग़म सीने में हुआ करता था, कल इन्सानियत के लिए रोते थे। अब तो सारा रोना ही कारोबार के लिए, घर के लिए, बच्चों के लिए, सेहत के लिए, पैंसे के लिए, इज़्ज़त के लिए। या अल्लाह तेरे बन्दे दोज़ख़ में जाने से बच जाएं। यह तेरा अज़ीमुश्शान ग़म है, ज़रा अल्लाह तआला हमें नसीब फ़रमा दें। ऐसी दुनिया की क़ैद पड़ी, ऐसा पिन्जरे में क़ैद हुए न यह याद रहा कि कहाँ से आएं हैं न यह याद रहा कि

रास्ता किधर को जाता है।

अल्लाह अपने हुक्मों का पाबन्द बनाए। मैं न जाऊँ तो कौन जाएगा? आप न जाएं तो कौन जाएगा। अल्लाह की रहमत के साए में ले आना, अल्लाह के ग़ज़ब से बचा कर जन्नत के रौशन रास्ते पर डाल देना सारे नबी इस पर रोते थे।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नसीहत

ऐ लोगों! दो अज़ीम चीज़ों को मत भूलना फिर आप अलैहिस्सलाम रोए इतना रोए कि दाढ़ी आंसुओं से तर हो गई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿الجنة والنار﴾ ऐ लोगों! जन्नत को न भूलना, ऐ लोगों! दोज़ख़ को न भूलना फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اطلب الجنة جهد كم﴾ जितना जन्नत का ज़ोर लगा सकते हो लगाओ, ﴿واهرب من النار جهد كم﴾ जितना दोज़ख़ से भाग सकते हो भागो, ﴿فان الجنة لا ينام طالبها﴾ जन्नत को चाहने वाला नहीं सोता ﴿والنار لا ينام غائبها﴾ और दोज़ख़ से डरने वाला ग़ाफ़िल नहीं होता, ﴿فان الجنة اليوم محفوفة بالماره﴾ जन्नत आज ढकी हुई है मुशक़्क़तों में परेशानियों में, ﴿وان الدنيا محفوفة بالشهوات واللذات﴾ और दुनिया व दोज़ख़ ढकी हुई है लज़्ज़तों में ख़्वाहिशात में।

तुम्हें जन्नत से ये दुनिया की चीज़े ग़ाफ़िल न कर दें। इनसे तुम्हें रास्ता भुलाना नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई है जन्नत का तलब करने वाला ﴿فان الجنة لا خطر لها﴾ जन्नत कोई ख़तरे की जगह नहीं।

जन्नत का मन्ज़र

रब्बे काबा की क़सम जन्नत नूर है चमकता हुआ। कैसा नूर है? एक छोटी सी चीज़ का नूर बताऊँ। जन्नत में एक छोटी सी चीज़ की चमक उठेगी, सारे जन्नती हैरान हो कर देखेंगे। यह नूर कैसा नूर है? पता चलेगा कि जन्नत में एक औरत अपने ख़ाविन्द के सामने मुस्कराएगी। उसके होंटों और उसके दांतों से जो नूर निकलेगा सारी जन्नत रौशन कर देगा। एक ऐसा नूर है जन्नत की औरत की उंगली का एक पोरा सूरज को दिखा दिया जाए तो सूरज नज़र नहीं आएगा। ﴿وريحانة﴾ बाग़ात हैं फैले हुए बाग़ात हैं, फलों से लदी हुई टहनियां हैं झुकी हुई साऐ हैं, फैले और लम्बे दरख़्त हैं सोने और चाँदी के और यह एक दिन की लकड़ी का नहीं ﴿اسفلها من ذهب اعلاها من جوهر﴾ नीचे से सोने का ऊपर जवाहरात का मुकम्मल। याक़ूत और मदनी इसमें लटके हुए हैं और महल है ऊँचा लम्बा चौड़ा एक ईंट चाँदी याक़ूत की एक ईंट ज़ुमुर्रद की, मुश्क का गारा, ज़ाफ़रान की घास और अल्लाह का अर्श उनकी छत बना कर डाल दिया जाएगा। नहरें उछलती हुई पानी उनका किनारों से निकलता हुआ, जन्नत दुआ करती है ﴿اللهم طابت ثمری﴾ अल्लाह मेरे फल पक गए मेरी नहर का पानी बाहर निकल रहा है ﴿اشتاقی﴾ मुझे अपने दोस्तों का शौक़ लग रहा है, रेशम और सोना मेरे अन्दर बेशुमार हो गया, रेशम और दरख़्त मेरे अन्दर बेशुमार हो गए, ﴿سندس واستبرق﴾ मोटा रेशम और बारीक रेशम बेशुमार हो गए, ﴿ذهب وفضة﴾ सोने चाँदी के अंबार लग गए हैं और शराब के जाम, दूध के जाम, शहद के जाम, पानी के जाम लबालब भरे हुए मेरे अन्दर बकसरत मौजूद हैं

﴿واعطيتني باهلي﴾ मेरे जन्नतियों को मेरे अन्दर जल्दी से पहुँचा दे रोज़ाना जितनी ये दुआ कर रहे हैं पके हुए फल शहद से मीठे ﴿الين من الزبد﴾ मक्खन से नरम, ﴿ليس فيها﴾ गुठली के बग़ैर, ﴿اذا جز منها شيا ادم﴾ एक काटो दूसरा लग जाए। एक बद्दू बोला या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत में बेर पर कांटे होंगे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रब कहता है जन्नत में तकलीफ़ नहीं तो यह कांटे तो हमें चुभेगें, उनसे तकलीफ़ होगी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के बन्दे अल्लाह कांटों को उतार देगा। हर कांटे के बदले एक फल लगाएगा, वह फल बहत्तर टुकड़ों में तक़सीम होकर फट जाएगा, हर टुकड़े में एक रंग अलग, ख़ुशबू अलग, ज़ाएक़ा अलग। यहाँ तो सात रंग हैं वहां तो बहत्तर रंग हो जाएंगे। एक फल में बहत्तर ज़ाएक़े। एक बद्दू आया या रसूलुल्लाह! ﴿هل في الجنة من خيل﴾ जन्नत में घोड़ें हैं? ﴿نعم ياقوت في الحمرا، لا يبول ولا يروث﴾ न पेशाब करे, न लीद करें, जहाँ तेरी नज़र पड़े वहाँ उसका क़दम पड़े और दूसरा बोला या रसूलुल्लाह! ﴿هل في الجنة من ابل﴾ ऊँट भी हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैं ﴿مثل نجم﴾ सितारों की तरह चमकते हुए और तीसरा बोला या रसूलुल्लाह! ﴿هل في الجنة من نخلة﴾ खुजूर भी हैं जन्नत में? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैं ﴿اسفلها من ذهب﴾ नीचे सोने की उसकी टहनियां और उसके पत्ते ﴿اراجينها﴾ वह टेढ़ी टहनी जिस पर गुच्छा लगता है और गुच्छे के साथ पतली पतली जैसे लड़ियां चलती हैं जिन लड़ियों पर खुजूर लगी होती है इसको अरबी में शमरूक़ कहते हैं। शमारिक़ इसकी लड़ी, अराजील वह टेढ़ी टहनी असआफ़ उसके लिए है वह सब के सब

﴾زمرد خضراء﴿ सब्ज़ ज़मुर्रद के होंगे और उसका दाना बारह हाथ लम्बा होगा। वह दाना ख़जूर का दाना, यह बताओ अगर ख़जूर का दाना बारह हाथ लम्बा होगा तो केला कितने हाथ लम्बा होगा? और भाई खाने के मज़े करो ﴾ويتغوطون﴿ खाएंगे पाख़ाना नहीं ﴾يشربون ولا يبول﴿ पिएंगे पेशाब कोई नहीं। हमारा एक साथी है उनको घुटनों की तकलीफ़ है। पेशाब में बैठने से उनको बड़ी तकलीफ़ होती है। एक दिन कहने लगा कि जन्नत में कोई और नेमत न हो यह पेशाब पाख़ाने की छुट्टी है। यही बहुत बड़ी नेमत है आधी ज़िन्दगी तो इसी में लग जाती है। ﴾يشربو بما﴿ खाओ पियो, मज़े उड़ाओ, जाओ दुनिया में तुमने अल्लाह पाक को राज़ी कर लिया। ﴾وفى جنة عالية﴿ जन्नत है ऊँची ﴾قطوفها دانية﴿ फल हैं नीचे, ज़िन्दगी है मज़े की, ﴾قطوفها دانية﴿ फल हैं पके हुए, ख़ोशों में झुके हुए, लटके हुए, एक ख़ोशा एक गुच्छा। एक बद्दू ने पूछा या रसूलुल्लाह! अंगूर का गुच्छा कितना बड़ा होगा जन्नत में? आप आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक कव्वा एक महीने उड़ता रहे तो तब जा कर अंगूर का एक गुच्छा ख़त्म होगा, मज़े करो। जानवर लड़ाई कर रहे हैं, परिन्दे लड़ाई कर रहे हैं कि मुझे खाओ, कीड़ा कहेगा मुझे खाओ। जन्नत की नहरों में चलने वाली मच्छलियाँ सिर बाहर निकालती हैं और कहती हैं ﴾يا ولى الله اتاكلون﴿ ऐ अल्लाह के वली मुझे खाओगे? तो जन्नत की मच्छली दुनिया की मच्छली से हज़ार दर्जा बेहतर होगी।

❑ ❑ ❑

इत्तिबाए सुन्नत

26/8/1999 फ़ैसला बाद

نحمده نصلی علی رسوله الکریم اما بعد فاعوذ بالله من
شرور الشیطن الرجیم ، بسم الله الرحمٰن الرحیم

इन्सान कमज़ोर और मोहताज है

मेरे भाईयों और दोस्तों! इन्सान कमज़ोर है ﴿خلق الانسان ضعيفا﴾ सहारों के बग़ैर चल नहीं सकता। जिस्म के निज़ाम के लिए ग़िज़ा, पानी और हवा का मोहताज है। ज़रूरियाते ज़िन्दगी पूरी करने के लिए काएनात का मोहताज है। एक एक चीज़ से उसकी ज़रूरियात वाबस्ता हैं। दुनिया में कोई इतना मोहताज नहीं जितना इन्सान है। जानवर पतंगे परिन्दे उनकी क्या ज़रूरियात हैं कुछ भी नहीं। बहुत थोड़ी थोड़ी देर में पूरी हो जाती हैं लेकिन इन्सान क़दम क़दम पर मोहताज है फिर जितना मालदार बनता है, उतना मोहताज हो जाता है, जितना ओहदों में तरक़्क़ी करता है उतना वह मोहताज हो जाता है। एक आदमी अपनी ज़रूरियात पूरी करने में हज़ारों आदमियों का मोहताज बनता है। चाहे वह झाड़ू देने वाला है या पाकिस्तान का सदर और बादशाह है या वह बाज़ार में रेढ़ी लगाता है, मोहताज है। ﴿خلق الانسان ضعيفا﴾ इन्सान कमज़ोर है, ﴿يا ايها الناس انتم الفقرآء﴾ ऐ इन्सानों तुम फ़कीर हो और

मोहताज हो। अब मुश्किल यह है कि जिनसे हम उम्मीदें रखते हैं वे भी हमारी तरह मोहताज हैं, हमारी तरह उनमें तमा है, हमारी तरह उनमें लालच है, हमारी तरह उनकी भी ज़रूरियात हैं और इन्सान में अपनी ज़रूरियात को पूरा करने का जज़्बा भी है, लिहाज़ा जब मोहताज ने मोहताज पर सहारा किया, कमज़ोर ने कमज़ोर पर ऐतिमाद किया तो वह बुनियाद टूट गई, इमारत टूट गई, खंडर बन गई।

इस खुदा जैसा कोई नहीं

तो सबसे पहला सबक़ जो अल्लाह तआला मुसलमान को सिखाता है वह है ﴿لا الٰہ الا اللّٰہ محمد الرسول اللّٰہ﴾ यह पहला सबक़ अल्लाह देता है और सारे नबियों की पहली दावत भी यही है कि तुम काएनात में अल्लाह जैसा कोई नहीं पा सकते ﴿ليس كمثله شیٔ﴾ इस जैसा कोई नहीं। लिहाज़ा तुम अल्लाह तआला को अपने साथ लो और उसके सामने हर ज़रूरत रखने की आदत बना लो और उसके मोहताज बन जाओ तो वह तुम्हारी दुनिया आख़िरत की सारी ज़रूरियात को पूरा कर देगा लेकिन उसके लिए शर्त यह है कि उसके साथ ताल्लुक़ क़ायम किया जाए।

तबलीग़ का काम अल्लाह तआला से ताल्लुक़ जोड़ने की मेहनत है

यह जितना तबलीग़ का काम हो रहा है यह अल्लाह तआला से ताल्लुक़ को ठीक करने की मेहनत हो रही है, अगर किसी से

ताल्लुक़ बनाना हो तो कितना कुछ करना पड़ता है। सिर्फ़ थानेदार या एस पी है या कमिश्नर, ये सारे छोटे आफ़िसर हैं। उनसे अगर ताल्लुक बनाना हो तो किस तरह आदमी गर्दिश करता है, रास्ते तलाश करता है, ख़ुशामद करता है, झूठ सच उनके सामने बोलता है। तब जा कर उनसे ताल्लुक़ क़ायम होता है तो अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करना जो ज़मीन व आसमान का बादशाह है। उन सबसे आसान है जितने आप इन्सान से ताल्लुक़ क़ायम करने में थकते हैं।

जो ख़ुद मोहताज हो वह कैसे मसूअला हल करेगा?

इससे कम अल्लाह तआला से ताल्लुक़ क़ायम करने में थका जाए तो मसूअला हल हो जाए। अल्लाह तआला से ताल्लुक़ क़ायम करने की ज़रूरत है दुनिया वालों से तो यह मामला है कि न ही हमें रोटी की ज़रूरत है तो जिस पर हमारी उम्मीद है वह भी रोटी खाता है और हमें ख़ौफ़ से अमन की ज़रूरत है और जिस पर हमारी उम्मीद है वह ख़ुद ख़ौफ़ ज़दा है। हमारी तमा है दौलत बढ़ जाए और जिन लोगों से हम दौलत निकालना चाहते हैं उनमें भी तमा और लालच है कि हमारी दौलत और माल बढ़ जाए और हम अपने घर को रौशन करना चाहते हैं और जिन-जिन रास्तों से हम कोशिश कर रहें हैं जिनकी जेबों से रूपये निकाल रहे हैं वे ख़ुद भी चाहते हैं कि हमारे भी महल खड़े हो जाएं।

सबसे ताक़तवर कौन है?

लेकिन अगर हम अल्लाह तआला से ताल्लुक़ क़ायम कर लें तो अल्लाह तआला किसी एक चीज़ का मोहताज नहीं। न वह खाए न वह पीए, न वह सोए, न वह थके, न वह परेशान हो और न उसके ख़ज़ानों में कुछ कमी आए।

لا تاخذه سنة ولا نوم، ولا يؤده حفظهما،
ما مسنا من لغوب، ما كان ربك نسيا

काएनात के इस निज़ाम को चलाके नहीं थका कि यह कहने लगे कि मैं थक गया हूँ अब कल दरबार लगेगा। हम अपनी अपनी ज़रूरतें लेकर उसके पास आएं क्योंकि न वह सोता है न घबराता है, न ग़ाफ़िल है, न ऊँघता है, न जाहिल है, न आजिज़ है बल्कि वह ग़ालिब है ग़ैर मग़लूब, उस पर कोई ग़ालिब नहीं, सब पर उसकी ताक़त छाई हुई है उससे ताक़तवर कोई नहीं जो उस पर छा जाए। वह जाबिर है मजबूर नहीं, वह ग़ैर मख़लूक़ है वह ख़ालिक़ है मख़लूक़ नहीं, मालिक है ग़ैर ममलूक, वह मालिक है ममलूक नहीं, नासिर है ग़ैरूल मन्सूर, वह मदद करता है, मदद का मोहताज नहीं, हाफ़िज़ ग़ैर महफ़ूज़, वह हिफ़ाज़त करता है, अपनी हिफ़ाज़त कराता नहीं, रब ग़ैर मरबूब, वह पालता है और परवरिश करता है और ख़ुद अपनी परवरिश में किसी का मोहताज नहीं, शाहिद है ग़ैर मशहूद, वह सब देखता है उसको कोई नहीं देख सकता। सब चीज़ें उसकी नज़रों में हैं। ﴿لا تدركه الابصار﴾ उसको आँखें नहीं देख सकतीं, ﴿وهو يدرك الابصار﴾ वह हम सबको देखता है। कितनी दूर है? ﴿لا تراه العيون﴾ आँख नहीं देख सकती। आँख

तो सितारे भी नहीं देख सकती, अल्लाह को कैसें देख सकेगी? ﴿ولا تخالطه الظنون﴾ दुनिया में इन्सानी ख़्याल सबसे तेज़ सवारी है, तो अल्लाह तआला तक ख़्याल भी नहीं पहुँच सकता। सारी दुनिया के इन्सानों के ख़्यालों को इकठ्ठा किया जाए तो वह उनसे भी ऊपर है। ख़्याल की परवाज़, तख़य्युल की परवाज़ उड़ते उड़ते थक जाए और अल्लाह को न पहुँच सके।

तमाम तारीफ़ों के लायक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला है

﴿ولا يصفه الواصفون﴾ सारा जहाँ मिलकर उसकी तारीफ करना चाहे तो सब मिलकर उसकी तारीफ़ न कर सके। इतने दूर और इतना ऊँचा है लेकिन उसकी अजीब सिफ़्त है कि ﴿بل هو اقرب اليه من حبل الوريد﴾ यहाँ पर दो मुताज़ाद चीज़ें आपस में मिल गई हैं। दो नामुमकिन मुमकिन हो गए हैं। इतना दूर है इतना दूर है कि ख़्यालात भी उस तक नहीं पहुँच सके और इतना ज़्यादा क़रीब है कि रगे शह (रगे जान) से भी ज़्यादा क़रीब हो जाता है। फिर उसकी फ़ौक़ियत और ऊपर होना ﴿فوقيته ما اكثر ملكه كما اعلى مكانه﴾ क्या ऊँची शान उसका मुल्क है आला उसका मकान है ﴿ما اعظم شانه﴾ क्या अज़ीम उसकी शान है। एक हदीस पाक में आता है:

الملك الله، والكبرياء الله، والجبروت الله،
والهيبة الله، والقدرة الله، والنور الله،

या अल्लाह! सब कुछ तेरा है, मुल्क तेरा, किबरियाई तेरी, जबरूत तेरी, क़ुदरत तेरी, जमाल व जलाल तेरा। उस ज़ात को

हम साथ ले लें तो काम बन गया। फिर वह ऐसा बादशाह है जो किसी का मोहताज नहीं। दुनिया के बड़े बड़े बादशाह सब मोहताज़ हैं। एसेम्बली पास करें, सेंट पास करें, तब जाकर कहीं उनका हुक्म चले। फिर उनके ख़िलाफ़ अदम ऐतिमाद का वोट हो जाए तो उनकी कुर्सी उलट जाए।

हर चीज़ उसके इख़्तियार में है

लेकिन अल्लाह तआला ऐसा बादशाह नहीं है अहद यानी अकेला, समद यानी बेनियाज़, ﴿الملك لا شريك له﴾ उसकी बादशाही में कोई शरीक नहीं उसका कोई मिस्ल नहीं, आली यानी ऊँचा, ﴿لا ثانيه﴾ उसके बराबर कोई नहीं, ﴿الغنی لا ظهير له﴾ वह ग़नी है उसका मददगार कोई नहीं, ﴿لا ينفعه شئی﴾ उसको किसी चीज़ से नफ़ा नहीं पहुँता, ﴿لا يضره شئی﴾ उसको कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती, ﴿لا يغلبه شئی﴾ उस पर कोई चीज़ ग़ालिब नहीं, ﴿لا يؤده شئی﴾ उसको कोई चीज़ थकाती नहीं, ﴿لا يستعين بشئی﴾ वह किसी चीज़ से मदद नहीं लेता, ﴿لا يحتاج الی شئی﴾ वह किसी चीज़ का मोहताज नहीं, ﴿لا يعزب عنه شئی﴾ उससे कोई चीज़ छुपी हुई नहीं, ﴿ليس قبله شئی ليس بعده شئی﴾ उससे पहले कुछ नहीं उसके बाद कुछ नहीं, ﴿ليس فوقه شئی﴾ कोई चीज़ उससे ऊपर नहीं, ﴿ليس دونه شئی﴾ उससे कोई चीज़ छुपी हुई नहीं,

لطيف بكل شئی، خبير بكل شئی، عليم بكل شئی، خالق
كل شئی، مالك كل شئی، القادر كل شئی، غالب كل
شئی، قدير علی كل شئی، ليس كمثله شئی.

अल्लाह तआला के बग़ैर मसाइल हल नहीं होंगे

अगर ऐसा बादशाह हमारी पुश्त पर आ जाए तो हम से ताक़तवर कौन होगा? हम से बड़ा इ़ज़्ज़त वाला कौन होगा? आज सारी दुनिया में यह ग़लत ज़हन बन गया है कि पैसे से काम चलेगा और पैसा नहीं होगा तो काम नहीं चलेगा। मेरे भाईयों! हम पूरी दुनिया को बताएं कि अल्लाह साथ होगा तो काम चलेंगे। और बाज़ लोग कहते हैं कि बहुत सारे काम चलते हैं लेकिन अल्लाह साथ नहीं है? तो यह उनको ढील है और यह उनको मोहलत है मौत तक। अल्लाह की किताब का ऐलान है:

ذرھم یاکلو ویتمتعوا، ویلھھم الامل فسوف یعلمون،
وذرھم یخوضوا ویلعبوا حتی یلاقوا، یومھم یوعدون، ذرنی
ومن خلقت وحیدا، ذرنی والمکذبین اولی النعمۃ، انھم
یکیدون کیدا واکید کیدا، فمھل الکفرین امھلھم رویدا

इन सारी आयतों का मतलब यह बनता है कि हम ने अपने नाफ़रमानों को ढील दे हुई हैं। वे झूठ बोल कर कमा रहे हैं और उनको रिज़्क़ आता है, वे लोगों के पैसे मार रहे हैं, दबा रहे हैं, हक़ मार रहे हैं, ख़्यानत कर रहे हैं, ग़लत को सही शकल में बेच रहे हैं और उनको रिज़्क़ आ रहा है तो यह अल्लाह की किताब कहती है कि हम ने उनको मोहलत दी हुई है।

ढील के बाद पकड़ बहुत सख़्त होती है

और उन सब को आप बताइए ﴿واملی لھم ان کیدی متین﴾ जब तुम्हारा रब उनको पकड़ेगा तो उसकी पकड़ बड़ी सख़्त है।

﴿وكذالك أخذ ربك اذآ اخذ القرى وهى ظالمة﴾ ﴿ان اخذه اليم شديد﴾ यही तेरे रब की पकड़ का हाल है कि जब वह बस्तियों को पकड़ता है तो उसकी पकड़ बड़ी सख़्त है। ﴿ان فى ذالك لآية﴾ और इसमें बड़ी निशानियां हैं। ﴿لمن خاف عذاب الآخرة﴾ जिसको आख़िरत के अज़ाब का डर है वह इससे सबक़ हासिल करे और जिसको आख़िरत का ख़ौफ़ नहीं वह बहक जाएगा, भटक जाएगा। आख़िरत को जानने वालों के लिए इतनी ही निशानियां इसमें काफ़ी हैं। यह सब अल्लाह तआला की ढील हैं यह नहीं कि वे अल्लाह तआला से ग़ालिब होकर कमा रहे हैं।

क़ुरैशे मक्का का अबू तालिब से इसरार करना कि भतीजे को दावत से रोकें

मेरे भाईयों! हम अल्लाह तआला को साथ ले लें। वह खाता नहीं कि उसको तमा हो कि मैं पहले ख़ुद खाऊँ फिर तुम्हें खिलाऊँगा। माँ को भी सख़्त भूक लगी होती है तो पहले ख़ुद खा लेती है फिर बेटों को खिलाती है, तो अल्लाह न घर का मोहताज है कि पहले अपने लिए घर बनाए फिर आपको घर दे न आराम का मोहताज है कि ख़ुद आराम कर ले फिर आप को आराम कराए। हर हाजत से हर ऐब से पाक ज़ात है। फिर अपने फ़ैसलों में उसको कोई चैलेन्ज नहीं कर सकता। वह हकीम ज़ात है अगर वह ज़ात अकेली हमको मिल गई तो हमें सब कुछ मिल गया। ﴿اليس الله بكاف عبده﴾ मेरे बन्दे काफ़ी नहीं हूँ मैं? अल्लाह भी और कोई भी इसी को शिर्क कहते हैं। अल्लाह भी है ये भी है और वह भी है। यहीं से शिर्क के दरवाज़े खुलते हैं।

अबू तालिब के गिर्द क़ुरैश का घेरा है और इसरार कर रहे हैं कि अपने भतीजे को रोक लो वरना हम उसको क़त्ल कर देंगे। उन्होंने बुलाया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए, चारपाई के पाँव की तरफ़ बैठ गए, भतीजे तेरी क़ौम आई है सिर्फ़ आप इनको कुछ कहना छोड़ दें और ये तुझे कुछ नहीं कहेंगे। ﴿ام كلمة واحدة تاتونها﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ चचा! मैं एक बात इनसे करता हूँ, एक बोल मेरा मान लें तो अरब सारा इनके ताबे होगा और सारा जहाँ इनकी हुकूमत के नीचे आ जाएगा तो यह सब उछल पड़े। अबू जहल ने अपनी रान पर हाथ मार के कहा ﴿وابيك عشرة﴾ तेरे बाप की क़सम दस दफ़ा भी तेरे बोल मानने को तैयार हूँ वह बोल क्या है जिससे अरब हमारे ताबे हो जाएं? वह क्या है जिसकी वजह से अरब व अजम हमारा गुलाम हो जाए? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿لا اله الا الله﴾ बस यह मान लो तो उसने कहा ﴿اجعل الالهة الها واحدا ان هذا لشئ عجاب﴾ तू कई ख़ुदाओं को एक बनाता है यह हमारी समझ में नहीं आता। यही आज हमारी समझ में नहीं आ रहा है।

इन्सान पर अल्लाह तआला के बेशुमार एहसानात हैं

मेरे भाईयों! अल्लाह तआला को साथ लें तो बहर व बर, फ़र्श व अर्श, लौह व कुर्सी, ज़मीन व मकान, हवा, फ़िज़ा सब अल्लाह की हैं और अल्लाह के ताबे हैं। यह आलम कुछ न था अल्लाह

ने आदम अलैहिस्सलाम के साथ इसको बनाया और इसको शकल दी। हर चीज़ को बनाया और इसका अन्दाज़ा लगाया। ﴿فقدره تقديرا، يصوركم في الارحام كيف يشاء﴾ फिर आसमान उठाया ﴿رفع السموات بغير عمد﴾ आसमान के लिए कोई सुतून नहीं लगाया फिर ज़मीन को बिछाया ﴿والارض بعد ذلك دحها﴾ फिर इसमें से पानी निकाला ﴿واخرج منها مآء ها﴾ फिर चारा निकाला ﴿ومرعها﴾ फिर पहाड़ लगाए ﴿والجبال ارسها﴾ रात और दिन का निज़ाम बनाया ﴿يغشى الليل النهار﴾ फिर कभी दिन को लम्बा किया और कभी रात को लम्बा किया फिर सूरज को धहकाया ﴿وجعلنا سراجا وهاجا﴾ फिर अल्लाह ने चाँद की चाँदनी को ठण्डा करके ज़मीन पर बखेर दिया ﴿القمر نورا الم تروكيف خلق الله سبع سموات طباقا﴾ तुम ग़ौर क्यों नहीं करते हो तुम्हारे रब ने ज़मीन ब आसमान को कैसे बनाया? ﴿وجعل القمر فيهن نورا وخلقناكم ازواجا﴾ तुम को जोड़ा जोड़ा बनाया ﴿وجعلنا نومكم سباتا﴾ हमें सारी चीज़ों से काट देती है नींद, रात को अल्लाह तआला ने सबके लिए तमाम मख़लूक़ात के लिए आराम की चीज़ बनाई अगर हम ख़ुद अपने सोने का वक़्त मुताय्यन करते तो कितनी परेशानी होती। एक आदमी आराम करता तो दूसरा काम करता जिससे शोर होता दूसरे का आराम ख़राब हो जाता इसी तरह तमाम हैवानात और परिन्दे रात को आराम करते हैं अगर परिन्दे और हैवानात भी रात को आराम न करते तो इन्सान को आराम करना मुश्किल होता। अल्लाह ने रात को तमाम जानवर, इन्सान, परिन्दों के लिए आराम करने के लिए बनाया। रात को तमाम जानवर और इन्सान तमाम मसरूफ़ियात से कट जाते हैं। अल्लाह तआला ने सब को एक

सोने का वक़्त दें दिया फिर सब को एक जागने का वक़्त दे दिया। ﴿وجعلنا النهار معاشا﴾ आधा दिन अल्लाह ने हमको दिया और आधा दिन अपने लिए बनाया। ज़ोहर और फ़ज्र में लम्बा वक़्त है, ज़ोहर के बाद नमाज़ों का थोड़ा होना शुरू हो जाता है। फ़ज्र से ज़ोहर तक काम करो। ज़ोहर से अस्र तक उसे समेट लो। फिर अस्र मग़रिब और इशा का वक़्त ऊपर नीचे जो आता है यह इस बात की निशानी है कि यह वक़्त कारोबार का नहीं है, यह वक़्त मेरे लिए है। मुझे बैठकर याद करो। हमारे यहाँ कारोबार ही अस्र मग़रिब से शुरू होते हैं। ऐन वक़्त अल्लाह की मुहब्बत का, अल्लाह को याद रकने का और वह वक़्त कारोबार का हो गया है, उल्टी गंगा बहा दी।

निज़ामे क़ुदरत इन्सान के लिए मुफ़ीद है

अल्लाह तआला क़ुरआन के ज़रिये हमें बता रहा है कि यह हवा का निज़ाम, पानी का निज़ाम, पहाड़ों का निज़ाम, दरियाओं का निज़ाम, फलों का निज़ाम, ज़मीन का निज़ाम हमारे लिए है। अल्लाह तआला को इन चीज़ों की ज़रूरत नहीं है तो अल्लाह ही से बना कर रखो। फ़ैसलाबाद के एस पी से, मेयर से, कमिश्नर से बना कर रखो और ज़मीन व आसमान के बादशाह से बिगाड़ कर रखो कैसी हिमाक़त है? लोग तो बदमाशों से बना कर रखते हैं जिनको काम पड़े तो काम आएंगे तो हम ज़मीन आसमान के बादशाह से बिगाड़ कर चलें तो हमारी ज़िन्दगी कैसे सुखी होगी हम कैसे चैन पाएंगे।

लामहदूद ख़ज़ानों का मालिक अल्लाह है

मेरे भाईयों! तो इस लिए अपने अल्लाह से ताल्लुक़ कर लो, हर काम में साथ ले लो। सबसे ज़्यादा अल्लाह को साथ लेना आसान है, बड़ा आसान है। बादशाह है उसकी क़ुदरत इतनी बड़ी है कि उसकी कोई हद नहीं। अपने बन्दों से ताल्लुक़ इतना है कि काएनात इजाज़त मांगती है कि नाफ़रमानों को हलाक कर दूँ तो अल्लाह कहते हैं कि नहीं छोड़ो, मैं तौबा का इन्तेज़ार करता हूँ। तो पहला काम करने का यह है कि अपने अल्लाह को साथ लेना है तो इसके लिए तौबा कर लें। तबलीग़ कोई जमात नहीं। यह एक मेहनत है कि हर मुसलमान अपने अल्लाह से जोड़ और ताल्लुक़ बना ले। मसूअले हल करवाने हैं तो अल्लाह से करवा ले। उसको लेते हुए न कोई घबराहट होती है न पीछे देखे कि बच गया है कि नहीं जो रह गया है तो आ के ले लेना। अल्लाह के यहाँ यह नहीं, वह कहता है मुझसे लेते रहो जितने चाहिए लेते जाओ। कितनों को मिलेगा? तो कहता है:

اولكم وآخركم وانسكم وجنكم وحيكم وميتكم ورطبكم
ويابسكم وذكركم وانثیٰ كم وصغيركم وكبيركم

यह सबके सब क्या करें? एक मैदान में खड़े हो जाओ ﴿فاسئلوني﴾ फिर मांगो, हर एक अपनी अपनी ज़ुबान में मांग ले, पंजाबी पंजाबी में, पठान पश्तों में, फ़ारसी फ़ारसी दान में, सिन्ध वाले सिन्धी में, बलूच बलूची में। सारे अपनी अपनी ज़ुबानों में अल्लाह से मांग लो, इकठ्ठे एक ही आवाज़ में मांग लो तो अल्लाह तआला यह नहीं कहेगा, अरे भाई क्या कर रहे हो, इतना

शोर? मैं किन किन की सुनूंगा बारी बारी मांगो, जितना जी में आता है मांगो ﴿فـاتيـت كـل انسـان مسئلة﴾ मैं तुम सबका मांगा तुम सबको दे दूंगा। फिरः

مانقص ذالك مما عندى الا مما ينقص مخية اذاادخل فى البحر

मेरे ख़ज़ाने में इतनी भी कमी नहीं आती जितनी सुई को समंदर में डाल कर बाहर निकाला जाता है, जिस तरह उस समंदर में कोई कमी नहीं आती इसी तरह तेरे रब के ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं आती।

अल्लाह से ताल्लुक़ का क्या मतलब है?

तो मेरे भाईयों! ऐसे अल्लाह मेरे और आपके साथ हो जाएं तो क्या ख़्याल है हमारे काम बनेंगे या नहीं?

और पैसा कमाना कोई आसान होता है फिर उसको बाक़ी रखना कोई आसान होता है। जवानी में बूढ़े हो जाते हैं। अल्लाह को साथ ले लो फिर तो ये पाँचों उंगलियां घी में और सिर कढ़ाई में। अल्लाह से यारी लगा लो, अल्लाह को अपना बना लो, अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा कर लो। ताल्लुक़ का क्या मतलब? कहते हैं कि मेरा उससे ताल्लुक़ है ग़म न करो, शोर न मचाओ, मैं जाऊँगा काम बनेगा। अगर उसके दरवाज़े पर जाऊँगा तो नहीं ठुकराएगा, हमें नहीं रद करेगा। इसी को ताल्लुक़ कहते हैं। वह मुझे जानते हैं मैं उनको जानता हूँ, इसी तरह मैं आप को नहीं जानता, आप में से बहुत सारे मुझे जानते हैं, नाम से नहीं जानते, शकल से तो मुझे पहचान रहे हैं। तार्रुफ़ तो इसको भी कहते हैं।

तार्रुफ़ और ताल्लुक़ का मतलब यह है कि जब आप उसके दरवाज़े पर जाएं तो वह आपका काम ज़रूर करे अगर वह कर सकता है, आपको वह लौटा न सके। ऐसे अल्लाह के साथ ताल्लुक़ बना लें और अल्लाह भी यही फ़रमाता है कि अपने बन्दे के हाथ ख़ाली लौटाते हुए मुझे शर्म आती है। इसका नाम ताल्लुक़ है। इस ताल्लुक़ को अल्लाह पाक के साथ आप बना लें।

मालिक बिन दीनार रह० का दिलचस्प वाक़िया

मालिक बिन दीनार रह० किश्ती में सवार होकर सफ़र कर रहे थे। कपड़े ऐसे ही थे। किसी आदमी का क़ीमती पत्थर चोरी हो गया। वह लाल जवाहरात का हीरा था, उसने शोर मचाया कि मेरा पत्थर चोरी हो गया, मेरा पत्थर चोरी हो गया। उसने मालिक बिन दीनार रह० पर शक किया कि मेरा चोर यह लगता है। इस किश्ती में ज़ुन्नून मिसरी रह० भी बैठे हुए थे। उन्होंने कहा सब्र करें मैं इस आदमी से कुछ बात करता हूँ। वह मालिक बिन दीनार रह० के पास आकर कहने लगे, बेटा तुम से भूल चूक हो गई, तुमने इनका हीरा ले लिया है। उन्होंने यह नहीं कहा कि मैं कोई चोर नहीं हूँ आप मेरी तलाशी ले लें और अपना सामान खोला कि इसमें देख लें और यह मेरी ज़ेब है इसमें भी देख लें, मैंने तो कोई चोरी नहीं की। लेकिन उन्होंने क्या किया? कोई जवाब नहीं दिया ﴿نظر نظرة في السماء﴾ आसमान को यों देखा, हॉय वह भी लोग थे हम भी लोग हैं।

एक हदीस में आया है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फ़रमाया एक वक़्त ऐसा आएगा कि मेरी उम्मत का शौक़ पैसे जमा करना होगा या शहवत पूरी करना होगा बस, अच्छे अच्छे खानों का शौक़ होगा, शहवतों की ख़ातिर औरतों के पीछे भाग रहे होंगे। इसके अलावा उनका कोई शौक़ नहीं रह जाएगा। वे इन्सान नहीं होंगे इन्सान की शक्ल में जानवर होंगे।

मालिक बिन दीनार रह० का वाक़िया

मालिक बिन दीनार रह० चन्द साल पहले शराब में मस्त रहते थे, फिर अल्लाह ने हिदायत दे दी, फिर जान लगाई, मेहनत की, फिर यह मुक़ाम आया ﴿نظر نظرة فى السمآء﴾ आसमान की तरफ़ यों देखा तो चारों तरफ़ से किश्ती को मच्छलियों ने घेरा डाल दिया और हर मच्छली के मुँह में एक हीरा था तो उन्होंने हर मच्छली के मुँह से एक हीरे का पत्थर निकाल कर ज़ुन्नून मिसरी रह० को दिखाया कि आप यह ले लें मैंने चोरी तो नहीं की, जिसका गुम हुआ है उसको दे दें और वह खुद किश्ती से उतरे पानी के ऊपर चलते हुए पार हो गए।

अल्लाह के भरोसे पर समंदर की गुलामी

हदीसे पाक में आता है कि जिस आदमी के दिल में राई के दाने के बराबर तवक्कुल और भरोसा होगा तो वह पानी पर चले तो पानी उसको रास्ता देगा, उसको डुबो नहीं सकेगा

لو كان لا بن آدم حبة الشعير من اليقين ان يمشى على المآء.

मेरे भाईयों! अल्लाह से ताल्लुक़ बना लें .

उम्मे साद के बेटे का मरने के बाद ज़िन्दा होना

उम्मे साद रज़ियल्लाहु अन्हा का बेटा फ़ौत हो गया तो आयीं मय्यत को ग़ुस्ल दिया था। इस मय्यत के पाँव की तरफ़ आकर बैठ गयीं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी साथ तशरीफ़ फ़रमा थे। उनसे कुछ कहा नहीं, ख़ामोशी से दुआ करना शुरू की ﴿امنت بك طوعا وهاوهاجرت اليك رغبة﴾ या अल्लाह तेरी मुहब्बत में कलिमा पढ़ा, तेरी मुहब्बत में घर छोड़ा और तेरे हबीब के घर आई और यह मेरा बेटा तुम ने ले लिया ﴿فلا تشمت بی الاعدآء﴾ या अल्लाह आप दुश्मन को क्यों मौक़ा देते हैं कि वे कहेंगे कि बाप दादा का मज़हब छोड़ा बेटा गया, या अल्लाह मेरी इज़्ज़त रख। सिर्फ़ इतना ही कहा कि ﴿فلا تشمت بی الاعدآء﴾ मेरे दुश्मनों को हंसने का मौक़ा न दें तो हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उनके अलफ़ाज़ पूरे नहीं हुए थे कि मय्यत में हरकत हुई और अपने ऊपर से कफ़न को खोला और उठकर बैठ गया। यह ताल्लुक़ हम भी अल्लाह से बना सकते हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सामने हैं उनसे नहीं कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुआ कर दें। खुद दुआ की मुसलमान का मुसलमान के लिए दुआ करना सुन्नत है और दुआ की तलब भी सुन्नत है लेकिन हमारे मआशरें में रिवाज पड़ गया है कि करना कुछ नहीं आप मेरे लिए खुसूसी दुआ कर दें। खुसूसी दुआ तो यों हुआ कि मौलाना साहब मेरे पेट में दर्द है आप मेरे लिए हाय हाय कर दें। मैं क्यों हाय हाय करूं पेट में आपके दर्द मैं हाय हाय करूं?

अल्लाह के हुक्म से ख़ाली चक्की का चलना

मेरे लिए खुसूसी दुआ करें। हां दुआ ज़रूर करवानी चाहिए एक दूसरे से। खुसूसी दुआ उसे कहते हैं कि आदमी तड़प के साथ कहता है या अल्लाह! खुद अन्दर से जब आदमी तड़प के बोलता है या अल्लाह! यह खुसूसी दुआ है। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में आए पूछा कुछ है? बीवी ने कहा नहीं, फ़ाक़ा है। पेरशान हो गए न घर में बैठा जाए और न भूक का हाल देखा जाए तो बाहर चले गए। बीवी ने सोचा कि मैं अपना फ़ाक़ा कैसे छुपाऊँ? अड़ौस पड़ौस कैसे छुपाऊँ कि हमारे घर में कुछ नहीं है। उसने तन्नूर में आग जलाई। अड़ौस पड़ौस को पता चल जाए इसने रोटी पकाने के लिए तन्नूर गर्म किया है, इधर ख़ाली चक्की चलानी शुरू कर दी कि पड़ौस को पता चल जाए कि आटा पीस रही है। यों अपने फ़ाक़े को छुपाया। इस दौरान अल्लाह तआला से दुआ कर दी कि या अल्लाह आप जानते हैं कि हम भूके हैं हमें रिज़्क़ खिला दें ﴿اللهم ارزقنا﴾ सिर्फ़ एक जुमला या अल्लाह हमें खिला दें। अभी इसके अलफ़ाज़ भी ख़त्म नहीं हुए थे कि तन्नूर से खुशबुएं उठने लगीं और इतने में दरवाज़े पर ख़ाविन्द आ गया तो वह दरवाज़े पर ख़ाविन्द को लेने गई। मियां और बीवी ने तन्नूर में झांक कर देखा तो तन्नूर में रानें भूनी जा रहीं हैं और चक्की पर जा कर देखा तो उससे आटा निकल रहा है। सारे बर्तन भर लिए। जब उठाकर देखा तो कुछ भी नहीं। अब वह हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह वाक़िया हुआ है, तो आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तू उठाकर न देखता तो क़यामत तक यह चक्की चलती रहती।

मेरे भाईयों! ऐसा ताल्लुक़ अल्लाह तआला से बना लें। फिर सौदे में झूठ बोलने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, फिर हमें सूद पर सौदा करना नहीं पड़ेगा, फिर उधार का रेट अलग करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अल्लाह तआला से अपना ताल्लुक़ बना लें। उससे मांगना आ जाए या अल्लाह! खुदा की क़सम इसमें जो ताक़त है, इससे अर्श के दरवाज़े खुल जाते हैं बशर्ते कि सीखा हुआ हो।

जिसका काम करें उसका मेहमान बनें

तबलीग़ का जो यह काम है यह इस बात की मेहनत है कि अल्लाह से ताल्लुक़ बनाया जाए। जब ताल्लुक़ बन जाता है तो यों ही काम हो जाता है। अबू मुस्लिम ख़ोलानी रह० कहते हैं कि मैं हज पर जाता हूँ तो कौन तैयार है तो कई हज़ार आदमी तैयार हो गए। कहने लगे मेरे साथ वह चले जो न तोशा लें न पानी लें न कोई पैसा लें, फिर सफ़र कैसे होगा? न खाना, न पानी, न तोशा? तो फ़रमाने लगे जिसके मेहमान हैं उससे मांगेंगे, तो सारे पीछे हट गए कोई चन्द साथ रह गए। उनको लेकर चल दिए। चलते चलते थक गए। सवारियां भी थक गयीं तो कहने लगे अबू मुस्लिम खिलाओ भूके हैं हम भी सवारियां भी। तो अबू मुस्लिम ने नमाज़ पढ़ी। नमाज़ के बाद घुटनों के बल यों खड़े हो गए और हाथ उठाए या अल्लाह इतने लोग किसी बख़ील के दर पर जाए तो वह भी शर्मा कर सख़ी बन जाए तो तू तो सख़ियों का सख़ी है। हम तेरे घर को जा रहे हैं, तेरे सहारे पर निकले हैं, तेरे

मेहमान हैं, तू ने बनी इसराइल को मन सलवा दिया हमें भी दे। अभी उनके हाथ नीचे नहीं हुए थे कि उनके ख़ेमों में खाने के दस्तरख़्वान बिछे पड़े थे और उनके जानवरों के लिए गुठलियां आ चुकी थीं। चलो भाई खा लो। जब खाने के बाद जो बच गया तो साथियों ने कहा कि यह रख लेते तो अबू मुस्लिम रह० फ़रमाते हैं कि अभी खिलाया अगले वक़्त में वह दोबारा गर्म और ताज़ा खिलाएगा। सारा सफ़र इसी तरह किया। ऐसा भी मुक़ाम आता है।

दीन का काम करने वालों के लिए दरिया का मुसख़्ख़र (क़ाबू में) होना

चलते चलते यही अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० तीन हज़ार का लश्कार लेकर मुल्के शाम पहुँचे। सामने दरिया था और दरिया पार करना था पुल कोई नहीं। सवारी पर से उतरे, दो रकआत नमाज़ पढ़ी या अल्लाह! तूने बनी इसराइल को दरिया में रास्ता दिया था और अब अपने हबीब की उम्मत को भी रास्ता दें फिर आवाज़ लगाई आओ मेरे साथ जिसका कोई जान, माल ज़ाए हो जाए मेरे ज़िम्मे लगा लो, मैं ज़िम्मेदार हूँ आ जाओ। फिर अपने घोड़े को पानी में डाला। अल्लाह तआला ने पानी को मुसख़्ख़र फ़रमा दिया। वह पानी भी पहाड़ी था, पहाड़ी पानी पत्थरों को भी उड़ा के ले जाता है। फिर तीन हज़ार आदमी यों ही दरिया के पार निकल गए एक आदमी ने जान बूझकर ख़ुद अपना पियाला दरिया में फेंक दिया। जब दूसरी तरफ़ पार हो गए तो अबू मुस्लिम रह० ने कहा कहो भाई किसी का कोई नुक़सान हुआ? तो उस आदमी ने कहा जी हां मेरा पियाला दरिया में चला गया फिर जहां से

दरिया पार किया था उसको लेकर वहाँ पहुँच गया। वहाँ पर जाके देखा लकड़ी का पियाला पड़ा हुआ था। उन्होंने कहा यह है तम्हारा पियाला? जी हां यह मेरा पियाला है, उठा लो। मेरे भाईयों ऐसा ताल्लुक़ अल्लाह से पैदा करें और यह बहुत आसान है बहुत ही आसान है न धक्के खाने पड़ें न किसी की ख़ुशामद करनी पड़े न किसी की जूती उठानी पड़े।

सबसे पहला काम तौबा करना है

आज ही हम सब तौबा कर लें या अल्लाह मेरी तौबा, या अल्लाह मेरी तौबा ﴿جنتك تائب فاقبل فى يا الله﴾ मेरी तौबा क़ुबूल कर लें तो करने का काम यह है कि आज गुनाहों से तौबा करके जाएं।

दावत को अपनी ज़िम्मेदारी समझना

दूसरा काम यह है कि आज के बाद अपनी ज़िन्दगी को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी के मुताबिक़ बनाने की नियत कर ली जाए और यह सीखना शुरू कर दें और यह मेहनत हो रही है ज़िन्दगी नबी के तरीक़े पर आ जाए। अल्लाह तआला के हां न रिश्ता, न नाता, न क़ौम, न अरबी, न क़ुरैशी, न शैख़, न पीर, न दोस्ती, न बादशाह, न दरबारी, न वज़ीर, कुछ भी नहीं सिर्फ़ एक ही सिक्का है ﴿لا اله الا الله﴾ और उसके साथ क्या? ﴿محمد الرسول الله﴾ जिसको अल्लाह ने अपने साथ जोड़ा है उनके तरीक़े पर- आ जाएं और उनकी

सुन्नत पर आ जाएं तो अल्लाह तआला गोरे का भी हो जाएगा, काले का भी हो जाएगा और ग़रीब का भी हो जाएगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह ने अपना क़ुर्ब दिया है और अपनी माइय्यत दी है। आदम अलैहिस्सलाम के जिस्म में रूह डाली तो उन्होंने देखा कि अर्श पर ﴿لا الہ الا اللہ محمد الرسول اللہ﴾ लिखा हुआ है जब जन्नत में गए तो दरवाज़े पर देखा तो लिखा है ﴿لا الہ الا اللہ محمد الرسول اللہ﴾ जब जन्नत की हूरों को देखा तो हर एक के माथे पर लिखा है ﴿لا الہ الا اللہ محمد الرسول اللہ﴾। तो तौबा और इत्तेबा। एक काम तौबा का है दूसरा काम अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी अपनाने का है। सब से बड़ी इज़्ज़त वाली ज़ात अल्लाह के रसूल की है दुनिया में किसी ने महल बनाया, किसी ने हुकूमतें चलायीं, कोई चाँद तक पहुँचा, कोई मरीख़ तक और अल्लाह का रसूल एक ही रात में बैतुल्लाह से बैतुल मुक़द्दस पहुँचे, वहां से एक क़दम में पहला आसमान, फिर दूसरा, फिर तीसरा, आख़िर सातों आसमान तक पहुँचे, फ़रिश्तों से इस्तिक़बाल करवाया, नबियों से इस्तिक़बाल करवाया फिर अल्लाह तआला और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मकालमा हुआ, अपना दीदार कराया। ऐसे नबी की ज़िन्दगी को छोड़ कर कहाँ जाएं।

एक बद्दू से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मकालमा (बातचीत)

एक बद्दू आया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत

में और उसने तीन बातें सामने रखीं तो कहता है कि हम बाप दादा के दीन छोड़ कर तेरे दीन पर आ जाएं, बाप दादों को छोड़ कर तेरी मान लें यह कैसे हो सकता है?

दूसरी कहता है कैसर व क़िसरा हमारे ग़ुलाम हो जाएंगे। हमें रोटी नहीं मिलती, रूम व फ़ारस की हुकूमतें हमारी ग़ुलाम हो जाएंगी, यह कैसे हो सकता है?

तीसरी कहता है कि मर जाएंगे मिट्टी हो जाएंगे फिर उठाकर हमको ज़िन्दा कर दिया जाएगा, यह भी नहीं हो सकता

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तुझे ज़िन्दगी देगा तो देखेगा कि सारा अरब मेरा कलिमा पढ़ेगा, तू देखेगा कैसर व किसरा फ़तेह होंगे, रही तीसरी बात क़यामत दिन ﴿ولا خذنك بيدك هذه ولأذكرتك بمقالتك هذه﴾ मैं क़यामत के दिन तेरा हाथ पकड़ूंगा और तुझे तेरी यह बात याद दिला दूंगा। कहने लगा मैं नहीं मानता ऐसी फ़ुज़ूल बातें। वापस चला गया। उसकी ज़िन्दगी में मक्का फ़तेह हुआ, उसकी ज़िन्दगी ही में तबूक तक इस्लाम फैल गया, मुसलमान नहीं हुआ, और उसकी ज़िन्दगी में क़ादसिया लड़ाई हुई, ईरान फ़तेह हुआ, यरमूक की लड़ाई हुई तो रोम फ़तेह हुआ तो अब वह डर गया कि दोनों फ़तेह हुए तीसरा भी होगा तो वह मुसलमान होकर मदीना मुनव्वरा में हिजरत करके आ गया। जब मस्जिद में आया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उठ कर उसका इस्तिक़बाल किया औ इकराम किया फिर दूसरे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से फ़रमाया कि जानते हो यह कौन है वह जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तुम्हारा हाथ पकड़ कर याद

दिलाऊँगा और कयामत के दिन जिसका हाथ हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिसका हाथ पकड़ें तो जन्नत में पहुँचाने से पहले कभी नहीं छोड़ेंगे। यह तो पक्का जन्नती है।

माहौल आदमी को मुतास्सिर करता है

तो मेरे भाईयों! सबसे हाथ छुड़ाकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में हाथ दे दो। यह तबलीग़ का काम यह तबलीग़ की मेहनत है तौबा कर लें और ज़िन्दगी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ले आएं और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में आसानी है। झूठ में मुसीबत और परेशानियां हैं। आज तौबा करके जाओ चार महीने लगाओ या न लगाओ, तौबा तो कर लो लेकिन बात यह है कि तौबा पक्की तब होती है जब आदमी अपना माहौल छोड़ता है। इसके लिए भी निकलना फ़र्ज़ है, यहाँ तो तौबा पक्की नहीं हो रही है, टूट रही है, इधर अल्लाह रहीम तो है लेकिन हमारी तौबा मज़ाक़ न बन जाए।

अल्लाह की मॉफी का बे पनाह करिश्मा

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि निन्नानवें क़त्ल करने वाले ने सोचा कि तौबा कर लूं किसी अनपढ़ से पूछा कि तौबा करना चाहता हूँ तो उसने कहा आप की कोई तौबा नहीं, उसने कहा फिर सौ पूरा करूँ तो उसको भी ख़त्म कर दिया तो सौ पूरे हो गए। फिर किसी आलिम से पूछा कि मेरी तौबा हो सकती है तो

उन्होंने कहा कि हां तौबा तो है लेकिन यह जगह छोड़ के कहीं नेक लोगों की सोहबत में चले जाओ।

अब तो मुसीबत यह है कि नेक लोंगों की बस्ती कहाँ है। यहाँ चारों तरफ़ गन्द ही गन्द है तो अल्लाह तआला ने इस वक़्त हमें एक माहौल दिया है। दस बारह आदमी एक ईमानी फ़िज़ा बना कर चल रहे होते हैं उसके अन्दर जो चला जाता है तो एक ऐसी फ़िज़ा में आ जाता है कि उनके आमाल अगरचे कमज़ोर होते हैं उसके अन्दर आहिस्ता आहिस्ता उनके दिल व दिमाग़ में तौबा की ताक़त पैदा कर देते हैं। अल्लाह तआला ने चलता फिरता माहौल हमें अता फ़रमा दिया है।

तबलीग़ की बरकत से एक तवाएफ़ा का ताएब होना

दो साल पहले हम अमरीका गए तो हिन्दुस्तान के हैदरा बाद के अमीरुद्दीन हमारे साथ थे वह गश्त में गए। वहाँ एक अरब मुसलमान का क्लब था शराब का। जब वह उनको दावत देने गए तो वे सब शराब में मस्त थे और एक लड़की नंगी स्टेज पर नाच रही थी और एक लड़का साथ में ड्रम बजा रहा था। जब उन्होंने उन सब को इकठ्ठा करके दावत देना शुरू की तो वह लड़की उनके पीछे आकर खड़ी होकर सुनने लगी तो वे सब नशे में थे उनको क्या समझ में आए जो लड़की पीछे खड़ी सुन रही थी उसने कहा जो बात आप इनको समझा रहे हैं वह मुझे समझा दो मेरी समझ में आ रही है। ये लोग मुँह नीचे करके उसको समझाने

लगे तो उसने कहा ठीक है आपकी बात, आप मुझे मुसलमान बनाएं मैं मुसलमान होना चाहती हूँ। वह जो ड्रम बजा रहा था वह उस लड़की का ख़ाविन्द था वह भी मुसलमान हो गया। मियाँ बीवी दोनों मुसलमान हो गए। उन्होंने उस से कहा बेटी कपड़े पहन कर आ। वह कपड़े पहन कर आई। तीन चार दिन जमात वहाँ पर थी। उनसे कहा आती रहो और सुनती रहो, समझती रहो, तो वह आती रही, सुनती रही, समझती रही। तो अब उन्होंने उन से कहा जब कभी ज़रूरत पड़े तो इस फ़ोन पर बात कर लेना तो दो महीने या कितना अरसा गुज़रा तो उस लड़की का फ़ोन आया कहा कि आप मुझे पहचानते हैं कर्नल साहब? उन्होंने कहा हाँ आप वही रक़ासा लड़की हैं जिसको दो महीने पहले मैं ने क्लब में देखा था। उस लड़की ने कहा कि जब आप को अल्लाह तआला मेरी ज़िन्दगी बदलने का ज़रिया बनाया है। जब आप ने हमें दावत दी? हम मुसलमान हुए, उस वक़्त हम मियां बीवी सिर्फ़ एक रात में पाँच सौ डॉलर कमा लिया करते थे। जब आपने मुझे मुसलमान बना दिया तो पता चला कि औरत के लिए कमाना ठीक नहीं है तो मैं ने अपने ख़ाविन्द से कहा कि आप जाइए कमा कर लाइए। मैं घर में बैठती हूँ। ख़ाविन्द को कोई काम आता नहीं था। उसने मज़दूरी शुरू कर दी तो अब उनको एक दिन में सिर्फ़ चालीस डॉलर मिलते हैं। अमरीका में पाँच सौ डॉलर से चालीस डॉलर में आ जाना यह ख़ुदकशी के बराबर है। हमने घर बेचा और गाड़ी बेची। एक छोटा सा फ़्लैट है जिसमें हम दोनों मियाँ बीवी रहते हैं और आपने हम से कहा था, हम दोनों अपने रिश्तेदारों को दावत देते हैं। हमारी गाड़ियां तो हैं नहीं, बसों से सफ़र करते हैं। आज

हम जा रहे थे, मेरे हाथ में बस का डंडा था उसको पकड़ा हुआ था। जब बस को झटका लगा तो जो मेरे बाज़ू का कुर्ता है यह इतना नीचे आ गया कि बाज़ू का चौथाई नंगा हो गया। क्या इस पर मैं दोज़ख़ में तो नहीं जाऊँगी? टेलीफ़ोन पर रोना शुरू कर दिया। चन्द दिन पहले यह लड़की स्टेज पर नाच रही थी फिर इतने दिन बाद इसके बाज़ू का थोड़ा सा हिस्सा नंगा होने पर वह रो रही है कि इससे मैं दोज़ख़ में तो नहीं जाऊँगी? यह माहौल है। माहौल ने ऐसी फ़ाहिशा औरतों को इतने तक़्वे पर पहुँचा दिया।

जब माहौल नहीं तो हमारी बेटियां उनके बाज़ू नंगे होते जा रहे हैं और स्टेज पर नाचने वाली इतने से बाज़ू नंगे होने पर रो रही है, इससे मैं दोज़ख़ में तो नहीं चली जाएऊँगा? तौबा की पुख़्तगी के लिए अल्लाह के रास्ते में निकलना यह बहुत बड़ा ज़रिया है तो उस आलिम ने कहा बेटा बस्ती छोड़ दो उसने कहा बख़्शिश हो जाएगी तो मैं तैयार हूँ। चल पड़ा तो रास्ते में मौत आई और सफ़र थोड़ा तय हुआ था। अल्लाह तआला ने क़यामत तक के लिए नमूना बनाना था तो दो फ़रिश्ते आ गए। जन्नत के भी और दोज़ख़ के भी। दोज़ख़ वाला कहता है यह हमारा है और जन्नत वाला कहता है यह हमारा है। जन्नत वाले कहते हैं तौबा कर ली है दोज़ख़ वाले कहते हैं तौबा पूरी ही नहीं हुई, वहाँ जा कर पूरी होनी थी तो अल्लाह तआला ने तीसरा फ़रिश्ता भेजा। उसने कहा कि सफ़र की मुसाफ़त नापो अगर यह यहाँ से घर के क़रीब है तो दोज़ख़ी, अगर नेक लोगों की बस्ती के क़रीब है तो जन्नती। जब फ़ासला नापने लगे तो नेक लोगों की बस्ती का फ़ासला ज़्यादा था और अपनी बस्ती का फ़ासला थोड़ा था तो अल्लाह तआला ने घर

की तरफ़ की ज़मीन को कहा फैल जाओ और नेक लोगों की बस्ती वाली ज़मीन को कहा कि सिकुड़ जाओ तो वह फैल गई और यह सिकुड़ती चली गई।

मेरे भाईयों! अगर दुकानों को बन्द करके निकलना पड़े तो बन्द करके निकल जाओ। अल्लाह की क़सम अल्लाह दुकानों के बग़ैर पाल सकता है। अल्लाह हम सबको अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آخر دعوانا عن الحمد لله رب العلمين

❑ ❑ ❑

अल्लाह तआला की अज़मत

9/8/2000

نحمده ونصلى على رسوله الكريم اما بعد.

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمٰن
الرحيم من ضل فانما يضل عليها الخ...

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: يا أبا سفيان جئتكم
بكرامة الدنيا وكرامة الآخرة او كما قال صلى الله عليه وسلم

इन्सान की फ़ितरत ही एहसान मन्दी है

मेरे भाईयों और दोस्तों! अल्लाह तआला ने इन्सान में एक सिफ़्त रखी है कि यह एहसान मन्द होता है अगर कोई इस पर एहसान करे बशर्ते फ़ितरत मसख़ न हुई हो तो यह एहसान को याद रखता है और यह एहसान करने वाले के सामने झुकता है। यह जानवर की भी सिफ़्त है। कुत्ता पाँव चाटता है और घोड़ा ख़िदमत करता है। इन्सान तो उनमें सबसे अशरफ़ मख़लूक़ है।

फ़ितरत की आवज़

मेरे दोस्तों अल्लाह पाक के जितने एहसानात इन्सान के ऊपर हैं और हमारे ऊपर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भी एहसानात हैं इतने और किसी के भी नहीं। फ़ितरत की आवाज़ है मोहसिन के सामने सिर झुकाया जाए। दुनिया के ऐतबार से हम करते ही हैं और जो मोहसिने आज़म है अल्लाह की ज़ात उसके सामने सिर झुकाते हैं और मोहसिने इन्सानियत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके सामने सिर झुकाने का रिवाज ख़त्म हो गया है। अदम से वजूद दिया अल्लाह तआला ने। हम कुछ न थे अल्लाह तआला ने बनाया, सब से अच्छा बनाया ﴿لقد خلقنا الانسان في احسن تقويم﴾ हम ने इन्सान सब से अच्छा बनाया फिर शक्ल व सूरत, रंग, ढंग हर एक चीज़ को अलग एतेदाल के साथ बनाया ﴿فسوّك فعدلك﴾ ऐसे बेढंगे नहीं हर एक चीज़ को अगल बड़ी तरतीब के साथ अल्लाह तआला ने बनाया। माँ के पेट में थे तो न माँ कुछ कर सकती थी न बाप कुछ कर सकता है। वहाँ अल्लाह तआला का निज़ाम चला। ﴿يا ابن آدم من بعث اليك الغذآء؟ وانت جنين فى بطن امك﴾ ऐ मेरे बन्दे जब तू माँ के पेट में था तो कौन था तुझे रिज़्क़ देने वाला? ﴿غشيتك فى الغشاء كى لا تخفى من ظلمة رحم﴾ तुझे पर्दे में रखा ताकि तुझे माँ के पेट में अन्धेरों में डर न लगे

جعل لك متك عن يمينك وعن شمالك، وعلمتك
الجلوس فى بطن امك هل يقدر ذالك احد غيرى

माँ के पेट में तेरे लिए दो तकिये लगाए इस पर बैठ कर तुझे

बोलना सिखाया, खेलना सिखाया तो कोई और भी मेरे अलावा है जो यह काम कर सके? यह परवरिश में अल्लाह का निज़ाम है मेरे भाईयों! हमें तो एक लम्हे भी उसकी नाफ़रमानी नहीं करनी चाहिए। हमारा तो सारा वजूद ही नाफ़रमानी में फंस गया। जिस्म के हर हर हिस्से पर बाल रगों पर गुनाहों की स्याहियां छाई हुई हैं। यहाँ हमारी फ़ितरत मद्हम पड़ गई।

रबूबियत का निज़ाम

परवरिश बड़ी मुश्किल चीज़ है अल्लाह तआला का रबूबियत को निज़ाम चला, जब दुनिया में आए तो हमारे मुँह में दांत नहीं ﴿لالك من تقطع﴾ जिससे काट सकें ﴿لك يد تبطش﴾ हाथ नहीं कि पकड़ सकें ﴿ولا لك رجل تمشى﴾ पाँव नहीं जिससे चल सकें। न चलने की ताक़त न सुनने की ताक़त, न पकड़ने की ताक़त, अपना माज़ी ज़मीर बताने की ताक़त,

اجرت لك عرقين رقيقين ينبا ان لك لبنا خالصًا دافئا في الشتاء باردا في الصيف

ऐ मेरे बन्दे तेरी ऐसी बे बसी की हालत में तेरे लिए तेरी माँ की छाती से दो चश्में जारी करता हूँ जो गर्मियों में सर्द और सर्दियों में गर्म दूध तुझे पिलाते हैं ﴿هل يقدر على ذلك احد﴾ फिर अगली मुशक़्क़त बहुत बड़ी है पेशाब कौन धोए, पाख़ाना कौन साफ़ करे, उसको ख़ुश्क कपड़ा कौन उढ़ाए, गीला कपड़ा कौन निकाले, उसके उठने पर कौन उठे, उसके तड़पने पर कौन तड़पे? यह निज़ाम चला तो वजूद में आया। अगली बात बतौर एहसान फ़रमाते हैं कि ﴿جعلت لك نهراً في صدر ابوك﴾ मैं तेरे माँ बाप के दिल में तेरी मुहब्बत को पेवस्त करता हूँ। ﴿لا يكن حتى تشبع ولا ينام حتى

﴿ترفد﴾ तू खाता नहीं तो वे खाते नहीं, तू सोता नहीं तो वे सोते नहीं, तेरे जागने पर जागते हैं, तेरे सोने पर सोते हैं, तेरे रोने पर रोते हैं, पेशाब पाख़ाना साफ़ करते हैं, कोई गिला और शिकवा नहीं करते। यह रबूबियत का निज़ाम ऊपर से अल्लाह चला रहे हैं। अल्लाह को यह मालूम है कि यह आगे जाकर फ़िरऔन बन जाएगा, क़ारून बन जाएगा, क़ातिल बन जाएगा, ज़ानी बन जाएगा, उसके बावजूद माँ की छाती से दूध उसको पिलाता है, माँ बाप के दिल को उसके लिए नरम फ़रमाता है। फिर इस निज़ाम को अल्लाह आहिस्ता आहिस्ता परवान चढ़ाता है, खाने पीने की ताक़त पैदा हो जाती है तो दूध खुश्क हो जाता है, दांत निकलने शुरू हो जाते हैं फिर अल्लाह का अगला रबूबियत का निज़ाम चलता है ﴿الم نجعل الارض مهادا﴾ हमारे आने से पहले ज़मीन बिछौना बनी पड़ी है ﴿امن جعل الارض قرارا﴾ ठहरने की जगह पहले से तैयार चुकी है ﴿هو الذی جعل لكم الارض ذلولا﴾ ज़मीन को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र, ताबे करके तैयार दिया ﴿وجعل فيها رواسی﴾ यह हिलती थी इसमें कील लगाए ﴿والجبال اوتادا، قدر فيها اقواتها فی اربعة ايام﴾ इसमें तुम्हारे लिए ग़ल्ले को रखा ﴿وانزلنا الحديد﴾ और इसमें तुम्हारे लिए लोहे को रखा और मादनियात को रखा ﴿انزلنا من السماء ماء مباركا﴾ आसमान से पानी ज़मीन के अन्दर से ग़ल्ले और मादनियात, दूसरी हज़ारों नेमतें, अल्लाह तआला का रबूबियत का निज़ाम हमारी तरफ़ मुतवज्जे हुआ। जब आँख खुली तो अल्लाह का दस्तरख़्वान तैयार है, अल्लाह का चिराग़ रौशनी दे रहा है, ज़मीन ग़ल्ला दे रही है।

इसी तरह ﴿وجعلنكم ازواجا﴾ तुम्हें मर्द और औरत जोड़े बनाए

﴿وجعلنا نومكم سباتا﴾ नींद आराम के लिए दे दी ﴿وجعلنا النهار معاشا﴾ दिन को काम के लिए बनाया और ऊपर सात आसमान बनाए उसमें सूरज धहकाया और चमकाया, फिर सूरज की किरनों से पानी को तपाया, उसको हवा के कन्धे पर रखकर बादल की सूरत ऊपर पहुँचाया, फिर उसको ठण्डा और जमा फ़रमाया ﴿الم تر ان الله يزجى سحابا﴾ अरे भाई सोचो तो सही, ग़ौर तो करो, देखो तो सही तुम्हारा रब कैसे बादलों को जमा करता है ﴿ثم يؤلف بينه ثم يجعله ركاما﴾ उनको ऊपर नीचे जमा करता है फिर अपने अम्र को उनकी तरफ़ मुतवज्जे फ़रमाता है ﴿فانزلنا من المعصرات مآء ثجاجا﴾ पानी को अल्लाह तआला बरसाता है और बहाता है फिर उसके लिए ज़मीन के सीने को चीरता है ﴿ثم شققنا الارض شقاً فانبتنا فيها حبا وعنبا وقضبا﴾ फिर इससे फल और ग़ल्ले वग़ैरह निकालता है ﴿وزيتونا ونخلا وحدائق غلبا﴾ इसमें ज़ैतून, ख़जूर अंगूर और उन सारी नेमतों को निकालता है।

अल्लाह ही पालता है

तुम्हारे जानवर का भी अल्लाह तआला इन्तेज़ाम फरमाते हैं ये फल तुम खाते हो ﴿متاع لكم﴾ और घास चारा तुम्हारे जानवर खाते हैं ﴿ولا انعامكم﴾ पानी को बादल बनाया फिर हवाओं के ज़रिये पहाड़ों तक पहुँचा कर बर्फ़ बनाया फिर पहाड़ों में उसकी हिफ़ाज़त के लिए टंकियां बना दीं। फिर वहाँ से सूरज की तपिश से उसको गरमाया और उसको गिराया फिर उसको दरों दीवारों से गुज़ारा फिर उसे नाले बनाया, नदियां बनायीं फिर उनको दरिया बनाया फिर उसको वापस समंदर में पहुँचाया, फिर उसको थका कर

उड़ाता है। यह पानी बादल की सूरत में समंदर पर बरसा, शहरों पर बरसा, बयाबानों पर बरसा, सहराओं में बरसा, एक पानी से अल्लाह तआला ने अपनी रबूबियत का रंगा रंग निज़ाम रखा है। इस पानी को गाय पी रही है तो दूध बन रहा है सांप और बिछ्छू पी रहे हैं तो ज़हर बन रहा है, इन्सान पी रहा है तो ज़िन्दगी का सामान बन रहा है। दरख़्त पी रहे हैं तो फल और मेवे बन रहे हैं, फूल पी रहा है तो कलियां बन रही हैं, ख़ुशबू फैल रही है और मेहक रही है। हम ऊपर टंकी में पानी पहुँचाने के लिए परेशर मोटर लगाते हैं जो पानी का पम्प करके पानी को ऊपर पहुँचाती है। अल्लाह तआला के दरख़्त हैं जो सौ, दो सौ फ़िट ऊँचे होते हैं, अल्लाह तआला ज़मीन की रग से पानी उठाता है और जड़ में पहुँता है और बग़ैर किसी परेशर मोटर के दरख़्त के आख़िरी पत्ते तक ज़मीन का पानी पहुँचाता है, फिर अल्लाह तआला इस पानी को मसावी और बराबर तक़सीम करता है, तने में पहुँता है, डालियों में पहुँचाता है, टहनियों में पहुँचाता है, पत्तों और शाख़ों में पहुँचाता है, फिर पानी ख़ुशबुओं तक और फलों तक पहुँचाता हैं, फिर पानी को रस में बदलता है, फिर रस में मिठास पैदा फ़रमाता है, फिर उस को रंग में तब्दील करता है, फिर इसको ज़ाएक़ा देता है। यह सारा का सारा रबूबियत का निज़ाम है जो फ़िरऔन के लिए भी चल रहा है मूसा अलैहिस्सलाम के लिए भी चल रहा है। इतने बड़े अज़ामुश्शान रब का दरबार है जो दुश्मनों के लिए भी खुला रहता है और दोस्तों के लिए भी खुला रहता है, अपने को भी देता है और पराए को भी देता है, मानने वाले को भी देता है और न मानने वाले को भी देता है, झूठ बोलकर

कमाने वाले को भी देता है और सच बोलकर कमाने वाले को भी देता है, रिश्वत देने वाले को भी देता है और हलाल पर गुज़ारा करने वाले को भी, निज़ाम उसका सारा चलता है।

ज़ुल्म और हलाकत की बात

मेरे भाईयों! ऐसे रब को न मानना और उसकी इताअत न करना बहुत ज़्यादती, बहुत बड़ी हलाकत है और बहुत बड़ा ज़ुल्म है। मेरे दोस्तों! अल्लाह किसी पर ज़ुल्म नहीं करता, हम अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं। अल्लाह की रबूबियत का निज़ाम हमेशा से चल रहा है और आइन्दा भी चलेगा।

अल्लाह करीम ज़ात है

मेरे भाईयों! जो ज़ात इतनी करीम है वह अगर अपनी ज़मीन को हिला दे तो हम नहीं रह सकते। सारी काएनात का मालिक और रब भी है, हम से इक़रार करवाना चाहता है ﴿وانزل لكم من السماء ماء﴾ पानी उतारने वाला अल्लाह है, बारिश बरसाने वाला अल्लाह है, बाग़ात लगाने वाला अल्लाह है, मीठे दरिया चलाने वाला अल्लाह है।

आसमान, ज़मीन, सूरज, चाँद, सितारे, सय्यारे, हवाऐं, पहाड़, सहरा, मैदान सब के सब अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में हैं। उन पर अल्लाह तआला की ही बादशाही है। हवा को मुर्सिलात बनाए तो अल्लाह आसिफ़ात बनाए तो अल्लाह तआला ﴿بشرا بين يدي رحمته﴾ बनाए तो अल्लाह तआला, ﴿ريحا صرصرا﴾ बनाए तो अल्लाह

तआला, गर्मी लाए तो अल्लाह ﴿يولج الليل﴾ रात लाए तो अल्लाह, ﴿ولنهار﴾ दिन लाए तो अल्लाह, ﴿هو الذى سخر لكم البحر﴾ दिन क़ब्ज़े में हैं तो अल्लाह के, ﴿الشمس والقمر يسجدان﴾ सूरज और चाँद उसके क़ब्ज़े में हैं तो अल्लाह के। ये दोनों के दोनों अल्लाह के सामने सज्दा कर रहे हैं और झुके हुए हैं, ज़मीन सब्ज़े लगाए तो अल्लाह तआला के इरादे से उगाए, उसको ख़त्म कर दें तो अपने इरादे से करें और सर सब्ज़ व शादाब बनाके लहलहा दें तो अपने इरादे से लहलहा दें।

काएनात का बादशाह कौन है?

तो मेरे भाईयो! इस काएनात में बादशाही अल्लाह की, हुकूमत अल्लाह की है, इन्सान अगर हाकिम है तो अल्लाह की इजाज़त से है, उसके इरादे से है ﴿تؤتى الملك من تشاء وتنزع الملك ممن تشاء﴾ जिसकी चाहे गर्दन मरोड़ कर ग़ुलाम बना दें, मालिके हक़ीक़ी अल्लाह, फ़ाइले हक़ीक़ी अल्लाह, राज़िके हक़ीक़ी अल्लाह, क़ादिरे मुतलक़ अल्लाह, इज़्ज़त देने वाले हक़ीक़त में अल्लाह, ज़िल्लत देने वाले हक़ीक़त में अल्लाह, मौत देने वाले हक़ीक़त में अल्लाह, ज़िन्दगी देने वाले हक़ीक़त में अल्लाह, पार्टियों से न कोई जीतता है न कोई हारता है, एलेक्शन से न कोई आता है न कोई जाता है, खुशियां लाने वाले अल्लाह तआला, ग़म लाए तो अल्लाह, ﴿اضحك وابكى﴾ मुहब्बत डालने वाला अल्लाह तआला है ﴿سيجعل لهم الرحمن ودا﴾

नफ़रत उसके हाथ में ﴿القى بينهم العداوة والبغضاء﴾ किसी शहर में

मुहब्बत डालें तो मुहब्बत आ जाए, किसी शहर में नफ़रत का इरादा करें तो नफ़रत आ जाए, किसी शहर वालों को ज़लील करें तो ज़िल्लत आ जाए, किसी शहर वालों को इज़्ज़त दें तो उसके इरादे से इज़्ज़त आ जाएगी, उनको फ़क़्र का लिबास पहना दें तो फ़क़्र आ जाएगा, ग़िना का लिबास पहनाए तो ग़िना आ जाएगा, न कोई किसी को फ़क़ीर बना सकता है और न कोई किसी को ग़नी बना सकता है ﴿يبسط الرزق لمن يشآء﴾ जिसका रिज़्क़ खोल दें तो रिज़्क़ का दरवाज़ा खुल जाता है।

मशियत अल्लाह की है इन्सानों की नहीं, हम यह कर देंगे, हम वह कर देंगे। यह अक़्ल के अन्धे हैं, कानों के बहरे हैं और जो यह कहता है कि हम से यह होगा, हम से वह होगा तो ये दिल के भी अन्धें हैं। ज़मीन में, बहर में, बर में, फ़िज़ा व ख़ला में, हवा में सिर्फ़ अल्लाह तआला बादशाह है।

अल्लाह तबारक तआला की सिफ़ात

الٓم اللّٰه لا اله الا اللّٰه هو الحی القیوم، شهد اللّٰه انه لا
اله الاهو لا اله الا هو لا اله الا هو.... قائما بالقسط

वह अकेला है अपने अद्ल के साथ क़ायम है।

رب المشرق والمغرب لا اله الا هو.....هو اللّٰه الذی لا اله الا
هو عالم الغیب والشهادة، قل هو اللّٰه احد، ما اتخذ صاحبة ولا
ولد احد صمد، لم یلد ولم یولد، ولم یکن له کفوا احد

अकेला है, समद है न कोई उससे पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ और वह अपनी ज़ात में अकेला, सिफ़ात में अकेला,

अपनी क़ुदरत में अकेला, अज़ाब देने में अकेला, सज़ा देने में अकेला, जज़ा देने में अकेला, काएनात बनाने में अकेला, चलाने में अकेला, उसको फ़ना करेगा तो अल्लाह, उसको बाक़ी रखेगा तो अल्लाह। मेरे भाईयों! अल्लाह का कोई शरीक नहीं।

ولم یکن لہ شریک فی الملك ولم یکن لہ ولی من الذل

अल्लाह फ़रमाता है मेरा बेटा कोई नहीं, मेरा शरीक कोई नहीं, मेरा साथी कोई नहीं, मेरा मददगार कोई नहीं, ﴿الملك لا شريك له﴾ मेरा शरीक कोई नहीं, मैं अकेला बादशाह ﴿الفرد لا مثل هل﴾ मैं तन्हे तन्हा मेरा मिस्ल कोई नहीं ﴿ليس كمثله شئ﴾ बहर व बर में मेरा कोई मिस्ल नहीं। यह बड़ी अजीब आयत है ﴿هل تعلم له سميا﴾ अल्लाह फ़रमाता है क्या तुझे पता है कोई मेरे जैसा हो? नहीं हर्गिज़ नहीं। ﴿العالم﴾ कोई उनसे ऊँचा नहीं ﴿لا ظهير له﴾ कोई उसका मददगार नहीं। मुदब्बिर बिला मुशीर, न उसका कोई वज़ीर, न उसका कोई सेक्रेटरी, तन्हे तन्हा निज़ाम चला रहा है। वह ऐसा अव्वल जिसकी इब्तिदा कोई नहीं, अल्लाह ऐसा आख़िर जिसकी इन्तिहा कोई नहीं, वह इब्तिदा से पाक है, वह इन्तिहा से पाक है, वह छत से पाक है वह रंग से पाक है, वह जिस्म से पाक है, वह शक्ल से पाक है। ﴿اينما تولوا فثم وجه الله﴾ जिधर देखो अल्लाह ही अल्लाह है।

सबसे बड़ी ज़ात अल्लाह ही की है

मेरे भाईयों! अल्लाह पाक को मानना, अल्लाह पाक के सामने झुक जाना, अपने आपको झुका देना, अपने को ज़लील कर देना,

यही ला इलाहा इलल्लाह का हम से मुतालबा है। अल्लाह से बढ़ कर रब कौन होगा? हफ़ीज़ कौन? अलीम कौन? ख़बीर कौन?

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है ﴿اللهم انت احق ممن ذكر واحق ممن عبد﴾ ऐ अल्लाह याद करें किसी को तो आप सबसे ज़्यादा याद करने के क़ाबिल, अगर इबादत करें किसी की तो आप सबसे ज़्यादा इबादत के क़ाबिल। ﴿ارفع مم ملك﴾ सबसे ज़्यादा मेहरबान, ﴿جود من سئل﴾ सबसे ज़्यादा सख़ी, ﴿اوسع من اعطى﴾ सबसे ज़्यादा देने वाला, ﴿الملك لك﴾ तेरे साथ कोई शरीक नहीं, ﴿الفرد لا ندلك﴾ तेरा हमसर कोई नहीं, ﴿كل شئى هلك الا وجه﴾ हर चीज़ को हलाकत है तेरी ज़ात को बक़ा है। यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की तारीफ़ फ़रमा रहे हैं।

मेरे भाईयों! कौन अल्लाह की तारीफ़ कर सकता है? अल्लाह तआला ख़ुद अपनी सिफ़ात बयान करता है ﴿لو كان البحر مدادا﴾ अल्लाह कहता है कि समंदर को स्याही बना दो, ﴿والبحر يمده من بعده سبعة﴾ सात समंदर भी स्याही बन जाए, ﴿لوان مافى الارض من الشجرة اقلام﴾ सारी दुनिया के दरख़्त लेकर क़लम बना दिए जाएं। एक सन्दल के दरख़्त से कितने कलम बनेंगे, समंदर स्याही, दरख़्त क़लम, इन्सान और जिन्नात लिखने बैठ जाएं, फ़रिश्तें भी आकर लिखना शुरू करें तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं

لنفد البحر قبل ان تنفد كلمات ربى، ولوجئنا بمثله مدداً

समंदर ख़ुश्क़ हो जाऐंगे, क़लम टूट जाऐंगे, मेरी तारीफ़ ख़त्म नहीं होगी, इतने क़लम और स्याही और ले आएं तो

वह भी ख़त्म हो जाएंगे। मेरे भाईयों! अल्लाह को फ़ाइले हक़ीक़ी जान कर उसके सामने झुक जाएं। अल्लाह तआला की पसन्दीदा ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी बनाएं, अल्लाह तआला जिस काम को चाहता है वह काम करें और जिस काम से रोकता उस काम से रुक जाएं। अल्लाह पाक अपने बन्दों को एहकाम देते हैं, बहुत सी चीज़ों से रोका है, मुसीबत से बचाने के लिए, अल्लाह पाक हमको चमकाना चाहत है, अल्लाह हम को अपने ख़ज़ानों से देना चाहता है। उसने बादशाहों को हुक्म सुनाए, वज़ीरों को हुक्म सुनाएं, औरतों को हुक्म सुनाए, मर्दों को अहकाम दिए, इसी तरह ज़मींदारों को, दुकान्दारों को, मज़दूरों से लेकर सारी दुनिया के बादशाहों को अपनी शरियत में जकड़ा है कि मेरी मानों।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ुशख़बरी

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ुशख़बरी है कि अल्लाह की शरियत, अल्लाह का दीन, अल्लाह की पसन्दीदा ज़िन्दगी कोई मुश्किल नहीं, बाक़ी सब मुश्किल है ﴿ان الله شرع لكم الدين﴾ अल्लाह ने तुम्हारे लिए दीन मुक़र्रर फ़रमाया है ﴿احل الله حلالا﴾ कुछ बातें करने की है ﴿حرم حراما﴾ और कुछ बातें छोड़ने की ﴿حد حدودا﴾ बाउन्ड्री लगाई कि करना है तो यहाँ तक करो, इससे आगे नहीं, फिर ﴿سن سننا﴾ करने की बातें फ़रमायीं, तो उसका तरीक़ा भी बताया न करने की बातें बतायीं तो न करने

का तरीक़ा भी बयान फ़रमाया, रोकने की बातें बतायीं और उसका तरीक़ा भी बताया और हद बन्दी भी मुक़र्रर कर दी कि इन हुदूद के अन्दर रहते हुए ये सारे काम करने हैं फिर फ़रमाया ﴿وجعله سهلا﴾ और अल्लाह तआला ने दीन को आसान बनाया, बहुत नरम ﴿وما جعل عليكم﴾ बहुत कुशादा बनाया ﴿ولم يجعل ضيقا﴾ और अल्लाह तआला ने दीन में तंगी रखी ही नहीं

وما جعل عليكم فى الدين من حرج ملة ابيكم
ابراهيم وهو سمكم المسلمين

अल्लाह तआला ने तुम्हारे दीन में किसी क़िस्म की तंगी नहीं रखी। अन्धे को हज़ार फ़ुट सड़क भी नज़र नहीं आएगी और आँखों वालों को छोटी सी सड़क भी नज़र आती है।

अल्लाह की चाहत

मेरे भाईयों! आदमी को दीन आसान नज़र आता है दिल की आँखों से। दिल की आँखें जिस की रौशन होती हैं और जिसका दिल ज़िन्दा होता है उसे दीन में सब कुछ नज़र आता है और अल्लाह तआला के हाथ में सब कुछ नज़र आता है। मेरे भाईयों अल्लाह पाक हम से यह चाहते हैं कि हम उसके सामने झुक जाएं और उसके हुक्मों पर आ जाएं, उसके हुक्म को सामने रख कर चलें, अल्लाह की नाफ़रमानी से अपने आपको रोकें, उसकी इताअत और फ़रमाबरदारी में अपने आपको खड़ा करें। फिर न मौत को देखें न ज़िन्दगी को, न इज़्ज़त को देखें न ज़िल्लत को, जो मानने वाले हैं वे कामयाब, उन्हीं के लिए दुनिया और

आख़िरत है, उन्हीं के लिए दुनिया की इज़्ज़तें हैं और आख़िरत की इज़्ज़तें हैं।

हमारी सोच ग़लत है

मेरे दोस्तों भाईयों! अल्लाह पाक हम से किसी चीज़ के बारे में कहता है तो वह अपने इल्म से कहता है और हम जो उसको रद्द करते हैं अपने इल्म से करते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया मिसाल के तौर पर कि सच बोलो, यह अल्लाह का इल्म है, हमारा इल्म है सच बोलूंगा तो सियासत गई, सच बोलूंगा तो तिजारत गई, सच बोलेंगे तो ज़राअत गई, सच बोलेंगे तो वकालत गई, सच बोलेंगे तो हमारा धन्धा गया। यह हमारा इल्म है लेकिन अल्लाह ने फ़रमाया झूठ मत बोलो, झूठे पर मेरी लानत है ﴿ألا لعنت الله على الكذبين، وكونو مع الصادقين﴾ झूठों पर लानत फ़रमाई है और सच्चों के साथ रहने को फ़रमाया है। यह अल्लाह का इल्म है और अल्लाह का इल्म अपनी ज़ात के ऐतबार से है और हमारा इल्म यह है ﴿وما اوتيتم من العلم الا قليلا﴾ थोड़े इल्म वाले का फ़ैसला कभी भी कामयाब नहीं होता और कभी सही व ठीक नहीं होता। आप छोटे वकील से मुक़द्दमा नहीं लड़वाते और छोटे डाक्टर से मालजा और मुआइना नहीं करवाते। बड़ा वकील और बड़ा डाक्टर तलाश करते हैं और अपने से बड़े इल्म वाले से मशविरा करते हैं।

हमारा इल्म और अल्लाह का इल्म

मेरे भाईयों! हम सब अपने इल्म के एतबार से अल्लाह के इल्म

के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं। अल्लाह तआला अपने इल्म के मुताबिक़ कहता है कि नमाज़ पढ़ो, अपने इल्म से कहा कि ज़कात दो, अपने इल्म से कहा रोज़ा रखो, अपने इल्म से कहा हज करो, अपने इल्म से कहा हलाल कमाई करो, उसने अपने इल्म से कहा अद्ल करो, अपने इल्म से कहा शराब न पियो, अपने इल्म से कहा ज़िना न करो, अपने इल्म से कहा तक़्वा इख़्तियार करो, अपने इल्म से कहा सूद न खाओ, अपने इल्म से कहा झूठ मत बोलो, अपने इल्म से कहा नफ़रतें मत फैलाओ, क़ौमियत, सुबाइयत, लिसानियत छोड़ दो। यह अल्लाह तआला का इल्म है। आगे हमारा इल्म कहता है यह बात नहीं चल सकती। अब भाई ज़माना बदल गया है तो भाई अल्लाह बड़ा मेहरबान है, ग़फ़ूरुर्रहीम है, बाद में मॉफ़ कर देगा। यह हमारा इल्म है। हम तो जाहिल हैं दीवाने हैं जो अल्लाह के हुक्म को रद्द करते हैं जिस ज़ात का इल्म इतना कामिल हो ﴿لا يعزب عنه مثقال ذرة﴾ उनके इल्म से एक ज़र्रा भी छुपा हुआ नहीं ﴿ما يكون من النجوىٰ ثلثه الا هو رابعهم الـــخ﴾। अगर इन्सान बोले तो वह सुनता है और न बोले तो भी दिल की फ़रियाद सुनता है ﴿واسروا قولكم واجهروا به﴾ मेरे दिल में और आपके दिल में जो ख़्यालात आ रहे हैं वह सुनता है, वह सुनने के लिए कानों का मोहताज नहीं, देखने के लिए आँखों का मोहताज नहीं, वह हमारी तरह का मोहताज नहीं ﴿الغيب عنده الشهادة، واسر عنده علانية﴾। वह हाज़िर को भी देख रहा है ग़ैब को भी देख रहा है ﴿لا تواری منه سماء سماء﴾ यह आसमान में इतनी ताक़त नहीं कि अपने नीचे की चीज़ों को अल्लाह से छिपा सके ﴿ولا ارض ارضا﴾। ज़मीन के अन्दर इतनी ताक़त नहीं कि अपने अन्दर की

चीज़ें छिपा सके, समंदर में ताक़त नहीं कि अपने अन्दर की चीज़ें छिपा सके। पहाड़ में ताक़त नहीं के अपने ग़ारों की चीज़ें अल्लाह पाक से छुपा सके। अल्लाह पाक ने अपने इल्म से कहा कि मेरी मान लो, मेरी फ़रमाबरदारी में तुम्हारी कामयाबी है, मेरी नाफ़रमानी में तुम्हारी हलाकत है, सूद हलाकत है, झूठ हलाकत है, सच निजात है, पाक दामनी निजात है और बदमाशी हलाकत है, इफ़्फ़त निजात है और ज़िना हलाकत है। यह अल्लाह का इल्म बोल रहा है जबकि हमारा इल्म कहता है कि जो होगा देखा जाएगा।

हम ग़फ़लत में पड़े हुए हैं

मेरे भाईयों! हमें इस ग़फ़लत से निकलना है और मरने से पहले निकलना है। जब इज़्ज़त अल्लाह के हाथ में है तो अल्लाह की इताअत करें। जब ज़िल्लत अल्लाह के हाथ में है तो उसकी नाफ़रमानी से बच जाएं। अल्लाह तआला एक एक आयत खोल खोल कर बताता है, सारी चीज़ें अल्लाह पाक से मिलती हैं तो अल्लाह की मान लें और उसके हुक्म पर झुक जाएं और उसकी तरतीब पर आ जाएं हर चीज़ को अल्लाह ही की मान लेना यह ला इलाहा इलल्लाह है, अल्लाह पाक के सामने झुक जाना ला इलाहा इलल्लाह है, अल्लाह के सामने अपनी ख़्वाहिशात को तोड़ देना ला इलाहा इलल्लाह है, अल्लाह तआला जिसे कह दें तो वह कर लें और जिस से रोक लें उससे रुक जाना यह ला इलाहा इलल्लाह है, सारी काएनात कुछ नहीं कर सकती और इज़्ज़त अल्लाह देगा यह ला इलाहा इलल्लाह है, ज़िल्लत अल्लाह देगा यह

ला इलाहा इलल्लाह है, रिज़्क़ अल्लाह देता है यह ला इलाहा इलल्लाह का तक़ाज़ा है, मुहब्बत अल्लाह तआला लाता है यह ला इलाहा इलल्लाह का इक़रार है, मौत और ज़िन्दगी अल्लाह के क़ब्ज़े में है यह ला इलाहा इलल्लाह में इक़रार है, विज़ारतें और सदारत अल्लाह देता है यह ला इलाहा इलल्लाह में इक़रार है। हमारा कलिमा धुन्दला गया है और कच्चा हो गया है। मेरे भाईयों यह नहीं कि दीन पर चलेंगे जन्नत मिल जाएगी दुनिया नहीं मिलेगी। यह तो अधूरा दीन हुआ जिसमें जन्नत मिले और दुनिया न मिले। अल्लाह तआला की मान लें तो अल्लाह तआला दुनिया भी देगा जन्नत भी देगा।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अपनी उम्मत के लिए शफ़क़तः

मेरे भाईयों! ला इलाहा इलल्लाह कलिमे का पहला जुज़ है कि सारी दुनिया के इन्सान अल्लाह तआला के सामने झुक जाएं और मानने वाले बनें और मानने का तरीक़ा मुहम्मदुर रसूलुल्लाह है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ अल्लाह की मान कर चलें। अल्लाह तआला ने एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया अलैहिस्सलाम भेजे। सबसे ज़्यादा मेहरबान और शफ़ीक़ अपनी उम्मत के साथ वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात है।

لقد جآء کم رسول من انفسکم عزیز علیہ الخ

अल्लाह ने ऐसा नबी भेजा कि अल्लाह ने अपने किसी नबी

को अपनी सिफ़ाती नाम से नहीं अता फ़रमाए। अल्लाह के अपने नाम हैं कोई उसके नामों में शरीक नहीं, उसकी सिफ़ात में शरीक नहीं। अपनी ज़ात के बारे में फ़रमाया ﴿ان ربكم لرؤف الرحيم﴾ और अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाया ﴿بالمؤمنين رؤف الرحيم﴾ मेरा नबी भी रऊफ़ और रहीम है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रऊफ़ रहीम होना अपनी ज़ात के एतबार से है और अल्लाह तआला का रऊफ़ रहीम होना अपनी ज़ात के एतबार से है। अल्लाह तआला ने नाम में मुशबिहत पैदा फ़रमाई है कि मेरा नबी किस पर रऊफ़ रहीम है अपनी उम्मत पर रऊफ़ रहीम है। अल्लाह ने नबियों के वाक़ियात सुनाए। मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम पर गुस्सा हो रहे हैं ﴿ربنا اطمس على اموالهم وشدد على قلوبهم﴾ या अल्लाह उनकी आँखों को ख़त्म कर दें उनके मालों को बर्बाद कर दें उनके दिलों पर मोहर लगा दें। नूह अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ﴿رب لا تذرني على الارض من الكفرين ديارا﴾ या अल्लाह उन काफ़िरों में से किसी एक को भी ज़मीन के ऊपर ज़िन्दा न छोड़, कोई एक भी बाक़ी न बचे और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ताएफ़ की वादी में पत्थर खाते हैं तीन मील दौड़ते हैं, काएनात का ख़ुलासा अल्लाह का हबीब, अल्लाह का महबूब, ज़मीन व आसमान में जिसकी नबुव्वत का चर्चा, जिसकी नबुव्वत पर तमाम नबियों से इक़रार लिया गया बल्कि हदीस पाक में आता है कि ﴿انا نبي الانبياء﴾ मैं नबियों का भी नबी हूँ। तीन मील दौड़े, एक रिवायत में आया है कि आसमान के फ़रिश्तें भी रो रहे थे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पत्थर पड़ते देख कर, जिस ज़मीन पर लहू गिर रहा था वह ज़मीन भी रो रही थी, ताएफ़ के पहाड़ रो रहे थे, बहर व

बर की मख़लूक़ रो रही थीं, इतनी मुशक़्क़त तो आयीं अल्लाह के हबीब पर, यह सारी मुशक़्क़त उठाने के बाद जब फ़रिश्ता आता है तो कहता है, अगर आप फ़रमाएं तो मैं इनको पहाड़ों में पीसकर रख दूंगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं, ये न सही इनकी औलादे मुसलमान हो जाएंगी।

फिर ओहुद के मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफ़िरों ने चारों तरफ़ से घेरा। अब्दुल्लाह बिन मैमना ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तलवार का वार किया तो सिर में पड़ा। ख़ुर्द अन्दर घुस गया और उत्बा बिन अबी वक़्क़ास हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु का भाई था जो कुफ़्र में ही क़त्ल हो गया उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पत्थर मारा, वह पत्थर सीधा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुँह के क़रीब लगा जिससे दांत मुबारक शहीद हो गए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़मीन पर गिर गए और बेहोश हो गए और जब होश में आए तो फ़ौरन ﴿اللهم اهد قومی فانهم لا یعلمون﴾ ऐ अल्लाह मेरी क़ौम को हलाक न करना, इनको हिदायत देना, इनको पता नहीं, अगर पता होता तो ये मुझे तकलीफ़ न देते। या अल्लाह आप इनसे कुछ न कहना। हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़्क़त है अपनी उम्मत के लिए।

मैदाने अरफ़ात में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ

मेरे भाईयों! आदमी के अन्दर शराफ़त हो तो वह एक रूपये

का एहसान नहीं भूलता। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एहसान तो देखें कि पेट पर पत्थर बान्धे, घर ख़त्म हो गया। एक वक़्त था आप अमीन व सादिक़ थे। हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा जैसी मालदार तरीन औरत निकाह में थीं और या यह वक़्त आया कि आप सफ़ा की पहाड़ी पर खड़े होकर जिबराईल अलैहिस्सलाम से फ़रमाते हैं ﴿والذی نفسی بیده ما امثال اهل محمد کفة عما شعیر﴾ ऐ जिबराईल आज मुहम्मद और आले मुहम्मद के घर में रोटी पकाने के लिए, रोटी खाने के लिए एक मुठ्ठी जौ कोई नहीं, रोटी पकाने के लिए, रोटी खाने के लिए। सब कुछ क़ुर्बान कर गए उम्मत के लिए पेट पर पत्थर बान्धें, पेवन्द लगे कपड़े पहने, तीन चार दिन खाने को कुछ नहीं, दो दो महीने चुल्हा नहीं जलता, और उसके बावजूद अपनी उम्मत पर सारी सारी रात रो रहे हैं और अपनी उम्मत के लिए गिड़गिड़ा रहे हैं। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं मुझे छोड़ कर मुसल्ले पर तशरीफ़ ले जाते। एक रात मेरे पास तशरीफ़ लाए और चुपके से वापस चले गए तो मुझे ख़्याल हुआ कि मुझे छोड़ कर किसी दूसरी बीवी के पास चले गए मुझे ग़ैरत आई तो उनके पीछे चली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ओहद की तरफ़ जा रहे हैं और जन्नतुल बक़ी की तरफ़ जा रहे हैं। जन्नतुलबक़ी में जाकर दुआ मांग रहे हैं और मैं पीछे खड़ी हो गई। जब दुआ से फ़ारिग़ होकर पीछे की तरफ़ देखा तो फ़रमाया ऐ आएशा तू यहाँ कैसे? मैंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे ख़्याल आया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे छोड़ कर किसी और बीवी के पास चले गए तो फ़रमाया नहीं आएशा! नबी बन

कर कोई ख़्यानत नहीं कर सकता। मैं तो अपनी उम्मत के लिए दुआ करने आया था। रातों को छोड़ कर अपनी उम्मत के पास आते हैं। हाजी हज़रात हज को जाते हैं, तुम में से भी बहुत से लोगों ने हज किया होगा। अरफ़ात के मैदान में अपने लिए कोई दुआ नहीं करता पन्द्रह बीस मिन्ट से ज़्यादा हाथ ही नहीं उठते, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अरफ़ात के मैदान में ऊँट पर सवार थे और माह अप्रैल की धूप है ऊँटनी की सवारी है कोई सोफ़ा नहीं और कोई फ़र्श नहीं, कुर्सी नहीं, ऊँटनी की सवारी है और उस पर बैठे हैं, धूप चिलचिलाती हुई है और पाँच घन्टे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत के लिए रो रो कर दुआ की है। जब भी हाथ ऊपर उठ जाते तो बालों की सफ़ेदी नज़र आती थी, फिर रकाब में पाँव देकर खड़े हो जाते फिर बैठ जाते। पाँच घन्टे मुसलसल रो रो कर अपनी उम्मत के लिए अल्लाह से बख़्शिश को मांगा है या अल्लाह! मेरी उम्मत को मॉफ़ कर दें।

नमाज़, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपनी उम्मत के लिए प्यारा तोहफ़ा

मेरे भाईयों! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो अपनी उम्मत पर एहसान कर गए हैं कोई और नबी नहीं कर सकता। मौत के वक़्त हर एक अपनी औलाद को बुलाता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौत के वक़्त भी खिड़की खोल कर अपनी उम्मत को देखा। और आख़िरी वक़्त में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत को पुकार रहें हैं ﴿الصلوة

﴿وما ملكت ايمانكم﴾ ऐ मेरी उम्मत नमाज़ न छोड़ना, नमाज़ पढ़ते रहना, गुलामों से अच्छा सुलूक करना, आख़िरी वक़्त बीवियों को कहते और कुछ हसन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम को कहते, नहीं पूरी उम्मत की फ़िकर है।

फिर आवाज़ कमज़ोर हो गई ﴿الصلوة الصلوة الصلوة﴾ यही कहते कहते आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हो गया, नमाज़ नमाज़ कहते हुए दुनिया से चले गए।

मेरे भाईयों! आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को अपनाना यह हमारे कलिमे की तकमील है। अल्लाह तआला ने जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शफ़ीक़ बनाया ऐसे ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलीशान भी बनाया। क़ुरआन में किसी नबी की क़सम नहीं उठाई और अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़सम खाई।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी उम्मत की फ़िकर

मेरे भाईयों! अल्लाह ने ऐसा नबी हमें दिया। उसने जो कहा यह कर लो यह न करो, यह ज़ुल्म तो नहीं है, मुशक़्क़त तो नहीं, जो माँ से ज़्यादा प्यार कर गया और जो बाप से ज़्यादा शफ़क़त दे गया, माँ के रोने से ज़्यादा रो कर गया। क़यामत के दिन माँ भी गई बाप भी गया, बच्चे भी गए, बीवी भी गई, भाई भी गया, दोस्त एहबाब भी गए और अंबियां भी अपनी उम्मतों से गए, नफ़्सी नफ़्सी। जब जहन्नुम आएगी चीख़ मारेगी, चिंघाड़ मारेगी

तो बड़े बड़े रसूल और फ़रिश्ते ज़मीन पर गिरेंगे और कहेंगे

نفسی نفسی، آدم علیہ السلام نفسی نفسی، نوح علیہ السلام
نفسی نفسی، ابراهیم علیہ السلام نفسی نفسی، داؤد علیہ
السلام نفسی نفسی، سلیمان علیہ السلام نفسی نفسی، ایوب
علیہ السلام نفسی نفسی، یوشع علیہ السلام نفسی نفسی،
دانیال علیہ السلام نفسی نفسی، یعقوب علیہ السلام نفسی
نفسی،یوسف علیہ السلام نفسی نفسی، اسحاق علیہ السلام
نفسی نفسی، عیسیٰ علیہ السلام نفسی نفسی،

इस काएनात में सिर्फ़ एक हस्ती ऐसी होगी जिसके हाथ उठे होंगे और कह रहा होगा या अल्लाह उम्मती! उम्मती! यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात है जिसकी शफ़्क़त हशर के दिन नरम, उस वक़्त भी हमारा साथ न छोड़े। दुनिया से भी रोता रोता गया, ज़मीन तर कर दी, सीना मुबारक छलनी कर दिया, अपने आप को घुला दिया, पिघला दिया, आंसू बहात बहाते चले गए और हशर में भी रो रहें हैं बाक़ी तमाम ताल्लुक़ात और रिश्ते छूट गए, या अल्लाह! उम्मती, उम्मती।

मेरे भाईयों और दोस्तों! वह ज़ात अगर ऐसा कह दे कि यह करो और वह न करो। इसमें नुक़सान नहीं फ़ायदा ही फ़ायदा है रहमत ही रहमत है, भला ही भला है।

सच्चे मुसलमान की शान

मेरे भाईयों! हम हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी के सामने अपनी ख़्वाहिश की ज़िन्दगी को क़ुर्बान कर दें, जो कहें वह करें और वह जिस चीज़ से रोकें उससे बाज़ रहें तो

यह कलिमा मुकम्मल हो गया। भाई हम कलिमा सीख रहें हैं। कलिमा आ जाएगा तो नमाज़ भी आ जाएगी, ज़िक्र भी आ जाएगा, अख़्लाक़ भी आएगा लेकिन इस से पहले कलिमा तो आ जाए, मुसलमान बनें मुसलमान। यों समझिए कि हम मुसलमान बनना सीख रहें है। मुसलमान बादशाह के रूप में भी, रिआया के रूप में भी, औरत के रूप में भी, मर्द के रूप में भी, ताजिर के रूप में भी, ग़र्ज़ ये कि हर रूप में अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा हमें बताया है। औरत बनाया तो उसका हल बतलाया ﴿وقرن فی بیوتکن ولا تبرجن الخ﴾ अरे मेरी उम्मत की औरतों! घर के अन्दर बैठा करो, बे पर्दा बाहर न निकलो। अगर औरतें पर्दे पर आ जाएं तो वे कामयाब हैं अगर कहीं बाहर निकलना पड़े तो ﴿لا یبدین زینتهن﴾ अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें। ताजिर बनाया तो उसका तरीक़ा बताया ﴿رجال لا تلهیهم تجارة ولا بیع عن ذکر الله﴾ ये वे ताजिर हैं जिनकी तिजारत उनको अल्लाह के ज़िक्र से नहीं रोकती है अल्लाह की याद से नहीं रोकती है ﴿واقام الصلوة﴾ नमाज़ से नहीं रोकती है ﴿ایتاء الزکوة﴾ ज़कात अदा करने से नहीं रोकती।

ये वे ताजिर बिरादरी है जिनकी तारीफ़ अल्लाह तआला फ़रमा रहें हैं। अल्लाह पाक तिजारत छुड़वा नहीं रहे हैं, तिजारत मुहम्मदी सिखवा रहे हैं। पहले नबी का तरीक़ा बताया फिर जब इस पर चलें तो खुद उनकी तारीफ़ फ़रमा रहे हैं। जमींदारों को तरीक़ा बतलाया ﴿اتوا حقه یوم حصادة﴾ इसमें जमीदार की ज़िन्दगी समझाई। जमीदार जमीदारी में ज़िन्दगी कैसे गुज़ारें? कुर्सी पर बैठे हुए जज को तरीक़ा बताया कि

لا يجرمنكم شنآن قوم على الا تعدلوا ، اعدلو اقرب للتقوى

इस आयत में उम्मत के जज को बताया है तुझे अदालत कैसे करनी है और कैसे निज़ामें अदालत चलाना है? हुक्मरान, सदर, वज़ीर को तरीक़ा बताया

الذين ان مكنهم فى الارض اقاموا الصلوة واتوا
الزكوة وامروا بالمعروف ونهوا عن المنكر

मेरे बन्दे जो हैं मैं उनको हुकूमत देता हूँ तो वे नमाज़ को क़ायम करते हैं, ज़कात का निज़ाम क़ायम करते हैं, भलाई को फैलाते हैं, बुराई को मिटाते हैं और अन्जाम अल्लाह के हाथ में है। वे इसमें डरते नहीं। वे अल्लाह के अम्र को ज़िन्दा करते हैं और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को ज़िन्दा करते हैं, ज़िन्दगी के तमाम शोबों को अल्लाह ने थोड़ा थोड़ा करके बताया है।

औलाद के लिए हुक्म और नसीहत

औलाद बच्चे की सूरत में है तो उनको तरीक़ा बताया ﴿ولاتقل لهما اف ولا تنهرهما وقل لهما قولا كريما﴾ अगर तुम बेटे की सूरत में माँ बाप के सामने हो तो वालदैन को उफ़ भी न करो, उनसे नरम बात करो और उनकी ख़िदमत करो, अगर इन्सान बाप के रूप में है तो औलाद के साथ क्या सूरत इख़्तियार करना चाहिए तो उसका तरीक़ा भी बताया ﴿يا بنى لا تشرك بالله ان الشرك لظلم عظيم﴾ अरे बेटा शिर्क न करना शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है ﴿يا بنى اقم الصلوة﴾ ऐ मेरे बेटे नमाज़ पढ़ ले ﴿وامر بالمعروف وانهى عن

﴿المنكر واصبر على ما اصابك﴾ अरे मेरे बेटे नमाज़ पढ़ा कर, भलाई का हुक्म दे और बुराई से हटा और इस पर आने वाली तकलीफ़ पर सब्र कर।

इज़्ज़त ज़िल्लत अल्लाह के हाथ में है

यह बाप के ज़िम्मे है कि अपनी औलाद को यह सबक़ सिखाए अब तो वालदैन खुद तस्बीह पढ़ रहे हैं कि बेटा पढ़ लो, न पढ़ेगा तो भूका मरेगा। औलाद को यह सबक़ सिखा लें कि बेटा तक़्वा इख़्तियार न करोगे तो भूके मरोगे। डाक्टर बनों इज़्ज़त मिलेगी नहीं भाई यह तालीम दो कि अल्लाह की मानोगे तो इज़्ज़त देगा चाहे डाक्टर बन जाए या बादशाह बन जाए। बेटा तू अल्लाह की मानेगा तो तुझे इज़्ज़त मिलेगी, तक़्वा इख़्तायार कर तुझे अल्लाह इज़्ज़त देगा। अल्लाह वालदैन को सिखा रहे हैं कि बच्चों को क्या सिखाना है। मुहम्मदी ज़िन्दगी का अल्लाह ने थोड़ा थोड़ा नक़्शा खींचा है। ज़मीन पर चलने का तरीक़ा बताया ﴿ولا تمش فى الارض مرحا﴾ ज़मीन पर अकड़ कर मत्त चलो, ऐ ज़मींदार साहब, ऐ सदर साहब, ऐ वज़ीर साहब, ऐ एम पी साहब ज़मींन पर अकड़ कर मत चलो।

तकब्बुर अल्लाह को पसन्द नहीं

ये तमाम पहले मनफ़ी थे कि यह न करो, वह न करो वग़ैरह अब मुसब्बित पहलू बता रहे हैं ﴿وعباد الرحمن الذين يمشون على الارض هونا﴾ मेरे बन्दे यानी रहमान के बन्दे ज़मीन पर चलते हैं तो बड़ी

आजुज़ी के साथ चलते हैं अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बड़ी बादशाही किसी को नहीं दी

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में हदीस पाक में आता है कि अगर अल्लाह का हबीब ख़ुश्क़ लकड़ियों पर भी चलता था तो उनके क़दमों के नीचे से लकड़ियों के कड़कड़ाने की आवाज़ नहीं उठती थी। अरे तुम ज़मीन पर अकड़ कर न चलो क्यों? इस लिए तेरी ऐड़ियां मारने से मेरी ज़मीन तो नहीं फटेगी ﴿ولن تبلغ الجبال طولا﴾ अगर तू अपनी गर्दन मरोड़ दे बल्कि ऊँचा करते तो क्या तेरा क़द मेरे पहाड़ों से ऊँचा हो जाएगा? तू न पहाड़ से ऊँचा हो सकता है न ज़मीन फाड़ सकता है तो आजुज़ी से चल, मसकनत से चल। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिनको दोनों जहाँ की सरदारी मिली, जन्नत की चाबी मिली, नबियों पर नबुव्वत मिली, बहर व बर पर नबुव्वत मिली, हबीब का ख़िताब मिला, तमाम नबियों की सिफ़ात मिलीं, अरबी बनाया, क़ुरैशी बनाया और हाशमी बनाया।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपको नबुव्वत कब मिली थी कितने साल पहले आपको नबुव्वत मिली थी? ﴿كنت نبيا وآدم بين الماء والطين﴾ मुझे नबुव्वत उस वक़्त मिली थी जब आदम अलैहिस्सलाम की मिट्टी इकठ्ठी की जा रही थी और आदम अलैहिस्सलाम का पुतला इकठ्ठा किया जा रहा था उस वक़्त मेरे सिर पर नबुव्वत का ताज रखा जा चुका था। मुहम्मदी ज़िन्दगी की अल्लाह पाक ने क़ुरआन में रहनुमाई की है और इशारे किए हैं। बादशाह ऐसा होता है, सदर ऐसा होता है, ज़मींदार ऐसा होता है, दुकान्दार ऐसा

होता है, नमाज़ ऐसे पढ़ी जाती है ﴿قد افلح المؤمنون الذين هم فی صلوتهم خاشعون﴾ वह नमाज़ ऐसे पढ़ते हैं कि जब खड़े हो जाते हैं, लरज़ जाते हैं, कांप जाते हैं, थर्रा जाते हैं। मुहम्मदी रात कैसे गुज़ारते हैं? उनकी रात कैसे गुज़र जाती है? ﴿تتجافی جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم خوفا وطمعا﴾ मुहम्मदी रात को अपने बिस्तरों से उठ जाते हैं, मुझे पुकारते हैं, कभी शौक़ में कभी ख़ौफ़ में ﴿ومن الليل فتهجد به﴾ रात को मुसल्ले पर ﴿من الليل فاسجد له وسبحه ليلا طويلا﴾ उनकी रात को सज्दे में

قم الليل ہ الا قليلا نصفه اونقص منه قليلا ہ اوزد عليه
و رتل القرآن ترتيلا ہ انا سنلقی عليك قولا ثقيلا ہ ان
ناشئة اليل هی اشدو طأواقوم قليلا ہ ان لك فی النهار
سبحا طويلا ہ واذكر اسم ربك و تبتل اليه تبتيلا ہ

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरे मानने वाले और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानने वाले को देखना हो तो सूरहः मुज़म्मिल की चन्द आयतें पढ़ कर देख लो। हर मुहम्मदी की रात कैसी गुज़रती है, उसकी रात शराब में नहीं उसकी रात रोने और धोने में है।

रोने की लज़्ज़त

मेरे भाईयों! रातों को रोने की लज़्ज़त का हमें पता ही नहीं। इस लिए कोई रात को शराब का सहारा लेता है कोई औरत का सहारा लेता है, काश हमें रात के रोने की लज़्ज़त थोड़ी सी मिल जाती थोड़ी सी, जिन को रात के रोने की लज़्ज़त मिली उन्होंने आंसू बहा दिए और आँखों की बिनाई जाने को कबूल किया रोना

बन्द नहीं किया। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की बिनाई जाने लगी तो उनसे कहा गया कि रोना छोड़ दो तो आँखें इलाज करने से ठीक हो जाएंगी। उन्होंने क्या ख़ूब ही जवाब दिया कि वह आँख ही क्या जो रोए नहीं, मैं बिनाई जाने पर सब्र करूंगा रोना नहीं छोड़ सकता यह रोना मेरे मालिक के लिए है और यह रोना मेरे ख़ालिक़ के लिए है। एक हदीस में आता है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है जो दुनिया में मुझसे डर के रोएगा मैं जन्नत में उसको हंसाऊँगा।

रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक

तो मेरे भाईयों! पूरी ज़िन्दगी अल्लाह ने बताई है क़ुरआन में है कि मुहम्मदी कैसा होता है। अल्लाह अपने अहद में सच्चा है जो अल्लाह से किया हुआ है ﴿ولا ينقضون الميثاق﴾ वायदे का पक्का जो लोगों से किया हुआ है ﴿والذين يصلون ما امر الله به ان يوصل﴾ रिश्तेदारों के सामने वुझने वाला, रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करने वाला ﴿ويخشون ربهم﴾ अल्लाह पाक से डरने वाला ﴿ويخافون سوء الحساب﴾ आख़िरत से डरने वाला ﴿واقاموا الصلوة﴾ नमाज़ पढ़ने वाला ﴿وانفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية﴾ ज़कात व सदक़ात देने वाला सिर्फ़ ज़कात पर क़नाअत करके नहीं बैठते हैं इसके अलावा भी देते हैं अब तो कोई ज़कात भी नहीं देता आगे का रोना क्या रोएं, फ़र्ज़ अदा नहीं करते, ज़कात देकर अपने आपको समझते हैं कि हातिम ताई से भी आगे गुज़र गए हैं। अरे भाई ज़कात देकर जहन्नुम से बच गए और सख़ावत ज़कात के बाद शुरू होती है।

और आगे फ़रमाते हैं ﴿ويدرؤن بالحسنة السيئة﴾ बुराई का बदला भलाई से देते हैं, नबुव्वत वाले अख़लाक़ से जिन्दगी गुज़ारते हैं। यह हमारे अख़लाक़ नहीं हैं कि कोई सलाम करे तो सलाम करो और जो सलाम न करे भी न करो, जो तुम को रोटी खिलाए तो तुम भी खिलाओ, जो तुम्हारा हाल पूछे तो तुम भी उसका हाल पूछ लो, जो तुम्हारा हाल न पूछे तो तुम भी उसका हाल न पूछो। ये हमारे अख़लाक़ हैं जबकि एक मेरे नबी के अख़लाक़ हैं ﴿صل عن من قطعك﴾ जो तुम से तोड़े तुम उससे जोड़ो ﴿واعط من حرمك﴾ जो तुम को न दे तुम उसको ले जा के दो ﴿اعف عن من ظلمك﴾ जो तुम पर ज़ुल्म करे तो उसको मॉफ़ करो ﴿واحسن الى من اساك اليك﴾ जो तुम्हारे साथ बुरा सुलूक करे तुम उसके साथ अच्छा सुलूक करो। हज़रत उस्मान बिन अबी तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का बैतुल्लाह के चाबी बरदार, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस्मान दरवाज़ा खोलो मैं अन्दर जाना चाहता हूँ। उसने कहा जाओ जाओ, बहुत ज़िल्लत आमेज़ सुलूक किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह दिन कैसा दिन होगा जब बैतुल्लाह की चाबियां मेरे पास होंगी जिसको चाहूँगा दूँगा। उसने कहा क़ुरैश वह दिन नहीं देखेगें जो तू कह रहा है। फ़तेह मक्का हुआ तो हज़रत उस्मान बिन अबी तल्हा भागे वह बात याद आई जो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से की हुई थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चाबी हाथ में लेकर फ़रमाया बुलाओ उस्मान को।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु पास खड़े थे, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम आपके रिश्तेदार हैं और हम

आपके क़ुराबत दार हैं आप चाबी हमें दें, हम चाबी के हक़दार हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे हैं बुलाओ उस्मान को, उस्मान को बुलाया जा रहा है तो नबी वाले अख़लाक़ क्या हैं? जब क़ादिर हो जाओ तो मॉफ़ कर दो, हमारे अख़लाक़ यह हैं कि जब क़ादिर हो जाओ तो ईंट के बजाए पत्थर मारो। हम सबके यही अख़लाक़ हैं हम सब अख़लाक़ के जनाज़े निकाल चुके हैं, हया का भी जनाज़ा निकल गया है, अख़लाक़ का भी जनाज़ा निकल गया है।

उसवाए हसना पर अमल, निजात का रास्ता

मेरे भाईयों! हदीस पाक में आया है कि क़यामत में आदमी के आमाल नामे के तराज़ू में सबसे वज़नी चीज़ अख़लाक़ होंगे। नमाज़ पढ़ना आसान है अख़लाक़ बनाना मुश्किल है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बुलाओ उस्मान को। उस्मान डरते हुए आए और कांपते हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस्मान यह चाबी देख रहे हो, वह दिन याद है जब मैंने कहा था वह दिन क्या दिन होगा जब चाबी मेरे हाथ में होगी, जिसे चाहूँ दे दूँगा, आज मैं तुझे दे रहा हूँ, क़यामत तक यह चाबी तेरी औलाद में रहेगी ﴿خالدا تالدا﴾ अबदु आबाद तक, इस चाबी को तेरे घर से कोई निकाल नहीं सकता। यह नबुव्वत के अख़लाक़ हैं। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ातिल वहशी जिसको क़त्ल करने की हर सहाबी के दिल में तमन्ना है लेकिन उसको भी मॉफ़ कर दिया। यह नबी के अख़लाक़ हैं।

बेटी का क़ातिल हब्बार बिन असूवद, जिसने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के बरछा मारा, ज़ख़्मी हुई और हमल गिर गया। सात बरस ज़ख़्मी हालत में रह कर इन्तिक़ाल हुआ, जब वह कलिमा पढ़ कर मक्का मुकर्रमा में आया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उठ कर उसको भी बैत फ़रमा लिया।

उम्मते मुहम्मदिया का काम

मेरे भाईयों! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं है। उनकी मुबारक जिन्दगी, उनके पाकीज़ा तर्ज़े हयात को क़ुरआन में महफ़ूज़ किया गया है। क़ुरआन में मौजूद है, हदीस में मौजूद है। यह मुबारक जिन्दगी पूरी दुनिया के इन्सानों में फैले इसके लिए अल्लाह तआला ने इस उम्मत को मुन्तख़ब किया है और चुना है ﴿هو اجتباكم﴾ तुम चुने हुए हो ﴿كنتم خير امة﴾ क्यों कहा हमारे कोई सुरख़ाब के पर लगे हैं या हमारी कोई इबादत ज़्यादा है नहीं ﴿اخرجت للناس﴾ तुम लोगों के लिए निकाले गए हो, भलाई फैलाते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।

मुसलमान से हमारे दो रिश्ते

मेरे भाईयों! जो कुफ़्र पर मर गया वह तो बहुत बड़ी बर्बादी का शिकार हो गया। इसी तरह कोई गुनाहे कबीरा करके मर गया तो वह भी बहुत बड़ी हलाकत का शिकार हो गया। नबी शफ़ीक़ बन के मेहरबान बन के, सारी सारी रात अल्लाह के सामने

गिड़गिड़ा कर और रो रो कर अल्लाह को मनाता है या अल्लाह इनको जहन्नुम से बचा। यही शफ़्क़त, यही रहमत, यही मुहब्बत अल्लाह तआला ने हमें अता फ़रमाई है कि सारी दुनिया के इन्सानों पर शफ़्क़त करो, पूरी दूनिया के मुसलमान हमारे इस्लामी भाई हैं और पूरी दुनिया के इन्सान हमारे इन्सानी भाई हैं। मुसलमान हमारे इन्सानी भाई भी हैं और इस्लामी भाई भी हैं। लिहाज़ा दो रिश्ते हो गए तो उनका हक़ हमारे ऊपर ज़्यादा है। तमाम दुनिया के मुसलमान तौबा कर लें, अल्लाह की इताअत पर आ जाए, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर आएं, ग़लत ज़िन्दगी को छोड़ दें, नाफ़रमानी को छोड़ दें, अल्लाह की अदावत को छोड़ दें और अल्लाह से सुलह कर लें, पूरी दुनिया के काफ़िरों तक अल्लाह की बात पहुँच जाए, उनके घरों में कलिमा पहुँचे, उनकी नस्लों में कलिमा पहुँचे, अल्लाह तआला ने यह ज़िम्मेदारी इस उम्मत को अता फ़रमाई है। जो शख़्स ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा रखता है और यह कहता है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं आएगा तो उसके ज़िम्मे है कि पूरी दुनिया के इन्सानों तक अल्लाह का कलिमा पहुँचाए और फैलाए ﴿خير امة﴾ अच्छी उम्मत क्यों? काम बताया कि ﴿تامرون بالمعروف وتنهون عن المنكر﴾ अगली आयत ﴿قل هذه سبيلى﴾ आप उनसे कहें कि यह है मेरा रास्ता ﴿ادعوا الى الله﴾ अल्लाह की तरफ़ बुलाना ﴿ومن اتبعنى﴾ मेरा कलिमा पढ़ने वाला मेरे ऊपर ईमान लाने वाले का भी यही रास्ता और मेरा भी यही रास्ता और अल्लाह के हबीब की ख़ुशख़बरी मौजूद है ﴿لا يبقى على وجه الارض بيت وبر ولا مدر الا دخله الله فيه﴾ यह जुमला आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने अपनी दुख़्तर को फ़रमाया ऐ फ़ातिमा तेरे बाप को अल्लाह ने वह कलिमा दिया है न कोई पक्का घर बचेगा न कोई कच्चा घर बचेगा, बल्कि हर हर घर में ख़ाल बाल के ख़ेमें में, ख़ेमा खाल का भी होता और ऊन का भी होता है चाहे ख़ेमा खाल का हो या ऊन का हो, कच्चा हो या पक्का घर हो अल्लाह तआला उस घर में तेरे बाप का कलिमा को दीन को इस्लाम को दाख़िल कर देगा, जो मानेगा इज़्ज़त पाएगा और जो न मानेगा हलाक होगा ﴿وليبلغ هذا الامر من حيث يبلغ الليل﴾ मेरा कलिमा वहाँ तक पहुँचेगा जहाँ जहाँ रात पहुँची है, यह ख़ुशख़बरी मौजूद है और यह ज़िम्मेदारी उम्मत पर मौजूद है।

उम्मत का इम्तियाज़

मेरे भाईयों! अल्लाह तआला ने इस उम्मत के अन्दर जो इम्तियाज़ी चीज़ रखी है वह यही है कि यह दीन पर चलते हैं और दीन को फैलाते हैं, फैलाना हमारी ज़िम्मेदारी है। पहली उम्मतों पर दीन को फैलाना नहीं था। हर क़ौम में नबी, हर क़बीले में नबी। जब हमारे नबी तशरीफ़ लाए तो सारे जहाँ के इन्सानों के नबी बन कर आए लिहाज़ा सारी दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना इस उम्मत के सुपुर्द हुआ है जिस तरह वालदैन की इताअत हमारे ज़िम्मे है और औलाद के हुक़ूक़ हमारे ज़िम्मे हैं।

कोई डाक्टर है तो तिब का शोबा उसके ज़िम्मे है, कोई जज है तो अदालत का शोबा उसके ज़िम्मे है, कोई ज़मींदार है तो ज़राअत का निज़ाम उसके ज़िम्मे है। इसी तरह मेरे भाईयो और

दोस्तो! हम अपने नबी को आख़िरी मानते हैं और ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा हैं जो इस तरह का अक़ीदा रखता है तो उसके ज़िम्मे है वह अल्लाह का पैग़ाम दुनिया के आख़िरी किनारे तक पहुँचाने में अपनी जान भी लगाए माल भी लगाए, इज़्ज़त भी लगाए, सब कुछ लगा दे और (किसी से) ले न कुछ भी तो अल्लाह तआला यहाँ भी देगा वहाँ भी देगा।

एक ज़माने से हम यह काम भूल चुके हैं। दीन पर चलने का ज़हन सबका है, कोई बहुत ही बर्बाद हो जाए तो कहेगा कि दीन पर चलने की ज़रूरत नहीं है वरना गिरे से गिरा मुसलमान भी कहता है आप मेरे लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे हिदायत दे तो पूरी दुनिया के इन्सानों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना है इस बात को अच्छे अच्छे दीनदार भी अपने ज़िम्मे नहीं समझते आप यों कहें कि हमारे ज़िम्मे कोइ नहीं तो अमरीका, अफ्रीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना किसके ज़िम्मे है?

मुसलमानों की हालत

आज पाकिस्तान ही में कितने मुसलमान शराब पीते मर गए, चोरी करते मर गए, ज़िना करते मर गए, सूद खाते मर गए। आप बताओ ये कहाँ चले गए?

जो दुनिया में शराब पीता मर गया तो जहन्नुम में ज़ानी औरतों की शर्मगाहों से पीप निकलेगी उसको अल्लाह तआला जमा करके शराब पीने वालों को पिलाएगा। जो इस हालत में मर गया तो

बताओ उसका कितना बड़ा नुक़सान हुआ।

जो तकब्बुर करता हुआ मर गया उसको जन्नत की हवा भी नहीं लगेगी, अगर उससे तौबा करवा लेते तो कितने बड़े नुक़सान से वह बच जाता।

असलाफ़ का जज़्बाए जिहाद और हम

मेरे भाईयो! सहाबा जो रज़ियल्लाहु अन्हु बन गए तो उन्होंने वक़्त लगाया, पीछे मुड़कर नहीं देखा, उनकी भी औलादें थीं और उनकी भी बीवियां थीं वे वक़्त लगा के गए तो उनकी क़ुर्बानी से इस्लाम हम तक पहुँचा है। मुहम्मद बिन क़ासिम रह० के ज़रिए सिन्ध और पंजाब मुसलमान हुआ और उनकी शादी को चार महीने हो गए थे। उनका चचा था हिज्जाज बिन यूसुफ़ और अपनी बेटी निकाह में दी थी। चार महीने बाद उनको भेजा था। सवा दो साल तक वहाँ रहे आज तक के मुसलमानों के आमाल उनके नामे आमाल में जा रहे हैं, ढाई साल के बाद गिरफ़्तार हुए, सुलेमान के ज़ुल्म का शिकार हुए, जेल में शहीद हुए। अपने घर को सिर्फ़ चार महीने आबाद देख सके और हमेशा के लिए दुनिया छोड़ गए लेकिन करोड़ों इन्सानों की हिदायत का अज्र व सवाब अपने नामे आमाल में लिखवा गए और अभी तक लिखा जा रहा है। जब उनको शहीद किया जाने लगा तो कहने लगे ﴿اضــاعونی واى فتى اضـاعا﴾ उन्होंने मुझे ज़ाए किया और कैसे जवान को ज़ाए किया जो उनकी हदूद की हिफ़ाज़त किया करता था और मुश्किल वक़्त में उनके काम आता था। आज उसको इन्होंने ज़ाए कर

दिया। मुहम्मद बिन क़ासिम रह० का एक घर उजड़ गया और लाखों करोड़ो इन्सान इस्लाम में आ गए।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया सारी रात बारिश में खड़ा रहा रहूँ और सुबह को अल्लाह के दुश्मन पर हमला करूं तो यह मुझे पसन्द है सारी ख़ूबसूरत औरत के साथ गुज़ारने से। इधर आवाज़ लगी उधर से साद रज़ियल्लाहु अन्हु दौड़े, दुश्मन पर हमला और चहरे को छुपाया हुआ था (इसकी वजह नहीं लिखी कि क्यों छुपाया था) मुमकिन है यह ख़्याल हो कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देख लिया तो वापस न कर दें। हमला हुआ लड़ाई हुई ये पहली सफ़ में थे, उनके घोड़े को तीर लगा वह भी गिरा और यह भी गिरे। उठे तेज़ी से आस्तीनें ऊपर चढ़ायीं बाज़ू ऊपर किए। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब से गुज़रे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहचान लिया, अरे साद तू तो शादी के लिए जा रहा था, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों मैं साद हूँ, अच्छा अबशर फिर मेरी बशारत ले तू जन्नती है ﴿اصبحت﴾ तू कामयाब हो गया। इसके बाद एक छलांग लगाई और अपने आपको काफ़िरों के मजमे में फेंक दिया और शहीद हो गए। सहाबा ने कहा ﴿اصيب سعد﴾ या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साद शहीद हो गए। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके सिर को अपनी गोद में रखा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से आंसू दाढ़ी से गिर गिर कर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के चेहरे की मिट्टी और ख़ून धो रहें थे। फिर रोते रोते आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने फ़रमाया तू अल्लाह और उसके रसूल का कितना प्यारा हो चुका है। इधर घर लुट गया उधर अल्लाह का प्यारा बन गया। एक तरफ़ उजड़ गया दूसरी तरफ़ आबादी, एक तरफ़ कुछ न रहा, एक तरफ़ सब कुछ बन गया। हम थोड़ा सा ऊपर देखें और घर की चहार दीवारी से बाहर हो कर तो देखें।

शहादत का अज्र

मेरे भाईयो! हमें ज़िन्दगी की तरतीब को सही करना है। बाज़ार को न देखें, लेबाट्री मार्केट को न देखें। आसमान से ऊपर और ज़मीने के नीचे देखो तो तब ही ज़िन्दगी ठीक होगी। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऊपर देखा और जान गए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तू मेरा और अल्लाह का प्यारा हो गया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोते रोते मुस्कराए फिर यों फेरा ﴿ورد الحوض ورب الكعبه﴾ ख़ुदा की क़सम साद हौज़ पर पहुँच गया।

हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हु न रह सके फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हौज़ क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह मेरे रब ने मुझे दिया है जिसका पानी शहद से ज़्यादा मीठा, बर्फ़ से ठण्डा, दूध से ज़्यादा सफ़ेद, जो एक घूंट पिए तो कभी प्यास न लगे। फिर उन सहाबी ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप रो रहे थे फिर मुस्कुराए फिर मुँह फेर लिया यह क्या चक्कर था? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اما بكائى سعدا﴾ मैं साद की जुदाई पर रो रहा था और ﴿اما ضحكى﴾ मैं मुस्कुराया हूँ ﴿لما

﴿رایت انزلته عند الله﴾ जन्नत में उसका दर्जा देख कर मुस्कुराया हूँ ﴿فلما اعراض عنه﴾ फिर मैं ने इससे मुँह और आँखें झुकायीं हैं ﴿فلما رایت ازواجه﴾ मैंने देखा जन्नत की ख़ूबसूरत बीवियां उसकी तरफ़ दौड़ी चली आ रहीं हैं और दौड़ने में मुसाबक़त है एक कह रही है कि मैं पहले पहुँचू दूसरी कहती है पहले मैं पहुँचूं ﴿كاشفات سوقهن﴾ तेज़ दौड़ने से उनके पिंडलियों से कपड़ा उठ गया ﴿باديات خلا خلهن﴾ उनके पाँव की पाज़ेब नज़र आ रही है तो मैं ने शर्म की वजह से मुँह फेरा, और नज़र झुकाई जाओ जाओ साद की बीवी से कह दो कि अल्लाह तआला ने साद को तुझसे ख़ूबसूरत बीवियां अता कर दीं हैं। साद रज़ियल्लाहु अन्हु का एक घर उजड़ गया और इस्लाम बहुत सी नस्लों तक पहुँच गया। कुछ मिटते हैं तो कलियों को वजूद मिलता है, कुछ पत्थर ज़मीन में दफ़न होते हैं तो इमारत को रंग मिलता है, कुछ दाने ज़मीन में फूटते और फटते हैं तो ज़मीन का सीना सरसब्ज़ होता है। एक बाप पिसता है तो औलाद को घर बैठे रिज़्क़ मिलता है।

हर चीज़ क़ुर्बानी मांगती है

मेरे भाईयो! क़ुर्बानी हो रही है और इस क़ुर्बानी की सतह को ऊपर लाना है कि हम भी पिस जाएं, मिट जाएं और लुट जाएं और अल्लाह के हबीब का कलिमा सारी दुनिया में ज़िन्दा हो जाए यह इस उम्मत की इम्तियाज़ी शान है और इस पर रब मेहरबान है। यह चाद महीने तो सीखने के लिए हैं यह तो सारी ज़िन्दगी का काम है, चार महीने और चिल्ले इस तरतीब को समझने के लिए हैं। इस मजमे में जितने लोग हैं ये सब के सब अभी से

अल्लाह के रास्ते में निकल जाएं ऐसे निकलें कि घर वापस न आएं. किसी की क़ब्र कहीं बने और किसी की कहीं फिर देखना कि दीन ज़िन्दा होता है कि नहीं। हां भाई नक़द चार महीने वाले।
﴿جزاك الله تعالى﴾

❑ ❑ ❑

अल्लाह तआला की तारीफ़

11/2/2000

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الله وحده لا شريك له ونشهد ان سيدنا ومولنامحمدا عبده ورسوله وصلى تعالىٰ عليه وعلى اله واصحابه وبارك وسلم امابعد

وقال رسول الله ﷺ اطلبو الجنة جهد كم وهربوا من النار جهد كم فان الجنة لا ينام طالبها وان النار لا ينام هاربها، فان الجنة اليوم مهفوفة بالكارم فان الدنيا مهفوفة بالشهوات واللذات وتلهيتكوعن الاخرة واكما قال صلى الله عليه الصلوة والسلام

अल्लाह तआला इन्सान से एक लम्हा भी ग़ाफ़िल नहीं

मेरे भाईयो! अल्लाह तआला अपने बन्दों से किसी हाल, किसी

आन और किसी वक़्त में ग़ाफ़िल नहीं और अल्लाह के इरादे से ही बन्दे का काम होता है। असबाब ज़ाहिर में पैदा होते हैं फिर आसान तर होते हैं ﴿ءانتم تخلقونه ام نحن الخالقون﴾ तुम बनाते हो औलाद या हम देते हैं औलाद ﴿ام خلقوا من غير شئ﴾ या तुम ख़ुद बने हो, अल्लाह ने ख़ुद सवाल किया है और फिर ख़ुद जवाब दिया है ﴿قدرنا بينكم الموت وما نحن بمسبوقين﴾ यह मौत व हयात का निज़ाम तुम नहीं चला रहे हो बल्कि तुम्हारा अल्लाह चला रहा है ﴿خلق الموت والحيات﴾ मौत बनाने वाला और ज़िन्दगी को वजूद देने वाला है ﴿والسماء بنينا ها﴾ आसमान को हमने अपने हाथों से बनाया ﴿وانا لموسعون﴾ और हमने ही उसको फैला दिया ﴿والارض فرشناها﴾ और यह ज़मीन हमने बनाई और उसको फैला दिया न बुलडोज़र लगाया न क्रेनें लगायीं, कोई आला इस्तेमाल नहीं हुआ, मिट्टी को मिट्टी ही से हमने बनाया अपने लफ़्ज़े कुन से ज़मीन को वजूद अता फ़रमाया, किसी पत्थर वग़ैरह से पहाड़ नहीं बनाए वैसे ही पहाड़ों का वजूद बख़्शा ﴿فنعم الماهدون﴾ कोई है हम से ज़्यादा बिछाने वाला ﴿الم نجعل الارض مهادا﴾ क्या हम ने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया? ﴿والجبال اوتادا﴾ और पहाड़ किसने लगा दिए? ﴿خلقنا كم ازواجا﴾ और यह अल्लाह ही जिसने मर्द और औरत को वजूद बख़्शा ﴿وجعلنا نومكم سباتا﴾ अल्लाह ही है कि इन्सान को चारपाई पर लिटा कर ऐसी मख़्लूक़ उस पर मुसल्लत कर देता है कि इन्सान बिल्कुल बेख़बर बे शऊर पड़ा हुआ है, और इसी बेबसी की हालत में उसके मुँह और नाक से ऐसी आवाज़ें निकाल देता है और ऐसी ख़ौफ़नाक आवाज़ें आ रही हैं कि पास बैठने वाले भी बद्दुआएं दे रहे हैं कि हम इससे तंग हैं

﴿وجعلنا نومكم سباتا﴾ नींद को बनाया काटने वाला, ज़िन्दगी को काट दिया हरकात से, आमाल से, मशाग़िल से, लेन देन से और कारोबार से काट कर रख दिया ﴿وجعلنا الليل لباسا﴾ और रात को अल्लाह ले आए और छिपा दिया ﴿وجعلنا النهار معاشا﴾ दिन को काम करने के वास्ते बनाया ﴿وبنينا فوقكم سبعاً شدادا﴾ और ऊपर सात आसमान बना दिए।

तमाम ज़मीन व आसमान की बादशाहत सिर्फ़ अल्लाह के लिए

कौन है रातों को फ़रियाद करने वाले की फ़रियाद सुनने वाला ﴿وجعل كم خلفاء الارض﴾ कौन है तुम्हारी महफ़िलें चलाने वाला, क्या अल्लाह के साथ कोई शरीक है ﴿قليلا ما تذكرون﴾ फिर तुम में थोड़े हैं नसीहत हासिल करने वाले और जिनको नसीहत हासिल होती है वे दुनिया के धन्धों में पड़ कर ग़ाफ़िल नहीं होते।

अल्लाह खुद सवाल उठाकर जवाब देता है ﴿قل لمن الارض ومن فيها﴾ पूछो उनसे ज़मीन किसकी है और ज़मीन पर कब्ज़ा किसका है वे खुद कहेंगे अल्लाह का है। हमारी कोई नाफ़रमानी करे तो हमें ग़ुस्सा आता है मगर ﴿سيقولون الله افلا تذكرون﴾ फिर शरमाते क्यों नहीं अल्लाह से, अल्लाह की ज़मीन पर उसके साथ शरीक करते हो और उसी की ज़मीन में उसी के एहकाम से इन्कार करते हो उन्हीं ही की ज़मीन पर सूद का निज़ाम चलाते हो, उन्हीं की ज़मीन पर शराब पीते हो और उन्हीं की ज़मीन पर नाच गाने की महफ़िलें सजाते हो। अल्लाह यह फ़रमाते हैं कि अगर तुम्हारे घर

में और तुम्हारी ज़मीन पर तुम्हारी मर्ज़ी के बग़ैर कोई कुछ करे तो तुम उसके साथ क्या करते हो? तो तुम मेरी ज़मीन पर मेरे साथ क्या कर रहे हो ﴿قل لمن الارض ومن فيها﴾ तो तुम खुद कहते हो कि यह ज़मीन अल्लाह ही की है फिर तुम्हे हया क्यों नहीं आती सूद के निज़ाम से ज़मीन को आलूदा और गन्दा कर दिया है ﴿وربك الغنى ذوالرحمة﴾ अल्लाह फिर भी मेहरबान है ﴿لويؤاخذهم بما كسبوا﴾ अगर मैं पकड़ने वाला होता तो ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़ता, मेरी रहमत ही मेरे अज़ाब को रोक लेती है वरना मैं तुम्हें पकड़ लूँ ﴿لعجل لهم العذاب﴾ मेरे अज़ाब के दरवाज़े खुल जाएंगे फिर दुनिया में कोई बचाने वाला नहीं होगा। बरहाल तुम खुद अपने घर में किसी को कुछ करने नहीं देते लेकिन मेरी ज़मीन पर तुमने गाने की महफ़िलें सजा दीं मेरी ज़मीन को तुमने बेहयाई और फ़हाशी से भर दिया ﴿افلا تذكرون﴾ तुम्हे हया नहीं आई।

﴿قل لمن فى السموات السبع والارض ومن فيهن﴾ सब कहेंगे ﴿سيقولون الله افلا تتقون﴾ यही हमारे मिज़ाज के मुताबिक़ बात की है दुनिया के बादशाह से डरते हो, थानेदार से डरते हो जिनको अल्लाह तआला ने थोड़ा सा इख़्तियार दे दिया है और ये न इज़्ज़त दे सकते हैं न ज़िल्लत दे सकते हैं, न मौत दे सकते हैं, न हयात दे सकते हैं। जो न किसी की बना सके, न किसी की बिगाड़ सके, न दे सके, न ले सके, न मर सके, न मार सके, जो इतना बेबस और आजिज़ है उसके सामने तुम कैसे बकरी बन जाते हो और इधर ज़ुबान से कहते हो कि आसमान कर रब अल्लाह, ज़मीन कर रब अल्लाह, अर्शे अज़ीम का रब अल्लाह, काएनात का बादशाह अल्लाह फिर भी अल्लाह से नहीं डरते हो, अपने जैसे

इन्सान से डर जाते हो। उसकी ज़ात की बादशाही तसलीम करते हुए फिर भी उससे नहीं डरते हो ﴿افلا تتقون﴾ हाए अफ़सोस अपने जैसे इन्सानों के सामने कांपते रहे, वासिकबिल्लाह की आँखों में आँखे डाल कर कोई बात नहीं कर सकता था उससे शोले बरसते थे। यह ज़ालिम अब्बासी ख़लीफ़ा था।

अल्लाह तआला की अज़मत दिल में होनी चाहिए

जब अल्लाह तआला ने उनको मौत का झटका दिया तो उसके दोनों हाथ उठे ﴿يامن لا يزال ملكه﴾ ऐ वह ज़ात जिसके मुल्क को ज़वाल नहीं उस पर रहम कर जिसके मुल्क को ज़वाल आ गया है। उसके वज़ीर ने उसकी चादर को उठाकर देखा कि मरा है या नहीं तो उलटे पाँव पीछे जा गिरा, थोड़ी देर बाद उसके कफ़न में हरकत हुई तो वहां फिर दौड़ कर आए चादर उठा कर देखी तो एक चूहा उसके दोनों आँख खा चुका था, ऐसे बादशाहों से डरते हो जिनके ऊपर अल्लाह ने क़ब्र में जाने से पहले चूहे मुसल्लत कर दिए हैं।

जिन आँखों से शोले बरसते थे उन आँखों को चूहे ने खा लिया और अभी क़ब्र का अज़ाब बाक़ी है, ऐसों से डरें और आसमानों और ज़मीनों, अर्शे अज़ीम, लौह व कुर्सी के बिला शिरकते ग़ैर बादशाह से न डरें न चौंकें, न कांपें, न लरज़ें तो तुम्हारे दिल मुर्दा हो चुके हैं। यह पत्थर का दिल है या गोश्त का दिल है किस दिल के साथ ज़िन्दा हैं जिसको अल्लाहु अकबर की आवाज़ के बाद भी

अल्लाह याद नहीं आए तो वह मर ही गया और क्या? जिसको सज्दे और रुकू में भी अल्लाह याद न आए तो उसका दिल मुर्दा है। तकबीरे तहरीमा का मतलब यह है कि आदमी सब कुछ छोड़ कर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो जाए। अगर फिर भी अल्लाह याद नहीं तो यह दिल मुर्दा ही है और क्या है? याद होना या याद करना यह दिल का फ़ेल है, ज़ुबान का फ़ेल उसका इज़हार है। सीने में दर्द होता है तो किसी स्पेशलिस्ट के पास दौड़ता है कि भाई सीने में शदीद दर्द है तो क्या हो गया मरना तो है ही लेकिन दिल की सारी रगें अल्लाह से कट गयीं उसके इलाज की कोई फ़िक्र नहीं।

तो मेरे भाईयो! जब दिल का कनेक्शन अल्लाह से टूट जाता है तो उस दिल पर अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं आता जब अल्लाह का डर किसी दिल से निकल जाता है तो वह दिल सारी चीज़ों से डरता है ﴿العظمة الله﴾ सारी अज़मत अल्लाह के लिए है। मुल्क काफ़ूर अहमद बिन तूलून को नसीहत की तो उसको ग़ुस्सा आ गया उनके हाथ पाँव बान्ध के भूके शेरों के सामने डाल दिया और ऐलान करा दिया कि बादशाह के सामने गुस्ताख़ी करने वाले का अन्जाम ऐसा होता है। जब सब इकठ्ठे हो गए तो एक भूका शेर आकर अपनी ज़ुबारन से उनके पाँव और हाथों को चाटने लगा जैसे जानवर अपने बच्चों को ज़ुबान से चाटता है। यह जानवर की मुहब्बत और प्यार का तरीक़ा है। वह शेर उस आदमी के पैर चाट रहा था तो उस पर भी लरज़ा तारी हो गया कि मैं अभी इसके मुँह में जाऊँगा उसके बाद उसके हाथ पाँव खोलकर बाहर लाया गया और उस से पूछा गया कि जब शेर आपके पाँव

चाट रहा था तो आप अपने दिल में क्या सोच रहे थे? तो उस ने कहा कि मैं सोच रहा था कि मेरे पाँव पाक हैं या नापाक हैं। अल्लाह की अज़मत दिल में उतर जाती है तो शेर को भी अल्लाह तआला बकरी बना देता है और हम इन्सान नुमा बकरियों से डरते हैं और अल्लाह से नहीं डरते हैं।

अल्लाह की बड़ाई दिल में आ जाए

قل من بيده ملكوت كل شئی وهو يجير ولا يجار عليه

किसके हाथ में है ज़मीन और आसमान की लगाम और कौन है इसको टकराने वाला जिसको वह साया दे दें तो कौन है साया हटाने वाला और जिसको वह पकड़ लें कौन है उसको पनाह देने वाला। यह तो सब कहते हैं कोई नहीं, फिर अल्लाह कहता है ﴿فان تسحرون﴾ इतनी बड़ी ताक़तवर ज़ात को छोड़ कर पेशाब पाखाने के सामने झुक गए तो तुम पर किस ने जादू कर दिया। ऐसा काम आक़िल नहीं कर सकता अल्लाह को छोड़ कर अपनी जैसी मख़्लूक़ की खुशामद करता फिरे, मेरे भाईयो ﴿لا اله الا لله﴾ यह सिर्फ़ ज़ुबानी बोल नहीं बल्कि यह हक़ीक़त है जिस से हमारे दिल ना आशना हैं।

और हम तबलीग़ में इसी बात को सीख रहे हैं और इसी की दावत दे रहे है कि भाईयो मरने से पहले अपने दिल में अल्लाह को ले लो, उसकी अज़मत और किबरियाई, उसकी जबरूत और वहदानियत को दिल में उतार लो। न उसका कोई वज़ीर, मुशीर, न कोई मुईन व मददगार न कोई हिफ़ाज़त करने वाला, न वह खाए, न पिए, न सोए, न मरे, न मिटे। इब्तेदा से पाक, इन्तेहा से

पाक, थकावट से, नींद से, ऊंघ से पाक ﴿وما كان ربك نسيا﴾ भूलता नहीं ﴿لا يضل ربى﴾ भटकता नहीं ﴿وما كان الله ليعجزه من شئ﴾ वह आजिज़ नहीं ﴿لا تحسبن غافلا﴾ वह ग़ाफ़िल नहीं ﴿يمسك السموات والارض ان تزولا﴾ सारी काएनात का ज़र्रा ज़र्रा, बहर व बर, फ़िज़ा व ख़ला, आसमान व ज़मीन सब के सब उसके क़ब्ज़े क़ुदरत में हैं। सारी काएनात को हुक्म दिया ﴿ائتيا طوعا و كرها﴾ झुक जाओ खुशी से और नागवारी से, सारी काएनात बोली ऐ अल्लाह हम खुशी से हाज़िर हैं।

अल्लाह कहता है सारी काएनात मेरे सामने झुक जाती है तो तुम भी मेरे सामने झुक जाओ, तुम भी मान लो, अपनी मन चाही छोड़कर अल्लाह की चाहत को पूरा कर लो। बस तबलीग़ में इसी चीज़ की मेहनत हो रही है और कुछ नहीं।

सब कुछ अल्लाह के ही चाहने से होता है

मेरे दोस्तों और भाईयो! ज़मीन और आसमान पर वह होगा जो अल्लाह चाहता है

ماشآء الله كان، يفعل الله ما يشآء، ويهدى من
يشآء، ويضل من يشآء ويغفر من يشآء الخ

वही होगा जो अल्लाह चाहेगा और हम भी चाहते हैं कि हमारी चाहते पूरी हों। आज दुनिया वालों की चाहत यह है कि माल व कमाओ नाचो, यह रास्ता नामुकम्मल भी है और ख़तरा भी है। कभी पैसे से कोई खुशहाली ले सका है? कभी नाज़नीनों को पहलू में लिटा कर भी किसी को तसकीन हुई है? शराब में ग़र्क़ होकर

कभी किसी का ग़म मिटा है? सारी दुनिया में दुख ही दुख हैं जो जितना भी अल्लाह से दूर है वह बेचारा उतना ही महरूम है। इस रास्ते की नाकामी खुली आँखों अल्लाह के सामने दिखला रहा है। अल्लाह तआला बता रहा है ﴿عبدی انت ترید وانا ارید ولا یکون إلا ما ارید﴾ हम अपनी चाहतें चाहते हैं तो अल्लाह क्या इन्तेज़ाम फ़रमा रहे हैं? ﴿فان سلمتنی فی ما ارید اتیتك فی ما ترید﴾ ऐ मेरे बन्दे! दुनिया में अपने ऊपर मेरे हुक्म को लगा दो और जारी कर दो, तारी कर दो, फिर जो कुछ तू चाहता है सब कुछ पूरा कर दूँगा।

इन्सान को अपनी इस्लाह की फ़िक्र करनी चाहिए

अल्लाह की चाहत को पूरा कर देना हमारी ज़िन्दगी की कामयाबी है। यह पैदा करने वाले का हक़ है कि जिसने नुत्फ़े से ख़ूबसूरत शक्लें बनायीं क्या उसका हक़ नहीं कि उसकी मान कर चला जाए? आँखों में छब्बीस करोड़ बल्ब लगाए हैं क्या वह मुतालबा नहीं कर सकता कि हराम नहीं हलाल देखो? कानों में दो लाख टेलीफ़ोन लगाए हैं क्या इसका मुतालबा नहीं कर सकता कि हराम नहीं सुना और हलाल सुनो? हाथ अल्लाह ने दे दिया क्या इस का मुतालबा नहीं कर सकता कि उसके साथ अद्ल करो ज़ुल्म न करो? शहवत की ताक़त रखी है उससे ज़िना नहीं शादी करो, ज़ुबान में बोलने की ताक़त रखी है। इतनी बड़ी क़ुदरत है कि हवा की हरकत अल्फ़ाज़ में ढल रही है, आवाज़ें हरकत ही तो

हैं जो हवा से पैदा होती हैं और वह हरकत कान में जाकर अल्फ़ाज़ में मुन्तकिल हो कर दिमाग़ तक माइने को पहुँचाती हैं। कितनी बड़ी अल्लाह की क़ुदरत है ज़मीन की भी एक हरकत है जैसे गेंद फुरकती है ऐसे ही ज़मीन फुरकती है अगर अल्लाह तआला ज़मीन के इस इरतिआश (कपकपाहट) को बन्द कर दें तो ज़मीन सीधी ही घूमती चली जाए। कोई मौसम नहीं रहेगा। ये मौसम सब ख़त्म हो जाएंगे। क़तबी हवा चलें तो पूरी ज़मीन पर बर्फ़ बिछा देंगी। जब वें हवाएं बन्द हो जाएं तो सूरज की तपिश और शुआऐं पूरी दुनिया को चटखा देंगी तो इन्सान का क्या हाल होगा? क्या वह ज़ात इसका मुतालबा नहीं कर सकती हक़ और सच बोलो और गाली किसी को मत दो ﴿اذا هجرت امتی تساقط من عين الله﴾ जब मेरी उम्मत गाली गलौच इख़्तियार करेगी तो अल्लाह की नज़र से गिर जाएगी। हम तो पैदा होते ही गालियां देना शुरू कर देते हैं। बच्चे गालियां देने को खेल समझते हैं। छोटा सा बच्चा जानवरों का गालियां बक रहा है ऐसा तो जानवर भी नहीं करते तो उसका मुतालबा जाएज़ है कि हक़ बोल, चुग़ली न खा, ग़ीबत न कर, लगाई बुझाई न कर और वह बोल जो अल्लाह चाहता है। ﴿ان السمع والبصر والفؤاد كل اولئك مسئولا﴾ एक दिन आएगा कि मैं तेरे कानों से पूछूंगा कि क्या सुनते रहे? तेरी आँखों से पूछूंगा कि क्या देखते रहे? तेरे दिल से पूछूंगा कि किस जज़्बे के साथ मरे हो? तो मेरे दोस्तों और भाईयो! हम मशहूर हुए या बदनाम, ग़नी हुए या फ़क़ीर हुए, अगर हम ने अल्लाह की चाहत को पूरा कर दिया तो हम कामयाब हुए। तबलीग़ इस चीज़ को सीखने की मेहनत है। पूरी तरह ﴿ادخلوا فی السلم كافة﴾ दीन में

मुकम्मल तौर से दाख़िल हो जाओ, एक टांग दरवाज़े के बाहर हो और एक अन्दर हो तो यह लटक गया दर्मियान में। इसको पूरा दख़ूल नहीं कहा जाता और अल्लाह कहता है कि दीन में पूरे आ जाओ, अल्लाह के सामने झुका दो अपने आपको, ख़्वाहिशात को दफ़न कर दो, यह मुतालबा अल्लाह तआला ने हम से ला इलाहा इलल्लह में किया है। यह ज़ुबान का खाली बोल नहीं, पूरी ज़िन्दगी का मुतालबा है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम कलिमे में अपने नाम के साथ जोड़ दिया है, हम अल्लाह की मान को जानते नहीं और किसी नबी के अलावा वही आती नहीं और अब कोई नबी आएगा नहीं। इस लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने बन्दों में नमूना बना कर भेजा कि मेरी मान कर चलना है तो यह नमूना है ﴿ما اتاكم الرسول فخذوه الخ﴾। जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मना करें तो छोड़ दो और जिसको करने को कहें कर दो।

बराहे रास्त अल्लाह और रसूल से जंग

आज सारी दुनिया सूद की लानत में लिपट चुकी है। मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम सब इसके अलावा तिजारत ही नहीं करते। ऊपर वाले की तरफ़ से ऐलान जंग हो रहा है। अगर इन्सान के दुश्मन ऐलाने जंग कर दें तो सारे शहर में ब्लैक आउट हो जाए, सारे मोर्चे खोल दिए जाएं और सारे दिफ़ाई निज़ाम तैयार कर लिए जाएं और अल्लाह सूद पर कहे कि मैं तुम से लड़ने के लिए आ रहा हूँ ﴿فاذنوا بحرب من الله الخ﴾ मैं अकेला नहीं बल्कि मेरा रसूल

भी तुम से लड़ने आ रहा है तो बताओ यह उम्मत कैसे फ़लाह पाएगी जिनसे उसका रब और रसूल लड़ने आ जाएं। इनको ऐटमी ताक़त बनना क्या नफ़ा देगा। ऐटमी ताक़त बन भी गए तो कितने घरों को सुख मिला? हम यह नहीं कहते हथियार मत बनाओ लेकिल हम इतने पागल हैं कि इसी को अपनी मेराज समझ रहे हैं, कामयाबी और कामरानी अल्लाह के हाथ में है। अल्लाह को साथ लेने से काम बनता है फिर पत्थर भी ऐटम बम बन जाता है। जब तालूत जालूत के मुक़ाबले के लिए निकला तो दाऊद अलैहिस्सलाम छोटे बच्चे थे। कहने लगे मुझे भी साथ ले लें। जब यह रास्ते में जा रहे थे तो इधर एक पत्थर पड़ा हुआ था वह पत्थर कहने लगा कि ऐ दाऊद मुझे उठा लो। मेरे अन्दर जालूत की मौत लिखी है, छोटा सा पत्थर था उसको उठा कर जेब में डाल दिया जब मैदान में पहुँचे। जालूत लोहे के लिबास में मलबूस हो कर आया सिर्फ़ उसकी आँखें नज़र आ रही थीं उसने ऐलान कर दिया कि कोई आओ मेरे मुक़ाबले में?

दाऊद अलैहिस्सलाम ने कहा कि इसके मुक़ाबले के लिए मैं जाता हूँ। उन्हें इजाज़त मिल गई तो यह छोटा सा नौ उम्र मैदान में उतरा तो जालूत ने कहा कि यह नौ उम्र मेरे मुक़ाबले में आकर अपनी मौत से खेल रहा है। इतने में दाऊद अलैहिस्सलाम ने वही पत्थर उठा कर उसके सिर पर मारा वह पत्थर सिर से पार निकल गया। इतना छोटा सा पत्थर सिर को पार करके दूसरी तरफ़ निकल जाए यह कोई अक्ल की बात है ﴿وما رميت اذ رميت ولكن الله رمى﴾ तो तू नहीं मारता बल्कि तेरा रब मारता है।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत

मेरे भाईयो! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी बना लें। उनकी अदाएं अपने अन्दर पैदा करें। मुहब्बत करनी है तो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से करें। मुहब्बत से इत्तेबा पैदा होता है। जिससे मुहब्बत होती है आदमी उसके सांचे में ढलता चला जाता है जो लोग मासूम बच्चों को सुबह सवेरे टाइयां और सलीब पहना कर स्कूलों में भेज रहे हैं बचपन से बच्चों से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मतें बच्चों के दिलों से निकाल रहे हैं। यही औलाद कल इन माँ बापों के गिरेबान में हाथ डालेगी, या अल्लाह इन्होंने हमें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों से दूर कर दिया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है ﴾لا يؤمن احدكم حتى يكون هواه تبعا لما جئت به﴿ तुम में से कोई मोमिन नहीं जब तक अपनी ख़्वाहिशात को मेरे तरीक़े के ताबे न कर दे।

दूसरी जगह हदीस आई है ﴾لا يؤمن احدكم حتى اكون احب اليه الخ﴿ तुम में से कोई उस वक़्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक मेरी मुहब्बत औलाद पर, माँ बाप पर ग़ालिब न हो जाए।

क़ब्र की फ़िकर

मेरे भाईयो! सारे मआशरे को यह बात समझानी है। आज हम रोटी और दाल की महंगाई पर रो रहे हैं लेकिन क़ब्र की भूक चली आ रही है। यहाँ पर कपड़े पर रो रहे हैं और वहाँ पर सबको नंगा खड़ा कर दिया जाएगा सिर के बालों से फ़रिश्ते

घसीटते जा रहे होंगे। उस वक़्त के लिए कोई नहीं रोता, उस ग़म को कोई ग़म नहीं बनाता, रात तो कट ही जाती है चाहे हंसते कटे चाहे रोते कटे। कभी रात भी रुकी है? इस का काम जाना है और दिन का काम भी चलना है ग़म औक़ात के साथ साथ चले जाते हैं, ढल जाते हैं और जब वक़्त थम जाएगा, लैल और नहार की गर्दिशे अवक़ात की घड़ियां ख़त्म हो जाएंगी फिर अगर ग़म आया तो सदा रहेगा और राहत आई तो सदा रहेगी।

औरतों के लिए हुक्म

मेरे दोस्तों! तबलीग़ सारी सोई हुई इन्सानियत को जगाने का नाम है। दुनिया मोहसिने आज़म होता है नबी, नबी से बढ़ कर कोई मोहसिन नहीं होता। वह इन्सानियत को जहन्नुम से बचा कर, अल्लाह की गिरफ़्त से बचा कर जन्नत के सीधे रास्ते पर लगाता है। इस वक़्त सारी दुनिया पर एहसाने अज़ीम यही है कि उनको अल्लाह की तरफ़ फेर लिया जाए। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा मर्दों और औरतों में नज़र आए।

يا ايها النبى قل لا ازواجك وبناتك ونسآء المؤمنين الخ...

ऐ मेरे नबी बता दो अपनी बेटियों को और बीवियों को और सारी मुसलमान औरतों को कि अब पर्दे का हुक्म आ गया है। जब सुबह मस्जिद में मुसलमान औरतें आयीं तो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि ऐसा लगा कि कव्वे मस्जिद में आ गए। सारी काली चादरों में ढकी छुपी हुई, इधर हुक्म आया उधर इताअत आई। इनमें अपनी चाहत को अल्लाह पर क़ुर्बान

करने का जज़्बा पैदा हो गया था।

एक औरत का ख़ाविन्द अल्लाह के रास्ते में चला गया और बीवी से कहा कि घर में रहना बाहर न जाना, अब उसका बाप बीमार हो गया तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आई और कहने लगी कि मेरे ख़ाविन्द कह कर गए हैं कि बाहर न जाना, मैं बाप से मिलने जाऊँ? सहाबी का मतलब यह नहीं था कि बाप के पास भी न जाना क्योंकि मुँह से जुमला निकला था कि बाहर न जाना लेकिन उस औरत ने उस जुमले का पास रखा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इम्तेहान में डाल दिया कि घर में बैठी रहो, फिर सकरात आ गई तो उस औरत ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह मरने लगा है और इन्तिक़ाल हो गया फिर वह औरत कहने लगी या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुँह देखने चली जाऊँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बैठी रहो। इस हुक्म को कढ़वा घूंट न समझा, शहद समझ कर पी गई। बीमारी में न गई, कफ़न में न गई, जब दफ़न से फ़ारिग़ हो कर वापस आए तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अब जाओ तेरे इस सब्र ने तेरे बाप को जन्नत दे दी। इस तरह उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल पर अपने जज़बात क़ुर्बान कर दिये थे, हमारा मिज़ाज बदल रहा है हम मुसलमान भी रहना चाहते हैं और अपनी ख़्वाहिशात को भी पूरा करना चाहते हैं।

और अल्लाह कहता है कि मेरा क़ुर्ब हासिल करना है तो अपनी चाहतों को मेरी चाहत पर क़ुर्बान कर।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा मर्द व औरत दोनों के लिए है

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मर्दों को भी तरीक़ा बताने के लिए आए और औरतों को भी तरीक़ा बताने के लिए आए ﴿يا أبا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة﴾ ऐ अबू सुफ़यान मेरी मान कर चलना दुनिया व आख़िरत की इज़्ज़तें तुम्हारे मुक़द्दर में कर दी जाएंगी।

सारी काएनात के अन्दर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत डाली गई। इन्सान एक जज़बाती मख़्लूक़ है किसी मन्ज़र से मुहब्बत करता है और किसी मन्ज़र से नफ़रत करता है। कोई शक्ल देखता है मुहब्बत होती है कोई शक्ल देखता है नफ़रत होती है। ये नज़ारे और शक्लें उसको अपनी तरफ़ खींचती हैं। इसी तरह जानवर भी हैं लेकिन एक बेजान चीज़ में कोई शऊर नहीं कोई ऐश और हरकत ही नहीं। मिसाल के तौर पर पहाड़ वह भी काले, सहूर व समा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि यह ओहद का पहाड़ भी मुझ से मुहब्बत करता है। बेजान बे हिस, ग़ैर मुताहर्रिक चीज़ भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करती है। आप जबले ओहद पर चढ़ गए तो ओहद पहाड़ झूमने लगा कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम मुबारक मुझ पर पड़ गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اسكن﴾ ठहर जा क्यों हरकत करता है। जिसकी लम्स से बेजान चीज़ भी वजूद में आ जाएं उसकी ज़िन्दगी हमने किताबों में उठाकर रख दी। वह ज़िन्दगी घरों से निकल गई,

दुकानों से निकल गई, बाज़ारों से निकल गई, अदालतों से निकल गई, हुकूमतों के एवानों में से निकल गई, मुल्की क़ानूनों में से निकल गई, बीवी और बच्चों से निकल गई, मर्दों व औरतों में से निकल गई।

तबलीग़ का असल मक़सद

मेरे भाईयो! इस पर कौन रोए। घर की मैयत पर घर वाले न रोएं तो और कौन रोएगा। आज दीन और इस्लाम को मिटता हुआ देख कर मुसलमान न रोए तो यहूदी रोएगा। वे तो पहले से मिटाने पर लगे हुए हैं। यह तबलीग़ में इसी बात की मेहनत हो रही है कि अल्लाह तआला के अहकामात को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों पर लेकर चलना हर मुसलमान मर्द और हर मुसलमान औरत के अन्दर उतर जाए। यही उनकी कामयाबी का रास्ता है। इसी से वे कामयाबी की मंज़िल तक पहुँच जाएंगे। इसके अलावा तमाम रास्ते नाकामियों की तरफ़ हैं, हलाकतों की तरफ़ हैं, बर्बादियों की तरफ़ हैं। यही मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रास्ता है जो उनको कामयाबी तक पहुँचाएगा।

एक वाक़िया

दुनिया की कोई किताब पढ़ने से कुछ नहीं मिलता, अगरचे उसकी इन्तिहा पहुँचे और उसके असल फ़न तक जा पहुँचे। पढ़े हुए भी जूतियां चटख़ाते फिरते हैं। जब मैं राएविन्ड में पढ़ता था

तो मेरा भाई मेडिकल में पढ़ता था। जब मैं कभी घर जाता था तो मुझ से कहता था आपके मुस्तक़बिल के बारे में बड़ी फ़िक्र है। मैं उससे कहता था तू अपनी फ़िक्र कर, हम मस्जिद में एक रोटी पर भी गुज़ारा कर लेंगे। जब वह फ़ारिग़ हो गया तो उसकी कोई मुलाज़मत नहीं मिली तो जूतियां चटख़ाने लगा तो कहने लगा मुझे अब अपनी फ़िक्र है। दुनिया में डिगरियां हासिल करने के बाद कुछ नहीं मिलता और इस तरफ़ अल्लाह की किताब उठाकर घर से निकला और मस्जिद में जाकर पढ़ने लगा तो माँ बाप के पिछले सारे गुनाह मॉफ़ हो गए। हाय जो क़ौम ज़हनी तौर से ग़ुलाम हो चुकी हो तो उसे ऐटम बम बनाना कोई इज़्ज़त नहीं दे सकता, जो ज़हनी ग़ुलाम हैं जिनको हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी और तरीक़े अपनी तरफ़ न खींच सकें और जिनको हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में हुस्न दिखाई न दे वे कहाँ जा कर फ़लाह पाएंगे। यह ज़मीन अल्लाह की है, ज़मीन वह चीज़ निकालती है जो अल्लाह कहता है और हवाएं उसके ताबे हैं जो आसमानों में रहता है। ज़मीन और आसमान की लगाम उसके हाथ में है। इसमें उसका कोई शरीक नहीं।

बेजान भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करता है

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोए हुए थे तो दूर से एक दरख़्त आया ज़मीन को चीरता हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर साया किया फिर थोड़ी देर बाद हुज़ूरे अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँख खुलने पर वापस अपनी जगह पर क़रार पकड़ा। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह देखा कि वह दरख़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और फिर चला गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दर्याफ़्त किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह मेरे दीदार के लिए आया था और मेरे दीदार का प्यासा था उसने अल्लाह से इजाज़त मांगी जब उसे इजाज़त मिली तो आकर मेरा दीदार करके अपनी प्यास बुझाई जिसकी ख़ातिर हजूर शजूर शौक़ रखें और हम उसका शौक़ न रखें तो फिर हम अपने आपको मुर्दा न कहें तो और क्या कहें?

तबलीग़ का फ़ायदा

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को लेकर चलना और सीखना इसके लिए घरों से निकलना शर्त है। यह मेहनत का निज़ाम अल्लाह ने चलाया, आपके मुल्क में चला दिया। इसे मैं भी सीख लूं, आप भी सीख लें ताकि जब मरें तो अल्लाह के महबूब बनकर मर जाएं, मरदूद बनकर न मरें। हज़रत शाबाना रह० ने ख़्वाब में देखा कि जन्नत सजाई जा रही है फ़रिश्ते और जन्नती दरवाज़े पर खड़े हैं तो कहने लगे क्या हो रहा है और कौन आ रहा है? जवाब मिला एक ख़ातून आ रहीं हैं जिसके लिए सारे जन्नती दरवाज़े पर इस्तिक़बाल के लिए खड़े हुए हैं तो उन्होंने देखा उनकी अपनी बहन हज़रत शमउना रह० सफ़ेद ऊँट पर बैठ कर हवा में जन्नत की तरफ़ चली आ रही हैं जब वह जन्नत के दरवाज़े पर पहुँच कर ऊँट से उतरीं तो सारे

फ़रिश्तों और जन्नतियों ने उनका इस्तिक़बाल किया। तो उन्होंने उन से पूछा कि बहन यह मुक़ाम कैसे पाया? उन्होंने कहा रातों को उठ उठ कर अल्लाह को याद करने से पाया।

जो औरतें रातों को उठकर रोती थीं उनकी गोद में जुनैद बग़दादी जैसे फूल खिलते थे और जिन औरतों की रातें गाने बजाने और सुनने में गुज़रती हैं उनकी गोद में बदमाश ही पैदा होते हैं और कौन पैदा होगा। ऐसी बन्जर ज़मीन में कांटे ही लगते हैं, गुलाब नहीं लगते।

अल्लाह और रसूल के ताबे होकर ज़िन्दगी गुज़ारें

तो मेरे भाईयो! हम अपनी चाहतें अल्लाह की चाहत के ताबे कर लें और उन चीज़ों से नफ़रत अपने अन्दर पैदा कर लें जिन चीज़ों से अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोका है। अब सारी दुनिया के इन्सानों को इस पर लाना है। यह इस उम्मत की ज़िम्मेदारी है। एक आदमी को आपने देखा उसके पास कपड़े और जूते कुछ भी नहीं हैं तो आपके दिल में ख़्याल आया कि इसकी ज़रूरियात पूरी करूँ इतने में आपने देखा कि एक साँप दौड़ता हुआ उसकी तरफ़ आ रहा है तो बेसाख़्ता पुकार उठेंगे साँप साँप। सबसे पहले आप उसकी जान बचाने की फ़िक्र करेंगे क्योंकि जब तक जान है तो रोटी भी होगी, कपड़ा भी होगा, ज़ब मर गया तो यह रोटी और कपड़ा किस काम के।

इस वक़्त पूरी दुनिया की इन्सानियत सिवाए चन्द एक के सब के सब जहन्नुम की तरफ़ जा रहे हैं। इनकी सब से पहली ज़रूरत

यह है कि उनसे तौबा करवा कर अल्लाह से जोड़ा जाए और जहन्नुम के साँप बिछूछुओं से बचाया जाए। मेरे वालिद साहब फ़ौत हुए तो ख़्वाब में देखा कि वह बड़े ख़ौफ़ज़दा हैं। मैंने कहा क्या हुआ? तो कहने लगे बेटा आख़िरत के साँप बड़े ख़तरनाक हैं। मैंने कहा आपके साथ क्या हुआ? फ़रमाया अल्लाह ने मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाई फिर भी आख़िरत के साँप बड़े ख़तरनाक हैं। जहन्नुम के बिछूछू जिनका क़द ख़च्चर के बराबर है अगर एक बार डस लें तो चालीस साल तक आदमी तड़पता रहेगा और उसको हमेशा हमेशा डसते ही रहना है न जहन्नुम के आदमी पर मौत और न उस बिछूछू पर मौत आएगी। तो इन्सानियत को उन बिछूछूओं से बचाने की ज़रूरत है।

सहाबा का जहन्नुम का तज़्किरा सुन कर रोना

हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारा दुश्मन अल्लाह का नाफ़रमान है तो उससे बदला लेने की कोई ज़रूरत नहीं अल्लाह ख़ुद अपने नाफ़रमान का बदला चुकाएगा। जो मुजरिम बनकर मर गया तो किस इबरतनाक तरीक़े से क़ब्र उसका हश्र करेगी। सारी दुनिया के इन्सानों को इस आने वाले दिन से बचाना है और अपने आपको भी बचाना है। गर्मी सर्दी से बचाना यह हुक़ूक़ का मामला है लेकिन अपने आपको जहन्नुम से बचाने के लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है ﴿قوا انفسكم واهليكم نارا وقود ها الناس الخ﴾ जिस आग का ईंधन हम और आप हैं।

इस आयत को सुनने के बाद हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु

अन्हु रोते हुए बाहर निकल गए; तीन दिन ग़ायब रहे और किसी को नहीं मिले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उनको तलाश करो। जब तलाशी हुई तो पहाड़ों में बैठे हुए थे अपने सिर पर मिट्टी डाली हुई थी और रो रहे थे कि हाय उस आग की हालत क्या होगी जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं। उनको पकड़ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाय गया तो फ़रमाया कि इस आयत ने मुझे बेक़रार कर दिया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आप उनमें से नहीं हैं, सलमान तू तो वह है जिसको जन्नत ख़ुद चाहती है। जिसको जन्नत चाहे वह जंगलों और पहाड़ों में निकल जाए और जिसको कुछ पता ही नहीं जन्नत और जहन्नुम का वह मज़े की नींद सो जाए।

एक सहाबी तहज्जुद की नमाज़ में रो रहे हैं कि ऐ अल्लाह जहन्नुम की आग से बचा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकर देखा और फ़रमाया कि अरे भाई तूने यह क्या कर दिया? तेरे रोने की वजह से आसमान में सफ़े मातम बिछी हुई है, तेरे रोने से फ़रिश्तों को भी रुला दिया है। ऐसा दर्द व ग़म उनके अन्दर उतर गया था।

दूसरों की इस्लाह की फ़िक्र करनी चाहिए

अब ऐसे पत्थर दिलों का नरम करना है और अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से जोड़ना इस उम्मत की मेहनत है। हम आए हैं इसके लिए ﴿هو اجتبٰكم﴾ हमें अल्लाह ने चुन लिया है, ﴿كنتم خير امة﴾ इस आयत में अल्लाह ने इस उम्मत की शराफ़त और

क़दर व मन्ज़िलत बताई है। बिन बुलाए नहीं ये बुलाने पर आई है। मेहमाने ख़ुसूसी स्टेज पर मौअज़्ज़िज़ होता है और वह स्पेशल बुलाया जाता है। आप अल्लाह की तलब पर दुनिया में आए हैं और आप क्यों आए हैं? ﴿تامرون بالمعروف الخ﴾ आप लोगों को नेकियों की तरफ़ दावत देते हैं और आप उनको बुराईयों से रोकते हैं और आप अल्लाह पर ईमान रखते हैं। इस वक़्त मुसलमान की हालत यह है कि कुछ वक़्त दीन पर चलता है बाक़ी अपनी मर्ज़ी पर चलता है। पिच्चानवे फ़ी सद नमाज़ छोड़ चले हैं। कारोबार में लाखों में से चन्द एक मिलते हैं जो हराम व हलाल का ख़्याल रखते हैं। जिहालत का यह आलम है कि न बाप को पता है कि बच्चों की क्या तरबियत करनी है और न माँ को इल्म कि कैसे तरबियत बच्चों की की जाए? बाज़ार औरतों से भर गए हैं जो घर की जानशीन थीं उसको शैतान ने बाज़ार की ज़ीनत बना दिया, यह अच्छी आज़ादी है। ऐयर होस्टेस बन जाओ तीन सौ आदमियों की ख़िदमत करो यह आज़ादी है क्या आज़दी है? कर्लक बन कर सारे दिन ऑफ़िस में बैठो, यह आज़ादी है। आज़ादी अल्लाह ने दी थी कि घर में बैठ कर बच्चों की तरबियत करो और मर्द की ज़िम्मेदारी है कमाकर लाए और तुझे खिलाए। जिस रास्ते से अल्लाह रिज़्क़ देता है वे रास्ते हम ने ख़ुद बन्द किए हुए हैं ﴿من حيث لا يحتسب﴾ का दरवाज़ा खोलो तो अल्लाह घर बैठे खिलाएगा।

अब अल्लाह ने इन्सान को कमाने का हुक्म दे कर इम्तेहान में डाला है कि हलाल कमाता है या हराम, झूठ बोलता है या सच, रिश्वत लेता है या तनख़्वाह पर गुज़ारा करता है, वरना अल्लाह के

लिए देना, लेना, खिलाना, पिलाना कोई मुश्किल नहीं यह घर बैठे खिला पिला सकता है। आज मुसलमान का हाल कि हम कमाएंगे तो खाएंगे। इस अकीदे को तोड़ना है। अब इन मुसलमानों को समझाना है सारी दुनिया के काफ़िरों के पास इस दीन को लेकर जाना है। अगर हम और आप कहेंगे कि हमारे पास फ़ुर्सत ही नहीं, औरतें कि हम अपने ख़ाविन्दों को अपने से जुदा नहीं होने देंगे और बच्चे कहें कि हमें खेलने से फ़ुर्सत नहीं तो फिर यह दीन किसके हवाले है? या यह बता दें कि यह काम फ़लॉं क़ौम या क़बीले के ज़िम्मे है वे जा कर यह अन्जाम देंगे। मेरे भाईयो हम ने इस काम को अपनी ज़िम्मेदारी ही नहीं समझा, यह कोई नफ़ली इबादत नहीं कि कर लिया जाए तो ठीक है न किया तो कोई हर्ज नहीं, नहीं मेरे दोस्तों! यह उम्मत की ज़िम्मेदारियों में शामिल है। हदीस में है कि जब तुम जिहाद को छोड़ दोगे तो तुम पर ज़िल्लत मुसल्लत कर दी जाएगी। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम मुल्क व माल फ़तेह करने के लिए नहीं निकले थे। पैग़ामे इलाही को फैलाने निकले थे। अल्लाह का शुक्र है कि अल्लाह ने इस पुराने काम को दोबारा ज़िन्दा कर दिया। पीछे की तरफ़ गर्दिशे अय्याम को लौटा दिया। यह उम्मत फिर से इस काम को लेकर फिरने लगी है। एक अन्सारी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी माँ से कहने लगे मुझे अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दो। वालिदा ने कहा जाओ मैं ने आप को अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दिया तो यह सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु घर से निकले तो उन्नीस साल के बाद वापस लौटे, रात को घर के दरवाज़े पर पहुँच कर दस्तक दी तो अन्दर से वालिदा ने कहा कौन है?

उन्होंने कहा कि मैं आपका बेटा हूँ। वालिदा ने कहा मैं आपको अल्लाह के रास्ते में वक़्फ़ कर दिया था और दी हुई चीज़ को वापस लेना बड़ी बे ग़ैरती है, जाओ क़यामत के दिन मुलाक़ात होगी। दरवाज़ा नहीं खोला।﴿اللقاء يوم اللقاء﴾ मुलाक़ात मुलाक़ात के दिन होगी। यह बेटे की क़ुर्बानी थी। उसको कहां मुक़ाम मिला। उस लड़के ने बाद में अबू जाफ़र मन्सूर के खिलाफ़ फ़त्वा दिया। अबू जाफ़र ने हुक्म नाफिज़ कर दिया कि मैं आ रहा हूँ सूली तैयार की जाए और उसको मेरे सामने सूली पर लटकाया जाए। यह फ़ुजैल बिन अयाज़ रह० की गोद में सिर रख कर लेटे हुए थे। सुफ़ियान बिन ऐनिया रह० आकर कहने लगे कि सुफ़ियान बिन सौरी उठो और भाग जाओ अबू जाफ़र ने तुझको सूली पर लटकाने का हुक्म दिया है। उठ कर सीधे मुलतज़िम में आके फ़रियाद की कि या अल्लाह आपने अबू जाफ़र को मक्का में दाख़िल होने दिया तो दोस्ती टूट जाएगी। अबू जाफ़र मक्का पहुँचना तो दरकिनार ताएफ़ तक नहीं पहुँच सका। ताएफ़ के पीछे ही पहाड़ों में गिर कर मर गया। आज उस जाबिर की क़ब्र का भी पता नहीं है कहां पड़ा हुआ है।

हम अपनी राह सीधी करें

हम को माँ बाप ने कमाना सिखाया है, जवान हुए तो हमने भी दांए बांए देखा तो हमने भी सोचा कि हमें भी कमाना है, घर बनाना है। यही हमारी सोच है, यही हमारा सरमाया है। स्कूल में गए तो वहां भी कमाई की तालीम दी गई कि बड़े हो कर बड़ा

आदमी बनना है। बड़ा आदमी क्या है? जिसकी शोहरत हो, माल व दौलत हो, चारों तरफ़ चर्चा हो, हमारी नस्ल मज़लूम है बेचारी जो अपनी माँ बाप के हाथों से ज़ुल्म सह रही है, अपने उस्तादों से ज़ुल्म सह रही है। कोई उनको बताने वाला नहीं कि तुम दुनिया में क्यों आए हो? कोई यह नहीं बता रहा कि तक़्वा इख़्तियार करो अल्लाह तआला पालेगा। सारे परेशान बैठे हुए हैं कि औलाद होगी तो रिज़्क़ कहां से आएगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औलाद कसरत से पैदा करो ताकि मैं अपनी उम्मत की कसरत पर फ़ख़्र करूं क़यामत के दिन। आज कल यह शोर हो रहा है कि आबादी बढ़ गई है, बढ़ती हुई आबादी पर कन्ट्रोल किया जाए।

स्कूल के हैड मास्टर को पता है मेरे स्कूल में बीस बच्चे पढ़ सकते हैं उसके बाद कोई गुन्जाईश नहीं, इसी तरह एक मिल वाले को पता है कि मेरी फ़ैक्ट्री में कितने मज़दूर होना चाहिएं। इसी तरह अल्लाह को भी उनकी शान के मुताबिक़ इल्म है कि कितने बन्दे पैदा करने हैं। मन्सूबा बन्दी पर अल्लाह तआला आ जाएं तो शहरों के शहर ज़मीन के अन्दर धंसा दिए जाएं। उसने मौत हयात का निज़ाम चलाया हुआ है और रिज़्क़ अपने हाथ में लिया हुआ है। मुक़द्दर माँ बाप नहीं बनाते। बच्चा माँ के पेट से मुक़द्दर लेकर आता है।

अल्लाह तआला ने इज़राईल अलैहिस्सलाम से फ़रमाया आपने इतने आदमियों की जान ले ली है आपको किसी पर रहम भी आया? उन्होंने कहा दो दफ़ा आया था, किस वक़्त? एक औरत किश्ती पर सवार थी किश्ती दरिया के दर्मियान टूट गई औरत

एक तख़्ते पर बैठ गई और उसी वक़्त उसको दर्दे ज़े आ गया आपने कहा था कि माँ की जान निकाल लो। मैंने कहा इस बच्चे का क्या बनेगा?

दूसरा वक़्त जब शद्दाद तीन सौ साल में मसनवी जन्नत बनाई, जब उसमें दाख़िल होने के लिए एक क़दम अन्दर रखा तो आप ने कहा इसकी जान ले लो तो मैंने उसकी जन्नत के दरवाज़े पर उसको गिरा दिया। उस पर मुझे रहम आया। अल्लाह ने फ़रमाया आप जानते हैं यह शद्दाद कौन था? फ़रिश्ते ने कहा नहीं, फ़रमाया यह वही बदबख़्त है जिसकी माँ की जान आपने किश्ती के तख़्ते पर निकाली थी।

माँ बाप के ज़िम्मे औलाद की तरबियत है और रिज़्क़ अल्लाह के हवाले है। रब अल्लाह है काएनात नहीं, बहर व बर नहीं, हवाएं और ग़ल्ले नहीं, चाँद सितारे नहीं। रब सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही है। बच्चे का रिज़्क़ पहले लिखा जाता है। माँ की छातियों में दूध पहले आता है बच्चा बाद में आता है। क्या वह अल्लाह बड़े होने के बाद उसको रिज़्क़ नहीं दे सकता? रब अल्लाह तआला है हमने उसकी रबुबियत को नहीं समझा, उसकी ताक़त उसकी किबरियाई को नहीं समझा। ऐ मूसा तेरे रब के ख़ज़ाने कभी ख़त्म नहीं होंगे ﴿يا موسى من الفقر مادام خزائن الملآء وان خزائنهم لا تنفدا ابداً﴾

हमारी निस्बत मुहम्मदी है

तो मेरे भाईयों! हम तो दुनिया में इस्लाम को लेकर फिरने वाले

हैं। पैदा होते ही हमारे कान में बताया जाता है तू मुहम्मदी है, बाक़ी बाप होने की निस्बत, बेटे होने की निस्बत, माँ होने की निस्बत, बीवी और बेटी होने की निस्बत बाद की है। वज़ीर होने की निस्बत, सदर होने की निस्बत, ताजिर और ज़मींदार होने निस्बत, डाक्टर होने की निस्वत ये सब चीज़ें बाद में हमारे साथ लगती हैं। पहली निस्बत हमारी मुहम्मदी होने की है। इस निस्बत के ज़ैल में हमें दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना है। जिस तरह अल्लाह ने कहा नमाज़ के लिए घर से निकल जाओ, हज के लिए निकल जाओ, ज़कात के लिए अपनी कमाई से पैसे दो। उसी अल्लाह ने कहा है तुम्हारा नबी आख़िरी नबी है उसके बाद कोई नबी नहीं। उसके अहकामात फैलाओ और पहुँचाओ यह हुक्म हमें मिला। इस लिए हम इस काम को करने के पाबन्द है। पहली उम्मतों को नहीं मिला। उन पर दो वक़्त नमाज़ फ़र्ज़ थी, हमारे ऊपर पाँच वक़्त फ़र्ज़ कोई कहता है कि उन पर दो हमारे ऊपर पाँच वक़्त क्यों है?

उनको घर छोड़ने का हुक्म नहीं मिला और हमें मिला है।

جاهدوا فی الله حق جهاده الخ، انفروا خفافا الخ

जब हुक्म मिल गया तो करना ही पड़ेगा। तबलीग़ी जमात ने सिर्फ़ याद दिहानी कराई न कोई ताक़त है कि घर से उठाकर बाहर फेंक दे, बीवी बच्चों से जुदा कर दे। यह अल्लाह के अमूर की क़ुव्वत है कि लोग ख़ुद घरों से निकल कर अल्लाह के पैग़ाम को दुनिया में फैला रहे हैं। मुल्कों के मुल्कों की फ़िज़ाएं बदल गयीं, क़बाइल के क़बाइल दायरा-ए-इस्लाम में आ गए। लाखों

इन्सान इस काम से मुशर्रफ़-ब-इस्लाम हुए, यूरोप की फ़िज़ाओं में आज़ानें गूंजने लगीं, मस्जिदें बनीं, मदरसे बनें। हैरत की बात यह है कि डेढ़ हज़ार बच्चे यूरोप के एक मरदसे में थे जबकि बीस बरस पहले कोई जनाज़ा पढ़ाने वाला भी नहीं मिलता था। सारे पादरी मुसलमानों को दफ़न करते थे। जब लोगों ने घरों को छोड़ा तो उसका यह सिला मिला। ये पागल नहीं हैं कि बिस्तर उठाए फिर रहे हैं और साल में एक दफ़ा आपको तंग करने आ जाते हैं, नहीं नहीं, यह अल्लाह का अम्र है जो आपको कह रहा है कि मेरे रास्ते में निकलो। अल्लाह के फ़ज़ल से हम ने क़ुरआन पढ़ा और हदीस पढ़ी। हमें कोई गूंजाईश नहीं मिलती कि क़ुरआन में यह आता है और हदीस में यह आता है कि क्या ज़रूरत है घर से निकलने की, इधर बैठे रहो, गली कूचों में धक्के खाने की क्या ज़रूरत है? अल्लाह ने बीवी बच्चे दिए, सब कुछ दिया अगर कहीं से गुंजाईश नज़र आती तो हम आने लिए निकालते। हमें गुंजाईश नज़र नहीं आती। जब तीस बरस से क़ुरआन हदीस पढ़ रहे हैं तो हम आपके लिए गुंजाईश कहां से निकालें, चलो जी घर बैठे रहो, ये ऐसे ही कहते रहते हैं, नहीं मेरे भाईयो! यह हमारी ख़ैर ख़्वाहाना दर्ख़्वास्त है इल्तिमास है कि अपने ऊपर रहम खाएं। यह निकलना आपकी ज़ाती ज़रूरत है जो इसमें रुकावट बनते हैं वह नादान हैं, उनको कुछ पता नहीं अगर उनको पता चल जाए तो रुकावट न बनते। एक वक़्त वह था मेरे वालिद ने कहा अगर तू निकल गया उन लोगों के साथ तो मैं तेरी टांगे तोड़ दूंगा। ये अल्फ़ाज़ आज तक मेरे कानों में गूंज रहे हैं। एक वक़्त ऐसा आया मेरे छोटे भाई ने कहा कि यह काम करता नहीं घूमता रहता

है तो मेरे वालिद ने कहा कि अभी मैं ज़िन्दा हूँ तुझे बोलने का कोई हक़ नहीं। यह रूपए ख़र्च करता है यह अगर मेरी बोटियां भी मांगले तो मैं अपनी बोटियां भी निकाल कर दे दूं। पहले उन्हें पता नहीं था जब बात और काम उनकी समझ में आ गया तो कहने लगे मैं बोटियां देने को तैयार हूँ।

यह हमारे वालिदैन और बीवी बच्चों को पता नहीं कि इस निकलने में क्या ख़ज़ाने दुनिया आसमान में छुपे हुए हैं, अगर पता चल जाए तो घरों में बैठना मुश्किल हो जाए। लोगों तैयार हो जाओ। फिरते हो, पकाते हो और इस रास्ते में मरने की दुआएं मांगते फिरो। हमारा माहौल कोई माहौल है, सुनने का कोई मौक़ा ही नहीं मिलता।

अपनी औलाद की फ़िकर न करने के नुक़सानात

मेरे दोस्तों और बुज़ुर्गों! अल्लाह ने इस उम्मत को चुना है दुनिया में अपना पैग़ाम और आवाज़ लगाने के लिए अगर हम अल्लाह की आवाज़ नहीं लगाएंगे तो शैतान की लगाना और सुनना पड़ेगी। घरों में बैठ कर उसकी आवाज़ और नाच देखना पड़ेगा। उनके फ़हाशी के निज़ाम में अपनी औलाद को ज़हर निगलते हुए देख कर भी आप चूं न कर सके अगर अल्लाह की तरफ़ न बुलाया तो यह सब कुछ होगा। आपकी औलादें वह न करेंगी जो आप चाहते हैं बल्कि वह करेंगी जो यहूदी और इसाई चाहते हैं। हमारी बेटियां फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पीछे नहीं चलेंगीं, हमारी बेटियां फ़ाहिशा औरतों और अदा कारों के पीछे चलेंगीं। हमारे नौजवान अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को सामने नहीं

रखेंगे, वे फ़ासिक़ो, बदमाशों और फ़ाजिरों को सामने रखेंगे। यह हक़ीक़त कोई झुठला नहीं सकता। जिस के लिए रात की नींदें ख़राब कीं, जिसके पेशाब पाख़ाना धोते रहे लेकिन जब जवान हुए तो वालिदैन की आँखें निकालता है। इन नाफ़रमान औलादों के लिए हम अल्लाह की नाफ़रमानी करें क्यों? यह सौदा नहीं होगा। हम अपनी औलाद की ख़ैर ख़्वाही चाहते हैं तो ये भी जन्नत में जाने वाले बनें और पूरी दुनिया के इन्सान ताएब होकर अल्लाह से जुड़ जाएं तो तबलीग़ तो कोई तबलीग़ जमात का काम नहीं यह अल्लाह का अम्र है अम्र, हुक्म है हुक्म। यह हमारी महरूमी है कि ज़माने हुआ हम इस बात भूल गए।

पिंजरे में रहते रहते ऐसी ताक़त ख़त्म हुई कि उड़ने की ताक़त न रही। तो उड़े भी तो पता नहीं कि यह किस चमन का पंछी है तो यह जमाती काम नहीं है, यह इस्लाम है इस्लाम, यह दीन है दीन, और सबसे बड़ा हुक्म है दीन का, तुम खड़े हो जाओ ﴿فانذر وربك فكبر﴾ तो भाईयो! इसके लिए निकलो। चार महीने, चालीस दिन ये सीखने का ज़माना है काम सारी ज़िन्दगी का है। डाक्टर बना बीस साल में, सौ साल ज़िन्दगी रही तो डाक्टरी ही करूंगा। चार महीने सिर्फ़ सीखने के लिए हैं बाक़ी सारी ज़िन्दगी तेरा बन कर चलूंगा, लोगों को मानने वाला बनाऊंगा, नियतें तो कर ले भाई। इसके लिए अपने नाम लिखवा लें।

□ □ □

अल्लाह के अपने बन्दों पर इनामात

हर चीज़ उसकी तस्बीह बयान करती है

यह सारी काएनात अल्लाह के हुक्म से वजूद में आई है और इस में सारी चीज़ें इन्सान को नफ़ा पहुँचाती हैं अल्लाह के हुक्म से और नुक़सान पहुँचाती हैं अल्लाह के हुक्म से। अल्लाह के हुक्म से इनमें नुक़सान की शक्लें आती हैं। अल्लाह के हुक्म से बाक़ी हैं अल्लाह के हुक्म से फ़ना होगा, अल्लाह के अम्र से दोबारा उठना होगा। काएनात में कोई चीज़ खुद वजूंद में नहीं आई है हर चीज़ का बनाने वाला अल्लाह तआला है। वह ज़बरदस्त बनाने वाला है ﴿وهو الخلاق العليم﴾ और जानने वाला भी है सारी काएनात अपने इरादे से बनाई है और अपनी क़ुदरत से उस पर कब्ज़ा किया हुआ है ﴿كل شي قد علم صلوته وتسبيحه﴾ हर चीज़ उसकी तस्बीह पढ़ती है, उसकी नमाज़ पढ़ती है ﴿وان من شي الا يسبح بحمده﴾ काएनात में छोटी से छोटी चीज़, बड़ी से बड़ी चीज़, जानवर हो या बेजान हो, मुतहर्रिक हो या साकित हो हर चीज़ उसकी तस्बीह पढ़ती है। हर चीज़ उसकी क़ुदरत से उसके इरादे से बाहर नहीं है वह जो चाहे कर देता है ﴿وما تشاؤن الا ان يشاء الله﴾

﴿رب العالمين الخ﴾ अल्लाह जो चाहता है हमारे चाहे बग़ैर कर देता है, हमारी चाहत उसकी चाहत के बग़ैर नहीं हो सकती।

उसकी चाहत का नाम वजूद है

﴿وربك يخلق ما يشآء﴾ अल्लाह जो चाहे कर दे ﴿والله يفعل ما يشآء﴾ अल्लाह जो चाहे पसन्द करे ﴿يهدى من يشآء﴾ जिसको चाहे हिदायत दे ﴿ويضل من يشآء﴾ जिसको चाहे गुमराह कर दे ﴿تؤتى ملك من تشآء﴾ जिसे चाहे बादशाही दे दें ﴿وتنزع الملك ممن تشآء﴾ जिससे चाहे बादशाही ले लें ﴿وتعز من تشآء﴾ जिसे चाहे इज़्ज़त दे दें ﴿وتذل من تشآء﴾ जिसे चाहें ज़लील कर दें ﴿يبسط الرزق لمن يشآء﴾ जिसका चाहें रिज़्क़ बढ़ा दें ﴿وينقص من يشآء﴾ जिसका रिज़्क़ चाहें घटा दें ﴿اضحك﴾ किसी को हंसा दें ﴿وابكى﴾ किसी को रुला दें ﴿هو امات واحيى﴾ किसी को ज़िन्दा कर दें किसी को मार दें ﴿اغنى واقنى﴾ किसी को ग़नी करें किसी को ग़रीब कर दें। ज़मीन में जो कुछ होता है आसमान वाले के इरादे से होता है। पहले आसमान में फ़ैसला होता है फिर ज़मीन में नाफ़िज़ होता है। सारी दुनिया के इन्सान अल्लाह की चाहत के बग़ैर कुछ नहीं कर सकते हैं वह सबकी चाहत के बग़ैर कर सकता है। सारी काएनात की ताक़त अल्लाह की ताक़त के सामने ज़र्रा बराबर भी नहीं है। जिबराईल हो या मीकाईल हो, इज़राईल हो ये सब मख़लूक़ हैं वह ख़ालिक़ है ﴿لا يملكون لا نفسهم ضرا ولا نفع ولا يملكون موتا ولا حيوة ولا نشورا﴾ न ये नुक़सान देते हैं न नफ़ा दे सकते हैं, न ज़िन्दगी दे सकते हैं न मार सकते हैं, और न मर कर उठ सकते हैं, सारा जहां अपने

वजूद में अल्लाह का मोहताज है, नफ़ा और नुकसान पहुँचाने में अल्लाह के हुक्म का मोहताज है। हम किसी के मोहताज नहीं सिवाए अल्लाह की ज़ात के। यह बात दिल में उतारनी है। इन्सान के दिल को अल्लाह की तरफ़ फेरना है। अल्लाह ज़मीन के ख़ज़ाने उनके लिए निकालता है, हवाऐं उनके ताबे कर देता है, बारिशों का निज़ाम उनके लिए चलाता है ﴿ويرسل السماء عليكم مدرارا، ويمددكم باموال وبنين﴾ माल और औलाद में बरकत डालता है ﴿ويجعل لكم جنت﴾ बाग़ात बड़े बड़े ﴿ويجعل لكم انهارا﴾ नहरों का जाल बिछा देता है ﴿اكلوا من فوقهم﴾ ऊपर से खाते हैं ﴿ومن تحت ارجلهم﴾ नीचे से भी खाते हैं। जब अल्लाह की मान लेते हैं तो अल्लाह आसमान व ज़मीन से रिज़्क़ खोल देते हैं। ज़मीन की धानों से रिज़्क़ का इन्तेज़ाम कर देते हैं। सारी काएनात उनकी ख़िमदत में मुक़र्रर फ़रमा देता है। जब अल्लाह के बन्दे अल्लाह की मान लेते हैं

अल्लाह की नाराज़गी के असरात सात पुश्तों तक चलते हैं

﴿انى اعطيت اذا رضيت﴾ जब तुम ईमान में होते हो तो मैं राज़ी होता हूँ, जब राज़ी होता हूँ तो रिज़्क़ में बरकत देता हूँ ﴿ليس فى بركتى نهاية﴾ मेरी बरकत की कोई हद नहीं, अल्लह बरकत दें तो कौन रोके और अल्लाह बरकत उठा लें तो कौन लाए। ﴿واذا عصيتنى غضبت﴾ जब तुम मेरी नाफ़रमानी करते हो तो मैं नाराज़ हो जाता हूँ ﴿واذا غضبت لعنت﴾ जब मैं नाराज़ होता हूँ तो लानत

बरसाता हूँ ﴿وان لعنتی عننی تبلغ سابعا من الابن﴾ तो फिर मेरी लानत सात पुश्तों तक चलती है।

हर चीज़ उसके हुक्म के ताबे है

मेरे दोस्तों और भाईयो! हमारे मसाइल पैसे से....ज़मीनों पर क़ब्ज़ा से....हुकूमत पर क़ब्ज़ा करने से....माल व दौलत से हल नहीं होंगे बल्कि अल्लाह को राज़ी करने से हमारे मसाइल हल होंगे ﴿وان من شی الا عندنا خزائنه﴾ सारे ख़ज़ाने अल्लाह के हाथ में हैं ﴿وعنده مفاتح الغيب لا يعلمها الاهو﴾ सारे ग़ैब के ख़ज़ानों की चाबियां अल्लाह के हाथ में हैं ﴿وما تنزل الا بقدر معلوم﴾ उतारने वाला भी अल्लाह है, आसमानों के ज़मीन के ख़ज़ानों को बनाने वाला अल्लाह ﴿وانزلنا الحديد فيه باس شديد﴾ लोहे को उतारा उसमें सख़्ती रखी, पानी को उतारा ﴿وانا على ذهاب به لقادرون﴾ पानी उठा कर वापस ले जाए, सारा पानी ख़तम, सारी ज़मीन के पानी को ख़तम कर दे और कड़वा कर दे तो हम कुछ भी नहीं कर सकते ﴿لونشاء جعلنه اجاجاء ان اصبح مآء كم غورا﴾ बिल्कुल ख़तम हम बे बस हैं।

हवाओं के तूफ़ान चला दें, रीह बना दें रियाह बना दें हम कुछ भी नहीं कर सकते, सरह बना दें, अक़ीम बना दें, सबा बना दें, नसीम बना दें हम कुछ भी नहीं कर सकते। अक़ीम और सिर सिरायाह अल्लाह के अज़ाब की हवाएं हैं और उसको पेश कर दें, हम रोक नहीं सकते।

सिफ़ाते बारी तआला का तज़्किरा

मेरे दोस्तों और भाईयो! हम सारे मसाइल में अल्लाह को साथ लें वह सख़ी है, देते वक़्त घबराता नहीं। दुनिया वाले देते हैं घबराते हैं, दुनिया वाले देते हैं एहसान जतलाते हैं, पीछे लगते हैं। अल्लाह के ख़ज़ानों की, उसकी बख़्शिश की, उसकी अता की, उसकी मुहब्बत की, उसकी बरकत की, उसकी क़ुदरत की कोई हद नहीं, बेशुमार ख़ज़ाने हैं। न उनकी अव्वल है न उनकी आख़िर है। अल्लाह अपनी ज़ात में अकेला है। ऐसा अकेला उसके ऊपर कोई नहीं, जिसके बराबर कोई नहीं ﴿هو الاول والآخر والظاهر والباطن، وهو بكل شئ عليم﴾ अल्लाह ने अपनी किताब में कहा है मैं अव्वल, मैं आख़िर, मैं ज़ाहिर, मैं बातिन, मैं हर चीज़ को जानता हूँ। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

اللهم انت الاول وليس قبلك شئ وانت الاخر وليس بعدك شئ
وانت الظاهر وليس فوقك شئ وانت الباطن وليس دونك شئ

ऐ अल्लाह तू अव्वल है तुझ से पहले कुछ नहीं, तू आख़िर है तेरे बाद कोई नहीं, तू ज़ाहिर है तेरे ऊपर कुछ नहीं, तू बातिन है सबके अन्दर उतरा हुआ है। ﴿الغيب عنده الشهادة﴾ ग़ैब तेरे सामने और ज़ाहिर भी तेरे सामने और ज़ाहिर भी उसके सामने ज़ाहिर है और छुपा हुआ भी उसके सामने ज़ाहिर है।

سوآء منكم من اسر] القول ومن جهر به ومن هو مستخف بالليل
وسارب بالنهار له معقبات من بين يديه ومن خلفه يحفظونه عن امر الله

तुम में से कोई आहिस्ता बोले या ज़ोर से बोले, रात की तारीकी में चले या दिन के उजाले में चले, तुम्हारे पीछे आगे सब

अल्लाह को इल्म है। तुम अल्लाह से अपने राज़ को छुपा नहीं सकते, अपने जज़बात को छुपा नहीं सकते, जहां जाएगा अल्लाह होगा ﴿اين ما تكونوا﴾ तुम एक इमारत बना रहे हो, दरवाज़ा लगा रहे हो, अय्याशी का बदमाशी का या इताअत का फ़रमाबरदारी का वह जो भी हो अन्दर से कुण्डी बन्द कर दो अल्लाह से छुपा नहीं सकते ﴿ما يكون من نجزى ثلاثة الا هو رابعهم﴾ तुम अन्दर से बन्द कर दो और यह ख़्याल करते रहो कि हमें कोई देख नहीं रहा है मगर अल्लाह कहता है तुम से कोई तीन होते हो तो चौथा मैं होता हूँ ﴿ولا خمسة الاهو سادسهم﴾ तुम पाँच बैठे होते हो तो छठा मैं होता हूँ तुम्हारे साथ ﴿ولا ادنى من ذلك﴾ तुम कम हो या ज़्यादा हो जाओ ﴿الا هو معهم﴾ तुम्हारा रब तुम्हारे साथ है ﴿اينما كانو﴾ जहां भी चले जाओ तुम ज़ाहिर हो या बातिन हो तुम आगे हो या पीछे हो अल्लाह से छुप नहीं सकते, अल्लाह से भाग नहीं सकते, अल्लाह से लड़ नहीं सकते ﴿اين الور﴾ भाग कहाँ भागेगा ﴿لا تخفى منكم خافية﴾ छुप कहाँ छुपेगा ﴿فتذر﴾ निकल के दिखाओ निकल नहीं सकते।

दुनिया की कुल क़ीमत

मेरे दोस्तों और भाईयो! जब अल्लाह सब अहवाल को जानताहै और उसने ज़िन्दगी को वजूद दिया है और उसके क़ब्ज़े में है ज़मीनों और आसमानों के ख़ज़ाने, हवाओं के निज़ाम, ज़मीन और आसमान के ख़ज़ाने, सूरज और चाँद को ताबे किया, हर चीज़ को हमारे ताबे किया तो मेरे दोस्तों भाईयो हम आपस में लड़ने के बजाए अल्लाह से क्यों न लड़ें और यह कितना आसान है कि हम

अल्लाह के बन जाएं। अल्लाह हमारे मसाइल को हल कर देगा। लोगों से मांगना, लोगों से छीनना, दुनिया से लड़ना, कभी मुसलमान भी दुनिया से लड़ता है? दुनिया भी ऐसी चीज़ है? अल्लाह ने इसकी क़ीमत बताई, बनाने वाले ने इसकी क़ीमत बताई।

﴿جناح بعوضة﴾ मच्छर का पर, मकड़ी का जाला, ﴿بيت العنكبوت﴾ तोते का घर, ﴿كسراب بقيعة يحسب الظمان ماء﴾ बनाने वाले से पूछो जिसके सामने दुनिया का नक़्शा है, यह जहां यह दुनिया इसकी क़ीमत तोते के घर है, यह मच्छर का पर है, यह मकड़ी का जाला है, यह मच्छर के पर के बराबर भी नहीं। यह जो नज़र आ रहा है यह भी थोड़ा है और धोका है ﴿متاع الغرور﴾ अल्लाह इसकी यह तारीफ़ कर रहे हैं, यह सब कुछ नज़र आ रहा है यह कुछ भी नहीं और इन्सान कहता है कि यह हक़ीक़त है ये लम्बी इमारतें, ये बिल्डिगें, ये गाड़ियां, ये साज़ो सामान। अल्लाह तआला दूसरी ताबीर फ़रमाता है कि तुम इसे हक़ीक़त कहते हो तो सुन लो ﴿متاع قليل﴾ बहुत छोटी सी हक़ीक़त है, बहुत थोड़ा सा सामान है। अल्लाह ने अपने नबी से फ़रमाया ﴿لا يغرنك تقلب الذين كفروا فى البلاد متاع قليل، ثم مأوٰهم جهنم وبئس المهاد﴾ ऐ मेरे हबीब यह काफ़िरो की चमक दमक आपको धोके में न डाल दे। कभी नबी को धोका लग सकता है?

नाफ़रमान बदबख़्त धोके में है

यह उनको नहीं हम को कह रहे हैं। वे सब अव्वलीन व

आख़िरीन सरदार हैं, अव्वलीन व आख़िरीन का इल्म उसके सामने खुल गया जो मुसल्ले पर बैठ कर जन्नत और दोज़ख़ को देख रहा है, अर्श को देख रहा हो, तहतुस्सरा में जहन्नुम को देख रहा हो, फ़रिश्तों के चलने ओर क़लम से चलने की आवाज़ सुन रहा हो, उसको भी कभी दुनिया का धोका लग सकता है? काफ़िरों की दुनिया से, फ़िरऔन की दुनिया से, ईरान व रोम की दुनिया से धोका लग सकता है? यह मुझे और आपको कह रहे हैं कि मेरे बन्दों, मेरे नबी की उम्मत काफ़िरों की दुनिया से धोका न खाना, किसी मालदार की दमक से धोका न खाना, ﴿متاع قليل﴾ यह बहुत थोड़ा सा सामान है तो फिर क्या होगा अगर तुम मेरे नाफ़रमान बने? ﴿ثم ماواهم جهنم﴾ जहन्नुम उसका ठिकाना है यह कैसा ठिकाना है ﴿وبئس المهاد﴾ बहुत बुरा ठिकाना है ﴿اذا رايت الله عزوجل على معاصيهم من الدنيا فانما هو﴾ (استخرج يا استقران) अगर किसी शख़्स पर दुनिया के ख़ज़ाने खुलते जा रहे हैं और वह अल्लाह का नाफ़रमान भी है तो यह याद करो कि अल्लाह की रहमत के साए में नहीं बल्कि उसकी ख़ामोशी का उस पर हाथ होता है। अल्लाह उसको ग़फ़लत की मौत मारना चाहता है, उसको तौबा की तौफ़ीक़ नहीं होगी यह इस ग़फ़लत में मर जाएगा। सातों बर्रे आज़मों की बादशाही मिल गई। आप तो कराची में लड़ रहे हैं क्यों लड़ रहे हैं सातों बर्रे आज़मों की हुकूमत ले लो और उस पर क़ाबिज़ हो जाओ अगर अल्लाह हो जाए आप से नाराज़ तो सिवाए जहन्नुम की नाकामी के और कुछ नहीं होगा और क़यामत के दिन क्या होगा ﴿خاشعة ابصارهم﴾ नज़रें झुकी हुई होंगी ﴿ترهقهم ذلة﴾ ज़िल्लत छाई हुई होगी ﴿وجوه يومئذ خاشعة﴾ चेहरे वीरान हो

चुके होंगे ﴿عاملة ناصبة تصلى نارا حامية تسقى من عين انيه ليس لهم طعام الامن ضريع لايسمن ولا يغنى من جوع﴾ सात बर्रे आज़म मिल जाएं पाकिस्तान की हुकूमत की क्या हकीक़त है। सारे जहां के हुकमुरान बन जाओ फिर भी सब कुछ अल्लाह का होगा।

क़यामत में नफ़सी नफ़सी का आलम होगा

तो मेरे दोस्तों और भाईयो! वह ज़िल्लत की मार पड़ेगी वह नाकामियां होंगी कहेगा ﴿يود المجرم لو يفتدى من عذاب يومئذ بنيه﴾ अल्लाह मेरे बच्चों को दोज़ख़ में डाल दें मुझे बचा लें, ﴿وصاحبته واخيه﴾ अल्लाह मेरे भाई को दोज़ख़ में डाल दें मुझे बचा लें, मेरी बीवी को दोज़ख़ में डाल दें मुझे बचा लें, मेरी बहू को दोज़ख़ में डाल दें मुझे बचा लें ﴿وفصيلته التى تؤيه﴾ अल्लाह मेरी क़ौम को दोज़ख़ में डाल दें मैंने क़ौम की ख़ातिर सब कुछ किया ﴿ومن فى الارض جميعا﴾ मेरी क़ौम ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को दोज़ख़ में डाल दें और मुझे बचा लें, नहीं नहीं ﴿كلا لا تزر وازرة وزرا اخرى﴾ आज कोई किसी का बोझ नहीं उठा सकता ﴿وكل انسان الزمنه طائره فى عنقه﴾ आज मेरी मजबूरी है आप का अमल आपकी गर्दन में औरत का अमल औरत की गर्दन में आज कोई इन्कार नहीं कोई ग़ाएब नहीं हो सकता और कोई छुप नहीं सकता, कोई लड़ नहीं सकता, अल्लाह का अर्श सिर के ऊपर है ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانيه﴾ आज फ़रिशतों ने आपके रब के अर्श को संभाला हुआ है और चारों तरफ़ से पकड़े हुए हैं ﴿وجآء ربك والملك صفا صفا﴾ फ़रिश्ते भी आ चुके हैं।

जहन्नुम को ख़ीचने वाले फ़रिश्तों का तज़्किरा

﴾وازلفت الجنة للمتقين غير بعيد﴿ और जन्नत भी आ चुकी है ﴾وبرزت جحيم للغاوين﴿ और जहन्नुम भी आ चुकी है, जहन्नुम कैसी आ रही है वह ग़ुस्से से फट रही है, चीख़ रही है और कहती है ﴾هل من مزيد﴿ और ले आओ और ले आओ। मैदाने हश्र में उसको लाया जा रहा है, सत्तर हज़ार लगामें हैं, हर लगाम पर सत्तर हज़ार फरिश्ते हैं चार अरब नब्बे करोड़ फ़रिश्ते उसको ख़ींच रहे होंगे।

अगर मैदाने हश्र में अल्लाह की तजल्ली उस पर न हो तो न इन्सान छोड़े, न जिन्नात छोड़े, न नबी छोड़े, न वली छोड़े, न फ़रिश्तों को छोड़े, न मोमिन छोड़े, न काफ़िर छोड़े। सब कुछ निगल जाए। जहन्नुम भी आ गई ﴾ونضع الموازين القسط﴿ तराज़ू भी आ गया, अल्लाह तआला भी आ गए, सारा मैदाने हश्र भी आ गया।

يوم تشقق السمآء بالغمام، ونزل الملئكة تنزيلا الملك يومئذن الحق للرحمٰن وكان يوما على الكافرين عسيرا

आज यह दिन आ गया ﴾يرونه بعيدا وتراه قريبا﴿ तुम कहते थे बड़ा दूर है जो होगा देखा जाएगा आज देखो ﴾فكشفنا عنك غطاءك﴿ अब देख दुनिया में क्या नज़र आता था आज ﴾فبصرك اليوم حديدا﴿ क्या नज़र आता है, तेरी आँखों का पर्दा उठ गया है।

क़यामत के चन्द हौलनाक मनाज़िर

अब तो पुकारेगा ﴾ربنا ارنا الذين اضلنا من الجن والانس نجعلهما تحت

﴿اقدامنا ليكونا من الاسفلين﴾ ऐ मेरे मौला जिन लोगों ने मुझे गुमराह किया चाहे वे इन्सान थे या जिन्न थे या मेरी कौम थी या मेरा क़बीला था या मेरी बीवी थी या मेरा सरदार था या मेरी हुकूमत थी या मेरा साथी था मेरा भाई था या मेरी बहन थी या मेरा बच्चा था उनको मेरे हाथ में दे दीजिए मुझे दिखला दीजिए, आज मैं उनको अपने पाँव तले कुचल दूं रौंद दूं और उनको तबाह कर दूं और उनको हलाक कर दूं मैंने उनको अपने सामने रखा तुझे सामने नहीं रखा, पछताएगा ﴿يوم يعض ظالم على يديه﴾ ज़ालिम अपना हाथ चबाएगा कोहनी तक चबा जाएगा ﴿يا ليتني اتخذت مع الرسول سبيلا﴾ हाय मैं अल्लाह और रसूल का साथ देता, ﴿يا ويلتى ليتنى لم اتخذ فلانا خليلا﴾ हाय मैं फ़लाँ की न मानता उसकी न मानता अल्लाह के रसूल की मानता लेकिन आज वक़्त चला गया वह दिन चला गया ﴿فاصدق واكن من الصالحين﴾ आज मैं भी कामयाब होता लेकिन वह दिन चला गया ﴿اقترب الوعد الحق﴾ वह हक़ वायदा आ गया ﴿ان وعد الله حق﴾ अल्लाह का वायदा हक़ है अल्लाह का नबी कहता है ﴿ان الساعة حق والجنة حق والنار حق﴾ क़यामत हक़ है, जन्नत हक़ है, दोज़ख़ हक़ है, तेरी मुलाक़ात हक़ है, हिसाब किताब हक़ है ﴿فريق فى الجنة وفريق فى السعير﴾ एक फ़रीक़ जहन्नुम में फेंका जाएगा एक फ़रीक़ के सिर पर जन्नत का ताज रखा जाएगा, महशर में चेहरे देखेंगे ﴿خاشعة عاملة ناصبه﴾ फटे वीरान परेशान ﴿غبرة ترهقها قترة﴾ चेहरे पर मिट्टी लगी होगी, चेहरे पर तारकोल मला हुआ आप उनका लिबास देखेंगे ﴿سرابيلهم من قطران﴾ उनकी शलवारें तारकोल की होंगी उनके कुर्ते देखेंगे ﴿لهم ثياب من نار﴾ उनके कुर्ते आग के कपड़े के होंगे उनकी टोपियां

﴿وتغشى وجوههم النار﴾ उनके सिर के चेहरों पर आग की टोपियां पहना दी जाएंगी। उनका पानी होगा जहीम, ख़ौलता हुआ पानी होगा, धुंआ का बादल, ﴿ظل من يحموم﴾ गर्म हम्माम, उनका खाना ﴿لا يغني عن جوع﴾ न भूक मिटाए न बदन को सेहत मन्द बनाए न गले में न अन्दर जाए, न नीचे जा सके न बाहर आ सके तो कहेंगे या अल्लाह पानी पिला, पानी पिला, हां पानी पिलाते हैं ﴿من مآء الزجوه﴾ वह पानी खौलता हुआ सियाही मिला हुआ होगा जब उसका प्याला मुँह के क़रीब किया जाएगा तो उसकी भांप से पूरा चेहरा जल जाएगा और ऊपर वाला होंट फैलते फैलते सिर के ऊपर चला जाएगा। पानी का पहला घूंट मुँह में जाते ही काट देगा। आँखें अन्दर घुस के पख़ाने के रास्ते बाहर आ जाएंगी। एक फ़रिश्ता उसकी आँख़े उठा कर उसके चेहरे में रख देगा।

जहन्नुम की आग का तज़्किरा

﴿يلعن بعضكم بعضا ويلعن بعضهم بعضاء﴾ एक दूसरे पर लान तान की जा रही होगी। एक दूसरे को गाली गलौच किया जा रहा है उनका बिस्तर देखें ﴿ان جهنم كانت مرصادا﴾ अंगारों के बिस्तर बिछ गए, अंगारों की मसहरियां बिछ गयीं ﴿ومن فوقهم غواش﴾ ऊपर आग की चादरें बिछा देंगे उनके कमरे देखें ﴿نارا احاط بهم سرادقها﴾ दोज़ख़ की आग मोटा करके चादर बना दी जाएगी आग का कमरा आग की दीवारें आग का बिस्तर, आग की चादरें, खौलता हुआ पानी कांटे दार खाना ﴿غساق ضريع﴾ न खाने को दिल चाहे न पीने को दिल चाहे।

उनकी पुकार है, उनकी फ़रियाद है या मालिक या मालिक, मालिक कौन है? दोज़ख़ का फ़रिश्ता है ﴿ليقض علينا ربك﴾ अपने रब से कहो हमें मौत दें। जवाब आएगा ﴿انكم ماكثون﴾ मौत नहीं आ सकती ﴿ولقد جئناكم بالحق ولكن اكثر كم للحق كارهون﴾ तुम्हारे सामने दीने हक़ आया बातिल आया तुमने उसको वाज़ेह होते देखा फिर तुमने आँखों पर पट्टी बांधी और अपनी ख़्वाहिशात के ग़ुलाम बने लिहाज़ा मौत नहीं आएगी फिर क्या करें इधर फ़रिश्ते मारेंगे तो उसे कहेंगे ﴿ادعوا ربكم يخفف عنا يوماً من العذاب﴾ अगर मौत आती तो थोड़ा अज़ाब कम कर दें तो वे जवाब देंगे ﴿الم يأت رسلكم بالبينات﴾ तुम्हें बताने वाले ने बताया था? तो वे जवाब देंगे ﴿قالو بلىٰ﴾ आया था फिर तुम ने क्या किया? ﴿ما نزل الله من شئ ان انتم الا فى ضلل كبير﴾ कुछ नहीं झूठ है जो होगा देखा जाएगा। तो फिर देखो जो हो रहा है ﴿ذوقو مس سقر﴾ अब चखो जहन्नुम को जिसका तुम्हारे साथ वायदा किया गया था।

क़ुदरत की अजाएबात के चन्द हसीन मनाज़िर

मेरे दोस्तों और भाईयो! अपने आपको अज़ाब से बचाइए। वह करीम ज़ात है, हलीम ज़ात, क़दीर ज़ात, वह जाबिर ज़ात, वह क़ाहिर ज़ात, वह नसीर ज़ात, वह हकीम ज़ात, वह क़ादिर ज़ात, वह मुक़तदिर ज़ात, वह अलीम ज़ात, वह ख़बीर ज़ात, वह मुतकब्बिर ज़ात, वह नईम ज़ात, वह क़ुद्दूस अल्लाह, वह ख़ालिक़ अल्लाह, वह जब्बार अल्लाह, वह फ़ातिर समावात वल अर्द अल्लाह, मालिकुल मुल्क अल्लाह, मालिक कूनो मकान अल्लाह, ज़मीन व आसमान का बादशाह अल्लाह। वह अदालत लगा कर

बैठा है इन्तेज़ार में ﴿ان ربك لبالمرصاد﴾ आओ तो सही मेरा अदल तो देखो, मेरा रहम तो देखो, मेरी पकड़ तो देखो, मेरी अता भी देखो, मेरी जन्नत भी देखो, मेरी दोज़ख़ भी देखो, मेरा अज़ाब भी देखो, खौलता पानी देखो, खौलते चश्में भी देखो, दोज़ख़ के फ़रिश्ते भी देखो, हूरें भी देखो, दोज़ख़ी की पुकार भी सुनो, जन्नत की हूर का नग़मा भी सुनो, जहन्नुम की हाए हाए भी सुनो. जन्नत का सुरूर भी सुनो, जहन्नुम के ख़ौफ़नाक मनाज़िर भी देखो, जन्नत के दिल फ़रेब मनाज़िर भी देखो।

अल्लाह को भूलने वालों को अल्लाह भी भूल जाएगा

आज तुम्हें नज़र आएगा ﴿وسيق الذين كفروا الى جهنم زمرا﴾ सिर झुके हुए ज़ुबान निकली हुई ﴿ويوم نسوق المجرمين الى جهنم وردا﴾ नाफ़ तक ज़ुबान लटकी हुई होगी, उस पर कांटे चुभ रहे होंगे और बिछू फिर रहे होंगे, आओ भाई यह कौन सी जमात है? यह नाकाम इन्सानों की जमात है। ये दुनिया में कहते थे कि जो होगा देखा जाएगा, ये वही हैं जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, अल्लाह को भुला दिया ﴿اتتك ايتنا فنسيتها وكذالك اليوم تنسى﴾ ये वे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह के निज़ाम का इन्कार किया, अल्लह की क़ुदरत का मज़ाक उड़ाया, अल्लाह के क़ानून को तोड़ा, ख़्वाहिशात के और बीवी बच्चों के ग़ुलाम बन कर, हुकूमत के ग़ुलाम बन कर, पैसे और रूपए के ग़ुलाम बन कर, क़ौम के ग़ुलाम बन कर चले, आज उनकी ग़फ़लत को देखो, उनकी

नाकामी को देखो, हाए हाए करना देखो। जब फ़रिश्ते घसीटेंगे वे कहेंगे हम पर रहम करो, हम पर रहम करो, फ़रिश्ते कहेंगे ﴿لم يرحمكم ارحم الراحمين فكيف نرحمكم﴾ जब सबसे बड़े रहीम ने रहम न किया तो हम कैसे रहम कर सकते हैं? यह मज़ाक है? मेरे भाईयो नहीं नहीं!!!

जहन्नमियों की प्यास की शिद्दत

उसी ने यह निज़ाम चलाया है उसी ने आपको बनाया है, वही इसको तोड़ने वाला है फिर वही इसको उठाने वाला है ﴿منها خلقنا كم﴾ मैंने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया ﴿وفيها نعيدكم﴾ मैं ही तुम्हें ज़मीन में वापस लौटा दूंगा ﴿ومنها نخرجكم تارة اخرى﴾ मैं ही इसी में से निकालूंगा। संभाल के चल, संभाल के देख, संभाल आ, संभाल जा। उस दिन को देख जिस दिन ﴿فشاربون شرب الهيم﴾ ला इलाहा इलल्लाह जिस दिन प्यास होगी होंट तक कौन सा होंट जिस पर वह झाड़ी लगी हुई होगी जो नमकीन झाड़ी, नमकीन झाड़ी से प्यास और भी ज़्यादा बढ़ जाती है और ख़ून का प्यास सबसे ज़्यादा है। बारह लीटर पानी सिर्फ़ एक वक़्त में पिया जाता है और अल्लाह कहता है ﴿فشاربون عليه من الحميم﴾ खौलता हुआ पानी और कैसा खौलता हुआ? अगर उसका एक लोतड़ा मग़रिब में रख दिया जाए तो मशरिक़ तक सारा इलाक़ा फैल जाएगा उसकी भाप से और सारी काएनात पिघल जाएगी और उसको किस तरह पी रहा है ﴿فشاربون شرب الهيم﴾ जैसा प्यासा ख़ून पीता है (या घूंट) और यह आलम है ﴿اذ الاغلال فى اعناقهم﴾ गर्दनों में तौक़ है

सलासिल और अग़लाल सईर में जा रहे हैं सिर झुकाए हुए और एक जमात क्या देखेगी?

जन्नती की अलामत

﴿وجوه يومئذ ناعمة﴾ जिनके चेहरे तरो ताज़ा ﴿لسعيها راضيه﴾ अपनी मेहनत पर राज़ी ﴿في جنة عاليه﴾ ऊँची ऊँची जन्नत में ﴿لا تسمع فيها لاغيه﴾ जिसमें कोई फ़िज़ूल चीज़ नहीं ﴿فيها عين جاريه﴾ जिसमें चश्में बहते होंगे ﴿فيها سرر مرفوعه﴾ जिसमें तख़्त बिछे हुए ﴿واكواب موضوعة﴾ शराब के जाम रखे हुए ﴿ونمارق مصفوفة﴾ गद्दे बिछे हुए ﴿وزرابي مبثوثة﴾ घर और तकिए लगे हुए ﴿في جنت النعيم﴾ जन्नत की नेमतों में ﴿على سرر متقابلين﴾ आमने सामने तख़्तों पर ﴿يطوف عليهم ولدان مخلدون﴾ ख़ूबसूरत गुलाम फिर रहे हैं ﴿باكواب واباريق﴾ जाम के साथ दस्ते वाले और बे दस्ते वाले कौन से जाम? ﴿وكاس من معين﴾ जिसमें मुईन की शराब डाली गई है यह यह मुईन है जिसमें एक उंगली डालकर आसमान पर बैठ जाएं और उसको नीचे कर दें उसका एक क़तरा ज़मीन पर हो कर गिर जाए तो आसमान व ज़मीन पर ख़ुशबू फैल जाए। यह दुनिया की शराब नहीं जिसका एक घूंट पीते ही दस दस दिन तक बदबू आती है। यह वह शराब है जिसको अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से बनाया है। जिसका एक क़तरा आसमान व ज़मीन के ख़िला को ख़ुशबू से भर दे। उसकी सिफ़्त यह है ﴿ولا يصدعون عنها ولا ينزفون﴾ सिर में दर्द नहीं सिर में चक्कर नहीं, लज़्ज़त की इन्तेहा ﴿يجد في كل شربة لذة لم يجد في اولها﴾ यहां तक आख़िरी घूंट की लज़्ज़त सबसे

ज़्यादा होग ﴿حتی یؤجد فی آخر شربة آخر شربة لذة لم یجده فی اوها﴾ यहां तक कि आख़िरी घूंट की लज़्ज़त सबसे ज़्यादा होगी ﴿وفاكهة مما يتخيرون﴾ ख़्वाहिश के मुताबिक़ फल होंगे, कैसे फल हैं? ﴿احلى عن العسل﴾ शहद से ज़्यादा मीठे ﴿الين من الزبد﴾ मक्खन से ज़्यादा नरम ﴿اشد بياضا من اللبن﴾ दूध से ज़्यादा सफ़ेद ﴿ليس فيها عجم﴾ गुठली के बग़ैर ﴿لا مقطوعه ولا ممنوعة﴾ न खाने से ख़त्म न काटने से ख़त्म न तोड़ने से ख़त्म, न मौसम का पाबन्द, न हवा का पाबन्द, न दरख़्त का पाबन्द, हर हर घड़ी में मयस्सर और दस्तियाब ﴿قطوفها تذليلا ودانية عليهم ظلالها، وجنا جنتين دان، قطوفهادانيه﴾ ख़ोशे पक्के हुए, झुके हुए, लटके हुए, बैठ कर खाए, चल कर खाए, लेट कर खाए, हर लुक़में की लज़्ज़त पहले से ज़्यादा आख़िरी लुक़मे की लज़्ज़त सबसे ज़्यादा और एक क़िस्म की खजूर है एक तरफ़ से खाओ तो खजूर दूसरी तरफ़ से खाओ तो अंगूर है। एक खजूर में दो मज़े। खजूर का दाना होता है जन्नत में खजूर का दाना बारह हाथ लम्बा होगा ﴿ثمرتها اثناعشرا زراعاً﴾ तो जन्नत का केला कितना लम्बा होगा ﴿ولحم طير مما يشتهون﴾

जन्नत के ग़ुलामों का तज़्किरा

मियां बीवी अपने तख़्त पर बैठे हुए हैं चारों तरफ़ ग़िलमान खड़े हैं दरवाज़े पर दस्तक होती है, दरवाज़ा खुलता है तो फ़रिश्ता खड़ा हुआ है हाथ में रेशमी रुमाल लिपटा हुआ है और कहता है मैं अल्लाह की तरफ़ से आया हूँ, मालिक ने भेजा है, मुलाक़ात करना चाहता हूँ मैं इजाज़त लेने आया हूँ। एक रिवायत में आता

है कि फ़रिश्ते अल्लाह के दरबार में बग़ैर इजाज़त जाएंगे, जन्नती के दरबार में पूछ कर दाख़िल होंगे। यह दरवाज़े के दरबान से कहता है आक़ा से कहो अल्लाह का क़ासिद आया है यह आगे से कहता है वह उससे अगले से कहता है इसी तरह सिलसिला चलता है फिर अन्दर आक़ा तक बात पहुँच जाती है वह तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ है ﴿اذن لـــه﴾ वह कहता है आने दो, यहां दरबान तक बात जाती है।

.ख़ुदाई तोहफ़ा बन्दे के नाम

वह कहता है ﴿ادخــل بســلام﴾ हो जाए सलामती के साथ, फिर वह सामने आता है। हाल पूछता है कहता है आपके रब ने आपकी ख़िदमत में भेजा है और यह हदिया भेजा है फिर रुमाल खोलता है। उसमें ख़ूबसूरत फल रखा हुआ है फ़रिश्ता कहता है अल्लाह ने फ़रमाया है आप इसको खाइए, नोश फ़रमाइए। वह कहता है ﴿رزقنامن قبل﴾ यह मैंने अभी खाया है यह तो मेरी जन्नत का फल है इसको भेजने की क्या ज़रूरत थी? फिर फ़रिश्ता कहता है आपके रब ने कहा है इसको भी ज़रा चखें, इसको भी खा के देखें वह फल उठाता है और उसका एक लुक़्मा खाता है तो उसके अन्दर उसकी जन्नत के तमाम फलों का ज़ाएक़ा आ जाता है। फ़र्ज़ करें उसकी जन्नत में दस लाख क़िस्म के फल हैं इसी एक लुक़्में में दस लाख क़िस्म के फलों का ज़ाएक़ा होता है उससे कहा जाएगा ﴿واتـوا بـه متـشـابها﴾ अरे बन्दे! यह वह नहीं जो तूने खाया था बल्कि इस जैसा खाया था। यह मेरे दरबार से आया है। एक लुक़्में में सारे जन्नत के फलों का ज़ाएक़ा भर दिया।

अगर हम दो तीन चीज़ों को आपस में मिला दें तो एक ही ज़ाएक़ा बन जाता है। सबके ज़ाएक़े ख़त्म एक ज़ाएक़ा बन गया लेकिन अल्लाह तआला जन्नत में एक ही लुक़मे में जन्नत के तमाम फलों का अलग अलग ज़ाएक़ा, अलग अलग ख़ुशबू, अलग अलग लज़्ज़त को उसकी ज़ुबान पर महसूस करवाएंगे। उसके खाने की लज़्ज़त को इन्तेहा को पहुँचा देगा।

दुनिया दारुल फ़ना है

मेरे दोस्तों और भाईयो! अगर जन्नत का यक़ीन हो तो कोई किसी को न सताए और किसी के ख़ून के दरपै न हो जाए और कोई किसी के ख़ून का प्यासा न हो, कोई झगड़े न हों, यह लुट गया वह लुट गया, यह खा गया वह खा गया। जिसको जन्नत मिलने वाली हो उसके सामने दुनिया की क़ीमत क्या है और क्या हैसियत है। यह धोके का घर है, फ़ना होने वाला घर है, यह लज़्ज़तों को तोड़ने वाली ज़िन्दगी है, यह मुसीबतों का घर है, परेशानियों का घर है, वहशतों का घर है, परदेस का घर है, अजनबियत का घर है, यहां हर वक़्त मौत का पैग़ाम जारी और सारी है, दाएं बाएं जमाते, दाएं बाएं मातम।

वह अहमक़ है जो इस दुनिया से दिल लगा बैठे

मेरे दोस्तों और भाईयो! कोई बसीरत वाला ऐसा नहीं जो इसमें दिल लगा सके, इस पर फ़रेफ़्ता हो सके, इसको दिल दे सके। बल्कि जो देखेगा ग़ौर से देखेगा तो पुकार उठेगा कि यह धोके का

घर है यह कुछ नहीं, यह फरेब है, यह मुझे छोड़ कर जाना है, मुझे इससे दिल नहीं लगाना। जब बनाने वाले ने इसके बेक़ीमत होने का ऐलान कर दिया और इसकी क़ीमत बताई तो कौन अहमक़ ऐसा होगा जो इससे दिल लगा बैठेगा नहीं नहीं हम तो परदेसी हैं, हम तो राही हैं, मुसाफ़िर हैं। हम आपके कराची आए हुए हैं, काम पर आए हुए हैं। हमें इसमें कोई दिलचस्पी नहीं, क्यों? हमें चले जाना है। आप कराची में हैं मैं मुलतान में हूं। जो जहां है वह परदेसी है वह मौत का राही है वह जन्नत का मुसाफ़िर है, वह दोज़ख़ का मुसाफ़िर है, या जन्नत का घर है या दोज़ख़ उसका घर है। अल्लाह की बात मान गया तो जन्नत का रास्ता खुल गया, शैतान की बात मान गया तो जहन्नुम का रास्ता खुल गया।

मेरे दोस्तों! अगर यक़ीन कामिल हो जाए तो एक आयत जहन्नुम वालों के लिए सबसे ज़्यादा शदीद है और जन्नत वालों के लिए सबसे ज़्यादा ख़ुशख़बरी सुनाने वाली है।

जन्नत में एक मजलिस ज़रूर लगेगी

﴿فذوقوا فلن نزيدكم الا عذابا﴾ तुम्हारा अज़ाब बढ़ता ही चला जाएगा। यह आयत दोज़ख़ वालों के लिए है सबसे शदीद है। ﴿ولدينا مزيد﴾ यह जन्नत वालों के लिए है। सबसे ज़्यादा ख़ुशख़बरी सुनाने वाली है। जब अल्लाह हमारे आमाल पर अपनी रहमत से जन्नत देगा तो बस नहीं करेगा बल्कि रोज़ाना दिया करेगा, हर वक़्त दिया करेगा जब तक अल्लाह चाहेगा देता रहेगा। हमेशा नई जन्नत दी जाएगी न मेरी इन्तेहा न तुम्हारी इन्तेहा, न तुम ख़त्म न मैं ख़त्म , मेरे ख़ज़ानों की कोई हद नहीं, अता की कोई हद

नहीं, बख़्शिश की कोई हद नहीं, तुम कहते न थको मैं देता न थकूं और कैसा देगा, किस तरह देगा जन्नत के मैदान में बुला रहा है आ जाओ मेरे बन्दों, सारे आ गए। एक मजलिस होगी, ऐसी मजलिस रोज़ाना लगेगी और जन्नत वालों के लिए दो मर्तबा लगेगी, आम जन्नत वालों के लिए एक दफ़ा और फ़िरदौस वालों के लिए दो दफ़ा। और बुलाया जा रहा है आओ भाईयो मांगों क्या मांगते हो आज जो मांगोगे मिल जाएगा। जन्नती कहेंगे या अल्लाह राज़ी हो जाओ, अल्लाह जवाब में कहेगा मैं राज़ी हो गया हूँ इस लिए यहां बैठा हूँ अगर राज़ी न होता तो तुम जहन्नुम के दर्मियान होते और मांगो। कहने लगे जन्नत तो मिल गई और क्या मांगे? मांगते मांगते शौक़ जज़बात ख़त्म। अल्लाह कहेंगे और मांगो ﴿فانى اعطى اليوم بقدر اعمالكم لكن اعطيكم اليوم بقدر رحمتى﴾ आज़ तुम्हें तुम्हारे आमाल के बराबर देना नहीं चाहता बल्कि अपनी शान के बराबर, अपनी रहमत के बराबर, अपनी क़ुदरत के मुताबिक़ देना चाहता हूँ मांगो जो मांगना है मैं देता रहूंगा आज देखो मेरी शान कैसी है, मैं देता कैसा हूँ, फिर मांगना शुरू करेंगे, मांगते मांगते थक जाएंगे। ऐ अल्लाह कुछ समझ में नहीं आता मांगते मांगते थक गए और क्या मांगे? फिर तीसरी मर्तबा सब हाथ खड़ा करके कहेंगे या अल्लाह कुछ नहीं मांगा जाता। अल्लाह फ़रमाएगा ﴿لقد رضيتم﴾ ऐ मेरे बन्दों तुम अपनी शान का मांगते रहे मेरी शान का क्या मांगा?

सब्र का ईनाम

अब लो जो मांगा वह भी देता हूँ जो नहीं मांगा वह मेरी तरफ़

से ले लो। अरे मेरे भाईयो दुनिया में न लड़ो यहाँ लड़ना पागलों का काम है, दुनिया में लड़ना अक़्ल के मारो का काम है, जहन्नुम के रास्ते पर चलने वालों का काम है। देख लो चन्द रोज़ क़द्र कर लो चन्द दिन सब्र कर लो फिर जन्नत के मज़े लूट लो। अब अल्लाह तआला का दरबार लगा हुआ है। सबसे थोड़ा सवाल, सबसे बड़े को इख़्तियार कर लो। यह सब से थोड़ा सवाल है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने थोड़ा बता दिया। एक आदमी क्या कहेगा या अल्लाह तुमने कहा था दुनिया को पाँव में रखो सिर पर न रखो, हक़ीर बनाओ, ज़लील बनाओ, इसके पीछे मत दौड़ो ﴿انى حقرتها و صغرتها وجعلت تحت قدمى فاسئلك هارن قطعنى مثل الدنيا من يوم خلقها الى يوم﴾ ऐ अल्लाह मैंने दुनिया को ज़लील किया, हक़ीर किया, अपने पाँव के नीचे किया आज तुम से पहला सवाल है जिस दिन आपने दुनिया को बनाया था उस दिन से लेकर जिस दिन दुनिया को फ़ना किया उसके बराबर मुझे बदला दे दें। यह सबसे थोड़ा सवाल है, ज़्यादा कितना होगा? अल्लाह कहता है तुमने मेरी शान के मुताबिक़ मांगा ही नहीं।

अल्लाह बहुत क़द्र दान है

मेरे दोस्तों भाईयो! अल्लाह से यारी कर लो। तबलीग़ का काम किसी जमात नहीं है। तबलीग़ का काम अल्लाह से यारी लगाने और दोस्ती जोड़ने का काम है। अल्लाह से दोस्ती जोड़ो, बुतों से दोस्ती तोड़ो। आज दुकान बुत बन गई है, कारोबार बुत बन गया है, तिजारत भी बुत बन गई, ज़राअत बुत बन गई है, हुकूमत भी

बुत बन गई है, कौम भी बुत बन गई है, पेशा भी बुत बन गया है, सोना चाँदी भी बुत बन चुके हैं। इन सब से हट कर इब्राहीम अलैहिस्सलाम वाला ऐलान करो ﴿انی وجهت وجهی للذی فطر السموات والارض حنیفا وما انا من المشرکین﴾ मैं सबसे हट गया, सब को छोड़ दिया, सबसे मुंह मोड़ा अल्लाह की तरफ़ रुख़ कर दिया, सब पर थूक दिया अल्लाह की तरफ़ चला। अल्लाह की तरफ़ कोई चले अल्लाह कहता है ﴿من تقرب الی فلقیته من بعید﴾ जो मेरी तरफ़ चल कर आएगा मैं आगे बढ़ कर उसका इस्तिक़बाल करूंगा ﴿من تقرب الی شیرا تقربت الیه زراعا من تقرب أی ذراعا تقربت أليه باعاً من اتینی یمشی أیته هـرولة﴾ तुम मेरी तरफ़ एक बालिश्त आओ मैं एक हाथ आऊंगा तुम मेरी तरफ़ एक हाथ आओ मैं दो हाथ आऊँगा, तुम चल कर आओ मैं दौड़ कर आऊँगा, तुम आओ तो सही मैं इन्तेज़ार कर रहा हूँ। तुम्हारी नाफ़रमानियों के बावजूद तुम्हे मोहलत दे रहा हूँ, मेरे फ़रिश्ते ग़ुस्से में हैं आसमान और ज़मीन ग़ुस्से में हैं कि इजाज़त हो तो नाफ़रमानों के सिर क़लम कर दें, ज़मीन फट जाए, बादल गिर पड़ें, हवाऐं चल पड़ें कि उड़ा दें, पहाड़ भी चल पड़ें कि रेज़ा रेज़ा कर दें लेकिन वह रहीम करीम ज़ात है इन्तेज़ार में है कि मेरा बन्दा कभी भी तौबा कर लेगा तो मैं उसकी तौबा क़ुबूल कर लूंगा, तौबा कर लो मेरे भाईयो।

मेरे बन्दे मेरी रहमत को देख

कोई मसअला नहीं है कोई घबराने की बात नहीं है, कितने गुनाह किए होंगे और अल्लाह पाक कितनी बख़्शिश बता रहा है। सारी दुनिया के इन्सान मिल कर गुनाह कर लें जो मर चुके हैं

उनको बुला लें जो आने वाले हैं उनको भी जमा करके इकठ्ठा होकर गुनाह करें, सब नाफ़रमानी करें तो इतने गुनाह नहीं होंगे कि अल्लाह के आसमान तक पहुँच जाएं और अल्लाह तआला कहता है कि ऐ मेरे बन्दे तू क्यों घबराता है मेरी रहमत को देख ले तुम में कोई आदमी ऐसा है जिसको मैं सारी दुनिया के वसाईल दे दूं तमाम असबाब दे दूं और सारी ताक़त दे दूं और इतने गुनाह कर दें कि पहाड़ों के बराबर हो जाएं, आसमान तक पहुँच जाएं, सूरज और चाँद को बेनूर कर दें, सितारों की झिलमिलाहट को ख़त्म कर दें और आसमान की छत तक उसके गुनाह पहुँच जाएं। इतने गुनाह होने के बाद भी घबराए नहीं। एक दिन कह दे कि ऐ अल्लाह मेरे गुनाह मॉफ़ कर दें तो मेरी इज़्ज़त की क़सम मैं मॉफ़ कर दूंगा ﴿ولا ابالى﴾ मैं सारे गुनाह मॉफ़ कर दूंगा और मुझे कोई परवाह नहीं। मेरे दोस्तों दुनिया का बादशाह नहीं मॉफ़ करेगा। वह दुनिया का हुक्मुरान नहीं कि बदला लिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा। अल्लाह को मॉफ़ करने में मज़ा आता है, मॉफ़ करके खुश होता है अज़ाब देने में राज़ी नहीं ﴿ما يفعل الله بعذابكم﴾ मैं तुम्हें अज़ाब देकर क्यों खुश हूँ लेकिन अज़ाब देना मेरा क़ानून है मेरा अद्ल है लेकिन घबराओ नहीं, तौबा कर लो और कैसे कुबूल हो तौबा?

बनी इसराईल के एक नौजवान की तौबा का वाक़िया

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में क़हत आ गया, बारिश

नहीं हुई। पूरी कौम मूसा अलैहिस्सलाम के पास आई, दुआ करो कि बारिश नहीं हो रही है। मूसा अलैहिस्सलाम सत्तर हज़ार आदमी लेकर बाहर निकले नमाज़ पढ़ी दुआ मांगी तो धूप और तेज़ हो गई। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह नमाज़ पढ़ी दुआ मांगी धूप तेज़ हो गई तो अल्लाह ने कहा कि तुम में एक आदमी ऐसा है कि जिसने पिछले चालीस साल में कोई ख़ैर का काम नहीं किया नाफ़रमानी ही नाफ़रमानी ही की। जब तक वह ज़ालिम मजमे में है मैं बारिश नहीं बरसाऊँगा। मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐलान किया कि कोई ऐसा आदमी है तो वह मजमे में से निकल जाए उसकी नहूसत और गुनाहों की वजह से सारी इन्सानियत परेशान है, सारे अल्लाह के बन्दे परेशान हैं। भाई निकल जाओ। उसने इधर उधर देखा, कभी पीछे देखा कभी आगे देखा, दाएं देखा बाएं देखा जब कोई न निकला तो परेशान हो गया और समझ गया कि वह तो मैं ही हूँ। अब बाहर निकल जाऊँ तो ज़लील हो जाऊँगा और खड़ा रहा तो बारिश नहीं होगी अब क्या करे? अब एक बात दर्मियान में ग़ौर फ़रमाएं आगे बताता हूँ और यह अभी तौबा करने लगा और यह तौबा असली नहीं है और तौबा असली अल्लाह की मुहब्बत में होती है और उसकी यह तौबा शर्मिन्दगी की वजह से है, अपने आपको रुसवाई से बचाने के लिए तौबा कर रहा है, अल्लाह की मुहब्बत में तौबा नहीं हो रही है। अब इसके साथ अल्लाह का मामला क्या है और वह कहता है या अल्लाह ﴿عصيتك اربعين سنة فامهلتنى﴾ ऐ अल्लाह मैंने चालीस साल तेरी नाफ़रमानी की है और तू मुझे मोहलत देता रहा ﴿فاجئتك تائبا فتقبل منى﴾ अब मैं तौबा करता हूँ मेरी तौबा क़ुबूल

कर लें, अभी इसकी बात ख़त्म नहीं हुई और हवा का रुख़ बदल गया, बादल उठे, घटा छाई और बारिश हुई। मूसा अलैहिस्सलाम कहने लगे या अल्लाह निकला तो कोई नहीं बारिश क्यों हो गई। फ़रमान आ गया अल्लाह का जिसकी वजह से रुकी हुई थी उस ही की वजह से हो गई। सुब्हानल्लाह माँ नाराज़ हो जाए तो बच्चे को ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाना पड़े फिर राज़ी होगी लेकिन अल्लाह करीम ज़ात बादशाहों का बादशाह एक ही आन में चालीस साल के नाफ़रमान से राज़ी हो गया और तौबा भी क़ुबूल कर ली। अगली बात सुनो। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा यह कैसे हो गया? फ़रमाने लगे अल्लाह मियाँ ﴿من تاب الى فقبلته﴾ उसने तौबा कर ली हमने क़ुबूल की और सुलह कर ली। एक बोल पर चालीस साल का जुर्म मॉफ़, अगर हम होते तो कहते अभी तक कहाँ थे? अब ज़िल्लत की वजह से तौबा करते हो। कम से कम कहना तो चाहिए था लेकिन अल्लाह कहता है उसने तौबा कर ली हम ने क़ुबूल कर ली। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा बताइए तो सही वह कौन थे? अल्लाह ने फ़रमाया जब उसने चालीस साल नाफ़रमानी की तो नहीं बताया अब जब तौबा कर ली है तो कैसे बता दूं। सारे जहाँ को चुग़ली से मना करूं और खुद अपने बन्दे की चुग़ली खाऊँ।

उसी का खाकर नाफ़रमानी करना इन्सानियत नहीं

अरे मेरे भाईयो! आ जाओ तुम तौबा कर लो अल्लाह कर

दरबार खुला है, वह करीम रहीम है। उसके यहाँ मायूसी कुफ़्र है, अगर वह दुनिया में किसी को पकड़ता तो सबसे पहले उसे पकड़ता जो मेरी रहमत से नाउम्मीद हो जाए लेकिन रहमान होने का मतलब यह नहीं है कि दिलेर हो जाओ, अल्लाह बड़ा रहीम है नाफ़रमानियां करते रहें, पी लो शराब अल्लाह बड़ा रहीम है, ज़मीनें क़ब्ज़ा कर लो, छोड़ दो नमाज़ें, डालो डाके। यह कोई इन्सानियत नहीं है। कुत्ते एक रोटी खाकर सारी ज़िन्दगी वफ़ा करें आप इतने बड़े वजूद को लेकर ज़मीन व आसमान की ख़िदमत लेकर में और आप अल्लाह की नाफ़रमानी करें तो यह कोई इन्सानियत नहीं।

लिहाज़ा मेरे दोस्तों! तबलीग़ कोई जमात नहीं बल्कि अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से जोड़ने की मेहनत है। मुसलमान ही इसके मोहताज नहीं सारी दुनिया के इन्सान इसके मोहताज हैं कि अल्लाह से जुड़ जाएं, अल्लाह की मान लें, अल्लाह को मना लें, अल्लाह को राज़ी कर लें, अल्लाह तो राज़ी होने को तैयार बैठे हैं। तौबा कर लें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा अपना लें, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी बना लें। अल्लाह ने दुनिया में एक ही हबीब बनाया है, एक ही महबूब बनाया है, काएनात में कोई और हबीब नहीं बनाया। जैसा के वह अपनी ज़ात में व-हदहु ला शरीक है ऐसे ही उसका एक हबीब भी अकेला है। ऐसा हबीब अल्लाह ने न आसमान में बनाया और न ज़मीन में बनाया और उसको वजूद दिया कब?

दावत व तबलीग़ के लिए मेहनत शर्त है

तबलीग़ जमात कोई जमात नहीं है कोई फ़िरक़ा नहीं है। एक सादा और आसान सी मेहनत है कि हर मुसलमान अल्लाह और उसके हबीब मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी को सीख लें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत दिल में डाल लें। याद रखना जान माल खपाए बग़ैर मुहब्बत पैदा नहीं होती। घर बैठे अल्लाह और रसूल की मुहब्बत नहीं मिलेगी। जब तक कुछ लगेगा नहीं, खपेगा नहीं, लज़्ज़तें क़ुर्बान नहीं होंगी, कपड़े खाक आलूद न हों, पाँव न फटें, घर से निकल कर सफ़र की कड़वाहट न चखें, गर्म और सर्द हवाओं के थपेड़े न झेलें उस वक़्त तक अल्लाह की तरफ़ से मुहब्बत का फ़ैज़ान नहीं होता और मुहब्बत अल्लाह देता है और यह खुद पैदा नहीं होती। बच्चों से खुद हो जाती है, बीवी से खुद हो जाती है, अपने आप से खुद हो जाती है, अल्लाह और रसूल से मुहब्बत अता की जाती है लेकिन वह क़ुर्बानी के साथ अता की जाती है। घर बैठे नहीं होती उसे लेना है तो धक्के खाओ, मरग़ूबात को छोड़ो तब अल्लाह और रसूल से मुहब्बत मिलेगी और दिल को साफ़ कर लो। हाय, हाय अल्लाह ने एक हदीस में क्या कहा है ﴿يا ابن آدم كم تزين للناس فهل تزينت لا جلى﴾ ऐ बनी आदम तू लोगों के लिए बनता है, सवंरता है मेरे लिए बन के आ जा। अल्लाह के लिए बनना और सवंरना क्या है बस दिल को साफ़ कर लिया जाए

हर तमन्ना दिल से रुख़्सत हो गई
अब तो आ जा अब तो ख़िलवत हो गई

बुला लो अल्लाह और उसके रसूल को दिल को साफ़ करके।

तो आपका दिल अल्लाह का अर्श बन जाएगा। आपका दिल अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत गाह बन जाएगा।

तबलीग़ आप अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को सारी दुनिया में पहुँचाने की मेहनत है

तबलीग़ जमात कोई जमात नहीं है बल्कि अल्लाह और रसूल की मुहब्बत को दिलों में उतारने की मेहनत है और उसकी वजह यह है कि हमारे नबी आख़िरी नबी हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं है लिहाज़ा यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पैग़ाम सारी दुनिया में पहुँचाने की मेहनत है या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी आए नऊज़ुबिल्लाह, तो हम किसी कोने में बैठ कर अल्लाह अल्लाह करते, अपनी नमाज़, अपना रोज़ा, अपना हज। अब जब कोई नबी नहीं आ रहा और सारी दुनिया बेनूर हो चुकी, रौशनी के नाम से अन्धेरा छा चुका है, तारिकियां फैल गयीं हैं, तालीम के नाम से सबसे ज़्यादा वहशत और वीरानियां फैल गयीं और छा गयीं। जब नबी कोई नहीं तो कौन दुनिया के दर खटखटाए, इन सोए हुए लोगों को कौन जगाए, इन पत्थर दिलों को कौन मुसख़्ख़र करे, उनके कानों में निदा लगा कर उनके दिल की गहराईयों में ख़ुदा का पैग़ाम कौन पहुँचाए? मेरे भाईयो! ग़ौर तो करो, बाज़ार में जाकर देखो, गुनाहों की सदाएं गूंज रही हैं, गाने वाली दावत दे रही हैं, हमारी तरफ़ आओ, बड़े बड़े जुओं वाले दावत दे रहे हैं, सूद वाले दावत दे रहे हैं, सिनेमा वाले दावत दे रहे हैं, फ़िल्मों वाले दावत दे रहे हैं।

सबसे अच्छी आवाज़ जो रब को पसन्द है

मेरे दोस्तों! ऐसी मेहनत करें कि फ़िज़ा ऐसी हो जाए कि ये सब अल्लाह की तरफ़ दावत दें, अल्लाह के दीन की तरफ़ दावत दें, अल्लाह के हबीब की मुहब्बत की दावत दें, आज आलू की आवाज़ लग रही है, अमरूद की आवाज़ लग रही है, अंगूर की आवाज़ लग रही है, कपड़ों की आवाज़ लग रही है। मेरे भाईयो! यह आवाज़ नहीं लग रही है, कोई यह आवाज़ नहीं दे रहा है कि अरे इन्सानों अल्लाह और रसूल की मान लो। सबसे प्यारी आवाज़ ﴿ومن احسن قولا ممن دعا الى الله﴾ कोई है इससे ख़ूबसूरत बात करने वाला और इससे उम्दा बात करने वाला। या अल्लाह वह कौन सी बात है? ﴿ممن دعا الى الله﴾ जो मेरी तरफ़ बुला रहा है उससे भी किसी की बात ज़्यादा उम्दा हो सकती है? उससे भी किसी की बात आला हो सकती है? हर सदा लगाने वाले ने सदा लगाई, शैतान की दावत चली, इन्सानों की दावत चली, काफ़िरों की दावत चली, क़ौमों की दावत चली, हुकूमत की दावत चली, घरों के घर उजड़ गए। अरे अल्लाह की दावत चलती तो घरों के घर आबाद हो जाते। दुनिया में जन्नत के मज़े लूट सकते।

अल्लाह के दीन की दावत को लेकर सारी दुनिया में फैल जाओ

यह ज़िम्मेदारी हमारी तरफ़ क्यों है? हम घर क्यों छोड़ दें? मेरे

दोस्तो! हम ख़त्मे नबुव्वत को माने हुए हैं। तबलीग़ तबलीग़ी जमात की वजह से नहीं, राएविन्ड वालों की वजह से नहीं, तबलीग़ ख़त्मे नबुव्वत की वजह से हमारे ज़िम्मे लगी हुई है। जब हम कहते हैं कि हमारे नबी आख़िरी नबी हैं उसके बाद कोई नहीं तो यह काम ख़ुद ब ख़ुद हमारे ज़िम्मे वाजिब हो जाता है। अमरीका वालों को कलिमा बताओ, यूरोप वालों को कलिमा पहुँचाओ, अमरीका को समझाओ, आस्ट्रेलिया वालों को बताओ, अल्लाह के दीन की दावत को लेकर सारी दुनिया में फैल जाओ, पहाड़ों की चोटियां हमारे क़दमों तले रौंदी जाएं और मैदान व सहरा हमारे क़दमों की ख़ाक से आलूदा हो जाएं, सारी काएनात हमारे कलिमे की गूंज से मोअत्तर हो जाए। इस लिए अल्लाह तआला ने ख़त्मे नबुव्वत की बरकत से हमें यह काम अता फ़रमाया है, ख़त्मे नबुव्वत की वजह से यह ज़िम्मेदारी डाली है। यह काम तबलीग़ जमात की वजह से नहीं और इसको तबलीग़ी जमात का काम कहना भी सही नहीं, नमाज़ियों को नमाज़ की वजह से जमात कहना ठीक नहीं, क्योंकि नमाज़ मुसलमान पर फ़र्ज़ है, हाजियों की जमात कहना ठीक नहीं, क्योंकि हज मुसलमान पर फ़र्ज़ है, रोज़ेदारों की जमात कहना ठीक नहीं क्योंकि हर मुसलमान पर रोज़ा फ़र्ज़ है।

मेरे भाईयो! हर मुसलमान को तबलीग़ी कहना भी सही है क्योंकि ख़त्मे नबुव्वत की वजह से तबलीग़ हर मुसलमान के ज़िम्मे है, जो ख़त्मे नबुव्वत को मानने वाला है उसके ज़िम्मे तबलीग़ है अब वह करे या न करे। बहरहाल काम उसके ज़िम्मे लग चुका है। नाम लिखवाने से लाज़िम नहीं होता या न लिखवाने

से साकित नहीं होता। लिखवाएंगे और न जाएंगे तो गुनहगार होंगे।

एक आदमी ने कहा कि मैं नमाज़ पढूंगा उसके बाद वह कहता है अगर मैं न पढूंगा तो गुनाह गार हो जाऊँगा तो उसकी यह बात सही नहीं है क्योंकि वह कहे या न कहे नमाज़ उस पर पहले से फ़र्ज़ है।

इसी तरह एक आदमी कहता है कि मेरा नाम चिल्ले के लिए लिखो। इस तरह नाम लिखवाने से तबलीग़ ज़िम्मे नहीं है। तबलीग़ ख़त्मे नबुव्वत को मानने की वजह से ज़िम्मे है। आज दुनिया में सबसे बड़ा मातम यह है कि इन्सानियत नाचती हुई जहन्नुम जा रही है अगर उनके पास जाकर मिन्नत करके हाथ जोड़ कर उनको इस काम में लगाया जाए तो उनकी आख़िरत बन जाएगी।

बद अमाल शख़्स और अज़ाबे क़ब्र

मेरे अपने एक क़रीबी गांव का वाक़िया है। वहां एक ज़मींदार मर गया। उसके लिए क़ब्र खोदी गई तो क़ब्र काले बिछूछुओं से भर गई। उसे बन्द करके दूसरी खोदी गई। लहद बनाई गयी तो वहां भी काले बिछूछुओं से क़ब्र भर गई। तीन क़ब्रें बनीं तीनों क़ब्रों का यही हाल हुआ यह ज़मीन बिछूछुओं की नहीं है बल्कि यह बद आमालियों के बिछूछू हैं। यह अल्लाह तआला कभी कभी पर्दा उठा कर दिख लाता है। इसी तरह हम सब से अल्लाह कहता है ज़रा संभल कर चल। सबसे बड़ा मोहसिन इस वक़्त दुनिया का

कौन है जो उनको दोज़ख़ से बचा ले। वह मोहसिन नहीं है कि रोटी पर लड़ा दें, ज़मीन पर लड़ा दें, कपड़े पर लड़ा दें, मोहसिन वह है जो दुनिया वालों को दोज़ख़ से बचा ले। तबलीग़ दुनिया को जहन्नुम से बचाने की मेहनत का नाम है। यह हमारा नाम लिखवाने से लाज़िम नहीं, ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा दिल में क़रार पकड़ा तो साथ ही तबलीग़ ज़िम्मे हो गई अगर हमारे ज़िम्मे नहीं मुसलमान के ज़िम्मे नहीं तो आप बता दो किसके ज़िम्मे है?

दुनिया के हालात गुनाहों की वजह से आते हैं

हमने कारोबार को नहीं छोड़ा, दुकान को नहीं छोड़ा, ज़मीन को नहीं छोड़ा, बीवी बच्चों को नहीं छोड़ा अगर छोटी मोटी आग लग जाए तो फ़ायर ब्रिगेड का इन्तेज़ाम होता है अगर पूरे मुहल्ले में आग लग जाए तो हर आदमी बाल्टी लेकर भागता है, हर आदमी समझता है कि अगर फ़ायर ब्रिगेड का इन्तेज़ार किया तो सारा शहर जल कर ख़ाक हो जाएगा। अब जबकि पूरी दुनिया में नाफ़रमानी की आग लगी चुकी है हर एक को भागना होगा, हर एक से मिन्नत करना होगी तब जाकर लोगों में अल्लाह की तरफ़ रुजू नसीब होगा वरना सारे आमाल ऐसे हैं जो अल्लाह के अज़ाब को दावत दे रहे हैं। लोग कहते हैं मंहगाई हो गई। हम कहते हैं कि शुक्र करो कि हम ज़िन्दा हैं वरना हमारे आमाल ऐसे हैं कि ज़मीन फट कर हमें अन्दर ले जा चुकी होती जो हम कर रहे हैं। कब से आसमान की बिजलियां कड़क जाएं जो कुछ हो रहा है कब का आसमान के फ़रिश्ते उतर कर ज़मीन को पटख़ देते जो हो रहा है। यह अल्लाह का शुक्र है कि हम ज़िन्दा हैं। इस लिए

हम कहते हैं कि हुकूमतों के पीछे मत भागो, हड़तालें न करो, मस्जिदों में आ जाओ, तौबा कर लो, हाथ उठा लो जैसे नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम सज्दे में गिर गई थी, अल्लाह तआला ने अज़ाब उठा दिया था। यह सब अज़ाब है, एक दूसरे से नफ़रतें, एक दूसरे को क़त्ल करना, ज़मीन छीनना, ज़ालिम हुकमुरान, बद दियानत मुलाज़िमीन, बद दियानत अफ़सर शाही यह सब अल्लाह का अज़ाब है। यह अज़ाब तौबा से उठेगा। काएनात की कोई क़ुव्वत इसको नहीं उठा सकती, अल्लाह और रसूल के गुलाम बन जाओ, सारी दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाओ। अल्लाह ने हमारे नबी को सारे जहां के लिए रहमतुलिल्ल आलमीन बनाया।

अल्लाह के रास्ते के गुबार की क़ीमत

लिहाज़ा मेरे भाईयो! तब्लीग़ का काम ख़त्मे नबुव्वत की वजह से ज़िम्मे है। यह वह मेहनत है जिस पर लगने वाले गुबारकी क़ीमत अल्लाह देगा जैसे घर में काम करने वाले मज़दूर पर लगने वाली मिट्टी की क़ीमत हम देते हैं। यह वह मेहनत है जिसके गुबार के बदले में भी जन्नत की ख़ुशबू दी जाएगी। अल्लाह के रास्ते में गर्द व गुबार आमाल नामे में तौला जाएगा। उसके बदले में जन्नत की ख़ुशबू दी जाएगी और अल्लाह के रास्ते में निकलना सारे आलम में हिदायत का इन्तेज़ाम हमारे चलने का ज़रिया बन जाएगा और अल्लाह के रास्ते में निकलने वाला और घर बैठने वाला कतन बराबर नहीं हो सकते हैं। मेरे दोस्तों और भाईयो अल्लाह तआला ने महज़ अपने फ़ज़ल से ख़त्मे नबुव्वत की नेमत

अता फ़रमाई है और अपने हबीब का उम्मती बनाया, सारी उम्मतों का सरदार बनाया इस तबलीग़ की वजह से बनाया है।

दावत वाला काम इस उम्मत के अलावा किसी को नहीं मिला

यह अल्लाह के रास्ते में फिरते हैं अल्लाह का पैग़ाम सुनाते हैं, उसकी दावत देते हैं, सारे आलम को दावत देते हैं। आज यह हुक्म टूटा पड़ा है। गर्ज़ हमारी जान व माल ख़रीदी गई है। हम दुनिया को दावत देते हैं कि आ जाओ हमारे दीन में, अगर वे आ गए तो हमारे भाई बन गए अगर नहीं आते तो जज़्बा पेश कर दो अगर यह भी न हो तो उनको मारो या खुद मर जाओ ﴿يقتلون ويقتلون﴾ दुनिया में अल्लाह का कलिमा ज़िन्दा करो। किसी उम्मत को दावत इलल्लाह का काम नहीं मिला सिवाए इस उम्मत के। इस उम्मत को अल्लाह ने ऊँचा किया।

इस उम्मत को बे हिसाब अज्र मिलेगा

जब क़ुरआन में आया ﴿من جاء بالحسنة فله عشر امثالها﴾ जो एक नेकी करेगा तो उसको दस दूंगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह कुछ बढ़ा दें तो अल्लाह तआला ने दूसरी आयत उतारी ﴿من ذا الذى يقرض الله قرضا حسنا الخ﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर दुआ की ﴿ربى زدنى﴾ या अल्लाह मेरी उम्मत को कुछ और बढ़ा दें तो तीसरी आयत उतारी ﴿مثل الذين ينفقون .... كمثل حبة انبتت سبع سنابل﴾. आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने फिर दुआ की कि मेरी उम्मत के लिए कुछ ज़्यादा कर दें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया आप किसी मिक़दार पर राज़ी नहीं होते चलो हम हिसाब उठा देते हैं ﴿انما يوفى الصابرون اجرهم الخ﴾ सब्र करने वालों को बे हिसाब देंगे। सारे जन्नतियों की एक सौ बीस सफ़ें हैं इस उम्मत के जन्नतियों की अस्सी सफ़ें हैं बाक़ी सफ़ें औरों की हैं। इस उम्मत के सत्तर हज़ार बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में जाएंगे। एक रिवायत में है कि उनमें हर एक सत्तर हज़ार की सिफ़ारिश करेगा और बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में जाएंगे। यह वह उम्मत है जिसके बग़ैर किसी और उम्मत के लिए जन्नत का दरवाज़ा नहीं खोला जाएगा। इनके नबी वह नबी हैं जिनसे पहले कोई नबी जन्नत में नहीं जा सकेगा और इस उम्मत से पहले कोई उम्मत जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकती।

मुसलमानों की बरकत से सब को मिल रहा है

मेरे भाईयो! अपनी क़द्र पहचानें। आपकी वजह से सारे जहां का निज़ाम चल रहा है। आपकी वजह से सारे इन्सानों को अल्लाह रोटी खिला रहा है और आप रोटी के लिए लड़ रहे हैं। आपकी वजह से अमरीका वाले रोटी खा रहे हैं, यूरोप वाले खा रहे हैं, एशिया वाले खा रहे हैं, अफ़रीक़ा वाले खा रहे हैं। जब दुनिया से मुसलमान मिट जाएगा तो क़यामत आ जाएगी। जब तक हम हैं क़यामत नहीं आएगी। हम में से एक भी ज़िन्दा है तो क़यामत नहीं होगी। मुसलमान के अन्दर इतनी ताक़त है कि आसमान को गिरने से रोका हुआ है, हवाओं के तूफ़ान थमे हुए हैं, पहाड़ों को उठने से रोका हुआ है, चाँद का टूटना रुका हुआ

है, समन्दरों की आग रुकी हुई है क्योंकि एक मुसलमान ज़िन्दा बैठा हुआ है और उस मुसलमान के साथ न नमाज़, न रोज़ा, न ज़कात, न हज, न अख़लाक़, न सीरत, न आगे जाए न पीछे जाए, न ऊपर जाए न नीचे जाए। बस सिर्फ़ कलिमा पढ़ता है। यह सारे जहां का निज़ाम, आसमान का निज़ाम, ज़मीन का निज़ाम, हवाओं का निज़ाम, पहाड़ों का निज़ाम यह सब कुछ सिर्फ़ मुसलमान के लिए चल रहा है अगर यह ख़तम हो जाए तो यह तमाम निज़ाम टूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाए और हम रोटी के लिए परेशान हैं। एक बरात जा रही है लोग आगे भी हैं पीछे भी हैं, उनमें से एक आदमी दूल्हा है पूछता है आप यह बताओ आगे रोटी मिलेगी तो सब अहमक़ तसव्वुर करेंगे कि जो शख़्स उनको अपनी बेटी देने के लिए तैयार बैठा है जब वह इनको अपनी बेटी दे सकता है तो क्या रोटी नहीं देगा।

मुसलमान का घर दुनिया नहीं

मेरे दोस्तो और भाईयो! जो अल्लाह आगे जन्नत देने को तैयार बैठा है वह ज़ात दुनिया में रोटी नहीं देगा। इज़्ज़त रूपए में मत समझो आपकी इज़्ज़त अल्लाह ने तबलीग़ में रखी है। सारी दुनिया में तबलीग़ का मैदान है। घूम जाओ सारे आलम में, अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दो यह सब ही हमारा घर है।

कभी रात में न तन्हा कभी सहरा में
जुनूं का हम सफ़र हूँ मेरा कोई घर नही

है न पाकिस्तान न ईरान न तेहरान, हर मुल्क मा अस्त मुल्क

खुदाए मा अस्त। सारा जहां हमारा जहां मर गया वही हमारा घर है वही हमारा वतन है। अल्लाह का पैग़ाम लेकर चलते चलते फिरते फिरते मर जाएं, वहीं क़ब्र बने वहीं से अपने बदन से अल्लाह के रास्ते में लगी हुई मिट्टी झाड़ कर उठें।

❑ ❑ ❑

अल्लाह की बड़ाई

और तौबा

13/3/1998

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله
من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له
ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الله وحده لا شريك
له ونشهد ان سيدنا ومولنامحمدا عبده ورسوله وصلى تعالى
عليه وعلى اله واصحابه وبارك وسلم امابعد
ان الذين امنو وعملوا الصالحات لهم جنت تجرى من تحتها الانهار
ذالك الفوز الكبيرo قال تعالى قل ان الخاسرين الذين خسروا
انفسهم واهليهم يوم القيامة، الا ذالك هو الخسران المبينo
وقال النبى صلى عليه وسلم هل بلغت واقول يا ربى قد بلغت
فليبغ الشاهد الغائب اوكما قال صلى عليه وسلم.

अल्लाह का इल्म

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह ने सारे जहां में अपनी हुकूमत अपने इक़्तेदार को अपने ग़लबे से इस तरह बाक़ी रखा हुआ है कि न उसका कोई शरीक न कोई उसका मुद्दे मुक़ाबिल ﴿هل تعلم لــه سميا﴾ अल्लाह हम से पूछता है बड़े अजीब अन्दाज़ से यूं

फ़रमाया कि मेरे इल्म में तो कोई मेरे मुक़ाबिल नहीं है हाँ अगर पता है तो बता दो। क्या हम जानते हैं? हमारा इल्म ही कोई नहीं, इन्सान जाहिल है। ये बड़े बड़े डाक्टर, अल्लाह क्या कहता है ﴿ظلوما جهولا﴾ तुम सब ज़ालिम जाहिल हो तो अल्लाह की बात सच्ची हमारी बात झूठी, जानने का मतलब यह है कि थोड़ा बहुत जानता है यह नहीं कि मैं सब कुछ जानता हूँ। जो यह कहता है कि मैं सब कुछ जानता हूँ तो वह सबसे बड़ा जाहिल है। उसे हिदायत नहीं मिल सकती। यहूद गुमराह हुए इल्म के घमंड में कि हम जानते हैं, तो अल्लाह हम से पूछता है तुम जानते हो कि कोई है जो तुम्हारे अल्लाह के मुक़ाबले में आ जाए ﴿الملك لا شريك له، الا احد لا ندله، العالى لا سمى له الغنى لا ظهور له (كل شئ هالك الا وجهه) كل ملك زائل الا ملكه﴾ अल्लाह के यहाँ न कोई माज़ी है न कोई हाल न कोई मुस्तक़बिल हैं ﴿لا ينتقل من الحال الى حال﴾ वह एक हाल से दूसरे हाल में मुन्तक़िल नहीं होता ﴿لا يحويه المكان﴾ मकान की क़ैद से पाक है ﴿لا يشتمل عليه الزمان﴾ ज़माने की क़ैद से पाक है﴿كل ظل قالص الا ظله﴾ हर साया चढ़ता और ढलता है और उसका साया हमेशा बाक़ी रहता है। इस लिए अल्लाह का मुल्क न ज़्यादा होता है न कम होता है। बढ़ना कमी की निशानी है। यहाँ ऐसा है कि वहाँ बढ़ने का कोई इमकान ही नहीं, तो सारे जहाँ को अल्लाह ने अपनी ताक़त से पैदा फ़रमाया, कुछ नहीं था सब कुछ बना दिया। अल् ख़ालिक़, अल् मुब्दी वह बनाने वाला है जिसने किसी चीज़ के बग़ैर बनाया। अल्लाह ने लोहे को बग़ैर लोहे के बनाया, चाँद को बग़ैर चाँद के बनाया वग़ैराह वग़ैराह।

अल्लाह की मख़लूक़ इतनी है कि उसकी कोई तादाद मालूम

नहीं। सिर्फ़ एक मकड़ी जो जाला बनाती है उसकी दस हज़ार क़िस्में दर्याफ़्त हुई हैं पता नहीं और कितनी बाक़ी हैं। इसी तरह हर चीज़ को गिनना शुरू किया जाए तो सारा वक़्त गिनने में गुज़र जाएगा लेकिन आप इस इजमाल की तफ़सील ज़हन में लाएं कि क्या कुछ बना हुआ है। कुछ उड़ रहे हैं, कुछ रेंग रहे हैं, कुछ तैर रहे हैं, कुछ मुतहर्रिक हैं, कुछ साकिन हैं, कुछ नूरानी हैं, कुछ नारी हैं, कुछ नूरी हैं, कुछ ख़ाकी हैं, कुछ अलमी हैं। सबको बग़ैर किसी चीज़ के बना दिया ﴿ان ربكم الله﴾ मैं हूँ तुम्हारा रब अल्लाह। कौन अल्लाह है?

ممن خلق الارض والسموت العلى الذى خلق سبع سموات
والارض فى ستة ايام ثم استوى على العرش، يغشى الليل
والنهار، يطلبه حثيثاً، والشمس والقمر والنجوم مسخرات با
مره الا له الخلق والامر تبارك الله رب العالمين

अल् बारी वह बनाने वाला जो बेजान में जान डाल दे, अल्लाह वह बनाने वाला है जो बेजान को जानदार बना देता है। मिट्टी के पुतले पर तजल्ली डाल दी तो आदम बन गया। ﴿رفع السموات﴾ आसमान को बुलन्द किया ﴿ولارض بعد ذلك دحها﴾ ज़मीन को बिछाया, समन्दरों को बान्ध दिया हमारे लिए ﴿هو الذى سخر البحر﴾ उसमें मछलियों को तैरा दिया ﴿لتاكلوا منه لحما طريا﴾ और मोतियों को छुपा दिया ﴿لتستخرجوا منه حلية تلبسونها﴾ इसमें तिजारत का निज़ाम चला दिया ﴿وترى الفلك مواخر فيه﴾ समन्दर न हो तो सारी दुनिया की तिजारत न होती। तिजारत का निज़ाम अल्लाह ने समन्दर के ज़रिए चला।

अल्लाह की क़ुदरत और उसकी शान

तो यह सारी काएनात बनाई। जिस में चाहा उसमें रूह डाली, जिसको चाहा बेजान कर दिया। फिर ﴿بديع بيدى﴾ जो बग़ैर नमूने के बनाए। अल्लाह के सामने आदम अलैहिस्सलाम का नमूना पेश किया गया फिर अल्लाह उसको देखता रहा, अल्लाह के सामने लोहे को पेश किया तो लोहा बनाया, पानी को पेश किया गया तो पानी बनाया, औरत को देखा तो औरत बनाई यह नहीं बल्कि ﴿بديع﴾ अपने इल्म से हर चीज़ को शक्ल अता फ़रमाई। किसी में सख़्ती, किसी में नर्मी, किसी में गर्मी, किसी में सर्दी, किसी में लताफ़त, किसी में कसाफ़त, किसी में नज़ाकत, किसी में जोलानी, किसी में रवानी, किसी को जमा दिया ﴿والجبال ارسها﴾ हवाओं को उड़ा दिया ﴿يرسل الرياح﴾ पानी के चश्मों को बहा दिया ﴿سخر لكم الانهار وفجرنا فيها من العيون﴾ कहीं मीठा बनाया ﴿هذا عذب فرات﴾ कहीं कड़वा कर दिया ﴿هذا ملح اجاج﴾ यह बदीअ है और यह हमारा अल्लाह है। तबलीग़ का काम यह है कि अल्लाह का तार्रुफ़ कराना और उसकी मुहब्बत दिलों में बिठाना। यह काम पहले नबी किया करते थे अब यह हमारे ज़िम्मे हुआ है कि लोगों में अल्लाह का तार्रुफ़ करा के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत पैदा करें। मुहब्बत करने की जितनी चीज़ें वह सब से ज़्यादा अल्लाह की ज़ात में जमा हैं। अल्लाह की तारीफ़ कहाँ से शुरू करें, कहाँ जा के ख़त्म करें उसकी कोई हद नहीं। यूं कहा अल्लाह ने ﴿ولو ان ما فى الارض من شجرة اقلام﴾ सारे दरख़्त काट कर क़लम बनाओ तो कितने क़लम बन जाएंगे। सबसे बड़ा जगंल ब्राज़ील में है।

हमारी हवा में साठ फ़ी सद आक्सीजन ब्राज़ील के जगंल से आ रही है तो यह काट दिया जाए। अब स्याही कहाँ से लाएं? ﴿ولو كان البحر مدادا﴾ मैं समन्दर को स्याही बना देता हूँ सिर्फ़ बहरे अरब को नहीं ﴿والبحر يمده من بعده سبعة ابحر﴾ बल्कि सातों समन्दरों को स्याही बना देता हूँ फिर तुम सब मिल कर मेरी तारीफ़ लिखो, जिन्नात भी इन्सान भी, जो मर गए उनको भी बुला लाओ जो आने वाले हैं वह भी आएं। सब जमा होकर छोटे भी, बड़े भी, नबी भी, सिद्दीक़ भी, आलिम भी, ज़ाहिल भी, शायर भी, फ़लसफ़ी भी, अदीब भी, ख़तीब भी, मुहद्दिस भी, मुफ़स्सिर भी सब आकर क़लम का ज़ोर दिखाओ, अपने इल्म के जौहर दिखाओ। स्याही सात समन्दर हैं। सिर्फ़ फ़िलीपाइन के पास जो बहरे काहिल है यह छः सौ किलो मीटर गहरा है। सबसे गहरा समन्दर बहरे काहिल है। इन तमाम समन्दरों को स्याही बना कर अल्लाह की तारीफ़ लिखो ﴿لنفد البحر قبل ان تنفد كلمات ربي ولو جئنا بمثله مددا﴾ सातों समन्दरों की स्याही ख़ुश्क हो जाएगी और यह दरख़्त के क़लम ख़त्म हो जाएंगे और इतने और भी आजाएं तो भी तेरे रब की तारीफ़ ख़त्म नहीं होगी। तो भाई हमारा काम अल्लाह की तारीफ़ कराना है। मुसलमान वह जो अल्लाह की मान कर चले और इस उम्मत की खुसूसियत है कि यह लोगों को अल्लाह की मानने पर तैयार भी करते हैं। यह हमारा इज़ाफ़ी और ऐज़ाज़ी ओहदा है। यह सिर्फ़ नबियों को मिला और उनके बाद हमें मिला कि अल्लाह की तारीफ़ करके अल्लाह की मुहब्बत दिलों में बिठाना हैं। मुहब्बत के क़ाबिल भी एक अल्लाह है।

अल्लाह दाऊद अलैहिस्सलाम से कहता है कि ऐ दाऊद ﴿لو

﴿يعلم مدبرون عنى﴾ अगर मेरे नाफ़रमानों को पता चल जाए कि मैं उन से कितनी मुहब्बत करता हूँ तो उनके जिस्म के जोड़ जोड़ अलग हो जाएं तो ऐ दाऊद तू बता कि मैं फ़रमा बरदारों से कितनी मुहब्बत करता हूंगा।

अल्लाह तआला की बड़ाई

तो भाईयो! आज अल्लाह की मुहब्बत दिलों से निकल गई है, अल्लाह पर ऐमिमाद और यक़ीन उठ गया है। वह हमारे तमाम मसाईल हल कर देगा। इसका इल्म तो है, इसका यक़ीन ढीला पढ़ गया है। इस उम्मत का काम है अल्लाह की अज़्मत, किबरियाई, जबरूत, जलाल के क़िस्से सुना कर लोगों के दिलों में जितने बुत हैं उनको तोड़ते हैं। अन्दर के बुतों को भी तोड़ कर ला इलाहा इलल्लाह का नक़्श दिलों में रासिख़ करते हैं ﴿لا اله الا الله﴾ दिल में उतर जाए। एक हदीस से आप अन्दाज़ा लगाएं ﴿والذى نفسى بيده﴾ उस ज़ात की क़सम जो मेरी जान का मालिक है ﴿لو جى بالسموات السبع والارضين السبع ومافيهن وما بينهن وما تحتهن فوضعن فى كفة لرجحت بهن الميزان ولا اله الا الله فى كفة﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया इतना बड़ा तराज़ू हो कि उसके एक पलड़े में सात आसमान और सात ज़मीन रख दिए जाएं और उनके दर्मियान में जो कुछ भी है उन सब को रख दिया जाए और दूसरी तरफ़ ﴿لا اله الا الله﴾ रख दिया जाए तो यह ﴿لا اله الا الله﴾ सब को हवा में उठा देगा और यह वज़नी हो जाएगा। हमारी मेहनत यह है कि हम इसको दिल में उतारें, इसको सीखें और इसकी दावत दें। ﴿لا اله الا الله﴾ में काएनात की ताक़त नहीं, अल्लाह की ताक़त छिपी

हुई है। अल्लाह वह ज़ात है न उसकी कोई इब्तेदा है न आख़िर है

هو الاول والآخر والظاهر والباطن، وهو بكل شئ عليم، هو الظاهر ليس فوقه الشئ هو الباطن ليس دونه الشئ، هو قبل كل شئ، وبعد كل شئ وفوق كل شئ، دون كل شئ، خالق كل شئ لا يستعين بشئ بعد كل شئ فوق كل شئ، فاتو كل شئ لا يستعين بشئ لا يحتاج الى شئ لا يضره شئ، لا ينفعه شئ، لا يعزه شئ، لا يضله شئ، لا يعذبه شئ

﴿خبير كل شئ، عليم كل شئ﴾ कोई चीज़ उससे छिप नहीं सकती ﴿ليس بديع على كل شئ﴾ हर चीज़ पर कामिल क़ुदरत रखने वाला ﴿كمثله شئ﴾ उस जैसी कोई चीज़ नहीं।

هو النافع غير منفوع هو غالب غير مغلوب، هو خالق غير مخلوق، مالك غير مملوك، قادر غير مقدور، قاهر غير مقهور، جابر غير مجبور، حافظ غير محفوظ

उसको हिफ़ाज़त के लिए किसी की ज़रूरत नहीं

رب غير مربوب، الملك لله، والكبرياء لله، والعظمة لله، والهيبة لله، والجبروت لله، والقدرة لله، والسلطان لله، والجلال لله،

यह सारे हदीस के अलफ़ाज़ हैं।

ولله الاسمآء الحسنى، الرحمٰن، الرحيم، القدوس، السلام، المؤمن، المهيمن، العزيز، الجبار، المتكبر، الخالق، المصور، البارى، الغفار، القهار، الوهاب، الرزاق، الفتاح، العيم، القابض، الباسط، الرافع، المعز، المذل، السميع، البصير، الحكم، العدل، اللطيف، الخبير، الحليم، العظيم، الغفور، الشكور، العلى، الكبير، الحفيظ، المقيت، الحسيب، الجليل، الكريم، الرقيب، المجيب، الواسع، الحكيم، الودود، المجيد، الباعث، الشهيد، الحق، الوكيل، القوى، المتين، الولى، الحميد، المحصى

المبدئ، المعيد، المحی، المميت، الحی، القيوم، الواجد،
الماجد، الواحد، الاحد، الصمد، القادر، المقتدر، المقدم
المؤخر، الاول، الاخر، الظاهر، الباطن، الوالی، المتعالی، البر،
التواب، المنعم، المنتقم، العفو الرء وف، مالك الملك،
ذوالجلال والاكرام، الرب، المقسط، الجامع، الغنی، المغنی،
المعطی، المانع، الضآر، النافع، النور، الهادی، البديع، الباقی،
الوارث، الرشيد، الصبور، ولله الاسمآء الحسنٰی فادعوه بها.

यह ख़ूबसूरत नाम अल्लाह के लिए हैं। अल्लाह को इन नामों से पुकारा करो। वह ऐसी ख़ूबसूरत सिफ़ात का मालिक है और यही हमारी मेहनत है। यह इस उम्मत की मेहनत है कि यह अल्लाह की तारीफ़ करके अल्लाह का दीवाना बना देते हैं। लोग अपने खोटे सौदे की तारीफ़ करके लोगों को बेवक़ूफ़ बना कर अपना सौदा बेचते हैं और इससे खरा सौदा कोई नहीं है कि हम लोगों को लोगों के ख़ालिक़ से जोड़ दें, यह तबलीग़ का काम है, यह हर मुसलमान का काम है। इसके लिए आलिम होना शर्त नहीं। अल्लाह की तारीफ़ करना कि मेरा अल्लाह ख़ालिक़ और मालिक है। हाँ दीन का कोई मस्अला बताना है तो बग़ैर इल्म के नहीं बोल सकते हैं। हम क्या कहते हैं? हम कहते हैं अल्लाह की तारीफ़ करके लोगों के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत बिठा दो। पहला फ़ायदा यह होगा कि अल्लाह आपको अपनी मुहब्बत दे देगा। आप मेरी तारीफ़ करें तो ख़ुद ब ख़ुद मेरी आप से मुहब्बत हो जाएगी और मैं आपकी तारीफ़ करूं तो ख़ुद ब ख़ुद मेरे दिल में आपकी मुहब्बत आ जाएगी। जब हम ज़मीन व आसमान के बादशाह की तारीफ़ करेंगे और वह है ही तारीफ़ के क़ाबिल, उसकी मुहब्बत बारिश की तरह बरसेगी। अब्दुल्लाह बिन मालिक

बिन मरवान बादशाह था बनू उमिय्या का, जो उस ज़माने का शायिर था बहुत बड़ा शायिर था। उसने बादशाह की तारीफ़ में क़सीदा कहा था। जिसमें एक शेअर आया ﴿الستم خیر من رکب العطایا، رب العالمین بطون راحی﴾ तो अब्दुल मलिक यूं झूमने लगा और यह शेअर अपने सही माईने में सिवाए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी पर सादिक़ नहीं आता। मतलब यह है आज तक जो सवारी पर सवार हुए उनमें आप सबसे अफ़ज़ल हैं और जितने सख़ी आएं उनमें आप सबसे सख़ी हैं। यह सबसे बड़ा झूठ अब्दुल मलिक के बारे में कहा गया। यह शेअर अपनी हक़ीक़त में सिर्फ़ दो जहां के सरदार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सादिक़ आता है और किसी पर नहीं लेकिन अब्दुल मलिक शेअर को सुन कर यूं झूमने लगा और वजूद में आकर खड़ा हुआ और एक सौ ऊँट साज़ो सामान और ग़ुलामों के साथ उसके लिए हदिया कर दिएं। झूठी तारीफ़ सुन कर मौज में आ गया तो हमारा काम यह है कि हम खुद भी अल्लाह की मानें और लोगों के दिलों में भी अल्लाह की मुहब्बत बिठाएं, अल्लाह की तारीफ़ करेंगे तो अल्लाह भी हम से मुहब्बत करने लग जाएगा।

लोगों के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत बिठाएं

तो मेरे भाईयो! अल्लाह ने अपनी मुहब्बत हर इन्सान के सीने में रख दी है यह नहीं निकल सकती। सारी काएनात की ताक़तें मिलकर भी इस दिल से अल्लाह की मुहब्बत नहीं निकाल सकतीं, लेकिन जब तक उसको उभारा नहीं जाएगा यह उभरेगी नहीं तो नबियों की मेहनत यह होती है कि लोगों के दिलों में अल्लाह की

मुहब्बत का बीज जो पड़ा होता है उसको पानी देकर परवान चढ़ा देते थे तो वह दरख़्त बन कर फलदार हो जाता था। आज इस बीज को पानी नहीं लग रहा है। इस उम्मत की मेहनत यह है कि ख़ुद भी अल्लाह की मुहब्बत में चलें और लोगों को भी इस मुहब्बत की तरफ़ बुलाएं और अल्लाह की तारीफ़ करना सीखें।

मेरे भाईयो! हम गाड़ी चलाना सीखते हैं, साइकिल चलाना सीखते हैं, हल चलाना सीखते हैं। हम ऐसे बोल सीखें जिससे हम अल्लाह की तारीफ़ कर सकें। हमारा रब ख़ुश हो और वह ज़ात है ही मदह के लिए। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा अपनी तारीफ़ पसन्द है। इस लिए अल्लाह तआला ने क़ुरआने पाक की इब्तेदा अपनी तारीफ़ से फ़रमाई ﴿الحمد لله رب العالمين﴾ और हमें सिखाया है कि मुझ से मांगना है तो अल्हम्दुलिल्लाह से शुरू करो ताकि मैं ख़ुश होकर तुम्हें दे दूं तो इस वक़्त सारे जहां का रुख़ अल्लाह से हटा हुआ है। हम मेहनत कर रहे हैं और हमारे ज़िम्मे यह मेहनत है कि हम लोगों का रुख़ अल्लाह पाक की तरफ़ फेर दें। सारी दुनिया इस में परेशान है कि हमारे मसाइल नहीं हल हो रहे हैं और मसाइल के हल का जो सहारा तलाश किया जा रहा है वह अपने जैसी मख़लूक़ का तलाश किया जा रहा है। किसी ने हुकूमत को, किसी ने सियासत को, किसी ने किसी चीज़ को जबकि वह भी हमारे तरह मख़्लूक़ है वह नफ़ा दे न नुक़सान दे, न ज़िन्दगी का मालिक न मौत का मालिक, न इज़्ज़त का मालिक, न ज़िल्लत का मालिक, न बीमारी का मालिक, न सेहत का मालिक, न नफ़रत का मालिक। जिसके हाथ में कुछ नहीं उनसे हमने उम्मीदें वाबस्ता

की हुई हैं। यह रास्ता आख़िर में जाकर हमें जहन्नुम में पहुँचा देगा। (इलूयाऊज़ु बिल्लाह)

अल्लाह किसी का मोहताज नहीं

मेरे भाईयो! जो खुद नहीं बना वह किसी की नहीं बना सका, जो खुद बना हो वजूद में किसी का मोहताज न हो, ज़िन्दगी के लिए रोटी पानी का मोहताज न हो, काम के लिए आराम का मोहताज न हो, निज़ाम चलाने के लिए किसी का मोहताज न हो, जानने के लिए आँख और कान का मोहताज न हो, ख़बरों के लिए औरों का मोहताज न हो, देने में उसके ख़ज़ाने कम न पड़ें, अता करने में घबराए नहीं, निज़ाम चलाने में जो थके नहीं, रात के अन्धेरे में और दिन के उजाले में जिसका देखना बराबर हो, दिल की धड़कन भी सुने और ज़ुबान का बोल भी सुने, समन्दर की तह में तैरने वाली मछलियों को भी देखे, हवा में उड़ने वाले परिन्दों को भी देखे। वह जैसे अपने सामने जिबराईल को देखता है ऐसे ही चटाई के नीचे चलने वाली च्यूंटी को भी देखता है। वह अल्लाह है और कोई नहीं। जो पैदा हुआ और मर गया अल्लाह की क़सम! वह किसी का काम न बना सकता है न बिगाड़ सकता है जो अपनी ज़िन्दगी पर क़ादिर नहीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद इसे लिखकर अपने घरों में लटका दो ﴿عرفت ربی بفسخ عزائمی﴾ मैंने अपने इरादों के टूट जाने से अपने रब को पहचाना। वह कौन है जो मेरे इरादों को तोड़ देता है? कोई है जो मुझ से ज़्यादा ताक़त वर है जो मेरी चाहत में हाएल हो जाता है, मेरे परोग्रामों में रुकावट बन जाता है कोई और है

जो मेरे इरादों के दर्मियान हाएल हो जाता है यह वह है जिसने आसमान व ज़मीन का थामा, सूरज को धहकाया, चाँद को चाँदनी बख़्शी बग़ैर लाइटों के, सितारों को झिलमिलाहट बख़्शी बग़ैर इलैक्ट्रिसिटी के, शहद को मीठा किया बग़ैर शक्कर के, आम को ख़ूबसूरत करके बग़ैर इत्र के महकाया, पानी का बहाने वाला, हवाओं को चलाने वाला, समन्दरों को रोकने वाला ﴿انا الذی امرت البحار وفقهت قولی﴾ मैंने समन्दरों को हुक्म दिया और उन्होंने मेरे हुक्म को समझा ﴿تاتی الامواج بامثال الجبال﴾ मौजे पहाड़ों की तरह आती हैं तो मेरा हुक्म हाएल हो जाता है। मेरे हुक्म की वजह से वापस हट जाती हैं। वह कौन सी ताक़त है जिसने कराची के समन्दरों को मुलतान और सिन्ध की तरफ़ आने से रोका हुआ है, न कोई बन्ध नज़र आता है न कोई दीवार नज़र आती है। वे तूफ़ानी मौजे रास्ते में दम तोड़ देती हैं। हदीसे क़ुदसी बता रही है कि मैं वह रब हूँ कि जिसने समन्दर की लगाम को रोका हुआ है। जो पैदा हुआ और मर गया वह अल्लाह की क़सम किसी का कुछ नहीं बना सकता। जो अपने वजूद में किसी का मोहताज हो, अपनी ज़िन्दगी की बक़ा में किसी का मोहताज हो तो मैं कैसे उससे उम्मीद रखूं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु इशा की नमाज़ पढ़ कर घर की तरफ़ निकले तो साथी पहरा दे रहे हैं। कहा यह क्यों पहरा है? कहा आपको ख़तरा है इस लिए पहरा दे रहे हैं। फ़रमाया किस की वजह से पहरा दे रहे हो, ज़मीन वालों से या आसमान वालों से? कहा आसमान वालों से पहरा कौन दे सकता है, हम ज़मीन वालों से पहरा दे रहे हैं। फ़रमाया जाओ सो जाओ, आसमान वाला जब तय करता है तो ज़मीन वालों के पहरे नफ़ा

नहीं देते, जब आसमान वाला तय नहीं करता तो यहां तीर व तलवार कुछ असर नहीं करता जाओ आराम करो वापस भेज दिया। तो मेरे भाईयो! आज मुसीबत पर अल्लाह की तरफ़ दौड़ ख़तम, तंगी में अल्लाह याद नहीं आता, मुसीबत व परेशानी में याद नहीं आता, जब सारे असबाब टूट जाते हैं जब अल्लाह को याद करते हैं। कोई कहे डाक्टर के पास जाओ, कोई कहे थाने दार के पास जाओ, कोई कहे वकील और जज के पास जाओ तो मैं अल्लाह से ताल्लुक़ काट कर अपने जैसी मंख़लूक़ के पास जाऊँ, मुझ से बड़ा अहमक़ कौन होगा। हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का वज़ीफ़ा मुक़र्रर था दीनार व दरहम। एक दिन आने में देर हो गई और आई बड़ी तंगी तो ख़्याल आया कि ख़त लिख कर याद दिलाऊँ। क़लम दवात मंगाया फिर एक दम छोड़ दिया। काग़ज़ सिरहाने रख कर सो गए। ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि मेरे बेटे होकर मख़लूक़ से मांगते हो? कहा तंगी आई तो फ़रमाया मेरे अल्लाह से क्यों नहीं मांगता, कहा क्या मांगू, फ़रमाया यह मांगो ऐ अल्लाह मेरे दिल में यक़ीन भर दे ﴿وقطع رجائی عمن سواك﴾ सारी मख़लूक़ से मेरी उम्मीदों को काट दें या अल्लाह तू ही मेरे दिल व दिमाग़ में समा जाए बाक़ी सारी मख़लूक़ से मेरी उम्मीद्दें कट जाएं

اللهم دعوت عنه قوتی ویقصر عنه عملی ولم تنتهی الیه رغبتی و
تبلغ مسئلتی ولم یجری علی لسانی مما اعطیت احد الاولین
والآخرین من الیقین تخف عنی به یا رب العالمین۔

" या अल्लाह तेरे ऊपर तवक्कुल का वह दर्जा जो मैं ताक़त से

न ले सका अपनी उम्मीद व तसव्वुर भी क़ायम नहीं कर सका, मेरा सवाल अभी तक उस तक नहीं पहुँच सका, मेरी ज़ुबान पर भी यक़ीन का वह दर्जा नहीं आ सका, वह इतना ऊँचा दर्जा है यक़ीन का जो मेरी ज़ुबान पर भी नहीं आया, मेरी दायरा-ए-मेहनत में न आया वह दर्जा या अल्लाह तूने अपने बन्दों में से किसी को दिया है, वह दर्जा मुझे भी नसीब फ़रमा दे। क्या ज़बर्दस्त दुआ है, बेटा यह दुआ मांग, कुछ दिन के बाद एक लाख के बजाए पन्द्रह लाख पहुँच गया।

सब अल्लाह के चाहने से होता है

तो मेरे भाईयो अल्लाह से उम्मीद ग़ैरों से ना उम्मीद ला इलाहा ने सब को काट दिया, अल्लाह सिर्फ़ एक अल्लाह से जोड़ दिया। ला इलाहा किसी से कुछ नहीं होता इलल्लाह, अल्लाह से सब कुछ करता है। ला इलाहा कोई मेरे काम नहीं कर सकता इलल्लाह अल्लाह मेरे सारे काम करता है। ला इलाहा का मतलब हम यह समझते हैं कि हम अल्लाह के सिवा किसी को सज्दा नहीं करते। ला इलाहा कोई मुझे ज़िन्दगी नहीं दे सकता इलल्लाह अल्लाह ही मुझे ज़िन्दगी देगा तो मैं ज़िन्दा हूंगा। ला इलाहा कोई मुझे ग़नी नहीं कर सकता इलल्लाह अल्लाह ही चाहेगा तो मुझे माल मिलेगा, ला इलाहा कोई मुझे फ़क़ीर नहीं कर सकता इलल्लाह अल्लाह ही चाहेगा तो मैं फ़क़ीर बनूंगा, ला इलाहा कोई मेरी हिफ़ाज़त नहीं कर सकता इलल्लाह अल्लाह चाहेगा मेरी हिफ़ाज़त करेगा, ला इलाहा कोई किसी की मुहब्बत किसी के दिल में पैदा नहीं कर सकता इलल्लाह जब अल्लाह चाहेगा तो मुहब्बत पैदा होगी, ला

इलाहा कोई मुझे खुश नहीं कर सकता इलल्लाह अल्लाह चाहेगा मुझे खुशी होगी, ला इलाहा कोई मुझे ग़म नहीं दे सकता इलल्लाह अल्लाह चाहेगा मेरे दिल में ग़म आएगा, ला इलाहा कोई ज़मीनों को सरसब्ज़ नहीं कर सकता, इलल्लाह अल्लाह चाहेगा सरसब्ज़ी आएगी, ला इलाहा ऐटम से हमारे मुल्क इज़्ज़त नहीं पाएगा इलल्लाह अल्लाह के चाहेगा तो इज़्ज़त मिलेगी। काएनात के ज़र्रे ज़र्रे पर अल्लाह तआला ने ला इलाहा की छुरी चलाई है। सबसे दिल हटा लो एक अल्लाह की तरफ़ दिल फेर लो। इब्राहीम का क़ौल बोलो नमाज़ के शुरू में सुब्हानाकल्लाहुम्मा पढ़ते हैं। यह एक दुआ नहीं बहुत सी दुआएं हैं। यहां पढ़ने की एक वजह यह भी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ी।

انی وجهت وجهی للذی فطر السموات
والارض حنیفا وما انا من المشرکین

सबसे मुँह मोड़ कर अल्लाह की तरफ़ फिर गया, सबसे कट गया अल्लाह से जुड़ गया, मैं मुश्रिकीन में से नहीं हूँ। अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुनो ﴿اللهم اسلمت نفسی الیك﴾ ऐ अल्लाह मैंने अपने आपको आपके हवाल कर दिया ﴿وضعت امری الیك﴾ मेरे सारे काम तेरे सुपुर्द हो गए तू ही मेरा सहारा है मैंने अपनी कमर तेरे साथ लगा दी ﴿لا ملجا ولا منجا من الله الا الیك﴾ कोई जाए पनाह नहीं कोई निजात नहीं सिवाए तेरी ज़ात के ﴿رغبة ورهبة الیك﴾ शौक़ में भी ख़ौफ़ में भी तू ही मलजा, तू ही पनाह, तू ही मौतमद, तू ही वकील, तू ही कफ़ील, तू ही शहीद, तू ही रक़ीब

کفی بالله شهیدا، کفی بالله وکیلا، وکفی بالله ولیا، وکفی با

لله عليما، وكفى بالله نصيرا، وكفى بالله هاديا و نصيرا

यह तबलीग़ का काम है कि अल्लाह की तारीफ़ करके लोगों का अल्लाह का दीवाना बना दो। जिसका सौदा नहीं बिकता वह शाम तक सदा लगाता है। शाम को अपने सढ़े गले सेब बेच कर घर आता है। आवाज़ में इतनी ताक़त अल्लाह ने रखी है।

इमाम ज़ैनुलआबिदीन रह० की दुआ

भाईयों! हम अल्लाह की आवाज़ लगाना सीखें। कोई दुनिया की ताक़त ऐसी नहीं जो इन्सान के दिल से अल्लाह की मुहब्बत को हटा सके। आज तक हम अल्लाह से अपनी ज़रूरते मांगते हैं और मांगने का हुक्म भी है लेकिन यह भी कभी मांगा कि या अल्लाह तू भी बता तू मुझसे क्या चाहता है ताकि मैं तेरी चाहत को पूरा करके तुझे ख़ुश कर दूँ, कभी मांगा है? दूसरी मेहनत यह है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत दिलों में बिठा कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर खड़ा कर देना। हम खड़ा नहीं कर सकते। यह दुनिया चूँकि दारुल असबाब है लिहाज़ा जब ला इलाहा इलल्लाह की दावत चलती है तो अल्लाह अपनी मुहब्बत भी देता है अपने नबी की मुहब्बत भी दे देता है। यह मुहब्बत ऐसी चीज़ नहीं कि घर में बैठे बैठे मिल जाए। यह ऐसा क़िस्सा नहीं है। हां धक्के खाने पड़ते हैं। अल्लाह मख़लूक़ की मुहब्बत में गिरफ़्तार कर देगा और इसी में मर जाएगा। मस्‌अले को हल करने का जो तरीक़ा है ﴿ففروا الى الله﴾ अल्लाह की तरफ़ दौड़ने का मतलब यह है कि अल्लाह के कलिमों

में आ जाओ और उसके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक तरीक़ा अपना लो। यह तबलीग़ की मेहनत है कि हर मुसलमान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत को दुनिया में फैलाने के लिए जान व माल से मेहनत करे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत पर, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़िस्से, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ुर्बानियां, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ज़ाइल दिमाग़ में मुस्तहज़र हों। उनको बयान करें, उनको बताएं, ताकि लोगों के दिलों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत पैदा हो जाए। उम्मत सोई हुई है, उम्मत बेदार हो जाए। अभी मुहब्बत का वह दर्जा नहीं है कि जो सुन्नत के ख़िलाफ़ ज़िन्दगी को हटा दे और इत्तेबाए सुन्नत पर ज़िन्दगी को ले आए। हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ बुला रहे हैं और अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं और अल्लाह के दीन की तरफ़ बुला रहे हैं, जन्नत की तरफ़ बुला रहे हैं, आख़िरत की तरफ़ बुला रहे हैं। सारी दुनिया को सुना रहे हैं कि भाईयो अल्लाह की मान लो मस्अला हल हो जाएगा। अल्लाह कहता है मुझसे मिलो मस्अला हल हो जाएगा। अब अल्लाह से कैसे मिलें। किसी एस पी से मिलने के लिए वक़्त लेना पड़ता है, अल्लाह कितने करीम हैं कि उन से मिलने के लिए कोई वक़्त नहीं लेना पड़ता, या अल्लाह कहो लब्बैक। इमाम ज़ैनुलआबिदीन रह० जब रात को उठते तो मुसल्ले पर यह मुनाजात करते थे ﴿اللهم غابت النجوم﴾ या अल्लाह सितारे भी सो गए ﴿نامت العيون﴾ और लोगों की आँखें भी

बोझल हो गयीं ﴿نام الملوك﴾ दुनिया के बादशाह सब सो गए ﴿وقامت الحراس﴾ और पहरेदार खड़े हो गए या अल्लाह ﴿انت الحي القيوم لا تاخذك سنة ولا نوم وبابك مفتوح للسائلين﴾ तेरा दरवाज़ा दिन को भी खुला हुआ है और रात को भी खुला हुआ है ﴿وعبدك ببابك﴾ या अल्लाह तेरा ग़ुलाम तेरे दर पे आया है।

अल्लाह तास्सुर से पाक है

भाईयों! अल्लाह दो जहां का बादशाह किसी वक़्त भी आप अल्लाह कहते हो तो आगे वह कई दफ़ा कहता है लब्बैक, लब्बैक, लब्बैक बोल, बोल मेरे बन्दे मैं हाज़िर हूँ तो अल्लाह के दरबार तक पहुँचने के लिए तो तौबा की ज़रूरत है कि सबसे तौबा करवाई जाए और ख़ुद भी तौबा करें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक तरीक़े पर आने की मेहनत की जाए। यह इस उम्मत का काम है, जो नबी काम करते थे वही काम हमारा भी है कि अल्लाह की अज़मत, हैयबत सुना कर तौबा करवा देना। अल्लाह की प्यारी सिफ़्त यह है कि अल्लाह तास्सुर से पाक हैं । जब मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाए जब तक उसका असर है मैं मॉफ़ नहीं करता। जब असर ख़तम हो जाता है तो आदमी मॉफ़ कर देता है। जब हम गुनाह करते हैं तो अल्लाह पर कोई असर नहीं होता। कहाँ तक उनकी मिसाल सुनें। हदीस क़ुद्सी है ऐ मेरे बन्दों ﴿ولو بلغ ذنوبك الى عنان السماء﴾ तू इतने गुनाह करे कि ज़मीन भर जाए, फ़िज़ा और ख़ला भी भर जाए, चाँद व सूरज भी भर जाएं और तेरे गुनाह आसमान की छत के साथ लग जाएं। एक बात इसमें यह भी वज़ाहत करने की है कि पूरी दुनिया के

मुसलमान और काफ़िर मिल कर जो पहले थे, जो अब हैं, जो आएंगे, सब मिलकर गुनाह करें तो इतने नहीं हो सकते कि आसमान तक चले जाएं, अल्लाह कहते हैं कि तुम में से एक इतने गुनाह करे कि आसमान तक चले जाएं तो ग़म न करे। कोई यूं कह दे या अल्लाह मॉफ़ कर दें तो मैं उसी वक़्त मॉफ़ कर देता हूँ। जाओ कितने मज़े की बात है अगर अल्लाह तआला यूं कहता कि जो गुनाह करेगा कोई मॉफ़ी नहीं तो हम कुछ नहीं कर सकते थे लेकिन अल्लाह कहता है कि तुम्हारा सारा दामन गुनाह करने से दाग़दार हो जाता है तो तुम्हें मॉफ़ करने से तुम्हारा दामन ऐसा साफ़ हो जाता है, जैसे सफ़ेद कपड़ा धोने से साफ़ हो जाता है। तुम्हारी पूरी ज़िन्दगी की किताब ऐसी साफ़ कर दूंगा कि तुम्हारे गुनाह का एक दाग़ उस पर बाक़ी नहीं छोडूंगा। ऐसे मेहरबान आक़ा, ऐसे करीम आक़ा हैं हमारे अल्लाह तआला।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत की इन्तेहा

रसूल को राज़ी करने वाले बन जाएं। हज़रत तल्हा बिन बरा रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आकर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाँव चूमने लगे और कहने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कोई कलिमा बता दें कि मैं उसको पूरा करके आपको राज़ी करूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं राज़ी हूँ। कहा कुछ तो फ़रमाइए। यह जो बड़े बड़े ऑफ़िसरो से

ताल्लुक़ क़ायम करते हैं तो बार बार कहते हैं कि सर कोई ख़िदमत तो बताइए हांलाकि यह उनसे छोटा है, क्या करना है आगे कोई काम भी निकालना है चाहे जाएज़ या नाजाएज़। यहाँ भी कोई और नक़्शा हो रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कोई काम तो बताइए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे हैं मैं क्या बताऊँ? भाई मैं तो राज़ी हूँ और ख़ुश हूँ, नहीं नहीं कुछ तो बताइए, नहीं छोड़ रहा है पाँव पकड़ा हुआ है चूमते जा रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अच्छा, उनका इम्तिहान लिया कि जाओ माँ का सिर ले कर आओ। यह आज का ज़माना नहीं था कि माँ बाप से नौकरों वाला सुलूक हो जाए। यह वह ज़माना था जहाँ माँ बाप के लिए गर्दनें कट जाती थीं। हाँ बातों से बात निकल आती है। बुख़ारी शरीफ़ में जो दूसरी रिवायत है कि जिबराईल अलैहिस्सलाम ने पूछा कि क़यामत की निशानी तो बताइए। आप ने फ़रमाया माँएं जो हैं उनके साथ नौकरानियों जैसा सुलूक होगा। माँ नौकर से भी कम दर्जे में चली जाएगी तो समझ लो क़यामत का डंका बजने वाला है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम माँ का सिर लेकर आओ तो यह उठे और तलवार लेकर भागे जैसे किसी काफ़िर का सिर लेने जा रहे हैं फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पीछे दौड़ाया कि अरे भाई! बुलाओ बुलाओ, कहाँ मैं तो जोड़ने आया हूँ तोड़ने नहीं आया हूँ सिर्फ़ मैं तुम्हें देख रहा था कि तुम कहाँ तक हो।

फिर यह जब हो गए बीमार वह जगह मैं देख कर आया हूँ जहाँ वह बीमार हुए और उनका इन्तेक़ाल हुआ मदीने में अब भी

इस जगह निशानी मौजूद है लेकिन हर एक को पता नहीं चलता लेकिन जो मदीने के आसार जानने वाले हैं वे बता सकते हैं। जब मैं वहां गया उस वह वक़्त मस्जिदे नबवी से चार पाँच मील का फ़ासला था। जब हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु बीमार हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हाल पूछने के लिए आए तो रास्ते में यहूद का क़बीला बनू क़रीज़ा रहता था। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहाँ पहुँचे तो देख कर फ़रमाया लगता है कि यह बचेगा नहीं। जब इनका इन्तेक़ाल हो जाए तो मुझे बुलाना मैं इनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाऊँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने के बाद हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु को होश आ गया, कहने लगे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आए थे कहा हाँ। कहा क्या कहा था। कहा गया कि यह कहा था, कहने लगे न न उनको न बुलाना। जब मैं मर जाऊँ तो उनको मत बुलाना। रास्ते में यहूदी हैं रात का वक़्त होगा कोई तकलीफ़ पहुँचा दे तो ऐसा करना जब मैं मर जाऊँ तो दफ़न करके फ़ज्र की नमाज़ वहाँ जाकर पढ़ लेना और फिर बता देना। वह जिस मस्जिद में नमाज़ पढ़ते थे वह मस्जिद अभी है उसके आसार खड़े हैं। जब इनका इन्तेक़ाल हुआ तो इनकी तजहीज़ तक्फ़ीन करते करते फ़ज्र हो गई तो उनकी मैयत को लेकर जन्नतुल बक़ी आए और फ़ज्र से पहले उनको दफ़न कर दिया फिर फ़ज्र की नमाज़ में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इत्तेला दी कि या रसूलुल्लाहं सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तेक़ाल हो गया, कहा अल्लाह तुम्हारा भला करे मैं ने कहा था मैं जनाज़ा पढ़ाऊँगा। कहा उन्होंने हमें मना

कर दिया था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ न हो फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी क़ब्र पर जाकर हाथ उठाए ﴿اللهم ان انقل طلحه تضحك اليك وضحك اليك﴾ या अल्लाह जब तल्हा तेरे दरबार में पेश हो तो तू उसे देख कर मुस्करा रहा हो और वह तुम्हें देख कर मुस्करा रहा हो। यह दुआ दी।

दुनिया और आख़िरत के तमाम मसाइल का हल सिर्फ़ अल्लाह तआला के पास है

तो भाईयो! दुनिया और आख़िरत बनानी है तो अल्लाह से जुड़ो और अल्लाह से जुड़ना है तो उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जुड़ो। उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को सीखना और उसकी दावत देना कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी सबसे आला है, अरफ़ा है, सब इसमें है, सबसे अशरफ़ है, सबसे अफ़ज़ल है, सबके तरीक़े टूट गए सिर्फ़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा बाक़ी है जिस पर अमल करके जन्नत पाइए। जिसे दुनिया चाहिए, जिसे औलाद चाहिए, जिसे मुहब्बतें चाहिएं, जिसे जो चाहिए दुनिया और आख़िरत की भलाई तो वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े बग़ैर नहीं मिल सकती। हम आप नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ दावत दें जैसा कि सियासत दान लोग कहते हैं कि हमें वोट दे दो हम तुम्हारे मस्‌अले हल कर देंगे तो हम कहते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर आ जाओ अल्लाह तुम्हारे मसूले हल

कर देगा। हम भी दावत दें। लोग कहते हैं कि मुस्लिम लीग को वोट दे दो सड़कें बन जाएंगी, अस्पताल बन जाएंगे, बिजली आ जाएगी मिसाल दे रहा हूँ, नहीं नहीं ये हम से ज़्यादा ग़रीब हैं जो हम से ज़्यादा फ़क़ीर हो वह हमें क्या ग़नी करेगा, जो हम से ज़्यादा ख़ौफ़ ज़दा हो वह हमें क्या अमन देगा। जो एस पी साहब बाज़ार में आ रहा हो तो आगे पीछे दाएं बाएं चारों तरफ़ पहरा। हम भी कैसे सादा मुसलमान हैं उन से कहते हैं कि हमें अमन दो, अमन क़ायम करो, क्या ये आपको अमन देंगे। उससे अमन मांगो जिसकी सिफ़्त मामून है। ये खुद महफ़ूज़ नहीं आपको क्या अमन देंगे, अमन उनसे मांगो जो खुद मामून हों और महफ़ूज़ हों और वह सिर्फ़ अल्लाह है। उनसे क्यों मांग रहे हो जो खुद पहरे के मोहताज हैं।

दुनिया और आख़िरत के मसाइल अल्लाह के हाथ में हैं उनसे लेने का रास्ता मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी है। ऊपर आसमान में अल्लाह एक और ज़मीन में हबीब एक, फिर जो इस तरीक़े पर आता है वह भी अल्लाह का हबीब बन जाता है। अल्लाह ने किसी नबी की जान की क़सम नहीं खाई, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर की क़सम खाई।

जिस की इ़ज़्ज़त की लाज अल्लाह रखे और उसकी ज़िन्दगी हम उठा कर कूड़े में फेंक दे और कहें कि हमारे मस्अले हल नहीं होते। लेकिन सुन्नत की ख़ैर है। कोई बात नहीं सुन्नत ही तो है, क्या हरज है सुन्नत को छोड़ना इतना बड़ा जुर्म नहीं लेकिन सुन्नत को हल्का समझना हराम है और यह बोल भी सुन्नत को छोड़ने से बड़ा जुर्म है। जो कोई अल्लाह का हुक्म तोड़ दे तो वह काफ़िर

नहीं होता लेकिन अल्लाह के हुक्म का मज़ाक़ उड़ाए तो काफ़िर हो जाता है। नमाज़ छोड़ने से काफ़िर नहीं होता लेकिन नमाज़ का मज़ाक़ उड़ाने से काफ़िर हो जाएगा। एक बोरी खाद कपास से कम कर दिया जाए तो कपास का रंग पीला पड़ जाता है तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत छोड़ने से ईमान पीला नहीं पड़ेगा। आप का ईमान इतना ताक़त वर है कि सुन्नत छोड़ने उसको कुछ नहीं होता। यह कहाँ की नादानी है और जिहालत है तो इस लिए मेरे भाईयो! हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़्मत दिलों में उतारना हमारी मेहनत है। यूँ आता है सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के बारे में कि अगर उनको सुन्नत के ख़िलाफ़ कहा जाता तो उनकी आँखों में ख़ून भरने लगता था कि तुम हमें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े के ख़िलाफ़ करवाना चाहते हो। अल्लाह के बाद सबसे बड़े हमारे मोहसिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। इससे बड़ा एहसान कोई न कर सका कि अपनी उम्मत के लिए पेट पर पत्थर बांध लिए, अपनी बेटी को भूका रखा, अपनी उम्मत के लिए अपनी औलाद की क़ुर्बानी दी उम्मत के लिए। हर मुसलमान आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी सीख ले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत अर्श से लेकर फ़रिश्तों तक, नबियों के भी नबी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद है कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी दरख़्त के पास से गुज़रते तो दरख़्त से आवाज़ आती अस्सलाम अलैकुम या रसूलुल्लाह। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पत्थर से सलाम की आवाज़ आती। आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के अल्लाह ने दस नाम रखे, क्योंकि मुहब्बत ज़्यादा है एक नाम से अदा नहीं होती जैसा माँ अपने बच्चे को पुकारती है मेरा जिगर, मेरा दिल, मेरी जान, मेरी आँख वग़ैरह वग़ैरह। कभी दिल बना दिया, कभी आँख बना दिया क्योंकि माँ के अन्दर मुहब्बत ज़्यादा है इस लिए मुख़तलिफ़ नामों से पुकारती है। अल्लाह ने अपने हबीब के दस नाम रखे।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को अपनाने में दोनों जहान की कामयाबी है

तो मेरे भाईयो! हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को अपनाएं। अगर दुनिया और आख़िरत बनानी है तो अल्लाह और रसूल के दामन में आएं तो सब मसाइल हल होंगे फिर किसी के पीछे भागने की ज़रूरत नहीं।

तबलीग़ कोई जमात नहीं, तबलीग़ को जमात कहना ग़ल्ती है। हर मुसलमान के ज़िम्मे नमाज़ है इसी तरह हर इन्सान जो ख़त्मे नबुव्वत को मानता है तो उसके ज़िम्मे तबलीग़ का काम है। बहुत से मुसलमान नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात का एहतिमाम नहीं करते तो क्या ये एहकामात मॉफ़ हो गए हैं आज का मुसलमान तबलीग़ का काम नहीं कर रहा है तो इससे तबलीग़ तो मॉफ़ नहीं हो गई। यह ज़िम्मा तबलीग़ जमात ने नहीं लगाया अगर आप हम से जोड़ेंगे तो हमें देखिए कि हम अच्छे हैं तो आप कहेंगे तबलीग़ का काम अच्छा है। अगर हम बुरे हैं तो आप कहेंगे कि तबलीग़ का काम बुरा है। नहीं भाई तबलीग़ ख़त्में नबुव्वत का काम है। आप

इसको नबुव्वत का काम समझें तो आप हमारी बुराई से असर नहीं लेंगे जैसे किसी नमाज़ी के अन्दर बुराई देख कर नमाज़ से नफ़रत नहीं आती लेकिन उसकी नफ़रत आती है नमाज़ की नफ़रत नहीं आती और तबलीग़ का क़िस्सा यह है कि किसी तबलीग़ी को देख कर तबलीग़ से नफ़रत शुरू कर दो क्यों इसको तबलीग़ी जमात का काम समझते हैं, इसे राइविन्ड से मन्सूब समझते हैं, नहीं भाई, तबलीग़ को ख़त्मे नबुव्वत से जोड़िए अगर नमाज़ का मैयार नमाज़ी को बनाया जाए तो आज नमाज़ छोड़ देना चाहिए। अगर हज का मैयार हाजी को बनाया जाए तो हज आज हज छोड़ देना चाहिए इसी तरह तबलीग़ का मैयार तबलीग़ वालों को बनाया जाए तो वाक़ई तबलीग़ छोड़ दें लेकिन मेरे भाईयो नमाज़ का मैयार नमाज़ी नहीं है अल्लाह का अम्र है, हज का मैयार हाजी नहीं अल्लाह का हुक्म है, रोज़े का मैयार रोज़दार नहीं अल्लाह का हुक्म है इसी तरह तबलीग़ का मैयार तबलीग़ वाले नहीं हैं बल्कि तबलीग़ का मैयार ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा है और उसके रसूल का हुक्म है। ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ मेरे एहकाम ग़ाएबीन तक पहुँचा दो अगर आप इसे तबलीग़ वालों से जोड़ेंगे तो आप तबलीग़ से नफ़रत करेंगे लेकिन तबलीग़ वालों से नहीं करेंगे, एक ग़लत फ़हमी पैदा हो गई कि तबलीग़ को जमात समझते हैं और तबलीग़ राइविन्ड वालों का काम समझते हैं जो बिस्तर उठा कर जा रहे हैं ये तबलीग़ वाले हैं हम तबलीग़ वाले कोई नहीं। यह ग़लत फ़हमी दूर करने की ज़रूरत है। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस बरस मक्का मुकर्रमा में मेहनत की नबुव्वत के गयारहवें साल मदीना मुनव्वरा आए,

अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु वग़ैरह को दावत दी, ये मुसलमान हो गए, अगले साल बारह आदमी आए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आख़री ख़ुत्बा दिया जिसके आख़री अल्फ़ाज़ ये हैं ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ अब मेरा पैग़ाम आगे पहुँचाना तुम्हारे ज़िम्मे हो गया। यह सारा पस मन्ज़र देखने के बाद आप ग़ौर करें कि यह हदीस किन मरहलों से गुज़र कर बोली गई है कि मेरा पैग़ाम आगे पहुँचा दो, तो तबलीग़ को हम से न जोड़ें अच्छा एक बात और है जो आदमी चिल्ला न लगाया तो उसके लिए झूठ बोलना और जो चिल्ला लगाए उसके लिए झूठ बोलना हलाल हो गया। दाढ़ी रखकर झूठ बोल रहा है और जो दाढ़ी मुंढवाते हैं उनके लिए झूठ बोलना हलाल हो जाता है। देखो जी दाढ़ी रखकर झूठ बोल रहा है तो क्या जो दाढ़ी न रखे उसके लिए झूठ बोलना हलाल हो गया है। अब दाढ़ी मुंडवा लें ताकि झूठ बोलना आसान हो जाए। ऐसी जहालत आ गई है कि दाढ़ी मुंडवा लो सारा हराम जाएज़ दाढ़ी रख लो तो सारा हराम नाफ़िज़ करो। भाई अब झूठ बोलना भी छोड़ दो, नाप तोल में कमी करना भी छोड़ दो क्योंकि दाढ़ी रख ली है। अरे ख़ुदा के बन्दों यह पाबन्दी कलिमे ने लगाई है दाढ़ी ने नहीं लगाई है। पाबन्दी कलिमे ने लगाई है तबलीग़ ने नहीं लगाई। तबलीग़ में है फिर भी झूठ बोल रहा है और तबलीग़ में गया फिर भी बीवी का हक़ ज़ाए कर रहा है, तबलीग़ में होकर बदतमीज़ी कर रहा है। बदतमीज़ी न करो कलिमे ने कहा है, तबलीग़ नहीं कहा है, कलिमे ने कहा झूठ मत बोलो, कलिमे ने कहा कि ज़िना न करो, कलिमे ने कहा नाप तोल में कमी न करो, कलिमे ने कहा शराब न पियो, तबलीग ने

कब कहा है? तबलीग़ भी एक हुक्म है और हुक्मों की तरह। नमाज़ भी एक हुक्म है तबलीग़ भी एक हुक्म है। इसी तरह रोज़ा, ज़कात, हज की तरह तबलीग़ भी एक हुक्म है। नाप तोल में कमी न करना भी एक हुक्म है, झूठ छोड़ना भी एक हुक्म है, दाढ़ी रखना भी एक हुक्म है तो इस ग़लत फ़हमी से मेरे दोस्तों भाईयो निकलने की ज़रूरत है।

ज़ाहिर व बातिन एक करो

यह तबलीग़ सिर्फ़ हमारा ज़िम्मा नहीं है जो चिल्ला लगाए वह तबलीग़ वाला जो चिल्ला न लगाए वह आज़ाद है। जो दाढ़ी रखे वह पूरी शरीअ्त पर चले जो दाढ़ी न रखे वह मादर पिदर आज़ाद है। यह शैतान ने धोका दिया अन्दर का ठीक होना चाहिए बाहर की ख़ैर है। मैं आपको गन्दे गिलास में पानी दूं नापाक न हो, गन्दे से मुराद कहीं सालन लगा हुआ है, कहीं तरी लगी हुई है, कहीं तिनके लगे हुए हैं और पानी में कुछ रेत पड़ी हुई हो और कुछ तिनके पड़े हुए हों आपकी बीवी आपको ऐसे गिलास में पानी पेश करे तो आप कहेंगे कैसी बदतमीज़ है तुझे नज़र नहीं आता गन्दा गिलास और पानी भी में भी तिनके, वह कहे कि पानी बिल्कुल पाक है, गिलास पाक है पानी पाक है। इसका बातिन पाक है यानी अन्दर से पाक है आप इसके ज़ाहिर को न देखें ज़ाहिर की ख़ैर है, ज़ाहिर से कुछ नहीं होता सिर्फ़ रोटी ही तो लगी हुई है, थोड़ा सा कल का सालन ही तो लगा हुआ है, थोड़ी सी दाल ही तो लगी हुई है, नापाक थोड़े है? नापाक होने से

बातिन ख़राब होता है। गन्दे होने से ज़ाहिर ख़राब होता है तो आप वही गिलास उसके मुँह पर मार देंगे कि साफ़ गिलास में पानी लाओ।

अपने लिए बातिन भी ठीक हो ज़ाहिर भी ठीक हो और अल्लाह के लिए बातिन हो गन्दा ज़ाहिर हो ठीक, जिस परनाले में गन्दगी पड़ी तो क्या उसमें पाक पानी आ सकता है। जिस परनाले में पाख़ाना पड़ा हो क्या उसमें से पानी पाक आ सकता है जिसका ज़ाहिर गन्दा हो उस का बातिन ठीक कैसे हो सकता है?

जिस का ज़ाहिर नबी के तरीक़े के ख़िलाफ़ उसका बातिन कैसे नबी के तरीक़े पर हो सकता है तो मेरे भाईयो! तबलीग़ अल्लाह के रसूल का दिया हुआ काम है।

सारी दुनिया के इन्सानों को दीन की दावत देना हमारे ज़िम्मे है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को वजूद देना यह दुनिया के इन्सानों पर सबसे बड़ा एहसान है।

सबसे बड़ा मोहसिन आज वह जो लोगें को अल्लाह से मिला दे और रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी पर लादे यह सबसे बड़ा एहसान करना वाला है। सारी दुनिया हमारा मैदान है।

हमारी ज़िन्दगी कैसी होनी चाहिए?

पूरे पाकिस्तान में एक भी बेनमाज़ी न हो तो फिर देखना अल्लाह की रहमत के दरवाज़े कैसे खुलते हैं। अज़ान हो जाए तो सारे बाज़ार बन्द हो जाएं। कैसी अजीब बात है हड़ताल हो जाए

तो बाज़ार ज़बरदस्ती बन्द करवाने पड़ते हैं, अज़ान हो तो सारे बाज़ार खुले पड़े हैं अज़ान के बाद बाज़ार बन्द करवाएं फिर देखो कैसा सोना बरसता है आपकी दुकानों में।

बाज़ार सुनसान हो जाएं, क्या हुआ नमाज़ हो रही है। इधर दुकानों को भी नमाज़ के ताबे कर देते हैं। कहीं एक बजे, कहीं डेढ़ बजे, कहीं दो बजे। एक भाई इधर पढ़ लें एक भाई उधर पढ़ लें। दुकानें चलती रहें दुकान बन्द न हो। बन्द करो दुकानों को अज़ान के बाद। जो काम अज़ान से पहले बन रहा था अभी वही काम दुकान बन्द करने से बनेगा। अल्लाह के सामने सिर झुकाओ कि नमाज़ से इश्क़ हो जाए। हदीस में ﴿جعلت قرة عيني في الصلوة﴾ मेरी आँखों की ठन्डक नमाज़ में है जो सही तरीक़े से नमाज़ पढ़ता है अल्लाह की क़सम मुसल्ले पर बैठ कर अल्लाह उसका मस्अला हल कर देगा फिर थानेदार या किसी वज़ीर के पास जाना नहीं पड़ेगा। इसको इसकी जाएनमाज़ काफ़ी है। कौन सी नमाज़? जब कहें अल्लाहु अक्बर तो सलाम फेरने तक और कोई न आने पाए। निगह बान बिठा दें। ख़बरदार! कोई न आए। यह नमाज़ आप सीख लें। अल्लाहु अक्बर, अल्लाह के सिवा कोई सलाम फेरने तक आप हों और अल्लाह हो फिर देखो उस नमाज़ से क्या होता है। नमाज़ पढ़िए। यह नमाज़ ऐसे नहीं आएगी, मेहनत करने से यह पैदा होगी। इतनी जाज़वियत है नमाज़ में कि एक शख़्स कहता है कि मैं हरम शरीफ़ में बैठा हुआ था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए जूता हाथ में दाढ़ी से वुज़ू का पानी टपक रहा है। जूते को रखा नमाज़ की नियत बांधी। कहता है मैं देखता रहा कि यह कहां रुकू करते हैं जो गाड़ी चली चलती रही

हत्ताकि वन्नास पे जा कर रुकू किया एक रक्अत में पूरा क़ुरआन। हमें तो ﴿قل هو الله احد﴾ भी लम्बी नज़र आती है तो नमाज़ सीखो भाई लोग चारों रक्आत में क़ुल हुवल्लाह पढ़ रहें हैं। चार सूरतें तो याद कर लें ताकि हर रक्अत में अलग अलग सूरत पढ़ ली जाए। एक ही सूरत को चारों रक्आत में पढ़ना मकरूह है नमाज़ तो हो जाएगी कम से कम चार सूरतें याद कर लें। दुआए क़ुनूत नहीं आती तो वहां भी क़ुल हुवल्लाहु अहद।

अब भाई क़ुल हुवल्लाहु अहद से दुआए क़ुनूत कैसे अदा होगी अगर ﴿ربنا اتنا في الدنيا﴾ पढ़ लें तो ज़िक्र तो हो जाएगा लेकिन दुआए क़ुनूत की जगह क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ लें तो नमाज़ लौटाना पड़ेगी, अगर दुआए क़ुनूत नहीं आती तो ﴿رب اجعلني مقيم الصلوة﴾ पढ़ लें या ﴿ربنا اتنا في الدنيا﴾ पढ़ लें तो नमाज़ हो जाएगी दुआए क़ुनूत याद होने तक। वित्र क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ने से अदा नहीं होती। मेरे भाईयो नमाज़ों को सीखें ऐसी नमाज़ अल्लाहु अक्बर से लेकर सलाम तक किसी का ध्यान न आए और अपने अख़लाक़ ठीक करना, नबी के अख़लाक़ सीखना, अपने से दूसरों को नफ़ा पहुँचाना, नबुव्वत वाले अख़लाक़ अपने अन्दर पैदा करें, जो न दे उसको दो, जो तोड़े उससे जोड़ो, जो बुरा करे उससे अच्छा करो, जो ज़ुल्म करे उसे माफ़ करो। जो यह चार काम करेगा अल्लाह उसका हाथ पकड़ कर इज़्ज़त की चोटी पर बिठा देगा। हमारा माशरा इन्तेक़ामी माशरा है। हमारी माशरत में नबुव्वत वाले अख़लाक़ कोई नहीं। अजीब बात है जो सलाम करे उसे सलाम करते हैं जो न करे उसको नहीं करते। जो पूछ ले उसे पूछते हैं जो न पूछे उसे नहीं पूछते। जानवर को रोटी दिखाई वह

क़रीब हो गया डंडा दिखाया तो वह दूर हो गया। यह तो जानवर की सिफ़्त है। मुसलमान की सिफ़्त यह हो कि जो सलाम न करे उसको भी सलाम करो, जो न दे उसको भी जा कर दो, जो ज़ुल्म करे उसे माफ़ करो, जो बुरा सुलूक करे उससे अच्छा सुलूक करो। यह चार बुनियादें हैं हुज़ुर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले अख़लाक़ को अपनाने की।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु आए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे पड़ौस में एक औरत है दिन को रोज़ा रखती है रात को तहज्जुद पढ़ती है लेकिन दूसरे पड़ौसियों को तंग करती है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई भलाई नहीं यह दोज़ख़ में जाएगी, कोई ख़ैर नहीं।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं चाहता हूँ कि मेरा ईमान कामिल हो जाए तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अख़लाक़ अच्छा बना ले तेरा ईमान कामिल हो जाएगा, तू अपने अख़लाक़ ठीक कर ले।

अब पूरी दुनिया में दावत देने के लिए ये आमाल हैं, अख़लाक़ बनाना, दावत देना, तालीम करना, इबादत करना, ख़िदमत करना।

हमारा दीन मुकम्मल है

आप ग़ौर फ़रमाएं सारी दुनिया में दीन फैलाने का ज़रिया दावत है। दावत से ही दीन फैलता है और अल्लाह की तमाम रहमतों को लेने का ज़रिया इबादत है जितनी इबादत करेगा उतनी ही

अल्लाह की रहमतें आएंगी। तमाम भलाईयों को सीखने का ज़रिया तालीम है। तालीम में जो कोई महारत हासिल करेगा, कुछ इल्म सीखेगा तब जाकर भलाईयों का पता चलेगा। तमाम लोगों में उलफ़त व मुहब्बतपैदा करने का ज़रिया ख़िदमत है। ये नबुव्वत वाले आमाल हैं, ये दीन की मेहनत करने वालों के अख़लाक़ हैं। इस उम्मत को यह काम मिला है कि ख़ुद अल्लाह से जुड़ कर औरों को अल्लाह से जोड़ना। इस पर इस उम्मत को सबसे आला और सबसे ऊँचा मक़ाम मिला है। सबसे अफ़ज़लियत है। मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से पूछा कि मेरी उम्मत से अच्छी कोई उम्मत है, आपने उन पर बादलों से साया किया, मन-सलवा खिलाया? अल्लाह तआला ने फ़रमाया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को सारी उम्मतों पर वह फ़ज़ीलत हासिल है जो मुझे अपनी मख़लूक़ात पर हासिल है।

अमल थोड़ा और अज्र ज़्यादा, यह इस उम्मत की शान है

सोच लो भाईयो! ये सबसे बाद में आए सबसे पहले जन्नत में जाएंगे। यहूदी और इसाई ऐतराज़ करेंगे कि यह बाद में आए और पहले जा रहे हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे मैंने तुम से जो वायदा किया पूरा कर दिया? कहेंगे हां वह तो पूरा कर दिया। फिर फ़रमाएंगे तुम कौन हो दख़ल देने वाले, मेरी मरज़ी है जिसे जितना चाहूँ उतना दूं। बाद में आए पहले जा रहे हैं, काम थोड़ा अज्र ज़्यादा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बनी

इसराईल में चार नबियों ने अस्सी साल तक जिहाद किया तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ग़मगीन हो गए हमारी तो अस्सी साल उम्र भी नहीं। अल्लाह ने कहा लो ﴿ليلة القدر خير من الف شهر﴾ ऐ मेरे हबीब की उम्मत तुम एक रात खड़े होकर मेरी इबादत करो तो अस्सी साल के जिहाद से ज़्यादा अज्र दे दूंगा। इस उम्मत को क़यामत के दिन नबियों जैसी शान मिलेगी। ये सबसे ऊँची जगह पर होगी। उस दिन सारी उम्मतें तमन्ना करेंगी कि काश हम भी इस उम्मत में होते। नमाज़ उनकी ज़्यादा, रोज़े उनके ज़्यादा, उनकी ज़कात सौ में दस रूपए, हमारी सौ में ढाई रूपए, उनका रोज़ा चौबीस घन्टे का, हमारा रोज़ा सुबह से शाम तक, उनका रोज़ा बोलने से भी टूट जाएगा सच बोलें तो भी रोज़ा टूट जाएगा हम झूठ भी बोलें तो हमारा रोज़ा नहीं टूटेगा ﴿فلن اكلم اليوم انسيا﴾ मरयम कह रहीं हैं आज मेरा रोज़ा है मुझे बोलना कोई नहीं। हम सारा दिन झूठ बोलें रोज़ा टूटेगा नहीं। ऐसी आसानियां, ऐसी गुन्जाइशें तो फ़ज़ीलत किस चीज़ की वजह से? ये घरों में नहीं बैठते मेरे पैग़ाम को लेकर दुनिया में फिरते हैं:-

कभी अर्श पर कभी फ़र्श पर कभी दर-ब-दर कभी उनके घर
ग़मे आशिक़ी तेरा शुक्रिया मैं कहाँ से गुज़र गया

यानी कोई क़रार नहीं, कोई उनका घर नहीं। सारा जहां उनका घर है। हर मुल्क मुल्क मा अस्त मुल्क। उनकी सुबह उनकी शाम, जैसे सूरज चाँद, उनकी गर्दिश है उसी तेज़ रफ़्तारी से उनके किलोमीटर फिरने की गर्दिश है। जैसे सूरज चाँद और उनकी गर्दिश से आलम रोशन होता है ऐसे ही इनकी गर्दिश से लोगों के

दिल रोशन होते हैं। इनकी गर्दिश मिटेगी तो जैसे सूरज गुरूब होता है तो ऐसे ही रात की अन्धेरी आ जाती है। जब इनके ईमान की मेहनत गर्दिश करेगी तो लोगों के दिलों में दुनिया तारीक हो जाएगी, रात छा जाएगी। यह तो जान खपाने की मेहनत है। सब कुछ लग गया फिर सस्ता सौदा है कि उनके और नबियों के दर्मियान सिर्फ़ एक दर्जे का फ़र्क़ होगा और अल्लाह तआला ने जन्नतुल फ़िरदौस को अपने हाथ से बनाया है बाक़ी सारी जन्नत को अपने अम्रे कुन से बनाया है। जन्नतुल फ़िरदौस को अपने हाथ से बनाया है फिर उस पर मोहर लगाई किसी को नहीं दिखाई फिर दिन में पाँच मर्तबा उसको खोलता है और उसको कहता है ﴿ازدادی طیبا لاولیائی وازدادی حسنا لأولیائی.﴾ जन्नत मेरे दोस्तों के लिए खुशबूदार हो जा, मेरे दोस्तों के लिए ख़ूबसूरत हो जा।

हाँ भाई इस मक़ाम को हासिल करने के लिए अल्लाह के रास्ते में अपना नाम लिखवाएं। जज़ाकल्लाह कौन कौन तैयार है?

हिदायत अल्लाह के हाथ में है

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله
من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له
ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله وحده لا
شريك له ونشهد ان سيدنا ومولنامحمدا عبده ورسوله وصلى
الله تعالى عليه وعلى اله واصحابه وبارك وسلم امابعد

قال الله رتعالى فمن اهتدى فإنما يهتدى لنفسى ومن ضل فإنما يضل
عليها ولا تزروازرة وزراخرىٰ، وما كان عمذبين حتى نبعث رسولا،

قال النبى صلى عليه وسلما وان ربى داعى وانه سائلى هل بلغت؟ فاقول
يا رب قد بلغت، فليبلغ الشاهد الغائب اوكما قال صلى الله عليه وسلم.

उम्र कम इल्म ज़्यादा

मेरे भाईयो और दोस्तो! हर आदमी अपने इल्म के मुताबिक़ अपने मसाइल को हल करने की कोशिश करता है। कोई इन्सान अपने मसाइल को ख़राब करने के लिए क़दम कभी नहीं उठाता, अपने इल्म के मुताबिक़ सोचता है। बड़े बड़े साइंसदान, बड़े बड़े

डाक्टर सब ही मसाइल का शिकार हैं और उनको बहुत थोड़ा सा इल्म हासिल है। किसी लिहाज़ से बहुत बड़ा आलिम है हैदराबाद में उस जैसा आलिम और कोई नहीं, बहुत बड़ा डाक्टर है हैदराबाद में उस जैसा डाक्टर और कोई नहीं। यह इस का मतलब है, यह नहीं कि सारे उलूम को उसने जान लिया है या सारी शरीअ्त को उसने जान लिया या सारे मेडिकल को उसने जान लिया है अगर कोई इसका यह मतलब लेता है तो वह बेचारा नादान है। इन्सान जो नहीं जानता वह हमेशा ज़्यादा रहेगा और जो जानता है वह हमेशा थोड़ा रहेगा। पचास साल में आप क्या सीखना चाहते हैं। इतनी सारी ज़िन्दगी में वसाइल थोड़े हैं, वक़्त बहुत थोड़ा है। पचास साल में आप किस इल्म में महारत हासिल करना चाहते हैं? दुनिया के छोटे से छोटे फ़न में भी इतनी वुसअत है कि पचास साल तो क्या पांच सौ साल भी उस में कुछ नहीं तो हमारे पास आलाते इल्म तो मौजूद हैं अक़्ल है, दिमाग़ है, दिल है, सोच है लेकिन वक़्त बहुत थोड़ा है। पचास साठ साल में कोई भी किसी लाइन में कामिल नहीं हो सकता। यक़ीनन ज़िन्दगी की जिस भी चोटी को वह उबूर करेगा तो आगे बहुत बड़ी चोटियां उसको नज़र आएंगी यहां तक कि उसको मानना पड़ेगा कि मैं जाहिल हूँ। एक छोटा सा सैल है इन्सान के जिस्म में वह हमें नज़र नहीं आता सिवाए दूर बीन के कि उसके साथ देखने से नज़र आता है जब वह इन्सोलीन बनाना छोड़ देता है तो उसको कन्ट्रोल करने से शूगर का जो सिस्टम है वह ख़राब हो जाता है। इस एक सैल से जो दूरबीन से नज़र आता है बग़ैर उसके नज़र नहीं आता। इस वक़्त तक उस पर लाखों इन्सान पी. एच. डी.

कर चुके हैं और अरबों डालर इस पर ख़र्च हो चुके हैं तो इस सैल फ़न्कशन का पूरा हाल मालूम नहीं हो सका तो इन्सानी जिस्म में कुल पच्चीस खरब सैल शामिल हैं। ये सारे अन्दाज़े हैं। पच्चीस छब्बीस खरब सैल से बना हुआ इन्सान है तो इक सैल में जहां का दिमाग़ और इतने पैसे लगे और नतीजा यही है कि अभी तक पूरा फंन्कशन मालूम नहीं हो सका तो फिर यहां आलिम होने का कौन दावा करेगा। कोई भी इल्म हो खेती का इल्म हो, तिजारत का इल्म हो, सियायत का इल्म हो, क़ानून का इल्म हो, हिसाब किताब का इल्म हो, किसी में भी सिवाए जिहालत के एतराफ़ के कोई चारा नहीं। यह तो मानी हुई बात है कि नाक़िस इल्म वाले का मंसूबा भी नाक़िस होगा और उसकी स्कीम भी नाक़िस होगी। यह नुक्स तो हमारा फ़ितरी नुक़सान है, हम फ़ितरी तौर पर नाक़िस हैं चाहे आईने स्टाईन हो। मैं तो कहता हूँ बाज़ार में बैठ कर जूतियां सीने वाला भी आईने स्टाईन से ज़्यादा समझदार है कि आईने स्टाईन ने अपने रब को नहीं पहचाना और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत को सोच नहीं सका और ये बूट पालिश करने वाला अपने अल्लाह को भी जान गया और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी पहचान गया है।

हम कमज़ोर व लाचार हैं

अच्छा एक तो इल्म नाक़िस और नाक़िस इल्म वाला स्कीम लगाएगा यक़ीनन नाक़िस होगी। फिर दूसरी चीज़ इन्सान जिन चीज़ों से इल्म लेता है वह भी नाक़िस हैं मसलन देखना कमज़ोर

है फिर चश्में लगाना शुरू कर दिये। कुछ दिनों के बाद चश्में भी काम करना छोड़ देंगे। सुनना कमज़ोर है, आप सब मिल कर बोलें तो मेरी समझ में कुछ भी नहीं आएगा। कोई पश्तों में बोले तो पंजाबी वालों को समझ में नहीं आएगा हालांकि हमारा एक ही मुल्क है। फिर अपनी ज़ुबान बोलें, दो तीन इकट्ठे मिलकर बोलें फिर भी समझ में नहीं आएगा तो सुनना नाक़िस हो गया। सोच हमारी एक हद तक है उसके बाद सारी कलेकशन शुरू हो जाती हैं जब तक आदमी ज़रा चुस्त है तो सोचता रहता है आठ घन्टे से ज़्यादा ड्युटी रखी जाए तो इसके बाद दिमाग़ घूमना शुरू हो जाता है। शुरू औक़ात दफ़्तरों में जो अन्दाज़ काम करने का होता है वह अन्दाज़ आख़री टाईम में नहीं होता। सब थक चुके होते हैं। हम हर तरफ़ से नुक़सान में हैं और कमी में हैं। अक़्ल की एक हद है तो अब हम सब अपनी बनाई हुई स्कीम पर एतमाद करके चलेंगे तो कभी कामयाब नहीं हो सकते लेकिन इस कमी को दूर करने के लिए अल्लाह ने एक निज़ाम बनाया है और यह नामुमकिन हे कि इल्म में कामिल होना, अक़्ल इसको तसलीम करती है। एक मिसाल है इससे पता चल जाएगा कि यह कैसे नामुमकिन है। हम एक जुज़ हैं और काएनात एक कुल है और जुज़ अपने कुल को कभी हासिल नहीं कर सकता। दूसरी मिसाल माँ के पेट में एक बच्चा है। बच्चा माँ के पेट में नौ महीने रहे या साल रहे लेकिन यह माँ की हक़ीक़त को नहीं जान सकता। माँ उसके ऊपर छाई हुई है वह उसके अन्दर छोटी सी जगह में पड़ा हुआ है जब तक वह बाहर न निकले तब तक वह अपनी माँ को नहीं जानेगा क्योंकि बच्चा माँ का जुज़ है और माँ बच्चे का कुल

है। जुज़ कुल को अहाता नहीं कर सकती। यह काएनात इतनी लम्बी चौड़ी है कि इसमें जो कहकशाएं हैं उसमें जो सय्यारे गर्दिश कर रहे हैं उनका अगर कोई फ़र्ज़ी नाम रखा जाए जैसे हमने सूरज, चाँद, अतारद इसी तरह हर सितारे का कोई नाम रख दिया है तो इन सितारों को सिर्फ़ गिनने के लिए तीन सौ खरब साल चाहिएं और इतनी लम्बी फैली हुई काएनात में हमारी ज़मीन एक छोटी सी गेंद है। इसमें तीन हिस्से पानी है और एक हिस्सा खुश्की है। इस एक खुश्क हिस्से में दो हिस्से में जंगल हैं, दरिया हैं, पहाड़ हैं, सहरा है। सिर्फ़ एक हिस्सा आबाद है। सारी काएनात में सिर्फ़ एक ज़मीन का तीसरा हिस्सा आबाद है। इस एक हिस्से में एक छोटा सा पाकिस्तान है, इसमें एक छोटा सा हैदराबाद है और उसमें एक छोटा सा डाक्टर है और प्राफ़ेसर है और वह कहता है कि मैं सब कुछ जानता हूँ तो उससे बड़ा बूवक़ूफ़ कौन होगा। अक़्ल भी इसको तसलीम नहीं करती है कि हम सब कुछ जानते हैं। पहले आम तौर से यह होता था कि अरे जी कोई नई बात बताओ, बाक़ी हम सब जानते हैं। अलहम्दुलिल्लाह आज कल यह कम हो गया है। यह सब जानने का कहना ख़ुद जिहालत का दावा है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से न बड़ा कोई आलिम आएगा न कोई आ सकता है। अल्लाह ने उनसे भी कहलवाया कि ﴿قل رب زدنی علما﴾ या अल्लाह मेरे इल्म को ज़्यादा कर दे। यह नामुमकिन चीज़ है कि हम यहाँ काएनात की गुत्थियां सुलझा लें, यह नहीं हो सकता और हम अपने लिए क़ानून सही बना सकें। यह उस वक़्त मुमकिन है जब सारी काएनात को समझ जाएं। किसी चीज़ को चलाने के लिए

सारे महल को देखना पड़ेगा। पूरे इन्जन को चलाने के लिए एक जुज़ को, एक पुर्ज़े को देखना काफ़ी नहीं, सारे इन्जन को समझेगा तब जा कर उस पुर्ज़े को समझेगा। पूरे इन्जन की समझ न हो तो एक पुर्ज़े को कैसे चलाएगा तो काएनात एक इन्जन की तरह है इसमें मैं एक पुर्ज़े की तरह हूँ, आप भी इसके एक पुर्ज़े हैं यह दरख़्त एक पुर्ज़ा है, यह हवा जो चल रही है यह भी एक पुर्ज़ा है, यह रोशनी भी एक पुर्ज़ा है, यह आबी, यह ख़ाकी, यह नारी, यह नूरी, यह चरिन्द, यह परिन्द, यह साकिन, यह हरकी, यह जामिद, यह लतीफ़, यह कसीफ़, यह सारी मख़लूक़ हैं, यह सारी काएनात के हिस्से हैं। मैं ठीक चलूं यह जब मुमकिन है जब कि सारी काएनात का मुझे पता हो और मैं अपने इल्म पर चलना चाहता हूँ। जो मेरी समझ में आए तो मैं उस पर चलूंगा और मैं ठीक चल सकता हूँ। इस दावे को वजूद में लाने के लिए सारी काएनात को समझेगा तब तो ठीक चल सकता है। पूरे इन्जन को समझेगा तब एक पुर्ज़े को चला सकता है और यह नामुमकिन है। अल्लाह तआला ने हमें इसका बदल दिया है कि यह तुम्हारे बस का रोग नहीं है इसको छोड़ दो। मैं अपना इल्म देता हूँ। अल्लाह ने जो इल्म उतारा अरब को देख कर नहीं उतारा, काएनात के ज़र्रे ज़र्रे को, एक एक चप्पे को, एक एक पत्ते को, एक एक जानवर को, हर ज़र्रे को देख कर उतारा

تنزيل من الرحمٰن الرحيم 0 كتاب فصلت اياته قرآنا عربيا لقوم يعلمون 0
بشيرا و نذيرا، فاعرض اكثرهم فهم لا يسمعون 0 (ســــــورة حٰم سجدة)

تنزيلاً ممن خلق الارض والسمٰوٰت العلٰى 0 الرحمٰن على
العرش استوىٰ 0 له ما فى السمٰوٰت وما فى الارض وما بينهما

وما تحت الثرىٰ 0 وان تجهر بالقول فانه يعلم السر واخفى 0
الله لا اله الا هو له الاسماء الحسنىٰ 0 (سورة طٰه)

हर चीज़ पर ताक़त व क़ुदरत सिर्फ़ अल्लाह की है

हर चीज़ मक़सद के तहत है, हर चीज़ अपने मक़सद पर पड़ी हुई है। कोई चीज़ अपने मक़सद ख़िलाफ़ चल ही नहीं सकती। उसकी ज़रूरतें अल्लाह ख़ुद पूरी कर रहा है। सूरज का निकलना, चमकना और आग फेंकना है, इसके बस की बात नहीं कि यह इसके ख़िलाफ़ कर सके। चाँद का काम घटना और बढ़ना इसमें ताक़त नहीं कि इसके ख़िलाफ़ कर सके। रात अन्धेरा लेकर आती है वह उजाला नहीं ला सकती, दिन में सूरज की हल्की सी किरन सारी ज़ुल्मतों को उठा कर फेंक देती है, रात में ताक़त नहीं कि वह बाक़ी रह सके।

दरख़्त का काम फल देना है, यह दरख़्त नहीं कह सकता कि मैं थक गया हूँ, अब मैं फल नहीं दूंगा, गाय का काम दूध देना है कोई चीज़ उसे मक़सद से हटा नहीं सकती। उनकी ज़रूरतें अल्लाह की तरफ़ से उनकी दी जा रही हैं वे अपने मक़सद की पाबन्द हैं जो बकरी गिलगत के पहाड़ों में पैदा होती है तो अपने ऊपर लम्बे लम्बे बालों के साथ पैदा होती है, वही बकरी हैदराबाद में पैदा होती है तो उस पर दो सेंटीमीटर बाल होते हैं। वहां उसको कम्बल की ज़रूरत होती है। यहां उसको चादर की ज़रूरत है। अल्लाह ने उसको कम्बल वापस लेकर चादर दी। अल्लाह ने

बाज़ की ग़िज़ा गोश्त बना दी तो उसकी चोंच को नोकीलदार बनाया और कई सौ मील तक उसको नज़र दे दी। उसकी ज़रूरत अल्लाह ने पूरी कर दी। उनको मक़ासिद का पाबन्द किया हुआ है वे इधर उधर नहीं जा सकते लेकिन इन्सान को अल्लाह ने अपने मक़सद में पाबन्द नहीं किया और अगर अल्लाह चाहता तो हमें भी पाबन्द कर देता। अल्लाह ने हमें इख़्तियार दे दिया और हमें बता दिया

وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون 0 (سورة الذاريات)

जहान तुम्हारे लिए तुम्हारे लिए पैदा हुआ है और तुम मेरे लिए पैदा हुए हो लेकिन तुम्हारा इम्तेहान है ﴿فالهمها فجورها وتقواها﴾ (سورة الشمس) यह तुम्हारे अन्दर बुराई की ताक़त है और अच्छाई की ताक़त है (سورة البلد)﴿وهديناه نجدين﴾ यह जन्नत का रास्ता है और यह दोज़ख़ का रास्ता है, यह रहमान का रास्ता है यह शैतान का रास्ता है। अब जब कि ये दोनों रास्ते आ गए ﴿انا هديناه السبيل﴾ रास्ते को खोल कर बता दिया अब तुम्हारी मर्ज़ी है ﴿اما شاكرا﴾ मेरे शुक्रगुज़ार बनो ﴿واما كفورا﴾ या मेरे नाफ़रमान बनो। ﴿فمن شآء فليؤمن﴾ चाहे तुम ईमान ले आओ ﴿ومن شآء فليكفر﴾ तुम चाहो तो मेरा इन्कार कर दो। मैंने तुम्हें इख़्तियार दे दिया। हमें मक़सद पर आने न आने का इख़्तियार है। जानवरों को इख़्तियार कोई नहीं, फ़रिश्तों को इख़्तियार कोई नहीं और हमें इख़्तियार है तो इन्सानी फ़ितरत का तक़ाज़ा है कि अनपढ़ पढ़े लिखों से पूछ लें, नादान दाना से पूछ लें, अन्धा आँखों वाले से पूछ ले। यह इन्सानी फ़ितरत है कोई भी पूरे इल्म का दावा नहीं करता। कोई वकील यूं कहे कि मैं बड़े बड़े पेचीदा मुक़द्दमें निपटा देता हूँ

लिहाज़ा मेरे पेट में दर्द हो जाए तो खुद इलाज करूंगा ऐसा नहीं होगा बल्कि वह खुद डाक्टर के पास जाएगा कि मेरे पेट में दर्द है, मुझे चैक करो। इसी तरह बड़े से बड़ा डाक्टर केस के लिए वकील ही के पास जाएगा और अगर वकील के घर की दीवार गिर जाए तो वह अपनी वकालत से ठीक नहीं करेगा बल्कि वह किसी राजमिस्त्री को बुलाएगा। आप अपनी मौजूदा ज़िन्दगी में किसी चीज़ को नहीं जानते हैं तो किसी जानने वाले के पीछे जाते हैं, कभी भी अपने आपको अपने इल्म के सुपुर्द नहीं किया। हम छोटी छोटी चीज़ों अपने आपको अपने इल्म के सुपुर्द नहीं करते। डाक्टर खुद बीमार हो तो वह किसी दूसरे डाक्टर से मशविरा करता है कि बीमार की राय ठीक नहीं होती, वह खुद भी सारी बीमारियां जानता है लेकिन इल्में तिब का क़ायदा है कि बीमार अपना इलाज खुद न करें। जब वह बीमार हुआ है तो उसकी अक़्ल भी साथ बीमार हुई है, उसकी सोच भी बीमार हुई है, लिहाजा किसी सेहतमन्द से इलाज करावाए चाहे खुद रोज़ाना मरीज़ों को देखता है, लेकिन अपना इलाज दूसरे से करवाए।

अल्लाह की रहमत के सब उम्मीदवार हैं

जब हम दुनियावी ज़रूरत में अपने से बड़े इल्म वाले के पास जाते हैं तो मेरे भाईयो! यह हमारा वजूद अल्लाह की क़सम सारी काएनात से ज़्यादा क़ीमती है ﴿لقد خلقنا الانسان فی احسن تقویم﴾(سورة التين) क़ुरआन कहता है सबसे बाइज़्ज़त मख़्लूक़ इन्सान है तो हम कितनी बड़ी नादानी करते हैं कि पेट का दर्द हो तो डाक्टर के पास जाएं और यहाँ हमारी अबदी ज़िन्दगी का

मस्अला है। जन्नत है या दोज़ख़। इसमें हम अपने इल्म पर ऐतिमाद करके चल रहे हैं। मौत का कितना बड़ा मस्अला इन्सान पर आता है। हदीस में आता है कि सबसे बड़ा मस्अला इन्सानों का मौत है तो क्या हमारी मौत से हमें झटका न लगेगा। सिर में दर्द हो तो कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती। जब वजूद की एक एक रग में दर्द की लहरें उठें तो क्या होगा। मेरी क़ब्र के बिछ्छुओं से हिफ़ाज़त हो जाए, अन्धेरे रोशनी में बदल जाएं, वहां जन्नत का बाग़ बन जाए, क़यामत के मैदान में कपड़े मिल जाएं, पानी मिल जाए, साया मिल जाए। पचास साल के लिए हमने हज़ारों मन्सूबे बनाएं हैं पचास हज़ार साल का एक दिन है उसमें साया भी चाहिए, पानी भी चाहिए, तन्हा होंगे साथी भी चाहिए। आप अन्दाज़ा फ़रमाइए! इतना ही अज़ाब काफ़ी है कि इतनी बड़ी ख़लक़त में पचास हज़ार साल के एक दिन में अल्लाह तआला हम को अपनों तक न पहुँचने दें। हमारी क़ब्र कहां बनेगी हमें क्या पता, हमारे बच्चों को कहां मिलेगी क्या पता? बीवी कहां मरेगी क्या पता? कोई पता नहीं कहां मरना है और क़यामत में जब उठेगें तो बड़ी ख़लक़त में अल्लाह तआला हमें मिलने न दें? अपनों से तो पचास साल आदमी जुदा हो तो उसके लिए यही अज़ाब काफ़ी है।

क़ैद, तन्हाई, जेल से बड़ी जेल है और अपने न हों तो मजूमे से किसी का दिल नहीं लगता, फिर हिसाब व किताब में मेरा पलड़ा भारी हो, फिर पुल सिरात से आफ़ियत के साथ गुज़र जाऊँ, आख़िर में सलामती के साथ जन्नत में पहुँच जाऊँ, इतने बड़े प्रोग्राम के बारे में किसी ने सोचा? आज इस जहालत से निकलने

के लिए बहुत बड़ी मेहनत की ज़रूरत है।

इन्सानियत पर इल्हाद की इब्तेदा

दुनिया के बारे में यह हाल है कि छोटी से छोटी चीज़ का लोग ख़याल करके चलते हैं। इसकी मिसाल यूं है पचास लाख की गाड़ी हो सिर्फ़ एक टायर में हवा न हो और हवा दो रूपए में भर जाती हो तो उस दो रूपए की हवा की वजह से गाड़ी खड़ी हो जाएगी। छोटी से छोटी चीज़ भी अपनी एहमियत बताती है और कोई यूं कहे कि मेरी तो पचास लाख रूपए की गाड़ी है अगर दो रूपए की चीज़ न हो तो क्या हुआ? यह बिना हवा एक क़दम भी नहीं चल सकती। दो रूपए की चीज़ की कमी की वजह से पूरी गाड़ी खड़ी हो गई, दुनिया में छोटी से छोटी चीज़ में कमी पड़ जाए तो हमारा वजूद बताता है कि कम हो गया तो दुनिया में एक एक चीज़ का ख़याल करके हम चल रहे हैं और दीन में बिल्कुल आज़ाद हो गए, परवाह ही नहीं, कितना बड़ा ज़ुल्म हो गया, कितना बड़ा हुक्म टूट गया, कितनी बड़ी नेकी को छोड़ दिया, यह इल्हाद है, यह जो इल्हाद है ख़ुद नहीं आया इसके पीछे दो सौ साल मेहनत हुई है। जब बातिल ने यह देखा कि इनको मैदाने जंग में नहीं मार सकते तो फिर इसकी मेहनत नीचे से चली। सत्रहवी जो सदी है वह इसकी इब्तेदा है। सन् 1672 ई० न्युटन की पैदाइश है और सन् 1742 ई० में वह मरा है। यहां से एक दरवाज़ा खुला है तबदीली का, एक मेहनत वाला तबक़ा पैदा होना शुरू हुआ है। उसने यह दर्याफ़्त किया कि दुनिया का क़ानून किस ताक़त के बल पर चल रहा है? 2×2 हासिल चार तो यह

सेट क़ानून है तो इस पर बुनियाद पड़ी लिहाज़ा किसी को खुदा मानने की ज़रूरत नहीं सारा निज़ाम खुद ब खुद चल रहा है। इस काएनात में इल्हाद की जो इब्तेदा है वह यहाँ से हुई। इन्सानी ज़िन्दगी में जो इल्हाद की इब्तेदा है वह ड्राउन से हुई। सन् 1809 ई० में उसकी पैदाइश है और सन् 1882 ई० में वह मरा है। माशयात में और समाज में इल्हाद की इब्तेदा वह कार्ल मार्कस से हुई वह सन् 1818 ई० में पैदा हुआ और सन् 1883 ई० में वह मरा है। उसने काएनात से खुदा के तसव्वुर को निकाला फिर इन्सानियत में से अल्लाह के तसव्वुर को निकाला, फिर अख़लाक़ियात व माशियात और समाज से अल्लाह के तसव्वुर को निकाला। ये तो इनके बड़े बड़े हैं और एक पूरा गिरोह वजूद में आया। इसके पीछे दो ढाई सौ साल मेहनत हुई जिसने पूरी दुनिया के इन्सानों को अल्लाह तआला की लगाई हुई पाबन्दियों से आज़ाद कर दिया। एक दम कोई भी चीज़ वजूद में नहीं पकड़ती। बुराई भी एक दम नहीं आती और नेकी भी एक दम नहीं आती। एक दिन में इस्लाम नहीं आएगा और जिस हाल में मुसलमान पहुँचा है वह एक दिन में नहीं पहुँचा।

क़ौमे जो गिरती हैं एक दिन में नहीं गिरतीं, इसके लिए बहुत ज़माना लगता है और बनने में उससे ज़्यादा ज़माना लगता है तो जिस सतह पर आज मुसलमान पहुँचा है अख़लाक़ में, किरदार में, सिफ़ात में, पस्ती में, ज़िल्लत में, ख़यानत में। एक दिन का बोया हुआ कांटा नहीं है। इस कांटे को बोने में सदियों मेहनत हुई है तब जाकर यह जंगल बना है और इस जंगल को ख़त्म करने में भी जान तोड़ मेहनत की ज़रूरत है।

तब्दीली के लिए तरबियत ज़रूरी है

मेरे भाईयो! तरबियत के बग़ैर कोई चीज़ वजूद में नहीं पकड़ती है। एक चालीस साल ज़िन्दगी को तबाह करने वाला नौजवान है तो इस्लाम में ऐसा नुस्ख़ा कोई नहीं कि उसको खिला दिया जाए तो वह रातों रात अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० बन जाए। तरबियत ऐसा क़ानून है जिसको पागल के अलावा कोई नहीं झुठला सकता। हर चीज़ आहिस्ता आहिस्ता वजूद पकड़ती है और तरबियत के मराहिल इन्सान आहिस्ता आहिस्ता तय कर लेता है तो यह बेदीनी और इल्हाद का जो तूफ़ान आया है उसके पीछे यूरोप ने की दो सौ साल मेहनत की है और यहां तक पहुँचाया है। उनको पता है जब तक अल्लाह तआला मुसलमानों के साथ है उनकी कोई तदबीर कामयाब नहीं हो सकती। जब अल्लाह साथ है ﴿وان ينصركم الله فلا غالب لكم﴾ अगर मैं तुम्हारे साथ हूँ तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता ﴿وان يخذلكم فمن ذا الذي ينصركم من بعده﴾(سورة آل عمران) अगर मैं तुम्हें छोड़ दूं तो कौन तुम्हारी मदद करेगा? तो इस आयत से पता चला कि अगर अल्लाह हमारे साथ होना चाहिए, हुकूमत हमारे साथ हो या न हो, फ़ौज हमारे साथ हो या न हो, हथियार ज़्यादा हों न हों तो भी हमारा ही नाम ऊँचा होगा, हमारा ही पल्ला भारी होगा, हमारा ही बोल बाला होगा, उन्हीं को इज़्ज़त मिलेगी जिनके साथ अल्लाह है और अगर अल्लाह साथ नहीं तो हज़ारों ऐटम बम बना लें तो कोई मस्अला हल नहीं होगा। मिठाई कोई बांटने की चीज़ नहीं है हां अगर इन्सान तौबा कर लें तो यह मिठाई बांटने की चीज़ है कि अब

अल्लाह साथ हो गया।

बनू अब्बास के हथियार क्या काम आए चंगेज़ियों के सामने? अलाउद्दीन ख़ुवारज़मी शाही सलतनत का मुतकब्बिर तरीन इन्सान था। चार लाख फ़ोर्स थी और चंगेज़ खां लुटेरा था और दो हज़ार मील का सफ़र करके आया, थका हुआ लश्कर, पहाड़ी कोह क़राक़रम के इन सिलसिलों को चंगेज़ खां ने उबूर किया। आज तक कोई हाकिम, कोई सालार, कोई फ़ौज उसको उबूर न कर सकी और अल्लाह की क़ुदरत कि कितनी पेचीदा और दुश्वार गुज़ार घाटियों से वह गुज़रा। एक सिपाही भी रास्ते में ज़ाए नहीं हुआ। नोकिली चट्टानों पर भी सफ़र किया, दो लाख के लश्कर में एक आदमी भी फिसल कर नहीं मरा। यह इतना थका हुआ लश्कर पराए देस में लड़ने के लिए आया और वहां चार लाख का ताज़ा दम लश्कर उसके इन्तेज़ार में है फिर भी अल्लाह ने उसके टुकड़े करवा दिए और चालीस साल में उसने पूरी इस्लामी हुकूमत को ज़मीन बोस कर दिया और ख़ून की नदियां बहा दीं।

अल्लाह साथ होंगे तो काम बनेगा

जब अल्लाह साथ छोड़ दें तो फिर ऐटम बम बनाने से काम नहीं चलता तो यह ज़हन इस वक़्त ख़त्म हो चुका है और यह एक दिन में ज़हन नहीं बनता। इसके लिए मैंने इन लोगों का हवाला दिया, उनकी ज़िन्दगी बताई उनकी पैदाईश बताई, उनकी मेहनत बताई, उनकी दो सौ साल की मेहनत है उसके बाद जा कर यह कांटेदार झाड़ियां पैदा हुईं और जंगल बना और जिन

शाख़ों पर फूल आते थे जो दरख़्त फल देते थे वह बेर की शक्ल में नज़र आने लगे, पीछे मेहनत हुई कि आज़ादी है। आदमी मज़हब में आज़ाद है जो मर्ज़ी हो करो कितनी पागलों वाली बात है कि अल्लाह ने आमाल में दीन में पाबन्द किया है। हमें तिजारत में आज़ादी है, मुलाज़मत में आज़ादी है जो चाहें करें, ज़मींदारी करें या मज़दूरी करें लेकिन हम आमाल में आज़ाद नहीं हैं, पाबन्द हैं। यह ज़हन निकल गया बल्कि निकाल दिया गया। अल्लाह को साथ लेने की कोई ज़रूरत नहीं। टेक्नालोजी बढ़ाओ अल्लाह भी उनसे रोकता नहीं न शरीअ़त उनसे रोकती है लेकिन मुसलमानों के क़ानून और हैं और काफ़िरों के क़ानून और हैं। मुसलमानों को टेकनालोजी से उस वक़्त तक नफ़ा नहीं होगा जब तक ये तौबा न करें अगर तौबा न करें और टेकनालाजी में उनसे भी आगे बढ़ेंगे तो वही होगा जो अलाउद्दीन ख़ुवारज़मी के साथ हुआ।

तबलीग़ी हज़रात के लिए अहम बातें

मेरे भाईयो! इस ज़हन की आज़ादी को दोबारा पीछे लौटाना होगा और अपने को अल्लाह के हुक्मों के ताबे करके चलना होगा। यह इस वक़्त मसाइल का हल है। हम भी एक काम पेश कर रहे हैं, सारी दुनिया में काम हो रहा है, तहरीकें चल रहीं हैं और उनमें मुख़लिसीन भी होते हैं, दर्दमन्द भी होते हैं, उम्मत का ग़म खाने वाले भी होते हैं। यह तबलीग़ बतौर जमात के कोई जमात नहीं जैसे कि और जमातें होती हैं। हर एक मुसलमान को याददहानी कराने की एक सादा सी तरतीब है। हम यह अर्ज़ कर

रहे हैं कि हमारी दुनिया और आख़रत के मसाइल का जो हल है वह अल्लाह की तरफ़ लौटने में है, अल्लाह को हम साथ ले लें और फिर जिस मैदान में हम बढ़ेंगे तो हमारा काम बढ़ेगा, हम अपने को काफ़िरों पर क़यास न करें, वह तरक़्क़ी कर गए हम क्यों नहीं कर सकते, उनके साथ अल्लाह का क़ानून यह है वे आज़ाद हैं, उनको अल्लाह ने मौत तक मोहलत दी हुई है, हमारी तो मौत तक छुट्टी नहीं है। हमें इधर ग़लती, इधर थप्पड़ पड़ेगा। आपका अपना बेटा शरारत करे तो फ़ौरन उसको तंबीह करते हैं और गली में हज़ारों बच्चे शरारत करते हैं, आपने कभी किसी को तंबीह नहीं की।

कलिमे वाले मुसलमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत जब भी शरारत करेगी तो फ़ौरन तंबीह होगी, सीधा चलो ताकि दोज़ख़ के अज़ाब से बचाए जा सको। जब सही मुसलमान बन कर चलोगे तो हर चीज़ नफ़ा पहुँचाएगी, हर चीज़ से इसको इज़्ज़त मिलेगी, ज़िल्लत के असबाब से अल्लाह इज़्ज़त देगा, मौत के असबाब में अल्लाह तआला ज़िन्दगी लाएगा।

आज़ादी एक नेमत है

मेरे भाईयो! अल्लाह को साथ लिए बग़ैर हमारा काम नहीं बन सकता। इसकी दलील क़ुरआन से है ﴿ان ينصركم فلا غالب لكم﴾(سورة آل عمران) मैं जब तक साथ हूँ तब तक कोई कुछ नहीं कर सकता। दूसरी आयत ﴿ما يفتح الله للناس من رحمة فلا ممسك لها﴾ मैं जिसके लिए अपने फ़ज़्ल का दरवाज़ा खोल दूं सारा जहां

मिलकर उसको बन्द नहीं कर सकता ﴿وما يمسك فلا مرسل له من بعده﴾(سورة فاطر) मैं बन्द कर दूं तो सारा जहां मिलकर खोल नहीं सकता, तीसरी आयत ﴿وان يمسسك الله فلا كاشف له الا هو﴾ मैं तुम्हें मुसीबत में डाल दूं तो पूरा जहां मिलकर उस मुसीबत को हटा नहीं सकता ﴿وان يردك بخير فلا راد لفضله﴾(سورة يونس) अब आप बाहर की दुनिया में देखिए। इस वक़्त दुनिया की सबसे बड़ी ताकत पैट्रोल है। यह काला पानी अल्लाह तआला ख़त्म कर दें तो सारा जहां ऐसा खड़ा हो जाएगा जैसे पहाड़ हैं ताकि, पूरी दुनिया का चैन टूट जाएगा, चलती गाड़ियां, मोटर, जहाज़ जम कर रह जाएंगे। यह इस वक़्त मादे में सबसे बड़ी ताक़तवर है और इसका तीन चौथाई हिस्सा अल्लाह तआला ने मुसलमानों को दिया है, एक चौथाई हिस्सा काफ़िरों को दिया हुआ है और उनकी ज़मीन में निकाल कर अल्लाह तआला काफिरों को दे रहा है, उनको नहीं दे रहा, उनको रोटी मिल रही है, गाड़ियां मिल रही हैं, बंगले मिल रहे हैं, बस आराम से मस्त बैठे हुए हैं, यह आज़ादी नहीं है, समझे आज़ादी किसे कहते हैं? एक छोटी सी अंग्रेज़ी किताब में एक कहानी थी किताब का नाम तो सही याद नहीं। उसमें लिखा था कि एक जंगली कुत्ता और एक शहरी कुत्ता था तो शहरी कुत्ता जंगल में सैर करने के लिए जाता था। वहां उसकी एक जंगली कुत्ते से दोस्ती हो गई। शहरी कुत्ता मोटा ताज़ा वह जंगली कुत्ता दुबला पतला, सूखा, सड़ा तो उसने पूछा कि भाई! तू कहां से आया है? तो उसने कहा मैं शहर से आया हूं, अच्छा तू क्या खाता है? कहा मैं पराठे खाता हूँ, अंडे खाता हूँ, गोश्त खाता हूँ, दूध पीता हूँ तो जंगली कुत्ते ने कहा भाई! मैं

जंगल में रहता हूँ, मुझे पराठे को छोड़, अंडे गोश्त छोड़, मुझे तो सूखी हड्डी भी नहीं मिलती तो भाई मुझे भी कराची ले चल ताकि मैं भी पराठे और अंडे खा लूं, शहरी कुत्ते ने कहा चलो तुम्हें ले चलता हूँ, तुम्हें भी खिलाउंगा। अभी वहां से निकले तो जंगली कुत्ते ने देखा कि शहरी कुत्ते के गर्दन में एक चेन ज़ंजीर पड़ी हुई है, कहने लगा भाई! यह क्या है? उसने कहा यह ज़ंजीर है तो उसने पूछा कि यह क्या होती है उसने कहा यह ग़ुलामी की ज़ंजीर है और जंगल का कुत्ता क्या जाने ग़ुलामी क्या होती है? उसने कहा मैं नौकरी करता हूं एक आदमी की, उसका पहरा देता हूँ, रात को जागता हूँ, उसकी कोठी के साथ बंधा होता हूँ फिर वह मुझे अंडे और गोश्त खिलाता है और वह दूध भी पिलाता है। जंगली कुत्ता कहने लगा मैं अपनी आज़ादी में भूका रहूं तो यह मुझे ज़्यादा पसन्द है बनिस्बत इसके कि किसी का ग़ुलाम बन जाऊँ। मियां तुझे तेरे पराठे मुबारक और मुझे मेरे जंगल की हवा मुबारक, आप शहर चले जाएं, मैं इधर ही ठीक हूँ तो आज हमने आज़ादी इसी को समझा हुआ है कि गाड़ियां मिल गईं, बंगले मिल गए, बस, इज़्ज़त का मफ़हूम बदल गया। हम ज़िल्लत की पस्ती में हैं और समझते नहीं, हम ज़लील हो चुके हैं। जिस क़ौम का इल्म ग़लत हो जाए तो उसको ऐटम बम कहाँ नफ़ा देगा, जिसका सिवाए कमाने के और काम ही नहीं रहे तो इस सिलसिले में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक ज़माना आएगा कि लोग सिवाए पेट भरने और शहवत पूरी करने के और कोई काम नहीं होगा, बस रंगारंग के खाने, कैसे खाऊँ और अय्याशी कैसे करूं, बदमाशी कैसे करूं।

अल्लाह की नाराज़गी की निशानी

मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा कि या अल्लाह तेरे नाराज़ होने की निशानी क्या है? अल्लाह ने फ़रमाया मेरी नाराज़गी की निशानी यह है कि उनकी खेतियां शुरू हो जाएं और पक जाएं तो बारिशें शुरू कर दूंगा, खड़ी खड़ी बर्बाद कर दूं और जब उनकी खेती बारिश मांगेगी तो बारिश को रोक दूंगा ﴿أجعل الملك إلى سفهائهم﴾ और नादान, नासमझ, नाअहल इन्सानों को हुकूमत दे दूंगा ﴿والمال إلى بخلائهم﴾ माल व दौलत उनके बख़ील लोगों को दे दूंगा, न अपने ऊपर लगाएं न ग़रीबों पर लगाएं और हुकूमत ऐसे बेवक़ूफ़ इन्सानों को दे दूंगा कि वे सारी ज़मीन ज़ुल्म व सितम से भर दें, वे ठीक भी करना चाहें तो ग़लत हो जाए। इस लिए तो कहा है कि नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा है, अच्छा या अल्लाह तेरे राज़ी होने की क्या निशानी हैं अल्लाह ने फ़रमाया ﴿أمطر يزرعهم زرعهم﴾ खेती पानी मांगती है तो बारिश कर देता हूँ। एक रिवायत में आता है एक आदमी जा रहा था कि बादल से आवाज़ आई कि जाओ फ़लाँ की खेती में पानी दे दो तो वह आदमी के साथ हो लिया तो बादल एक पहाड़ी पर बरसा वहां एक दर्रे में एक नाला सा था उसमें आया आगे जा के एक ढाल था उसमें गया तो पानी के साथ साथ एक आदमी आगे इन्तेज़ार में है पानी आया तो उसने बाग़ में कर दिया वह कहने लगा भाई क्या करता है और तेरा नाम क्या है? उसने नाम बताया कहा कि मैंने बादल में से आवाज़ सुनी कि फ़लाँ की खेती को पानी पिलाओ कहा अगर यह क़िस्सा न होता तो मैं तुम्हें न बताता।

असल में बात यह है कि अल्लाह तआला ने मुझे यह बाग़ दिया है, जब यह तैयार हो जाता है तो मैं इसके तीन हिस्से करता हूँ। एक हिस्सा फ़क़ीरों को दे देता हूँ, एक हिस्सा अपने घर में अपना ख़र्चा करने के लिए रखता हूं और एक हिस्सा फिर इस बाग़ में लगा देता हूँ इसकी तैयारी के लिए। इस हदीस से यह मालूम हुआ कि ज़मींदारी में जो फ़सल आए तो उसका एक हिस्सा आगे फ़सल पर लगाना चाहिए तब जा कर फ़सल का हक़ अदा होगा माद्दी लिहाज़ से। कैसा ख़ूबसूरत तरीक़ा अल्लाह के नबी ने बताया कि एक तिहाई हिस्सा लगाओ इस पर तब जा कर सही फ़सल होगी तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴾أمليهم بحصادهم﴿ जब उनकी फ़सल तैयार होती है तो बारिश को रोक लेता हूँ और हुकूमत अक़्लमंद लोगों को देता हूँ, दर्दमन्द लोगों को देता हूँ, बुर्दबार लोगों को देता हूँ, चश्म पोशी करने वालों को देता हूँ, मॉफ़ करने वालों को देता हूँ, ख़ुश अख़लाक़ लोगों को देता हूँ। यह सारे माईने अलीम के हैं और पैसा सख़ियों को देता हूँ और यह मेरे राज़ी होने की निशानी है।

सोचिए कहीं अल्लाह हम से नाराज़ तो नहीं

तो इस हदीस को सामने रख कर आप सोचें अल्लाह कितना नाराज़ हो गया हम से। यह समंदर का पानी क्या वैसे ही उठ कर दाख़िल हो गया सिन्ध में और बदीन में ऐसे ख़्वामख़्वाह बारिश हो गई? खड़े गन्ने बहा कर ले गई, कपास उठा कर ले गई। ऐसे बादल कि जिसे चाहे बरस जाएं, समंदर का पानी क्या आवारा है कि जिधर को चाहे निकल जाए, हवा क्या इतनी

बेलगाम है कि पीछे उनके कोई क़ाबू करने वाला नहीं। नहीं इन हवाओं का रब है जो उनको चलाता है, इन पानियों का रब है जो इनको बहाता है और इन बादलों का रब है जो उनको बरसाता है। मेरे भाईयो! हम यह पिछली बात अर्ज़ कर रहे हैं, बात पुरानी है, ज़ुबान नई है, क़िस्सा तो पुराना है, नया क़िस्सा तो कोई नहीं कि हम अल्लाह तआला को अपने साथ लें और अल्लाह तआला को साथ लिए बग़ैर कोई मस्अला हल नहीं होगा। अच्छा फ़र्ज़ करो कोई मस्अला हल भी हो गया वह कुत्ते की तरह अंडा और पराठा मिल गया तो क्या मौत नहीं आएगी? क्या दुनिया नहीं छूटेगी? क्या क़यामत नहीं होगी? क्या हिसाब व किताब का तराज़ू नहीं आएगा? क्या जन्नत और जहन्नुम नहीं देखेगा? क्या अल्लाह पूछेगा नहीं कि क्या किया था? तो वहां क्या जवाब देगा, रोटी भी मिल गई तो मस्अला तो फिर भी हल नहीं हुआ।

मेरे भाईयो! अल्लाह को साथ लिया जाए। अल्लाह का साथ लिए बग़ैर कोई भी मस्अला हल नहीं होगा। जब अल्लाह साथ हो जाएगा तो ﴿لفتحنا عليهم بركات من السمآء والارض﴾(سورة الاعراف) तुम्हारी ज़मीन सोना उगलेगी, जब तक़्वा आएगा। अल्लाह तआला हम सब को गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

❑ ❑ ❑

निज़ामे काएनात

बमुक़ाम हैदराबाद 7/4/2000

हम्द व सना के बाद

اللهم صلى على محمد وعلى ال محمد كما تحب وترضى امابعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم 0 بسم الله الرحمٰن الرحيم 0
قل كل يعمل على شاكلة فوربكم اعلم بمن هو اهدىٰ سبيلا 0

قال النبى ﷺ انكم تموتون كما تنامون، وتحيون كما ستيقظون
ثم انها الجنة ابداً اولنار ابداً اوكما قال النبى صلى الله عليه وسلم.

अल्लाह के क़ानून दो तरह के हैं

मेरे भाईयो और दोस्तों! अल्लाह तआला ने एक क़ानून इस काएनात को दिया है, एक क़ानून इन्सानों को दिया है। काएनात को जो क़ानून उसका ज़ाब्ता यह है कि पूरी की पूरी काएनात उस क़ानून ताबे है, उसके ख़िलाफ़ कर ही नहीं सकती। इन्सान को जो क़ानून दिया है उसका ज़ाब्ता यह है कि इस पर इन्सान चल भी सकता है और उसके ख़िलाफ़ भी चल सकता है।

सारे जहां में अभी तक कोई ख़लल नहीं आया। निज़ामे काएनात उसी तरह ठीक चल रहा है। काफ़िर इस बात पर हैरान हैं कि इतनी बड़ी काएनात, इतनी मुहीत काएनात, इतने पहलुओं

में इतनी तेज़ी के साथ गर्दिश कर रही है इसमें ख़लल क्यों नहीं आता? क्यों यह टकरा नहीं जाती? जिन्हें अल्लाह का पता नहीं वे इस पर बिलयन डॉलर ख़र्च कर रहे हैं। हमारे लिए तो कोई मस्अला नहीं क्योंकि हम मानते हैं कि यह सब कुछ अल्लाह कर रहे हैं, अल्लाह के हुक्म से चल रहा है।

यह क्यों हो रहा है, किस लिए हो रहा है, क्योंकि जैसे हो रहा है ऐसे नहीं होना चाहिए। अक़्ल कहती है कि ऐसे नहीं होना चाहिए, यह सैयारे टकरा जाने चाहिएं। चार गाड़ियां हैदराबाद में ज़्यादा हो गईं तो एक्सीडेन्ट शुरू हो गए और यह काएनात इतनी वसी है कि फ़िज़ाओं में फिरने वाले सितारों में से हर सितारे का नाम रखा जाए और उसी को एक मर्तबा दोहराया जाए कोई फ़र्ज़ी नाम रख लिया जाए जैसे सूरज नाम रखा हुआ है, चाँद नाम रखा हुआ है, ज़ोहरा, अतारो, प्लोटो वग़ैरह ऐसे ही इन तमाम सितारों में हर एक को कोई नाम दें, अलिफ़, ब, त, स, या एक दो तीन चार वग़ैरह फिर उसको सिर्फ़ एक दफ़ा दोहराया जाए, सूरज चाँद, मरीख़ हर एक सैयारे को सिर्फ़ सेकण्ड दें तो इस पूरी सितारों की जो दुनिया है उसको सिर्फ़ एक दफ़ा गिनने के लिए तीन सौ खरब साल की ज़रूरत है, सिर्फ़ गिनने के लिए जो मैंने बताया यह सिर्फ़ इस काएनात के तीन फ़ी सद हैं, सत्तानवें फ़ी सद अन्धेरा है नज़र ही कुछ नहीं आता। जहां रोशनी है यह वहां की कहानी सुनाई है आपको।

फ़लकी अज्साम की रफ़्तार

ये सिर्फ़ तीन फ़ी सद है। सत्तानवे फ़ी सद तारीकी है, तीन फ़ी

सद रोशन है। इस तीन फ़ी सद में इतना ज़हान फैला हुआ है यह भी सिर्फ़ उनकी देखी हुई के मुवाफ़िक़ है यह इन्तेहा नहीं और जो देखा है वह बहुत थोड़ा है और जो नहीं देखा वह सत्तानवे फ़ी सद है और इन फ़लकी अज्साम की रफ़्तार इतनी तेज़ है कि यह सूरज छः लाख मील फ़ी घन्टे की रफ़्तार से दौड़ रहा है। ज़मीन छियासठ हज़ार मील फ़ी घन्टे की रफ़्तार से दौड़ रही है। इसमें सारी फैक्टरियां, सारी सड़कें, सारे समंदर, सारे सहरा सब के सब छियासठ हज़ार फ़ी घन्टे की रफ़्तार से दौड़ रहे हैं। साठ किलोमीटर की रफ़्तार से गाड़ी चले और सामने शीशे न हों तो आँखें फट जाएं और यह छियासठ हज़ार फ़ी घन्टे की रफ़्तार से भाग रही है और हमें खड़ी नज़र आती है। इस तरह इस काएनात में एक ख़ौफ़नाक सफ़र जारी है। यह इस बात का तक़ाज़ा करता है कि ये सब आपस में टकरा जाएं और मलियामेट हो जाएं और यह नहीं हो रहा है। हमारे पास तो जवाब है अल्लाह ही कर रहा है और काफ़िरों परेशान हैं यह क्यों नहीं हो रहा है।

सूरज का निज़ाम

एक सेंटीमीटर सूरज रोज़ अपनी जगह बदलता है लेकिन इसका जो निज़ाम है लेकिन इसका अपना जो निज़ाम है उससे यह एक सेंटीमीटर बढ़ जाए अगले दिन एक सेंटीमीटर और बढ़ जाए इसी तरह रोज़ाना एक एक सेंटीमीटर बढ़ता चला जाए तो चन्द हफ़्ते में सारी काएनात आपस में टकरा जाएगी। दो हफ़्तों में वह अपनी जगह से चौदह सेंटीमीटर सरक जाए जिस तरह वह अपने निज़ाम के मुवाफ़िक़ सरकता है। एक सेकण्ड पहले तुलू

होने लग जाए और एक सेकण्ड बाद में ग़ुरूब होने लग जाए या एक सेकण्ड बाद में निकलने या बाद में ग़ुरूब हो जाए, वक़्त के लिहाज़ से सेकण्ड और फ़ासलों के लिहाज़ से सेंटीमीटर, इसमें थोड़ी सी आगे पीछे हरकत शुरू हो जाए तो दो तीन हफ़्तों में सारी काएनात तबाह हो जाएगी तो सारी काएनात को अल्लाह तआला ने ऐसा क़ानून दिया है जो ज़र्रा बराबर भी इधर उधर नहीं होती ﴿الشمس تجری لمستقر لها ذالك تقدیر العزیز العلیم﴾ सूरज अपने रास्ते पर चलता है। इसको रास्ता अल्लाह तआला ने दिया है, इसको आगे पीछे कौन करेगा?

यही सूरज थोड़ा सा नीचे आ जाए तो यह सारी काएनात उबल जाए, आलू की तरह फट जाए और यही सूरज थोड़ा सा ऊपर चला जाए तो सारे जहां में बर्फ़ की तह जम जाए। पहाड़ जैसी बर्फ़ें अगर शहरों में पड़ी हों तो कहां से कारोबार चलेगा। यह फैक्टरियां तो अल्लाह चला रहा है अगर अल्लाह मौसम बदल दें तो फिर हम क्या कर सकते हैं। सूरज के बाहर बारह हज़ार सेंटीग्रेड दर्जा हरारत है (यानी सूरज की ज़ाहिरी सतह पर) और सूरज के अन्दर सत्ताईस मिलयन दो करोड़ सत्ताईस लाख सेंटीग्रेड दर्जा हरारत है। सौ पर पानी खौल जाता है। यह अल्लाह है जिसने दर्मियान में इतनी बड़ी रुकावटें बनाई हुई हैं जिनमें इतनी छलनियां लगाए हुए हैं इसमें छनते छनते सूरज के बीस करोड़ हिस्से किए जाएं तो एक हिस्सा ज़मीन पर आ रहा है बाक़ी सब हिस्से हवा में ज़ाए हो रहे हैं अगर अल्लाह तआला इस एक हिस्से को सवा हिस्से कर दें, एक हिस्से की ज़रूरत को सवा हिस्से कर दें तो

सारा निज़ाम ख़त्म हो जाएगा।

इन्सान की ग़लत सोच

यह सारी काएनात का निज़ाम उसके रहम व करम पर है। हम कहते हैं कि हम कमाते हैं तो खाते हैं, हम अपनी मेहनत से इतने काम करते हैं अगर हम न करते तो कौन करता। अल्लाह तआला सिर्फ एक काम कर दें, ज़मीन की कशिश और सक़ल वापस ले लें। ज़मीन अपनी कशिश और सक़ल से हमको पकड़ा हुआ है। हम ज़मीन पर उलटे बैठे हुए हैं। एक दफ़ा मैं लेटा हुआ था छत यूं जा रही थी तो बड़ा हैरान हुआ बैठे बैठे मुझे ख़याल आया कि हम भी उलटे हैं, हम सब उलटे हैं। हमारे पाँव बन्धे हुए हैं और सिर हमारा हवा में है तो हमें ज़मीन की कोशिश ने बांधा हुआ है और इतने अन्दाज़े के साथ है कि अगर यह ज़मीन छः गुना बढ़ जाए चौबीस हज़ार के बजाए छः गुना इसको बढ़ा दिया जाता तो इसके अन्दर कशिश और सक़ल छः गुना बढ़ जाती तो जिस चीज़ का वज़न एक मन है वह छः मन हो जाता और जिसका क़द छः फिट है वह घट कर एक फ़िट हो जाता। पाँव ज़मीन से उठाया न जाता। ज़मीन अपनी तरफ़ खेंच कर रख लेती जैसे कि कीचड़ में पाँव उठाना मुश्किल हो जाता है लेकिन यहाँ फिर भी आदमी उठा लेता है। ऐसे अन्दाज़ के साथ बनाई है।

ख़ालिक़ का मख़लूक़ से सवाल

﴿الم نجعل الارض مهادا﴾ किसने ज़मीन तुम्हें बिछा कर दी ﴿امن﴾

﴿والارض فرشنها﴾ किसने ज़मीन को ठहरा दिया ﴿جعل الارض قرارا﴾ मैंने फ़र्श बिछाकर दिया कोई है मुझ जैसा बिछाने वाला ﴿فنعم الماهدون﴾

والارض بعد ذالك دحها. اخرج منها مآئها ومرعٰها. والجبال ارسها. متاعالكم ولانعامكم

यह अल्लाह तआला वह क़ानून बता रहा है जो काएनात को दिया है। ये आयतें इस तरफ़ इशारा कर रहीं हैं तो अल्लाह ज़मीन में से यह कशिश वापस ले लें अपनी कशिश को ख़त्म कर दें तो हम क्या कर सकते हैं आज तक यह सवाल हल नहीं हो सका कि ज़मीन में कशिश क्यों है? आईन स्टाईन की ज़िन्दगी के आख़री दस साल इस तहक़ीक़ में ख़र्च हुए कि ज़मीन में कशिश क्यों है? और दस साल के बाद यह लिख गया कि यह सवाल मेरे बाद भी कोई हल नहीं कर सकेगा लिहाज़ा इसमें मग़ज़ मारी न की जाए कि यह क्यों है?

कैमिस्ट्री यह है अगरचे किसी रियाज़ी के किसी दायरे में नहीं आती, जैसे फ़िज़िक्स कैमिस्ट्री को फ़ार्मूला इसकी तसदीक़ नहीं करता किसी क़ायदे के तहत यह कोई नहीं लेकिन यह कहाँ से है ﴿امن جعل الارض قرارا، والارض فرشنها فنعم الماهدون﴾ यहाँ से है।

हमारे करने से कुछ नहीं होता

अगर कशिश वापस हो जाए तो उसी वक़्त ज़मीन के तेवर बदल जाएंगे और उसका रंग बदल जाएगा। सूरज की तरफ़ सफ़र शुरू कर देगी और सूरज हम से नौ करोड़ तीस लाख मील है तो

एक माह या पच्चीस दिन में ज़मीन सूरज की भट्टी में जा गिरेगी। आगे इसे जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी क्योंकि सूरज के चारों तरफ़ शोले हैं जिनकी कम से कम लम्बाई एक लाख मीटर है यह सारा निज़ामे ज़िन्दगी ख़त्म हो जाएगा। हम तो कहते हैं हम करते हैं तो खाते हैं नहीं करेंगे तो कहाँ से खाएंगे उस वक़्त कमा के दिखाओ तो सब अल्लाह कर रहा है हमें तो थोड़ा सा इख़्तियार दिया है जिसमें इम्तेहान है तो एक क़ानून ज़मीन और आसमान का है ﴿السماء بنينها بايدوانا لموسعون﴾ आसमान को कहा कि फैल जा तो वह फैल गया ﴿رفع السموات﴾ आसमान को बुलन्द किया तो वह बुलन्द हो गया ﴿بغير عمد﴾ सुतूनों के बग़ैर वह खड़ा हो गया ﴿سخر لكم الانهار﴾ दरियाओं का निज़ाम चलाया उनको बहा दिया ﴿هو الذى يرسل الرياح﴾ हवाओं का निज़ाम चलाया ﴿ان الله فالق الحب والنوى﴾ फल फूलों का निज़ाम चलाया। चाहो मेरी तरफ़ आ जाओ चाहो शैतान की तरफ़ चलो ﴿فسنيسره لليسرى﴾ मेरी तरफ़ चलोगे तो रास्ते खोल दूंगा और अगर शैतान की तरफ़ चलोगे तो उस तरफ़ भी रास्ते खुल जाएंगे। अल्लाह को क़ुदरत कामिल है वह किसी ज़ाब्ते का पाबन्द नहीं और हमें ज़ाब्तों का पाबन्द किया है लेकिन इसमें काएनात को बांध दिया और हमें इख़्तियार दे दिया।

मैय्यत की पुकार

मेरे भाईयो! मर के मर जाते तो मस्‌अला आसान था, मर के न उठते तो भी मस्‌अला आसान था, मुसीबत यह है कि मर के मरना नहीं है। मर के फिर ज़िन्दा हो जाना है अगर यहाँ ग़फ़लत

में मर गए तो वहाँ बड़े ख़ौफ़नाक अन्जाम का सामना करना पड़ेगा अगर कुछ लेकर चले गए तो बड़ी ख़ूबसूरत ज़िन्दगी है उसका आग़ाज़ तो है उसका अन्जाम कोई नहीं, उसकी इब्तेदा तो है उसकी इन्तेहा कोई नहीं। यह काएनात बड़ी तेज़ी के साथ अपने अन्जाम की तरफ़ चल रही है ﴿من مات فقد قامت قيامته﴾ जो मरता है उसकी क़यामत आ ही जाती है। एक क़यामत इस काएनात की भी आने वाली है, अन्क़रीब ख़त्म होने वाली है और इसको मौत का झटका तोड़ने वाला है और हमें बिल्कुल बेबस कर दिया जाएगा, क़ब्र की चारदीवारी में फेंक दिया जाएगा जहां इन्सान चीख़ना चाहे चिल्ला नहीं सकता, बताना चाहे बता नहीं सकता। कहीं मय्यत होती है तो कहती है ﴿لا تقدموني﴾ मुझे न ले जाओ। पूरी काएनात उसका नोहा सुनती है ﴿لا تقدموني﴾ मुझे क़ब्र में न ले जाओ। इसका इख़्तियार ख़त्म हो चुका है और ऐसे भी है ﴿قدموني، قدموني﴾ मुझे ले भी जाओ, मुझे ले भी जाओ। यह भी कोई नहीं सुन सकता है। जनाज़ा सामने पड़ा है, भाई नहीं आया, बेटा नहीं आया वग़ैरह और वह कह रहा है ﴿قدموني﴾ मुझे जल्दी ले चलो लेकिन इसकी भी कोई सुनवाई नहीं तो मौत हमारे इख़्तियारात को सलब कर देगी तो इस लिए उस दिन के लिए तैयारी करना हर इन्सान के ज़िम्मे है, मौत के लिए कुछ तैयारी करें। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اطلبوا الجنة جهد كم﴾ जितनी ताक़त है उसे ख़र्च करो जन्नत के लिए और जितनी ताक़त है तो उसे ख़र्च करके जहन्नुम से बचो ﴿ان الجنة لا ينام طالبها وان النار لا ينام هاربها﴾ जन्नत का चाहने वाला कभी नहीं सोता, जहन्नुम से डरने वाला कभी ग़ाफ़िल नहीं होता।

ऐ इन्सान सोच कि क़ब्र में क्या होगा?

पूरी दुनिया इस ख़ौफ़नाक अन्जाम की तरफ़ बढ़ रही है। हम छोटे छोटे मसाइल को मस्अला बनाकर बैठे हैं। मर जाना है, यह भी तो बड़ा मस्अला है। हम तो पुरानी चादर को उतार कर बिस्तर पर नई चादर बिछवाते हैं और जिस वक़्त मिट्टी का बिस्तर होगा तो उस वक़्त क्या बात बनेगी और मिट्टी की चादर होगी उस वक़्त क्या होगा? जब बल्ब फ़्युज़ हो जाए तो फ़ौरन बल्ब लगाओ वह क्या दिन होगा जब अन्धेरे के घर में जा पड़ेंगे। यहाँ घन्टी लगी हुई है नोकर बुलाने के लिए वह फ़ौरन आ जाता है वह क्या दिन होगा न कोई सुन सकेगा न कोई सुना सकेगा तो कितना ख़ौफ़नाक अन्जाम है। कपड़े पर दाग़ लगा तो उतारो, आज बदन पर कीड़े रेंग रहे हैं, घन्टों चेहरे को सजाया कितने साबुन, कितने शैम्पू, खुशबुएं कितनी और वह क्या दिन होगा इन आँखों को कीड़े खा रहे होंगे और इसी पर चल रहे होंगे। पूरा वजूद कीड़ों की ग़िज़ा हो चुका होगा। उन कीड़ों को दूसरे कीड़े खा रहे होंगे।

फिर लैल व नहार, मौसमों का बदलना, ज़मीन की करवटें बदलना, ऊपर को नीचे, नीचे को ऊपर कर देगा, क़ब्र की मिट्टी बाहर आ जाएगी। वह हड्डियां जो चूरा चूरा हो के पड़ी थीं मिट्टी बनी पड़ीं थीं, बाहर आयीं फिर हवा को झोका आया और उनको उठाकर ले गया। बादशाह सलामत के ख़्वाबों को ऐसे हवा में उड़ा के धकेल दिया जैसे कि वह कुछ न था और आज वह कुछ हो गया। जिस इन्सान का यह अन्जाम हो तो वह सोचें कि

उस दिन के लिए क्या कर रहा हूँ। फिर वह अदालत होगी अल्लाह पाक की, सब पीछे हट जाएंगे सिर्फ़ वह ज़ात है जो अकेला हिसाब किताब लेता है और खुद पूछ रहें हैं लाओ आज क्या लाए हो ﴿ارنی ما قدمت﴾ आज दिखाओ क्या ले आए हो अगर कुछ नहीं है ﴿فذوقوا مس سقر﴾ फिर तैयार हो जाओ अज़ाब के लिए यह इन्सानियत बड़े ख़ौफ़नाक अन्जाम की तरफ़ बढ़ रही है।

क़यामत के बारे में क़ुरआन का लहजा

जब क़ुरआन का रुख़ आख़रत की तरफ़ फिरता है तो एक दम उसका लहजा बदल जाता है, जब दुनिया की तरफ़ आता है तो एक दम लहजा बदल जाता है जब आख़रत की तरफ़ होता है तो एक दम लहजे में हैबत आ जाती है, एक रोब आ जाता है जैसे कि हम कहते हैं कि इसके सिर में दर्द है अब मेरा लहजा सुन रहे हैं। अब इसको कैंसर हो गया है इस लहजे में फ़र्क़ है। अरे भाई इसको कैंसर हो गया, अगला भी ताज्जुब से कहता है अच्छा उसको कैंसर हो गया, अल्लाह उस पर रहम करें तो जब क़ुरआन दुनिया को बयान करता है तो जैसे कि सिर में दर्द हो, जब आख़रत को बयान करता है तो उसका लहजा बदल जाता है। ﴿وما الحیوة الدنیا الا متاع الغرور﴾ छोड़ दो, यह छोड़ दो का इशारा इसकी हिक़ारत बता रहा है। ﴿لا یغرنك تقلب الذین کفروا فی البلاد﴾ इस दुनिया को ﴿متاع قلیل﴾ ﴿متاع الغرور﴾ ﴿بیت العنکبوت﴾ क़ुरआन धोके का घर बता रहा है, मच्छर का पर बताता है, मकड़ी का जाला बताता है।

اضرب لهم مثلا الحيوة الدنيا كماء انزلناه من السمآء فاختلط
به نبات الارض فاصبح هشيما تذروه الرياح وكان الله على
كل شيء مقتدرا ط كمثل غيث اعجب الكفار نباته ثم يهيج
فتراه مصفرا، ثم يكون حطاما وفي الاخرة عذاب شديد
ومغفرة من الله ورضوان، وما الحيوة الدنيا الا متاع الغرور.

इतना हल्का करके क़ुरआन दुनिया को बताता है और जब आख़रत की तरफ़ फिरता है तो पुकारता हैः

القارعة ما القارعه وما ادرك ما القارعه ٥ هل اتك حديث
الغاشيه ٥ وما ادرك ما هيه نا رحاميه، وما ادرك ما الحطمه، يوم
تشقق السمآء با لغمام، نزل الملئكة تنزيلا، الملك يومئذن
الحق للرحمن، وحملت الارض والجبال، فدكت الارض دكا
دكا، فيومئذ وقعت الواقعه، وانشقت السمآء فهي يومئذ واهيه.

इतनी हैबत है अलफ़ाज़ में कि हम तो समझते नहीं क़ुरआन क्या कह रहा है ﴿القارعه﴾ वह आवाज़ तुम्हारे कानों के पर्दे चीर कर रख देगी क्या है वह ख़ौफ़नाक आवाज़ तुम्हें कुछ ख़बर भी है वह आवाज़ क्या है? ﴿الحاقة﴾ इस हक़ीक़त को देखो वह क्या है? यह जो आख़रत का तर्ज़े बयान है इसको अल्लाह तआला किसी और चीज़ में बयान नहीं किया।

इल्म बहुत बड़ी दौलत है

﴿هل اتك، وما ادرك﴾ ये अलफ़ाज़ ऐसे हैं जैसे कोई बम मार रहा हो। यह हमारी बदक़िस्मती है कि हमने क़ुरआन समझा न क़ुरआन की ज़बान समझी। उस क़ौम की इससे बड़ी बदक़िस्मती और क्या होगी जो अपनी किताब जो उनको किनारे लगाने वाली

थी न उसको समझा न जाना। हाय अफ़सोस ﴿فاصدع بما تؤمر، واعرض عن المشركين، انا كفيناك المستهزين﴾ इस आयत के अलफ़ाज़ में जो हरारत है। इसको एक बद्दू ने सुना वह अरब था अरबी जानता था जब यह आयत सुनी तो ऊँट पर जा रहा था ज़मीन पर जा गिरा, थर्रथरा गया, उसने कहा मैं गवाही देता हूँ कि मख़्लूक़ ऐसा कलाम नहीं कर सकती। हमें तो पता कि हम से क़ुरआन क्या कहता है, कितनी हमारी बदक़िस्मती है, कि जिस चीज़ को समझना था उसको समझा नहीं, तालीम के नाम पर जहालत आम हो गई। रोटी कैसे कमानी है इसको इल्म बना दिया। लोहे को कैसे ढालना है यह इल्म बन गया। अरे भाई इन्सानियत में कैसे ढलना है सबसे बड़ा इल्म यह है। इन्सान इन्सानियत के सांचे में कैसे ढले यह इल्म क़ुरआन देता है, यूनिर्वसटियां यह इल्म नहीं देतीं, कॉलेज से निकल कर आया हूँ इस लिए दावे से कहता हूँ। जिसे समझना था उसे समझा नहीं, उसको पढ़ा नहीं, क़ुरआन जब आख़रत खोलता है तो लरज़ा तारी हो जाता है।

इन्सान कमज़ोर और बेबस है

तो मेरे भाईयो! हम तो कमज़ोर हैं दुनिया के दुख नहीं सह सकते तो आख़रत के दुख कैसे सह सकेंगे, अल्लाह जानता है कि इन्सान ज़ईफ़ है खुद कहता है ﴿خلق الانسان ضعيفا﴾ ﴿خلق الانسان من عجل﴾ मैंने तुम्हे जल्दबाज़ बनाया, तो हमें ऐसा तरीक़ा ज़िन्दगी दिया जिस पर चलें तो दुनिया भी बनती है और आख़रत भी बनती है और जिसको छोड़ कर दुनिया के चार दिन बनें और

जिसमें चन्द सिक्के अल्लाह तआला दे देता है, लेकिन मौत के बाद कुछ नहीं सिवाए हलाकत, तबाही और बर्बादी के, वह अदालत जिसमें हमें अकेले खड़े होना है, जिसमें सिर्फ़ अकेली जान है।

मैदाने हश्र का हौलनाक तज़्किरा

आप तसव्वुर फ़रमाइए, पूरी काएनात खड़ी हुई है। आदम अलैहिस्सलाम की औलाद और शैतान की औलाद, नंगे बदन, नंगे सिर, नंगे पाँव और पीछे फ़रिश्तों का पहरा है और सामने जहन्नुम से धुंआ उठ रहा है और उसमें से आग की ख़ौफ़नाक और भयानक आवाज़ें हैं ﴿تفور، تكاد تميز من الغيض﴾ वह ग़ुस्से से वहशी जानवर की तरह फट रही है, बेलगाम हो रही है, मुंह ज़ोर हो रही है अगर अल्लाह तआला क़यामत के दिन जहन्नुम को न रोके तो जहन्नुम सबको निगल जाए, किसी को न छोड़े, जहन्नुम की ख़ौफ़नाक आवाज़ें ﴿وبرزت الجحيم﴾ इधर जहन्नुम दहक रही है ﴿وازلفت الجنة للمتقين﴾ उधर जन्नत की महक भी उठ रही है और जहन्नुम का धुंआ भी उठ रहा है, पुलसिरात भी लग चुका, हिसाब किताब के तराज़ू भी लग चुके ﴿ونضع الموازين القسط﴾ ऊपर अल्लाह तआला का अर्श भी आ गया ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانيه﴾ आठ फ़रिश्तों ने तेरे रब के अर्श को संभाला हुआ है और अल्लाह तआला का ऐलान होता है ऐ लोगों! ﴿انى انصت لكم منذ ان خلقتكم الى يوم احييتكم هذا﴾ मैं चुप रहा और तुम्हें देखता रहा कि हैदराबाद में क्या कर रहे थे आज के दिन तक मैंने कुछ नहीं बोला, तुम्हारी आँखों ने ग़लत देखा तुम्हारी आँख को न फोड़ा,

तुम्हारे हाथों ने ज़ुल्म किये मैंने तुम्हारे हाथ न काटे, तेरे पाँव अय्याशी की महफ़िलों की तरफ़ उठे मैंने तेरे पाँव न तोड़े, तू ज़िना की तरफ़ चला मैंने तेरी शहवत को सलब नहीं किया, तू झूठ बोलता रहा मैंने तेरी ज़बान को काली ज़र्ब नहीं लगाई, तू बहुत कुछ करता रहा मैं हाएल नहीं हुआ और देखता रहा, तुमने सच बोला हमने देखा, तुमने तक़्वा इख़्तियार किया हमने देखा, तुम ने मेरी मान कर ज़िन्दगी गुज़ारी हम ने देखा। हम ने अच्छे को भी देखा, बुरे को भी देखा, शर को भी देखा ख़ैर को भी देखा। आज तुम ख़ामोश रहोगे। तुम्हारे आमाल की फ़िल्म तुम्हें दिखाई जाएगी ﴿كل انسان الزمناه طائره فى عنقه﴾ एक तरफ़ किताब होगी, तुम्हें कहा जाएगा कि पढ़ो, कोई ग़ल्ती है तो बताओ। यूं एक एक अमल दिखला देंगे कि तुम ने फ़लॉ रात शराब पी थी यह देखो।

दोज़ख़ का तज़्किरा और काफ़िरों की पुकार

यह उन लोगों के साथ किया जाएगा जो तौबा के बग़ैर मर गए जो तौबा करके मर जाते हैं तो अल्लाह तआला उनकी हर चीज़ धो डालता है, साफ़ कर देता है, मिटा देता है, उनको भी भुला देता है जो किए हैं तो उस वक़्त एक आदमी तराज़ू के सामने है उसको अल्लाह तआला का हुक्म होगा कि ले आओ इसके आमाल। पूरी काएनात की नज़र उस पर जम जाती है। उधर तराज़ू एक तरफ़ अच्छाई और दूसरी तरफ़ बुराई, सच व झूठ, पाकदामनी व ज़िना, हराम व हलाल यह सब रखा जा रहा है फिर वह तराज़ू छोड़ा जाता है। जहन्नुम का एक अंगारा सात

आसमान और ज़मीनों से बड़ा है और जन्नत का एक नाख़ून के बराबर अगर ज़मीन में रखा जाए तो सारा जहां रौशन हो जाए। अब अगर झुक गया तो पलड़ा बुराई का और उठ गया बुराई का तो उसकी चीख़ होगी ﴿يٰلَيْتَنِي لَمْ اُوتَ كِتَابِيَه﴾ अब इस शख़्स को ज़रा तसुव्वर में लाएं जो एक दम पुकार उठेगा हाय हाय मेरी किताब मेरे उल्टे हाथ में क्यों आ गई ﴿ما ادرك ما حسابيه﴾ मुझे नहीं पता था कि मेरा यूं हिसाब हो कर नेकी और बदी को तोल दिया जाएगा ﴿يٰليتها كانت القاضيه﴾ ऐ मौत कहाँ है आजा मुझे मौत दे दे, किसी का कोई मर जाए तो उसका रोना लोगों को रुला देता है। यह मौत का क़िस्सा नहीं जहन्नुम का क़िस्सा है। किस दर्द से वह कह रहा होगा कि हाय मैं मर गया। ﴿ما اغنى عنى ماليه﴾ मेरी जाएदादें कहाँ चली गयीं ﴿هلك عنى سلطانيه﴾ मेरी हुकूमत कहाँ चली गई और लोग उसको देख रहे हैं इतने में अल्लाह तआला की आवाज़ आएगी पकड़ लो इसको ﴿فغلوه﴾ जकड़ दो इसको ﴿ثم سلسلة﴾ ज़ंजीर ले आओ ﴿ذرعها سبعون ذراعاً﴾ सत्तर हाथ लम्बी हो ﴿فاسلكوه﴾ इसमें इसको पिरो दो जिस तरह कबाब को सींख पर पिरो दिया जाता है, डाल दो इसको ﴿خذوه فغلوه ثم الجحيم صلوه﴾ फेंक दो इसको फिर अल्लाह तआला फ़र्द जुर्म लगाएंगे। ऐ! बन्दों इसको वैसे ही नहीं पकड़ रहा हूँ ﴿انه كان لا يؤمن بالله العظيم﴾ इसने मेरा इन्कार कर दिया ﴿ولا يحض على طعام المسكين﴾ मेरे ग़रीब बन्दों को रोटी नहीं खिलाई, न औरों को कहा कि खिलाओ, ग़रीब का हाल न पूछा। इतना बड़ा जुर्म है इसको अल्लाह तआला ने शिर्क के साथ रखा, अपनी ज़ात के इन्कार के साथ इसको जोड़ा है। इसको दोज़ख़ में इस लिए ले जाया जा रहा

है कि यह न मुझे मानता था और न मेरे ग़रीब बन्दों को रोटी खिलाता था। फिर एक रोज़ नक़्शा क़ायम होगा। एक आदमी आया उसकी एक नेकी बढ़ी और गुनाह घटे तो एक दम नारा मारेगा ﴿هاؤم، هاؤم﴾ हा हूम का मतलब है आ जाओ, आ जाओ और ख़ुशी से उछलेगा।

एक वाक़िया

हमारी आठवीं जमात का पेपर था। रिज़ल्ट हुआ तो एक लड़का अब्दुल वाहिद उसका नाम था। होस्टल में उछला और कूदा कि मैं पास हो गया, मैं पास हो गया। यह नक़्शा अब तक मेरे सामने है। सन् 1965 ई० की बात है। यही नक़्शा यहाँ हो रहा है हा हूम। सारे महशर को पुकारेगा कि आ जाओ, आ जाओ, फिर कहेगा कि मैं पास हो गया, मैं पास हो गया। अरे वह कैसे! ﴿اقرؤا كتابيه﴾ मेरा पेपर देखो पूरे नम्बर हैं पूरे।

जन्नत का दिलफ़रेब मन्ज़र

अरे तू कैसे पास हो गया ﴿اني ظننت اني ملق حسابيه﴾ मुझे यक़ीन कि मेरा पेपर अच्छा होगा, मैं तैयारी करता रहा, तो फिर ऊपर से आवाज़ आएगी ﴿فهو في عيشة راضية. في جنة عالية. قطوفها دانية. بما اسلفتم في الايام الخالية﴾ ऊपर से आवाज़ आई कि यह मज़ेदार ज़िन्दगी का मालिक हो गया, यह आला जन्नत का मालिक हो गया। अब हैदराबाद की छोटी सड़के और गर्दालूद फ़िज़ा नहीं है, अब जन्नत है जिसकी ज़मीन सोने की, घास ज़ाफ़रान की, ख़ुशबुएं मुश्क की,

गुबार अंबर की, नहरें मुईन और सलसबील की, ज़ंजबील के, काफ़ूर के, तसनीम के चश्में, दूध की, शराब की नहरें ﴿عينان نضاختان. عينان تجريان﴾ फलों की बेशुमार किस्में ﴿من كل فاكهة زوجان.﴾ ﴿على سرر.﴾ तख़्त बिछे हुए ﴿اكواب موضوعة﴾ जाम रखे जा चुके हैं ﴿ونمارق مصفوفه. وزرابی مبثوثه. مساكن طيبة فى جنت عدن﴾ ख़ूबसूरत घर है, एक ईंट मोती की एक ईंट याक़ूत की, एक ज़मुर्द की, मुश्क का गारा, ज़ाफ़रान की घास, फिर अल्लाह का अर्श उनकी छत बनेगा। उनकी नीचे नहरें चल रही हैं। मोतियों के पिलर, याक़ूत के पिलर, ज़मुर्द, के सुतून और उन पर सोने और चाँदी की ईंटों से अल्लाह तआला ने डिज़ाईन के साथ बनाए हुए हैं। उनकी तामीर अल्लाह तआला ने फ़रमाई है ﴿مساكن طيبة. وحور عين﴾ मोटी आँखों वाली लड़कियां उनके दाएं बाएं तरफ़ बिठा दीं ﴿قاصرات الطرف﴾ उनकी नज़रें झुकी हैं अपने ख़ाविन्द के सिवा किसी की तरफ़ नहीं उठतीं, अपने ख़ाविन्द के सिवा किसी को चाहतीं नहीं ﴿كانهن الياقوت والمرجان﴾ अख़लाक़ वाली हैं ﴿حسان﴾ ख़ूबसूरत हैं अगर अख़लाक़ न हों तो ख़ूबसूरती पर आचार डालेगा और क्या हो सकता है। अख़लाक़ पहले अल्लाह ने बताया। हस्सान हुस्न भी दोबाला है। किसी इन्सान और जिन ने उनको छुआ नहीं। ऐ मेरे नेक बन्दे कब तक इन्कार करोगे, कब तक अपने रब की नेमतों को झुठलाओगे, किस किस नेमत को झुठलाओगे तो यह सारा एक मन्ज़र है, तो वह ख़ुशी से उछलेगा कि "हा हुम" मैं पास हो गया, कामयाब हो गया।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम इन्सानों को वह रास्ता देकर गए हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी

कामिल और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन भी कामिल, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ख़ूबसूरत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन भी ख़ूबसूरत।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ बज़ुबान अम्मा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को औरतों ने देखा तो हाथों पर छुरियां चलायीं लेकिन मेरे महबूब को देखतीं तो सीनों पर छुरियां चलातीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जमाल था ज़ाहिर भी बातिन भी। चेहरा-ए-अनवर चमकता था। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने घर में सुंई से कपड़ा सी रहीं थीं, अन्धेरा था चिराग़ नहीं था। इतने में सुंई अन्धेरे में गिर गई तो अब वह सुंई हाथ में नहीं आती। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा टटूल रही हैं कहाँ गई कहाँ गई। इतने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए और जब हुजरे में दाख़िल हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे के नूर से सुंई जगमगाने लगी। अबू तालिब ने कहा था

وابيض يستق الغمام بوجهه ثمال اليتمى عصبة للأرامل، عناديه
اهلاك من ال هاشمى، فهم عنده فيه نعمة وفواضل

कसीदा लामिया में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ कर रहा है। वह ख़ूबसूरत चेहरे वाला जो चाँद जैसा हो और जिस के तुफ़ैल बादलों से पानी मांगा जोता हो, ऐसा जमाल अल्लाह तआला ने दिया था, सारे अरब में निराला पैदा फ़रमाया।

हर चीज़ में कामिल, मुकम्मल, अकमल। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मख़तून पैदा हुए, नाफ़ बरीदा था काटा नहीं गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वजूद मुबारक पर एक ज़र्रा बराबर भी ग़लाज़त नहीं थी। माँ के पेट से नहला कर बाहर लाए गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत के मौक़े पर जन्नत की हूरों को दुनिया में उतार दिया। आसमान के फ़रिश्ते ज़मीन पर उतर आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद पर बादशाहों के तख़्त उलट गए, पत्थरों के बुत ज़मीन पर गिर गए। ईरान के बादशाह के महल में एक हज़ार साल से आग जल रही थी, ससानियों ने तेरह सौ चौंसठ (1364) साल हुकूमत की। इतनी लम्बी हुकूमत किसी को नहीं मिली और एक हज़ार साल से इसी आग को पूजा करते थे। इससे पहले आग के पुजारी नहीं थे। ज़हाक ईरानी बादशाह था जिसने आग की पूजा शुरू की थी। शिकार को निकला हुआ था अज़दहा सामने आया उसको मारा पत्थर, पत्थर आगे निकल कर दूसरे पत्थर पर पड़ा तो आपस में रगड़ खाई तो उससे चिंगारी निकली, साथ में लकड़ी पड़ी थी तो उसमें आग लग गई जिससे वह साँप जल गया और मर गया। यहाँ से आतिश परस्ती शुरू हुई। एक हज़ार साल से वह आग जल रही थी। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए तो वह आग एक दम बुझ गई जैसे कि किसी ने पानी मार दिया। अब वह जला रहे हैं वह जलती नहीं। नौशेरवां के महल में एक ज़बरदस्त धमाका हुआ तो उसके महल के चौदह बुर्ज गिर गए। यह काएनात का सरदार आ रहा है, सारे आलम में तहलका मच गया। एक समंदर की मच्छलियों ने दूसरे समंदर की मच्छलियों को

ख़ुशख़बरियां देनी शुरू कर दीं। ऐसी पैदाईश हुई आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की। जब माँ ने गोद में लिया, लेते ही एक बादल आया और उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने अन्दर छिपा दिया। बादल में से आवाज़ आई ﴿طوفوا به مشارق الارض ومغاربها﴾ इस बच्चे को मशरिक़ और मग़रिब का चक्कर लगवाओ ﴿يعرض باسمهٖ ونعته وصورته﴾ सारा जहां देखेगा कि यह कौन आ गया, जान लें कि यह कौन है, क्या नाम है, क्या सिफ़ात हैं ﴿واتوه خلق آدمؑ﴾ जिसको आदम अलैहिस्सलाम का अख़लाक़ दो, ﴿معرفة شيثؑ﴾ शीस अलैहिस्सलाम की मारफ़त दो, ﴿شجاعة نوحؑ﴾ नूह अलैहिस्सलाम की शुजाअत दो, ﴿وخلة ابراهيمؑ﴾ इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दोस्ती दो, ﴿استسلام اسماعيلؑ﴾ इसमाईल अलैहिस्सलाम की क़ुर्बानी दो, ﴿فصاحة صالحؑ﴾ सालेह अलैहिस्सलाम की फ़साहत दो, ﴿حكمت لوطؑ﴾ लूत अलैहिस्सलाम की हिकमत दो, ﴿ورضاء اسحٰقؑ﴾ इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की रज़ा दो, याक़ूब अलैहिस्सलाम की बशारत दो, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ख़ूबसूरती दो, ﴿وشدة موسىٰؑ﴾ मूसा अलैहिस्सलाम की शिद्दत दो, युशू अलैहिस्सलाम की जिहाद दो, ﴿وحبة دانيالؑ﴾ दानियाल अलैहिस्सलाम की मुहब्बत दो, इलयास अलैहिस्सलाम की वक़्क़ार दो, अय्यूब अलैहिस्सलाम का दिल दो, दाऊद अलैहिस्सलाम की मीठी ज़ुबान दो और ﴿طاعة يونسؑ﴾ यूनुस अलैहिस्सलाम दो, ﴿وعصمة يحيىٰؑ﴾ यहया अलैहिस्सलाम की पाकदामनी दो, ﴿وزهد عيسىٰؑ﴾ ईसा अलैहिस्सलाम का ज़हद दो, ﴿واخمصوه فى اخلاق النبينؑ﴾ तमाम नबियों के अख़लाक इस बच्चे के अन्दर उतार दो।

पैदा होते ही सवा लाख नबियों के अख़लाक़ तो ले लिए फिर

तिरेसठ साल उसमें तरक़्क़ी होती रही, फिर हबीबुल्लाह बनें, हबीब का ताज सिर पर रखा, ख़त्मे नबुव्वत का ताज सिर पर रखा और कितनी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परवाज़ है सिवाए अल्लाह पाक के कोई और नहीं जानता। पिछली किताबें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ में बोल रही हैं। शारे अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने फ़रमाया तेरे ज़ुबान पर वही नाज़िल होने वाली है। शारे अलैहिस्सलाम खड़े हुए जब अल्लाह का कलाम नाज़िल हुआ ﴿یا سماء اسمعی یا ارض انصتی﴾ ऐ आसमानों सुनो और ऐ ज़मीन चुप हो जाओ ﴿ان اللّٰہ یرید ان یقضی امراً﴾ अल्लाह तआला एक काम को वजूद देना चाहते हैं और शान की तकमील चाहते हैं ﴿لا یقول خناء﴾ जो फ़ज़ूल बोलने वाला नहीं है, मुतवाज़े ऐसे हैं कि चिराग़ पर रखकर चलें तो चिराग़ बुझने न पाए, हमारी तरह नहीं ऐड़ी मार कर। इतना बड़ा बादशाह है कि जन्नत की चाबी उसके हाथ में है। ज़मीन पर इस तरह चलता है कि चिराग़ पर पाँव रखे तो बुझने न पाए। ﴿اجعلوہ سکینۃ لباسہ﴾ उसका पाँव ही नहीं पूरा वजूद ही मसकनत होगा ﴿ولبر شعارہ﴾ नेकी उसकी पहचान होगी ﴿الحق منطقہ﴾ हक़ उसका बोल होगा ﴿والوفاء طبعتہ﴾ सच और वफ़ाई उसकी तबियत होगी, ﴿المعاف خلق﴾ माफ़ करना उसके अख़लाक़ होंगे ﴿الاسلام دینہ﴾ इस्लाम उसका दीन होगा ﴿العدل سیرتہ﴾ अदालत उसकी सीरत होगी ﴿احمد اسمہ﴾ अहमद उसका नाम होगा ﴿الفتح بہ اعیناً وقلوب الغفلہ﴾ मैं उसके तुफ़ैल अन्धों को बीना कर दूंगा और पत्थर दिल रौशन कर दूंगा। यह पहली किताबों में आपकी तारीफ़ हो रही है। जिसकी अल्लाह तआला करें उसके तरीक़े क़ाबिले तारीफ़ नहीं होंगे।

लोग सुन्नत की क़द्र नहीं करते

हम ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों को छोड़ दिया कि सुन्नत की कोई बात नहीं, यह सुन्नत है कोई बात नहीं, बहुत बड़ी बात है। ये बड़ी गाड़ियां खड़ी हुई हैं। किसी गाड़ी के टायर की हवा निकल जाए। वह हवा डालते हैं, एक टायर की एक रूपए की हवा निकल जाए तो पचास लाख की गाड़ी खड़ी है। सिर्फ़ एक पैसा की टायर में हवा नहीं तो उससे पूरी गाड़ी खड़ी हो जाती है। इस सुन्नत को हवा से भी ज़्यादा सस्ता न करें। एक रूपए की हवा भी ज़रूरी है गाड़ी चलाने के लिए। अरे मेरे भाईयो! सुन्नत भी ज़रूरी है, सुन्नत के बग़ैर ईमान की गाड़ी कहाँ चल सकती है। जिसकी अज़मत के सामने अल्लाह ने सारी चीज़ों को झुका दिया, जिसको अल्लाह तआला ने सारे नबियों का इमाम बना दिया। ऊपर लाकर सारे पर्दे हटा अपने आप को दिखा दिया। इतना बड़ा ज़र्फ़ है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कि सारी तजल्लियात पी गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े कितने आलीशान होंगे। ज़मानत है गारन्टी है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा दुनिया और आख़रत की निजात है।

हर मुसलमान को अल्लाह का बन्दा बनाने की तमन्ना

तबलीग़ का काम कोई जमात का काम नहीं है। एक घन्टे से

जो बात मैंने आप के सामने रखी है कि हर मुसलमान अल्लाह का बन्दा बन जाए और अल्लाह के महबूब का उम्मती बन जाए। नौकरी क्या और नख़रा क्या, हमारे यहाँ मसल मशहूर है तो इस्लाम किया और नाफ़रमानी क्या?

تعصی الإاله وانت تظهر حبه، هذا العمری فی خیال بدیع، لو
حبك صادقاً لا طعته، إن لمحب لمن یحب مطیع.

यह कैसा इस्लाम है कि हमारे नबी सबसे अफ़ज़ल और आला हैं फिर उसके तरीक़ों को आग लगाते हो और यह कैसा इस्लाम है अल्लाह तआला को वाहिद मान के झूठ बोल रहे हैं, अल्लाह का रब मानते हुए सूद भी खाते हो, रिश्वत भी लेते हो अल्लाह का रब होना याद नहीं रहा। रब तो अल्लाह है, मुझे उस वक़्त पाला जब मैं माँ के पेट में था, जब तो अल्लाह को जानता भी नहीं था, अल्लाह तआला ने तुझको रोटी खिलाई, जब तू मुझे जान कर मेरे तरीक़े पर चलेगा तो क्या अल्लाह तआला तुझे भूल जाएगा।

तो मेरे भाईयो! तबलीग़ कोई तहरीक नहीं, कोई ऐसी तहरीक किसी ने तैयार नहीं की कि आदमी जिसमें आदमी अपने पैसे जेब में रख कर धक्के खाते फिरते, मुल्क मुल्क में फिरे, बस्ती बस्ती फिरे। कोई जमात ऐसे अफ़राद तैयार नहीं कर सकती। पीछे तारीख़ उठा कर देखिए जो ईमान की बुनियाद पर तहरीक उठती हैं तो वह ऐसे अफ़राद पैदा करते हैं। यह इस बात की मेहनत है कि हर एक मुसलमान बन जाए। यह ऐसी बात नहीं जिसको किसी का दिल न माने, जैसे आप अपने वजूद से रोटी की तलब नहीं मिटा सकते। जो शख़्स पियास से मर रहा हो तो उसको गाना और रक़्स अच्छा नहीं लगेगा। अब उसे रोटी भी नहीं

चाहिए, उसको सिर्फ़ पानी का क़तरा चाहिए उस वक़्त किसी भी चीज़ से मुतास्सिर नहीं होगा, वह सिर्फ़ पानी पानी कहता रहेगा, जिस तरह वजूद पानी के बग़ैर, रोटी के बग़ैर बेक़रार हैं इसी तरह वे रूहें जिनको अल्लाह का ताल्लुक़ नसीब नहीं वह इससे ज़्यादा बेक़रार हैं उनको औरत तसल्ली नहीं दे सकती, उनकी गाड़ियां, उनकी फ़ैक्ट्री, उनका इक़्तेदार यह रूह में नहीं उतर सकते। रूह में न औरत पहुँचती है, न शराब पहुँती है, न दौलत पहुँचती है, न इक़्तेदार पहुँता है। रूह में अल्लाह उतरता है अल्लाह, अगर रूह में अल्लाह को जगह नहीं दी तो ख़ुदा की क़सम जैसे आप रोटी न मिले तो हर चीज़ से नफ़रत पानी न मिले तो हर चीज़ से बेज़ार, जिस रूह को अल्लाह नहीं मिलेगा तो वह सारी काएनात से बेज़ार होगी, जब तक उसको अल्लाह नहीं मिलेगा वह भटकता हुआ राही होगा जिसको मंज़िल का कोई पता ही नहीं, तो हम फ़ितरत की आवाज़ लगा रहे हैं।

नमाज़ का कोई नेमलबदल नहीं

भाईयो! अल्लाह से जी लगाओ उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर आ जाओ ﴿وما اتاكم الرسول فخذوه الخ﴾ जो रसूल कहता है कि करो, जिस को छोड़ने को कहता है तो उसको छोड़ दो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ज़िन्दगी दे कर गए हैं। मानने के लिए पहला काम यह है कि या अल्लाह तू है मान यह तेरा रसूल है मान और जो वह कहे तो उसको करो, कुछ इबादत का हक़ है जो अल्लाह के साथ ख़ास है। अल्लाह के साथ उसमें किसी को शरीक न हो। जिसमें नमाज़ सबसे अफ़ज़ल है।

सबसे आला है, सबसे बेहतर है। नमाज़ का कोई बदल नहीं। नमाज़ पढ़ना भी ठीक है लेकिन। यह लेकिन का लफ़्ज़ पिछले की नफ़ी के लिए होता है। नमाज़ ठीक है अच्छी चीज़ है लेकिन। इस लेकिन ने नमाज़ को उड़ाकर रख दिया। कोई बदल नहीं है नमाज़ का। माथा जब तक नमाज़ ज़मीन पर नहीं जाता तब तक अल्लाह राज़ी नहीं होता। हदीस में आता है कि ﴿جعلت قرة عيني في الصلوة﴾ नमाज़ मेरी आँखों की ठन्डक है।

नमाज़ में शरियत की पाबन्दी ज़रूरी है

नमाज़ का कोई बदल नहीं, अपनी पूरी जिन्दगी नमाज़ बना लें। जैसे नमाज़ में हाथ मख़सूस जगह बंधते हैं ऐसे ही नमाज़ के बाहर भी हाथ मख़सूस दाएरे में हरकत करेंगे, उससे बाहर हरकत नहीं करेंगे। इसी तरह नमाज़ में निगाह एक जगह ही लगती है ऐसे ही नमाज़ से बाहर नज़र उस जगह फिरेगी जहाँ फिरने की इजाज़त है और जहाँ फिरने की इजाज़त नहीं है वहाँ नहीं फिरेगी, नमाज़ के अन्दर अपने इमाम का क़ुरआन सुनना चाहिए इसी तरह नमाज़ से बाहर हलाल बात सुनें हराम बातें सुनें, हराम चीज़ों पर न भटकें। इस ज़ुबन से नमाज़ से बाहर हक़ इस्तेमाल करने पर इस्तेमाल करें कि बातिल करें कि बातिल नहीं बोल सकता, गाने नहीं, ग़ीबत नहीं, इससे हक़ बात निकले, नमाज़ में जिस तरह अपने पाँव एक मख़सूस जगह में रखता है इधर उधर नहीं कर सकता इसी तरह नमाज़ से बाहर आप के पाँव हलाल चीज़ों की तरफ़ चलें, हराम चीज़ों की तरफ न चलें। जैसे नमाज़ में

अल्लाह को सोचता है अल्लाह ही के ध्यान में बैठता है ऐसे ही नमाज़ के बाहर दुकान में भी अल्लाह ही ध्यान में बैठे, घर में अल्लाह का ध्यान, हज़रत अबू रेहाना रज़ियल्लाहु अन्हु जिहाद से वापस आए काफ़ी अर्से के बाद, बीवी भी मुश्ताक़, मियां भी मुशताक़। इशा की नमाज़ पढ़ कर घर पहुँचे। घर में आकर दो रकूआत नवाफ़िल की नियत बांध ली और बीवी पास बैठी हुई है कि अभी दो मिनट में रुकू करके नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाएंगे यहाँ तक कि फ़ज्र की अज़ान हो गई। अबू रेहाना रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ ख़त्म नहीं हुई। अज़ान पर जा कर सलाम फेरा। बीवी कहने लगी अबू रेहाना रज़ियल्लाहु अन्हु बड़ा ज़ुल्म किया मुझ पर ﴾أما لنا منك﴿ क्या मेरा हक़ तुझ पर अल्लाह ने नहीं रखा? कहने लगे ﴾نسيت والله﴿ अल्लाह की क़सम भूल गया एक कमरा, ख़िलवत, तेरा बन्दा कोई नहीं, कैसे भूल गया यहाँ तो चिल्ले में जाते हैं तो नहीं भूलते। उन्हीं के ख़याल में नमाज़ पढ़ते हैं। क्या नमाज़ थी उन लोगों की कैसे बदनसीब हैं हम कि हमें ज़िन्दगी में कभी ऐसी नमाज़ नसीब नहीं हुई। हमें क्या ख़बर कि ज़िन्दगी किस चीज़ का नाम है।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की कैफ़ियते नमाज़

मेरे भाईयो! अल्लाह की क़सम हम लुटे हुए मुसाफ़िर हैं, हम लुटे हुए राही हैं, हमें पता नहीं लज़्ज़त किसे कहते हैं, ज़िन्दगी किसे कहते हैं जो रोटी खाने की लज़्ज़त उठाता है उसे क्या ख़बर

ज़िक्र की लज़्ज़त क्या है? जो नज़र उठाने की लज़्ज़त जानता हो तो उसे क्या ख़बर कि नज़र झुकाने की लज़्ज़त क्या है। जिस शख़्स को नमाज़ की लज़्ज़त महसूस नहीं उससे बड़ा भी कोई महरूम होगा। हाय हाय करोड़ों की आबादी में कोई ऐसा नज़र आए जिसको नमाज़ की लज़्ज़त नसीब है।

यह तो हम नमाज़ पढ़ने वालों पर रोते हैं जो नमाज़ नहीं पढ़ते उन पर ख़ून के आंसू रोएं तो भी कम हैं, जो नमाज़ पढ़ते हैं उन्होंने कभी बैठ कर सोचा है कि ऐ मौला तेरी मुहब्बत का सज्दा तुझे नहीं दे सका, तेरे ताल्लुक़ की एक रक्अत भी नहीं पढ़ सका। ऐ अल्लाह अब तो आ जा!

हर तमन्ना दिल से रुख़्सत हो गई
अब तो आ जा अब तो ख़लवत हो गई

इसकी दुआ ही कोई नहीं मांगता, दुआ मांगते हैं ऐ अल्लाह रोटी दे दें। सेहत दे दें, मुलाज़मत दे दें। यह भी मांगनी है। उससे से न मांगे तो किससे मांगे? लेकिन यह भी मांग लें कि या अल्लाह अपना ताल्लुक़ भी दे दें, ऐसी नमाज़ दे दें कि जब मैं अल्लाहु अक्बर कहूँ तो सबसे बेगाना हो जाऊँ। हज़रत अबू रेहाना रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं भूल गया। जब मैंने नमाज़ शुरू की तो मेरे सामने जन्नत खुल गई मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कहाँ खड़ा हूँ। यह इबादत दे गए। नमाज़ अज़ीमुश-शान अमल है। नमाज़ ठीक हो जाएगी तो पूरी ज़िन्दगी इस्लाम में आ जाएगी। यह नमाज़ियों की ज़िन्दगी इस लिए ठीक नहीं हैं कि नमाज़ ठीक नहीं है लेकिन ये न पढ़ने वालों से बदर्जाहा बेहतर हैं। जैसी भी पढ़ते हैं न पढ़ने वालों से इनको नहीं मिला सकते।

यह सिर सज्दे में रखना ही होगा।

नमाज़ियों के पाँच दर्जे हैं

इब्ने क़ीम रह० ने नमाज़ियों के पाँच दर्जे बताए हैं:-

1. पहला दर्जा सुस्त कभी पढ़ी कभी छोड़ दी यह जहन्नुम में जाएगा।

2. दूसरा दर्जा बाक़ायदा पढ़ने वाला अपने ध्यान में पढ़ता है, कभी अल्लाह तआला का ध्यान नहीं आया। इसकी डांट डपट होगी।

3. ﴿معاقب معفوعنه﴾ यह तीसरा है कि कोशिश करता है लेकिन ध्यान नहीं जमता कभी ध्यान आता है कभी निकल जाता है। यह रियायती नम्बरों से पास हो जाएगा। पैंतीस नम्बर तो दे दो, इसने कोशिश तो की है।

4. महजूर है अल्लाहु अक्बर कहता है तो दुनिया से कट जाता है अल्लाह से जुड़ जाता है। यह जो सलाम फेरते हैं उसकी हिकमत यह है कि जब आदमी अल्लाहु अक्बर कहता है तो ज़मीन से उठ जाता है और आसमानों में दाख़िल हो जाता है, अब वह ज़मीन पर नहीं बल्कि गया हुआ है। जब नमाज़ ख़त्म हुई तो वापस आया तो इधर वालों को भी सलाम करता है उधर वालों को भी सलाम करता है। यह दर्जा चौथा है। यहाँ से नमाज़ का अज्र शुरू होता है। इस नमाज़ी की ज़िन्दगी कभी ख़राब नहीं होगी।

5. पाँचवा दर्जा नमाज़ का वह है जो मुक़र्रिबीन की नमाज़

अंबिया, सिद्दीक़ीन की नमाज़। उनकी आँखों की ठन्डक नमाज़ बन जाती है। जैसे हज़रत अबू रेहाना रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को तीर लगा तो सारा ज़ोर लगाया निकालने के लिए, नहीं निकल सका तो कहा छोड़ दो नमाज़ में निकाल लेंगे। नमाज़ की नियत बांधी तो उस तीर को निकाला गया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के जिस्म पर जुंबिश भी नहीं आई। सलाम फेरने के बाद पता चला कि तीर निकाल लिया गया तो कहने लगे मुझे पता ही नहीं चला। यह नमाज़ मुक़र्रिबीन की है।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निज़ामें सलात देकर गए, मालदारों को ज़कात का निज़ाम देकर गए, ज़मींदारों का अश्र देकर गए, ज़्यादा पैसे हों हज देकर गए, रमज़ान के रोज़े देकर गए फिर इसके साथ अख़लाक़ देकर गए। नमाज़, रोज़े, ज़कात से इस्लामी माशरा वजूद में नहीं आता जब तक इस्लामी अख़्लाक़ वजूद में न आएं। इस्लामी अख़्लाक़ को वजूद में लाने के लिए तीन बुनियादी चीज़ें इर्शाद फ़रमायीं:

﴿صل من قطعك، تعطی من حرمك، وتعف عن من ظلمك﴾

जो तुझ से तोड़े उससे जोड़, जो न दे उसको दो, जो ज़ुल्म करे उसको मॉफ़ करो। यह अख़्लाक़ जब तक क़ायम नहीं होंगे तो उस वक़्त तक इस्लामी माशरा नहीं बन सकता। इस्लामी माशरा बनाने के लिए इन तीनों बातों पर अमल करना पड़ेगा।

दरगुज़र की एक मिसाल

इमाम ज़ैनुलआबिदीन रह० को एक आदमी गाली देने लगे तो

दूसरी तरफ़ मुँह करके बैठ गए वह समझ रहा था उनको पता ही नहीं कि मैं इनको गालियां दे रहा हूँ, वह सामने आकर कहने लगा तुझे गालियां दे रहा हूँ तुझे! इमाम साहब रह० ने कहा मैं तुम्हें मॉफ़ कर रहा हूँ तुम्हें।

दरगुज़र का जज़्बा पैदा करो

ज़ुल्म करने वाले को मॉफ़ करो। आप सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो मॉफ़ करेगा अल्लाह पाक उसे इज़्ज़त ज़रूर देगा। बदला लेने की भी इजाज़त है लेकिन इस्लाम का क़ानून कितना ख़ूबसूरत है? यहाँ चाकू मारा, निशान आ गया, ज़ख़्म पड़ गया। अब बदला लेने की इजाज़त है लेकिन अगर चाकू मारकर हड्डी तोड़ दी तो अब बदला लेने की इजाज़त नहीं है। अब उसका मुआवज़ा लिया जाएगा बदला नहीं क्योंकि हड्डी तोड़ने में इम्कान हैं कि ज़्यादा टूट जाए। लिहाज़ा अब शरिअ्त कहती है कि तुम्हें मुआवज़ा लेना होगा, बदला कोई नहीं। इतना अद्ल इस्लाम ने दिया है। बदले की इजाज़त लेकिन मॉफ़ करने की फ़ज़ीलत है अगर यह हदीस ज़िन्दा होती तो सिन्धी, पंजाबी झगड़े खड़े न होते। पठान मुहाजिर झगड़े खड़े न होते। एक हदीस को छोड़ने से यह आग भड़क गई। न मारने वालों को पता है कि मैं क्यों मार रहा हूँ और न मरने वाले को पता है मैं क्यों मर रहा हूँ। ये दोनों जहन्नुम में जा रहे हैं सिर्फ़ एक हदीस को छोड़ने से, मॉफ़ न करने से ये फ़साद रूनुमा होते हैं। कितने ख़ानदान इसमें उजड़ गए, कितनी आबादियां इसमें वीरान हो गयीं। क़ुरआन में अल्लाह ने अपने हबीब की नमाज़ की तारीफ़ नहीं की, आपके

रोज़े, आपकी ज़कात की और आपके जिहाद की तारीफ़ अल्लाह तआला ने नहीं की। सिर्फ़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ की अल्लाह ने तारीफ़ की है। ऐ मेरे महबूब क्या कहता है तेरे अख़्लाक़ पर ﴿انك لعلى خلق عظيم﴾ आपके अख़्लाक़ की कसम खाई। यह बहुत बड़ा अमल है जिससे माशरा बनता है माशरा।

इन्सान को मुकम्मल अख़्लाक़ का पैकर होना चाहिए

इसके लिए मेहनत करनी पड़ती है कि अख़्लाक़ आली हों ﴿بعثت لاتمم مكارم الاخلاق﴾ मैं अख़्लाक़ को बुलन्दियों तक पहुँचाने के लिए भेजा गया हूँ। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दीन किसे कहते है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हुस्ने अख़्लाक़, फिर दूसरी तरफ़ आ कर बैठा दीन किसे कहते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हुस्ने अख़्लाक़, फिर तीसरी तरफ़ से सवाल किया कि दीन किसे कहते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हुस्ने अख़्लाक़। तीन मर्तबा पूछने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक ही जवाब दिया। फिर वह आदमी पीछे आया और सवाल किया ﴿ما الدين﴾ दीन किसे कहते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यूं पीछे मुड़कर देखा। क़ुर्बान जाइए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हिल्म पर। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अरे भाई तू कब समझेगा? ﴿وهو ان لا

تغضب﴾ दीन यह है कि गुस्से न हुआ कर। तो हुस्ने अख़्लाक़ दीन का बहुत बड़ा बाब है। नमाज़ सिर्फ़ पाँच हैं, फिर इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन तहज्जुद हैं। टोटल मिलाकर नमाज़ें हमारी ज़िन्दगी में बीस तीस बनती हैं तो चलो रोज़ाना सौ नमाज़ें फ़र्ज़ करें तो बाक़ी वक़्त तो इन्सानों के साथ गुज़ारना है तो अख़्लाक़ अच्छे नहीं होंगे तो माशरा टूट जाएगा। तलवारों के लगे ज़ख़्म तो भर जाते हैं ज़ुबानों के लगे ज़ख़्म नहीं भरते। देखो कुफ़्र एक बोल ही तो है लेकिन हमेशा की जहन्नुम एक बोल से, कलिमा तौहीद एक बोल है हमेशा की जन्नत।

﴿فقولوللناس حسنا﴾ लोगों से अच्छी बात करो ﴿قل عبادی یقول التی هی احسن﴾ मेरे बन्दों से अच्छी बात किया करो तो एक मेहनत यह है कि बदअख़्लाक़ अल्लाह तआला की नज़रों से 'गिर हुआ होता है। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा ﴿ای حسنة اعظم﴾ सबसे बड़ी नेकी क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हुस्ने अख़्लाक़।

❑ ❑ ❑

दुनिया की नेमतें

इन्सान एहसान फ़रामोश न बने

मेरे भाइयो और दोस्तो! अपने मोहसिन के सामने झुकने इन्सान की फ़ितरत है और सारी मख़्लूक़ जानदार की फ़ितरत है। एहसान करने वाले के सामने सिर झुकाया जाता है। हम कुत्ते को एक रोटी खिलाते हैं और सारी ज़िन्दगी वफ़ा करता है, घोड़े को चारा डालते हैं सारी ज़िन्दगी साथ देता है निभाता है। इन्सान से भी अल्लाह तआला का यही मुतालबा है कि हम कुछ नहीं थे अल्लाह तआला ने हमें वजूद बख़्शा।

दिलों में मुहब्बत अल्लाह तआला ही डालते हैं

अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर हैं। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि सब काम मैं करता हूँ। तुम्हारा अल्लाह यह करता है कि माँ बाप के दिल में तुम्हारी मुहब्बत डाल देता है और जब चाहता है ख़ींच लेता है जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा के दिल से मुहब्बत को खींच लिया था। फ़िरऔन को मूसा अलैहिस्सलाम के लिए दूध पिलाने के लिए दाया की ज़रूरत

थी। उसने बहुत सी दायों को दरबार में तलब किया ताकि दूध पिलाएं बच्चे को मगर अल्लाह तआला ने फ़रमायाः "हम ने मूसा पर अपनी माँ के अलावा सबका दूध हराम कर दिया।" बिलआख़िर एक औरत ने कहा जो उस मजलिस में थी मैं दाया को लेकर आऊँ? फ़िरऔन कहा हाँ। जब वह औरत दाया को लेकर आई वह दाया नहीं बल्कि हक़ीक़ी माँ थी। वह अपने जज़बात को क़ाबू में नहीं रख सकती थी। अल्लाह तआला ने फ़रमाया अगर मैं उस वक़्त उसके दिल से मुहब्बत को न खींचता तो बहुत हाल ख़राब कर देती।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का हैरत अंगेज़ वाक़िया

सुलेमान अलैहिस्सलाम के पास एक झगड़ा आ गया था। दो बच्चे खेल रहें हैं एक बच्चा झील में गिर कर मर गया और एक बैठा रहा। दोनों औरतों में से एक कहने लगी कि यह मेरा है। दूसरी कहने लगी कि यह मेरा है। गवाह किसी के पास नहीं। सुलमान अलैहिस्सलाम के पास लेकर आयीं। एक कहे कि यह मेरा है और दूसरी कहे कि मेरा। सूलेमान अलैहिस्सलाम ने कहा ऐसे तो फ़ैसला नहीं हो सकता तो ऐसा करो छुरी ले आओ इसके दो टुकड़े करके आधा एक को दे दो और आधा दूसरी को दे दो। जो असली माँ थी वह रोने लगी उसने कहा उसी को दे दो, उसी को दे दो। इसके दो टुकड़े मत करो। सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया इसको दे दो यह इसी का बेटा है। वह क्यों न चीख़ी यह

क्यों चीख़ी? क्योंकि इसका अपना था वह कटा हुआ नहीं देख सकती थी। जिसका नहीं है वह चुप रही और जिसका था वह चीख़ पड़ी। माँ अपने जज़्बात का इज़्हार नहीं कर सकी तो यह कैसे हो सकता है ﴿لولا ان ربطنا على قلبها﴾ हमने उसके दिल को बन्द कर दिया मुहब्बत ही नहीं नज़र आ रही है तो यह अल्लाह तआला है जो मुहब्बत दिल में डालता है और दिल को नरम फ़रमाता है। मेरी माँ भी जागती है और मेरा बाप भी जागता है और फिर यह सारा निज़ाम परवान चल कर आदमी वजूद में आता है फिर आदमी परवान चढ़ता है।

माज़ी देखकर इबरत हासिल करें

﴿لم ازل ادبر تدبيرا حتى ارادتى فيك﴾ और मैंने अपने इरादे को नाफ़िज़ किया ﴿وخرجتك الى دارك دنيا﴾ और तुझे दुनिया में लेकर आया ﴿فلما ترادعة﴾ जब तुझ में जवानी की लहरें दौड़ें ﴿وقدرت﴾ और क़द्दावर हो गया ﴿واشتد عضوك﴾ तेरे बाज़ ताक़तवर हो गए, जवानी की ताक़त पैदा हो गई तो अब यह चाहिए था तो सारी पिछली ज़िन्दगी को देख कर मेरे सामने झुक जाता जैसे कुत्ता तुम्हारी एक रोटी खाता है और सिर झुका देता है। तुम उसको खाना खाते हुए बुलाओ रोटी छोड़ कर आ जाता है। उसको लात मारो, छुरी मारो सिर नहीं उठाता, घर का बच्चा भी उसकी पिटाई करे तो वह सिर नहीं उठाता। बाहर से बड़ा छः फुट का आदमी भी आ जाए तो उसकी टांगों को पड़ जाता है, जान की परवाह नहीं करता और रोटी की वफ़ा करता है। बुलाओ तो उठ कर आ जाता है, खाना खाते छोड़कर आ जाता है। अल्लाह तआला ख़ाली

बैठे को बुलाता है, मस्जिद में आ जाओ कोई उठ कर नहीं आता। ख़ाली को बुलाता है आ जा, आ जा, कोई उठ कर नहीं आता तो अल्लाह जल्ले जलालुहु ने सारे एहसान गिनाए हैं कि मैंने यह किया, यह किया, यह किया। अब आगे तुमने क्या करना था, यह करना था कि तुम मेरी मान कर चलते।

यह सारा जहाँ इन्सान के नफ़े के लिए बना है

﴿يابن آدم خلقت الاشياء الا جلك﴾ यह सारा जहां ऐ बन्दे तेरे लिए बनाया ﴿وخلقك اجلى﴾ और तुझे मैंने अपने लिए बनाया तो अब यह होना चाहिए था कि इन सारे एहसानात को तू देखता है कि यह सारा निज़ाम अल्लाह तआला ने तेरे लिए चलाया है ﴿الشمس والقمر دائبين﴾ सूरज और चाँद तुम्हारे लिए दिन और रात का निज़ाम ला रहे हैं ﴿انا صببنا الماء صبا﴾ बारिश तुम्हारे लिए बरस रही है ﴿ثم شققنا الارض شقا﴾ ज़मीन तुम्हारे लिए फट रही है ﴿فانبتنا فيها حبا وعنبا وزيتونا ونخلا وحدائق غلبا وفاكهة وابا﴾ इसमें से ग़ल्ले और फल और फूल और सब्ज़ियां और चारा यह सब किस के लिए हैं ﴿متاعا لكم ولانعامكم﴾ तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के लिए सब कुछ हो रहा है ﴿والارض بعد ذالك دحها﴾ ज़मीन तुम्हारे लिए बिछौना बिछा दी कोई रोलर नहीं चलाया न कोई बुलडोज़र, एक हुक्म से ज़मीन को बिछाया ﴿اخرج منها ماءها﴾ तुम्हें सबसे ज़्यादा पानी की ज़रूरत थी पानी निकाला ﴿ومرعها﴾ तुम्हें सब्ज़े की ज़रूरत थी अपने लिए जानवरों के लिए वह निकाला फिर ज़मीन हिलती थी ﴿والجبال ارسها﴾ कि वज़न को बराबर करने के लिए पहाड़ लगाए दिए क्यों ﴿متاعا لكم ولانعامكم﴾ तुम्हारे लिए और तुम्हारे जानवरों

के लिए। तू मांगता है मैं देता हूँ ﴿استغفرتنى غفرت لك﴾ तू तौबा करता है मैं तेरी तौबा क़ुबूल कर लेता हूँ ﴿ان عقلتنى عقلت لك﴾ तू फिर तौबा तोड़ता है फिर आकर तौबा करता है फिर मैं तौबा क़ुबूल कर लेता हूँ ﴿اهكذا جزاء من احسن اليك﴾ तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि फ़ैसला कर कि एहसान करने वाले के साथ यही किया जाता है जो तू मेरे साथ कर रहा है। माँ बाप क्यों दुखी होते हैं जब औलाद नाफ़रमान होती है, एहसान याद दिलाते हैं कि यह किया, यह किया। अल्लाह का एहसान तो देखिए जिसने गन्दे पानी से ख़ूबसूरत इन्सान बनाया। कितना बड़ा एहसान है इस कुफ़्र की वादी में आपको इस्लाम की दौलत बख़्शी। कितनी बड़ा ज़ुल्म कितनी बड़ी हलाकत है कुफ़्र पर मर जाना। कितनी बड़ी हलाकत है कुफ़्र पर मरने जाने वाले कभी भी जहन्नुम से नहीं निकलेंगे ﴿وما هم بخرجين من النار﴾ कोई तो दिन आता जहन्नुम से निकलते, कभी नहीं निकलेंगे। कितना बड़ा एहसान अल्लाह तआला ने किया।

आज हर चीज़ की हिफ़ाज़त है मगर अपने ईमान की हिफ़ाज़त नहीं

ईमान की दौलत दी सब से बड़ी दौलत ईमान है। इसको तो ज़ाए कर रहे हैं। दस डॉलर की चीज़ ख़रीद कर लाते हैं तो उसको भी पैकिगं करके लाते हैं कि कहीं ज़ाए न हो जाए। एक किलो गोश्त ख़रीदते हैं तो उसको भी लपेट कर लाते हैं कि कहीं ख़राब न हो जाए। इसकी हिफ़ाज़त के लिए फ्रिज बना कर रखे

हुए हैं। दो चार डॉलर के कपड़े हैं उसकी हिफ़ाज़त के लिए अलमारियां बनी हुई हैं और बेग बने हुए हैं और उनको धोने के लिए लान्डरियां बनी हुई हैं कि कपड़े ख़राब न हो जाएं। मेरे भाईयो! दस डॉलर की चीज़ की हिफ़ाज़त का इन्तेज़ाम कर रखा है, ईमान को बचाने के लिए कोई इन्तेज़ाम नहीं है कि आँखों ने ग़लत देखा, ईमान लुटा, कानों ने गाने सुने तो ईमान लुटा, ज़ुबान ने झूठ बोला तो ईमान लुटा, हराम खाया तो ईमान लुटा, अपनी शहवत को ग़लत जगह इस्तेमाल किया तो ईमान लुटा। सबसे बड़ी दौलत तो लुटा दी सबसे बड़ी दौलत तो बर्बाद कर दी तो पैसा कमा कर क्या करोगे। छोटे से छोटा अमल भी नेकी न छोड़ो, छोटी से छोटी नेकी भी न छोड़ो और छोटे से छोटे गुनाह से भी परहेज़ करो। हदीस में आता है ﴿يا عبادی لو اذنبت ذنبا فلا تنظر الی صغیره انظر الی من عصیته﴾ मेरे बन्दे जब कोई गुनाह करता है तो यह न देख कि छोटा है या बड़ा यह देखा कर कि नाफ़रमानी किसकी हो रही है। नाफ़रमानी तो बहुत बड़े रब की हो रही है न। उस ज़ात से असर लेकर चलना यह ईमान है। अल्लाह तआला के एहसानात हैं मेरे भाईयो! जिसने सबसे बड़ी दौलत इन्सान बनाया, सबसे बड़ी दौलत ईमान अता फ़रमाया और उससे बड़ा एहसान फ़रमाया हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती बनाया। इतने एहसान के बावजूद हम इस डॉलर की ख़ातिर अमरीका की ख़ातिर, यहाँ के पासपोर्ट की ख़ातिर, यहाँ के ग्रीन कार्ड की ख़ातिर हम अल्लाह के दीन को छोड़ें। यहाँ के पैसे इकठ्ठे करके हम औलाद को कुफ़्र की वादी में धकेल दें। आप ने क्या कमाया।

मुसलमान का पौंड की ख़ातिर ईमान ख़राब करना

इंगलैंड में एक आदमी मिला। हमारी जमात को गई कहा जी पौण्ड कमा ले पर ईमान गंवा बैठे। औलादें हमारे हाथों से चली गयीं। अब इन पौण्डों को हम आग लगाएंगे या क्या करेंगे। इस वक़्त होश आया। जब होश आया तो चिड़ियां उड़ चुकी थी। अब लौट कर आना मुश्किल है। दावत व तबलीग़ का काम करो इसमें अल्लाह तआला ने तासीर रखी है। अपने लौट कर आएंगे, पुराने दाख़िल होंगे। यह नबी की मेहनत का असार है। जहां नबी का काम होता है।

जहाँ दावत होगी वहाँ बरकत ही बरकत होगी

जहाँ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मेहनत चलेगी वहाँ अल्लाह तबारकतआला कुफ़्र को भी तोड़ेगा अपने भूले हुओं को भी वापस लेकर आएगा और परायों के लिए भी इस्लाम का दरवाज़ा खुलेगा। आप को यहाँ रहते हुए ईमान बचाना है, अपनी औलाद को नस्लों को बचाना है अगर यहीं रहना है और यहाँ नहीं जाना है और अपनी नस्लों को ईमान पर बाक़ी रखना है तो मेरे भाईयो तबलीग़ का काम करो। तबलीग़ वह काम है जिससे ईमान बनता है और ईमान चढ़ता है औरों के लिए इस्लाम का दरवाज़ा खुलता है। यह अल्लाह के एक लाख चौबीस हज़ार नबियों की तारीख़ गवाह है जब नबी ने बुरे से बुरे माहौल

में ﴿لا اله الا الله﴾ की दावत दी और आवाज़ लगाई तो क़ौमें टूट कर अल्लाह तआला की तरफ़ आयीं और क़बाइल के क़बाइल इस्लाम में आए और बातिल टूटा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मेहनत सारे आलम की मेहनत है, सारी इन्सानियत की मेहनत है, सारे जहानों पर मेहनत है अगर आप यहाँ रहते हुए इस काम को अपनी मेहनत समझेंगे, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आप उम्मती हैं। मैं भी हूँ आप भी हैं। हमारे नबी आख़री नबी हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं है। हम सब भूल गए हैं हांलाकि हमने अपने अक़ीदे में शामिल किया है कि हमारे नबी के बाद कोई नबी नहीं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़री नबी हैं।

ख़ातिमुन-नबिय्यीन होने का सही मतलब

आख़री नबी होने का मतलब क्या है कि अब क़यामत तक जो नबुव्वत का दावा करेगा वह बातिल है, वह काफ़िर है, वह मुरतिद है लेकिन इन्सानों को इस्लाम की बात समझाने और पहुँचाने का जो इन्तेज़ाम है वह किसके सुपुर्द किया जाएगा तो दो बातें थीं या तो यह था कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कुफ़्र बाक़ी नहीं रहेगा, कुफ़्र तो बहुत ज़्यादा बाक़ी है या यह था कि मुसलमान के मुसलमान होंगे कभी गुमराह नहीं होंगे। तो आप अपनी औलादों को देख रहे हैं कि वे इस्लाम छोड़कर ईसाइयत में जा रहे हैं। इस्लाम छोड़कर मुरतिद हो रहे हैं। अरबों की नस्लें मुरतिद हो गयीं तो हम तो अजमी हैं। साउथ अफ़्रीक़ा में लाखों अरब औलादें इसाई हो गयीं। पिछले साल हम आस्ट्रेलिया गए।

कितने अफ़ग़ानिस्तान घराने और कितने अरब घराने उनके बच्चे बच्चियां बिल्कुल जिनको पता ही नहीं कि हमारे माँ बाप मुसलमान थे अरब नसल हैं लेकिन इस्लाम छोड़ चुकी हैं तो यह कोई बात नहीं है कि मुलसमान मुरतिद हो रहे हैं जो बाकी हैं ख़स्ता हालत में हैं, बड़ी कच्ची हालत में हैं। यह मुसलमान इस्लाम पर बाकी रहें जो भूल गए हैं वह वापस आजाएं जो नहीं हैं वे इस्लाम में आ जाएं इसके लिए अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को ﴿الا فليبلغ شاهد الغائب﴾ का फ़रमान ﴿اخرجت للناس تامرون بالمعروف وتنهون عن المنكر وتؤمنون بالله﴾ तुम सबसे बेहतर उम्मत हो कि तुम मेरा पैग़ाम दुनिया में पहुँचाने के लिए घरों से निकाले गए हो तो तबलीग़ का काम मेरे भाईयो यह कोई जमाती काम नहीं है हर मुसलमान जो यह कहता है कि मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़री नबी हैं उनके बाद कोई नबी नहीं उसके ज़िम्मे है कि ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह यह जो हमने कलिमा पढ़ा है हमें पाबन्द बनाता है कि अल्लाह तआला की मानो ﴿لا نبيا بعدی﴾ हमारे नबी के बाद कोई नबी नहीं यह बोल हमें पाबन्द बनाता है कि अल्लाह के दीन की तबलीग़ करें। उसके पैग़ाम को आगे ज़िन्दा करो। इसके लिए आलिम होना शर्त नहीं और मुक़र्रिर होना कोई शर्त नहीं ﴿بلغوا عني ولو آية﴾ मेरी एक बात भी है तो आगे पहुँचाओ, पूरे क़ुरआन की एक अनपढ़ आदमी तबलीग़ कर सकता।

दावत व तबलीग़ बहुत आसान है

सारी आसमानी किताबों का ख़ुलासा, आसमान से चार किताबें

आयीं, डेढ़ सौ छोटे छोटे किताबचे आए। छोटी किताबें डेढ़ सौ और बड़ी चार किताबें और पहली तीन किताबों का खुलासा क़ुरआन पाक है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اوتيت المفاتحة مكان تورٰاة﴾ मुझे तौरात के बदले में अल्लाह तआला ने सूरहः फ़ातेहा अता फ़रमाई, ﴿والمائدة مكان انجيل﴾ और इन्जील के बदले में अल्लाह तआला ने मुझे सूरहः माएदा अता फ़रमाई, ﴿حٰم مكان الزبور﴾ और ज़बूर के बदले में अल्लाह तआला ने मुझे सूरहः हामीम अता फ़रमाई। हामीम की जितनी सूरतें हैं जो चौबीसवें सिपारे से लेकर छब्बीसवे सिपारे में हैं ये कुल सात सूरते हैं ﴿حٰم والكتاب مبين، حٰم تنزيل من الرحمٰن الرحيم﴾ हामीम यह सात सूरते हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ज़बूर के बदले में मुझे अता फ़रमायीं तो सारी किताबें हमारे क़ुरआन पाक की इन सूरतों में आ गयीं सूरहः फ़ातेहा, सूरहः माइएदा और सात सूरतें हामीम की हैं तो नौ सूरतों में सारी आसमानी उलूम अल्लाह तआला ने दे दिये ﴿فضلت بالمفصلت﴾ बाक़ी क़ुरआन के ज़रिए से अल्लाह तआला ने मुझे इज़्ज़त बख़्शी फिर सारे क़ुरआन पाक का खुलासा उलमा ने लिखा है सूरहः फ़ातेहा है। पूरे क़ुरआन का खुलासा किया जाए तो सूरहः फ़ातेहा है सूरहः फ़ातेहा का खुलासा किया जाए तो एक आयत है ﴿اياك نعبد واياك نستعين﴾ यह पूरे क़ुरआन का खुलासा है। अगर यूं कहा जाए कि ﴿اياك نعبد واياك نستعين﴾ सारे आसमान के उतरे हुए उलूम का खुलासा है तो यह बात ग़लत नहीं ﴿اياك نعبد﴾ ऐ अल्लाह तेरी मानेंगे, तेरी बन्दगी करेंगे। बन्दगी का क्या मतलब है कि नमाज़ पढ़ेंगे बाहर जाकर सूद पर काम करेंगे, शराब बेचेंगे नहीं ﴿اياك نعبد﴾ तेरी बन्दगी करेंगे यानी चौबीस घन्टे तेरी मानकर चलेंगे।

बाज़ार में भी तेरी इताअत, दफ़्तर में भी तेरी इताअत, मक्का मुकर्रमा में भी तेरी इताअत थोथावे शिकागो में भी वही है। मदीने मुनव्वरा में भी वही है, पाकिस्तान में भी वही है, हिन्दुस्तान में भी वही है। यह अमरीका है तो है तो अल्लाह तआला के क़ानून के नीचे, अल्लाह तआला की ज़मीन की पर ज़मीन है तो अल्लाह तआला की माननी पड़ेगी, अमरीका की नहीं चलेगी ﴿فترا ذی کشفة الغبار افرس تحت رجلا عن حمار﴾ मौत पर आँख खुलेगी कि मैं किस पर बैठा था लेकिन उस वक़्त आदमी पछताए तो कुछ भी नहीं हो सकता।

क़ुरआन पाक का ख़ुलासा एक आयत है

क़ुरआन पाक का ख़ुलासा मैं अर्ज़ कर रहा था ﴿اياك نعبد﴾ ऐ अल्लाह तेरी मानेगें ﴿واياك نستعين﴾ और ऐ अल्लाह तुझी ही से मदद चाहेंगे, पैसों से नहीं चाहेंगे, हुकूमत से नहीं चाहेंगे। हमारा काम तू बनाएगा पैसा नहीं बनाएगा, डॉलर नहीं बनाएगा, डाक्टर नहीं बनाएगा या अल्लाह तू बनाएगा। अब मैं इसको आसान करके बताता हूँ अगर आपने किसी शख़्स को यह कह दिया कि मेरा सब कुछ अल्लाह करता है लिहाज़ा अल्लाह तआला से मांगना चाहिए, अल्लाह तआला की मान कर चलना चाहिए और उसके नबी के तरीक़े पर चलना चाहिए और उसको आगे फैलाना चाहिए तो इन चार जुमलों में आपने सारे आसमानी इल्म की दावत दे दी, सारी हदीस की दावत दे दी ,सारी तौरात, इन्जील और ज़बूर की दावत दे दी अगर आपने यह चन्द जुमले बोल दिए भाई हमें अल्लाह की मान कर चलना चाहिए और अल्लाह ही से

मांग कर चलना है और अल्लाह ही हमारे काम बनाता है और नबी के तरीक़े पर चलना है और उसको हमने आगे पहुँचाना है तो पूरा क़ुरआन और हदीस हमने आगे तक पहुँचा दिया तो यह तबलीग़ ऐसा आसान काम है कि एक अनपढ़ भी कर सकता है, आम आदमी भी कर सकता है, डाक्टर भी कर सकता है, इन्जीनियर भी कर सकता है और इस काम में अल्लाह के इन जुमलों में कुछ नज़र नहीं आता मैंने बोल बोला आपने सुन लिया। जाओ जाओ ऐसी बात बड़े बनाने वाले फिरते हैं लेकिन इस जुमले के पीछे बड़ी ताक़त है जब यह बोल चलता चलता हर घर तक पहुँचेगा तो अल्लाह तआला इस काएनात को तोड़ेगा। यह बातिल चलेगा नहीं। इसके टूटने का वक़्त आया हुआ है। यह तरक्क़ी याफ़्ता नहीं यह फूला हुआ है। डाक्टर जानता है यह मोटापा नहीं है इसके पेट में पानी भर चुका है यह मरने वाला है। मेरी नज़र देखेगी कि बड़ा मोटा ताज़ा आदमी है, बड़ी मोटी मोटी गालें हैं, बड़े मोटे मोटे बाज़ू हैं। जानने वाला डाक्टर कहेगा जनाब पानी भर चुका है, मरने वाला है, सही नहीं है आपको नज़र आ रहा है मोटा ताज़ा। मौत क़रीब है, मैं देख रहा हूँ इसके अन्दर का निज़ाम टूट चुका है। अल्लाह की ख़बर बता रही है कि जब क़ौमें बेहया हो जाती हैं तो और हया की चादर उतार देती हैं तो अल्लाह उसको तोड़ने का फ़ैसला कर देता है अगर हम तबलीग़ के काम को ज़िन्दा करेंगे तो हमें बचाएगा हमारी नस्लों को बचाएगा और इस्लाम को ज़िन्दा करेगा। आपको यहाँ के इस्लाम का ज़रिया बनाएगा। कोई मुल्क किसी को रोज़ी नहीं खिलाता बल्कि आपमें से एक एक आदमी ऐसा बैठा हुआ है जो पूरे

अमरीका के लिए हिदायत का ज़रिया बन सकता है। आप अपनी कीमत खुद नहीं पहचान रहे हैं, आप यह समझते हैं कि हमें अमरीका रोटी खिला रहा है मैं तो कहता हूँ अल्लाह की क़सम आप अमरीका को रोटी खिला रहे हैं अगर दुनिया से मुसलमान मिट जाए ﴿تنفخ فی الصور﴾ अल्लाह पाक वहीं क़यामत क़ायम कर देगा ﴿لا تقوم الساعة حتی لا یقل علی الارض اللّٰه﴾ जब तक अल्लाह, अल्लाह कहने वाला एक मुसलमान मौजूद है तो सूरज चमकेगा, चाँद की चाँदनी आएगी, रात आएगी, दिन आएगा, हवाऐं चलेंगी, समन्दर से मौजें उठेंगी, ज़मीन ख़ज़ाने उगलेगी, फूल की पत्तियां महकेगीं लेकिन जब मुसलमान मर जाएगा तो अल्लाह की क़सम मेरा खुदा सारी काएनात को तोड़ देगा जैसे कि अण्डे के छिलके को तोड़ा जाता है।

اذا السمآء انفطرتo واذا الكواكب انتثرتo واذا البحار فجرتo
واذاالشمس كورتo واذا النجوم انكدرت o واذا الجبال
سيرت o واذا العشار عطلت o واذا الوحوش حشرتo واذا
البحار فجرت o واذا النفوس زوجتo واذا الموء دة سئلت o
بای ذنب قتلتo واذاالصحف نشرت o واذاالسمآء كشطتo
واذا الجحيم سعرت o واذا الجنة ازلفتo علمت نفس ما
احضرت o فلا اقسم بالخنسo الجوار الكنس o والليل اذا
عسعسo والصبح اذا تنفسo انه لقول رسول كريمo

यह पूरी क़यामत का नक़्शा ख़िच कर आ रहा है कि तुम्हारे मरने की देर है कि जब तुम मर जाओगे तो मैं सारी काएनात का ऐसे तोड़ दूंगा सूरज, चाँद, हवाएं फ़िज़ाएं, ख़ला सारी काएनता ऐसी ख़त्म कर दूंगा जैसे कुछ न था। सब कुछ फ़ना कर दूंगा। तुम्हारी बरकत से दुनिया ज़िन्दा है, अपनी क़द्र पहचानों।

मुसलमान की बरकत से सब खा रहे हैं

अपने आपको डॉलर का गुलाम मत समझो, अल्लाह तआला का गुलाम समझो मैं तो ऐसी मिसाल दिया करता हूँ। एक बारात जा रही है, पाँच सौ बराती साथ में, बाजे गाजे और दुल्हा मियाँ दर्मियान में और चारों तरफ़ बाराती और वह दुल्हा मियाँ पागल कभी इधर वाले से पूछता है कि आगे रोटी मिलेगी, कभी इससे पूछता है कि आगे रोटी मिलेगी। तेरा बेड़ा ग़र्क हो जाए तेरी बरकत से तो हमें मिलेगी, तू न हो तो हमें कोई रोटी खिलाएगा? हाँ भाई दूल्हा बारात में से निकाल दिया जाए तो बारातियों को कोई रोटी देगा? कहेगा भाग जाओ, दफ़ा हो जाओ, कहाँ से आ गए हमारी रोटी खाने? उन्होंने कहा पागल तेरी वजह से तो हमें मिलेगी और तू कह रहा है आगे रोटी मिलेगी?। ऐ भाई आपकी बरकत से अमरीका खा रहा है, आपकी बरकत से यूरोप खा रहा है, आपकी बरकत से एशिया खा रहा है, आपकी बरकत से अफ़्रीक़ा खा रहा है आपकी बरकत से जज़ीरों वाले सहराओं वाले खा रहे हैं आप नहीं होंगे तो काएनात भी नहीं होगी। अपनी क़द्र पहचानों मेरे भाईयो। एहसासे कमतरी से निकलो। पैसे नहीं हुए तो यह कौन सी बड़ी बात है। क्या आपने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा को देखा है।

हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान बज़ुबान रब्बे दो जहान

अल्लाह तआला ने किसी नबी की क़सम नहीं खाई सिवाए

अपने हबीब की ज़ात के ﴿لعمرك﴾ ऐ मेरे नबी तेरी जान की क़सम। आपको नहीं पता हमारे उर्दू में भी जिससे मुहब्बत होती है हम उसकी जान की क़सम खाते हैं। तेरी जान की क़सम ﴿لعمرك﴾ ऐ मेरे नबी मुझे तेरी जान की क़सम। मूसा अलैहिस्सलाम पर एक तजल्ली पड़ी। चालीस दिन बेहोश, होश नहीं आया। ज़मीन से उठाकर अर्श पर पहुँचा दिया। सारे पर्दे हटाकर सामने खड़ा कर दिया ﴿يا حبيبي يا محمد ادن مني﴾ ऐ मेरे हबीब, ऐ मेरे मुहम्मद मेरे क़रीब हो जा। इतना क़रीब किया, ज़मीन से अर्श तक, फ़र्श से अर्श तक, जन्नत की चाबी हाथ में दी, नबियों का सरदार बनाया, नबियों का इमाम बनाया, सारे नबियों को नमाज़ पढ़ाई, अपना झण्डा हाथ में पकड़ाया, जन्नत सारे नबियों पर हराम कर दी जब तक मुहम्मद मुस्तफ़ा का क़दम न पड़े। सारी उम्मतों पर जन्नत हराम कर दी जब तक मुहम्मद मुस्तफ़ा की उम्मत दाख़िल न हो जाए। इतने बड़े दर्जात नसीब फ़रमाए। पेट पर दो पत्थर बन्धवा दिए भूक की वजह से दो पत्थर। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने एक पत्थर बांधा और हमारे नबी दो जहां के सरदार ने दो पत्थर बांधे हैं क्या बादशाही है, क्या फ़ख़्र है। कितनी बड़ी बादशाही कि जन्नत की चाबी दे दी। कितना बड़ा फ़ख़्र है कि पेट पर दो पत्थर बंधे हुए हैं। अगर डॉलर नहीं है तो यह ज़िल्लत नहीं है। ज़िल्लत यह है कि अल्लाह तआला के नाफ़रमान हैं, यह ज़िल्लत है। इससे मेरे भाईयो अल्लाह तआला से तौबा करो, अल्लाह के वास्ते तौबा करोगे तो अल्लाह तआला से ज़्यादा मेहरबान किसी को नहीं पाआगे।

सच्ची तौबा करने वाले का एक क़िस्सा

एक क़िस्सा सुना कर बात ख़त्म करता हूँ। बनी इसराईल में एक नौजवान था बड़ा बदमाश शराबी जुआरी जैसे होते हैं तो शहर वालों ने उसे निकाल दिया कि निकाल दो। बुरे आदमी को जब बुरा कहा जाता हे तो वह और बुरा हो जाता है। नबियों का तरीक़ा यह है कि बुरे को बुरा न कहो उससे मुहब्बत करो, उसको क़रीब करो फिर उसको समझाओगे तो समझ जाएगा। इन्सानी फ़ितरत यह नहीं है कि उसके डण्डे मारो कि तू यह करता है। इन्सानी फ़ितरत है कि तुम उसे मुहब्बत करो। मुहब्बत करके उसको बात समझाओ। बहुत सी बेदीनी लोग फैला रहे हैं। हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि बहुत सी बेदीनी दीनदार लोग फैला रहे हैं कि जब नफ़रत करते हैं तो लोग और दूर हो जाते हैं अगर मुहब्बत करोगे तो लोग क़रीब हो जाएंगे। लोगों ने उसको शहर से बाहर निकाल दिया। उसने कहा ठीक है मैं भी पक्का अपनी बात पर, जाकर उसने डेरा लगा बिया बाहर और वहाँ न कोई साथी न संगी न ग़िज़ा न कोई दवा तो आहिस्ता आहिस्ता असबाब टूटे। बीमार हो गया फिर मरने लगा, मौत के आसार महसूस किए तो आसमान को देखा दाएं देखा बाएं देखा कुछ नज़र नहीं आया। फिर आसमान की तरफ़ देख कर कहने लगा ऐ अल्लाह अगर मुझे पता होता कि मुझे अज़ाब देने से तेरा मुल्क ज़्यादा हो जाएगा और मॉफ़ कर देने से तेरा मुल्क घट जाएगा तो या अल्लाह! मैं मॉफ़ी नहीं मांगता और अगर मुझे अज़ाब देने से तेरा मुल्क ज़्यादा नहीं होता तो मुझे अज़ाब न दे मॉफ़ कर दे और मॉफ़ करने से तेरा मुल्क घटता नहीं है तो मुझे मॉफ़ कर दे। ऐ अल्लाह मेरा किसी ने साथ नहीं दिया, सब ने

छोड़ दिया, कोई भी मेरा साथी नहीं बना, ऐ अल्लाह मैं मौत पर तौबा करता हूँ, सारी ज़िन्दगी गुज़र गई गुनाहों पर। ऐ अल्लाह सब ने तो साथ छोड़ दिया तू तो मत छोड़। यह कह कर उसकी जान निकल गई।

अल्लाह का बन्दे से प्यार

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि मेरा एक दोस्त फ़लाँ जंगल में मर गया है उसको जाकर ग़ुस्ल दो, कफ़न दो, जनाज़ा पढ़ो और सारे शहर में ऐलान कर दो आज जो भी अपनी बख़्शिश चाहता है उसके जनाज़े में शिरकत कर ले उसको भी मॉफ़ करता हूँ। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐलान किया सारे लोग भागे भागे आए जाकर देखा तो वही शराबी जुआरी, ज़ानी, डाकू, बदमाश। लोग कहने लगे या मूसा आप क्या कह रहे हैं यह तो ऐसा था कि हमने तो इसको शहर से निकाल दिया था। यह आपका रब क्या कह रहा है कि यह तो मेरा दोस्त है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह तेरे बन्दे कह रहे हैं कि यह तेरा दुश्मन है तू कह रहा है मेरा दोस्त है आख़िर यह बात क्या है? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह भी ठीक कह रहे हैं, मैं भी ठीक कह रहा हूँ। यह ऐसा ही था मेरा दुश्मन था लेकिन मौत के वक़्त जब उसने देखा पड़ा हुआ हूँ दाएं देखा ﴿فلم يرا قريبا﴾ कोई भी रिश्तेदार नज़र नहीं आया ﴿فنظر شماله﴾ फिर उसेन बाएं देखा ﴿فلم ير اقريبا﴾ कोई भी नज़र नहीं आया तो जब चारों तरफ़ उसको बेबसी नज़र आई तो उसने मुझे पुकारा, मुझे शर्म आई इसे अकेले तन्हा को मैं इसके गुनाहों

की वजह से पकड़ूँ। मुझे मेरी इज़्ज़त की क़सम वह तो छोटा सवाल कर बैठा अगर उस वक़्त वह मुझ से पूरी दुनिया की बख़्शिश मांगता तो मैं सब को मॉफ़ कर देता। ऐसी करीम ज़ात से हमारा वास्ता है। इस लिए मेरे भाईयो अल्लाह के वास्ते तौबा करो। यहाँ रहते हुए मुसलमान बन कर रहो और ईमान की दावत देते हुए चलोगे तो अल्लाह दुनिया भी बनाएगा और आख़िरत भी बनाएगा। अल्लाह हम सब को अमल की तौफ़ीक़ बख़्शे और भाई नमाज़ों का पक्का एहतिमाम करें। जुमा को देखो कि मस्जिद भर गई जगह नहीं लोग खड़े हुए हैं। अल्लाह तआला इससे भी ज़्यादा कर दें लेकिन भाई पाँच नमाज़ें भी ऐसे ही पढ़नी हैं, ठीक है न भाई और आप तशरीफ़ लाइए।

❑ ❑ ❑

शाने ख़ुदावन्दी

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह तआला अपनी ज़ात व सिफ़ात में यकता है कोई उसका मिस्ल नहीं ﴿اذا تراه العيون﴾ कोई आँख नहीं जो वहाँ तक देख सके। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿ارني انظر اليك﴾ ऐ अल्लाह मैं आपको देखना चाहता हूँ ﴿لن تراني﴾ ऐसा नहीं हो सकता, बिल्कुल नहीं हो सकता। उन्होंने फिर कहा देखना चाहता हूँ। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿من يراني حيي الامات﴾ दुनिया में जो मुझे देखेगा सह नहीं सकेगा मर जाएगा﴿ولا رطب الا تفرق﴾ कोई तर देखेगा तो वह बिखर जाएगा कोई ख़ुश्क देखेगा तो वह रेज़ा रेज़ा हो जाएगा। यहाँ मैं दिखाई नहीं दे सकता। ﴿انما يراني اهل الجنة﴾ अलबत्ता जन्नत वाले मुझे देखेगें ﴿الذين لا تنام اعينهم﴾ उनकी आँखें नींद से पाक होंगी ﴿النوم اخت الموت﴾ नींद मौत की बहन है ﴿سومرا﴾ तक़रीबन बराबर। तू जब मर जाएगा तो नींद भी मर जाएगी तो जन्नत में जब तक रहना है और वहाँ हमेशा ही रहना है वहाँ एक पल के लिए भी ऊँघ नहीं आएगी तो इस लिए जन्नत वाले मुझे देख सकते हैं ﴿لا تنام اعينهم﴾ उनकी आँख सोती नहीं ﴿ولا طل ثيابهم﴾ उनकी जवानी और उनके कपड़े पुराने नहीं होते, हमेशा यकसां रहते हैं। आँख एक महदूद ताक़त रखती है लेकिन ख़्यालाते इन्सानी बहुत

ताक़तवर मख़लूक़ हैं। एक पल में कहीं से कहीं पहुँच जाता है रोशनी से भी ज़्यादा तेज़ रफ़्तार है ﴿ولا تخالف الظنون﴾ लेकिन कोई ख़याल भी वहाँ तक नहीं जा सकता ﴿لا يغير في الحوادث﴾ हादसात उस पर असर नहीं रखते ﴿ولا يخشى﴾ जवानी के इन्क़लाब से वह डरता नहीं।

वह ऐसा है कि न उसे छत की ज़रूरत, न फ़र्श की ज़रूरत, न दीवारों की ज़रूरत, न उसे पंखों की ज़रूरत, न हवा की ज़रूरत, न पानी का मोहताज, न गर्मी का मोहताज, न आग का मोहताज, न किसी साथी का मोहताज, न किसी संगी का मोहताज, न मुहाफ़िज़ का मोहताज, न मददगार का मोहताज, न लश्करों का मोहताज, न फ़रिश्तों का मोहताज और न अर्श का मोहताज, न लौह का मोहताज, न क़लम का मोहताज, न जिबराईल का मोहताज, न इसराफ़ील का मोहताज, न मीकाईल का मोहताज, न इज़राईल का मोहताज, न अर्श के फ़रिश्तों का मोहताज, काएनात के किसी ज़र्रे का मोहताज नहीं तो यह मूसा आपका मोहताज कैसे होगा? ऐ इन्सान तू ही मोहताज है ﴿يا ايها الناس انتم الفقراء والله هو الغنى﴾ ऐ लोगों तुम ज़लील हो फ़क़ीर हो, हक़ीर हो, साइल हो और तुम्हारा अल्लाह ग़नी है तो मेरे भाईयो अल्लाह तआला अपनी ज़ात में बेमिसाल है।

अल्लाह तआला हर चीज़ से बेनियाज़ है

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं अन्क़रीब अपनी निशानियां उन्हें काएनात में दिखाएंगे कि वे बेक़ाबू होकर पुकार उठेंगे कि कोई

हक़ बात है जो इस निज़ाम को चलाने वाला है जो किसी का मोहताज नहीं है और सब उसके मोहताज हैं और वह अल्लाह जो सब को खिलाता है, खुद खाने से पाक है, वह अल्लाह जो सबको पिलता है खुद पीने से पाक है, वह अल्लाह जो सबको देता है और खुद लेने से पाक है, वह अल्लाह जो सबको पहनाता है और खुद पहनने से पाक है, वह अल्लाह जो सबको सुलाता है और खुद सोने से पाक है, वह अल्लाह जो सब को थकाता है और खुद थकने से पाक है, वह अल्लाह जो सबको मारता है और खुद मरने से पाक है, वह अल्लाह तआला जो सब को इम्तेहान में डालता है और खुद आज़माईश से पाक है, वह अल्लाह जो सब की ज़रूरतें पूरी करता है और खुद ज़रूरत से पाक है, वह अल्लाह जो सबको जोड़ा जोड़ा बनाता है खुद जोड़ से पाक है। इसी अल्लाह को आप कहना बे अदबी है और तू कहना अदब है और आप कहना बेअदबी है। आपस में अगर कोई तू कहे तो वह बेअदबी है और बड़े को छोटे को आप कहना अदब है अल्लाह तआला को आप कहना कोई अदब नहीं है। अल्लाह को तू कहना चाहिए तो इस लिए सारी दुआओं में मैं ने देखा कि अल्लाह का नबी जब अपने अल्लाह से बातें करता है तो कभी आप का लफ़्ज़ इस्तेमाल नहीं करता ﴿انتم﴾ नहीं कहता या अल्लाह आप बल्कि:

انت اللهم انت لاول اللهم انت قيم السموات والارض، اللهم
انت رب السموات والارض، اللهم انت الاول، اللهم انت
الظاهر اللهم انت الآخر اللهم انت الباطن انت.

तो वह जोड़े से पाक है लिहाज़ा कोई भी ऐसा लफ़्ज़ जिसमें

शिराकत की ज़रा सी बू हो और के साथ उस लफ़्ज़ को अल्लाह तआला की तरफ़ मन्सूब करना यह अल्लाह तआला की शान में कमी है। लिहाज़ा अल्लाह तू ही से सजता है, तू और तेरे से ही सजता है आप से नहीं सजता। वह खुद अपने आप को कहता है ﴿نحن نزلنا الذكر وانا له لحفظون﴾ हम ने किया हम ने तो वह उसके लिए तकब्बुर का लफ़्ज़ है लेकिन उसकी तरफ़ हमारा ख़िताब होगा तो आप से नहीं, तू से होगा तो अल्लाह तआला ने सारी काएनात को जोड़ा बना दिया, खुद जोड़ से पाक है, सब की मुहब्बतें पैदा फ़रमायीं, खुद किसी का मोहताज नहीं, मियाँ बीवी को बनाया हर चीज़ का जोड़ा बनाया ﴿من كل زوجين اثنين﴾ हर चीज़ में जोड़ा जोड़ा ﴿والسماء بنينها بايد﴾ हम ने आसमान को अपने हाथों से बनाया ﴿وانا لموسعون﴾ देखते नहीं हो कैसे फैला दिया ﴿والارض فرشنها﴾ क़िस्म क़िस्म की ज़मीन बिछा दी ﴿فنعم المهدون﴾ कोई और है मेरे जैसा बिछाने वाला, ऐसा बिछा कर दिखावे जो भागती भी हो, घूमती भी हो, खड़कती भी हो और फिर भी तुम्हें महसूस न होने दे। ऐसा बनाने वाला कोई है ﴿فنعم المهدون، ومن كل شئ خلقنا زوجين لعلكم تذكرون﴾ और हमने हर चीज़ को जोड़ा जोड़ा बनाया ताकि तुम्हें याद रहे कि तुम्हारा रब जोड़ से पाक है ﴿لم يتخذ صاحبة﴾ वह अल्लाह है ﴿ولا ولدا﴾ वह अल्लाह है जिसका कोई बेटा नहीं ﴿لم يلد ولم يولد﴾ वह अल्लाह है जो न उससे कोई पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ और वही अल्लाह है ﴿ولم يكن له كفوا احد﴾ कि कोई उसका मिस्ल न हो सका, उसके मिस्ल न बन सका, उसकी शक्ल न बन सका, उसके मुक़ाबिल न बन सका, उसकी टक्कर न ले सका, उसके सामने न चल सका।

ऊँची ज़ात वाला ऊँची सिफ़ात से मुत्तसिफ़ होता है

बल्कि वही है जो सारी काएनात का अकेला मालिक भी है ख़ालिक़ भी है, क़ादिर भी है, क़दीर भी है, मुतआल भी है, मुत्दब्बिर भी है, अज़ीज़ भी है, क़वी भी है, मतीन भी है, राज़िक़ भी है, क़ुव्वतिल मतीन भी है और अपने ख़ज़ानों में ला महदूद और अपनी सिफ़ात में ला महदूद और मख़लूक़ सारी की सारी मोहताज, हक़ीर, फ़क़ीर, ज़लील इसका नाम मख़ूलक़ है। मख़लूक़ सिर्फ़ मक्खी नहीं यह सारे मख़लूक़ बैठे हुए हैं। मख़लूक़ बोल रहा हूँ, हमारे बाल मख़लूक़, पत्थर मख़लूक़ है, बिखरा हुआ समन्दर मख़ूलक़ है, बारिश का क़तरा मख़लूक़ है, पतंगा मख़लूक़ है, अक़ाब मख़लूक़ है, एक भेड़िया मख़लूक़ है, और यह दहकता हुआ सूरज मख़लूक़ है, जिबराईल मख़ूलक़ है, मीकाईल मख़ूलक़ है, इसराफ़ील मख़लूक़ है, अर्श के फ़रिश्तें मख़लूक़ हैं, सारे अबिंया मख़लूक़ हैं और वह मख़लूक़ है जो अल्लाह के बग़ैर बन न सके, जो अल्लाह के बग़ैर न रह सके, जो अल्लाह के बग़ैर न जी सके, जो अल्लाह के बग़ैर न मर सके, जो अल्लाह के बग़ैर न उठ सके, जो अल्लाह के बग़ैर न दे सके, जो अल्लाह के बग़ैर न ले सके, जो अल्लाह के बग़ैर न नुक़सान पहुँचाए न नफ़ा पहुँचाए, न इज़्ज़त का मालिक न ज़िल्लत का मालिक न ज़िन्दगी का मालिक न मौत का मालिक

﴿لا يملكون لا نفسهم ضرا ولا نفعا ولا يملكون موتا ولا حيوة ولا نشورا﴾

न ज़िन्दगी के मालिक न मौत के मालिक, न उठने के मालिक न

नुकसान के मालिक न नफे के मालिक बल्कि एक अल्लाह वहदहु ला शरीक है ﴿هو الذی فی السماء اله وفی الارض اله﴾ वह अल्लाह है जिसकी सलतनत आसमान पर भी ज़मीन पर भी है ﴿فی السماء عرشه﴾ अर्श आसमान का ﴿فی الارض سلطنه﴾ सलतनत ज़मीन पर ﴿فی البحر سبیله عقابه﴾ रास्ते समन्दर में ﴿فی الجنة رحمته﴾ जन्नत में उसकी रहमत है ﴿فی النار عقابه﴾ दोज़ख़ में उसका अज़ाब है ﴿فی الممات عقابه﴾ और मुर्दों में उसका अज़ाब है ﴿فیوم القیامة حسابه﴾ और कयामत के दिन उसका हिसाब है ﴿فریق فی الجنة وفریق فی السعیر﴾ एक तबका जन्नत में जाएगा और एक जहन्नुम को जाएगा।

तकब्बुर अल्लाह तआला को खुद अपनी ज़ात में पसन्द है

मेरे भाईयो सारी काएनात में बहर व बर में फ़िज़ा व ख़ला में ग़र्ज़ यह है कि मलाइका का जहां, इन्सानों का जहां, जिन्नात का जहां, सूरज, चाँद और सितारों का जहां, अन्धेरों का जहां, रोशनी का जहां, नबातात का जहां, जमादात का जहां, हैवानात का जहां, पतंगों का जहां, परवानों का जहां इन सब पर अल्लाह तआला की क़ुदरत और ताक़त का पहाड़ लगा हुआ है ﴿هو الذی﴾ कैसा तकब्बुर का लफ़्ज़ है ﴿هو الذی الله اکبر من ذاالذی﴾ अल्लाहु अकबर इसी लिए जो तकब्बुर करता है अल्लाह तआला उसको गर्दन से पकड़ कर ख़ाक में मिला देता है। तकब्बुर सिर्फ अल्लाह तआला की ज़ात के लिए ख़ास है और किसी के लिए नहीं है ﴿الله الذی

﴿فرع سبع سموات، الله الذی خلق سبع سموات، الله الذی﴾ वह अल्लाह जिसने आसमान उठा दिए वह अल्लाह जिसने ज़मीन बिछा दी वह अल्लाह जिसने सूरज चमकाया, वह अल्लाह जिसने चाँद को घटा दिया, बढ़ा दिया और वह अल्लाह जिसने रात को अन्धेरा दे दिया वह अल्लाह जिसने दिन को रोशनी दे दी, वह अल्लाह जिसने सितारों को जगमगाहट दे दी, वह अल्लाह जिसने इन्सान में रूह डाल दी, वह अल्लाह जो हवा का मालिक, वह अल्लाह जो फ़िज़ा का मालिक, वह अल्लाह जो बहर व बर का मालिक ﴿امن خلق السموات والارض﴾ जिसने ज़मीन व आसमान को बनाया। अल्लाह तआला खुद सवाल करता है ﴿وانزل لكم من السماء ماء﴾ पानी किसने उतारा ﴿فانبتنا به حدآئق ذات بهجة﴾ ख़ूबसूरत सरसब्ज़ दरख़्त किसने लगाए ﴿ما كان لكم ان تنبتوا شجرها﴾ तुम सारे इन्सान इकठ्ठे हो कर एक दरख़्त अल्लाह के बग़ैर पैदा करके दिखा दो ﴿ءاله مع الله﴾ है कोई मेरे अलावा ﴿بل هم قوم يعدلون﴾ तो तुम्हारा क्या करूं। फिर तुम मुझे छोड़कर ग़ैर के पास चले जाते हो ﴿امن جعل الارض قرارا﴾ यह ज़मीन में क़रार किसने रखा ﴿وجعل خللها انهرا﴾ इसमें नहरें किसन चलायीं ﴿وجعل لها رواسی﴾ पहाड़ किसने गाड़े ﴿وجعل بين البحرين حاجزا﴾ कढ़वे मीठे पानी को किसने जुदा किया ﴿ءاله مع الله﴾ है कोई अल्लाह के सिवा ﴿بل اكثرهم لا يعلمون﴾ अब मैं क्या करूं तुम में से अक्सर को समझ नहीं, दीवाने हैं, पागल हैं, मख़लूक़ के पुजारी बन गए, ऐटम के पुजारी बन गए, लोहे के पुजारी बन गए, सोने चाँदी के पुजारी बन गए। अल्लाह तआला को छोड़ ही दिया।

ख़ालिक़ का मख़्लूक़ से शिकवा और जवाबे शिकवा

﴿امن يجيب المضطر اذا دعاه﴾ कौन है तुम्हारी पुकार सुनने वाला। उससे ताल्लुक़ बना लो जो हर वक़्त साथ है। सदर साहब अपने हैं उनसे बात करनी है तो इस्लामाबाद फ़ोन तो करना ही पड़ेगा आगे वह सो रहे हैं फिर जगाना पड़ेगा तो कितने घन्टे लग जाते हैं। वह डी. एस. पी. साहब अपने हैं कहीं ढूंढना पड़ेगा या कहीं जाना पड़ेगा आगे वह भी मेरे जैसा पेशाब पख़ाने वाला इन्सान है पता नहीं मेरा काम कर भी सकेगा या न कर सकेगा तो वह हो जो हर वक़्त साथ है जिसको पुकारने के लिए ज़ुबान का हिलाना भी ज़रूरी नहीं सिर्फ़ दिल की सदा ही काफ़ी है और आपके दिल की एक सदा पर वह सत्तर दफ़ा कहे लब्बैक! लब्बैक! लब्बैक। आपने तो बड़े साहब को फ़ोन किया तो सत्तर मर्तबा डायल करने के बाद पता चला कि काम ही नहीं कर सकते। उनके बस का तो काम ही नहीं है। कौन है वह ज़ात, काएनात जिसके सामने ज़ेर व ज़बर हैं कौन जिसके वजूद से अर्श भी थरथराए है जिबराईल जैसा फ़रिश्ता चिड़ी बन जाए, अंबिया भी थर थर कांपें जिसकी हैबत व जलाल के सामने ﴿وان من شئ الا يسبح بحمده﴾ हर चीज़ उसका ज़िक्र करने में लगी हुई है। किसी का मोहताज नहीं, न इन्सान का न जिन्न का, न फ़रिश्ते का, जो किसी का मोहताज नहीं जिसका का काम सबके बग़ैर होता है और जिसके बग़ैर किसी का कोई काम न हो सके। वह अल्लाह जब उसको उसका

बन्दा जो गुनाहों में घिरा हुआ नाफ़रमानी में जकड़ा हुआ, शैतान की राहों पर चलता हुआ इस सब के बावजूद जब कहता या अल्लाह तो सत्तर दफ़ा जवाब आता है लब्बैक! लब्बैक! लब्बैक या अब्दी। ऐ मेरे बन्दे मैं हाज़िर हूँ। कब से तुम्हारी पुकार का मुन्तज़िर हूँ कि मुझे भी आज़मा कर देख ले तू रूपए को आज़माता रहा कभी रूपए बनाने वाले को भी तो आज़मा ले। पाँच सौ तलवारों को तू ने आज़माया, दुकानों और फ़ैक्ट्रियों को तू ने आज़माया, कभी इस काएनात को बनाने वाले को आज़मा के देख। ﴿ان ذكرتني ذكرتك﴾ तू मुझे याद रखता है मैं तुझे याद रखता हूँ ﴿ان نسيتني ذكرتك﴾ तू मुझे भूल जाता है मैं फिर भी तुझे याद रखता हूँ ﴿الي واولي﴾ तू मुझ से दोस्ती लगाकर देखना कैसे दोस्ती का हक़ अदा करता हूँ। यह भी देखना जो तेरे जैसा इन्सान है उसकी एक हद है जहां वह आजिज़ है उससे दोस्ती लगा जहां आजिज़ी है नहीं। ﴿انما امره﴾ अलफ़ाज़ ताक़त देखो कैसे समझाऊं?

लफ़्ज़े "कुन" की यह सारी कारसाज़ी है

انما امره اذا اراد شيئا ان يقول له كن فيكون فسبحن
الذي بيده ملكوت كل شئ واليه ترجعون ٥

ताक़त तो देखो इसमें कि तेरे रब का जब फ़ैसला होता है कि कुछ करना है। अजीब बात है उसे कुछ करने के लिए कुछ करना नहीं पड़ता कि कुछ करने के लिए कुछ नहीं करना पड़ता, देने के लिए कहीं से लेना नहीं पड़ता बल्कि "कुन" हो जा जिबराईल "कुन" हो जा तो जिबराईल जैसा फ़रिश्ता वजूद में आ गया, ऐ

अर्श “कुन” ऐ अर्श बन जा वह बिछता चला गया, उठता चला गया, ऐ आसमान ﴿ثم استوى الى السمآء وهى دخان﴾ धुंए से कहा आसमान बनाओ ﴿خلق سبع سمٰوات طباقا﴾ सात आसमान में तबदील कर दिया ﴿واوحى فى كل سمآء امرها﴾ हर आसमान को अपने अम्र और अपनी ताक़त के साथ अलग अलग एहकाम देकर जकड़ दिया बांध दिया इतने बड़े अल्लाह को पुकारते ही नहीं, लेकिन जब आजिज़ हो जाते हैं फिर कहते हैं, अब तो अल्लाह ही करेगा। अच्छा पहले कौन कर रहा था अब तो अल्लाह ही शिफ़ा देगा, क्या पहले तू शिफ़ा दे रहा था।

दवाओं में शिफ़ा नहीं अल्लाह के अम्र में शिफ़ा है

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पेट में दर्द हुआ कहने लगे या अल्लाह पेट में दर्द है अल्लाह तआला ने कहा रेहान के पत्ते उबाल कर पी लो। रेहान एक छोटा सा पौदा होता है। उन्होंने उसको रगड़ कर पीस कर पी लिया, ठीक हो गए। फिर कुछ दिनों के बाद दोबारा पेट में दर्द हो गया। अल्लाह तआला से नहीं पूछा, खुद ही जा कर रगड़ कर पीस कर पी लिया तो दर्द तेज़ हो गया एक दम तेज़। या अल्लाह यह क्या हुआ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया तूने क्या समझा था इसमें शिफ़ा है, मुझसे क्यों नहीं पूछा ﴿واذا مرضت فهو يشفين﴾ तेरा रब शाफ़ी है रेहान नहीं। तेरा रब शाफ़ी है देखो ना।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख ख़राब होना फिर दरूस्त हो जाना

क़तादा बिन नौमान रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी हैं। औहद की लड़ाई में उनकी आँख में एक तीर लगा, अन्दर घुस गया तो सारी आँख चूरा चूरा हो गई, क़ीमा हो गया। आँख का वह क़ीमा उठा कर लाए। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरी आँख ज़ाए हो गई आप अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह तआला मेरी आँख को ठीक कर दें। उन्होंने कहा आँख लोगे या जन्नत लोगे? उन्होंने कहा दोनों लूंगा। अल्लाह तआला के पास क्या कमी है दोनों ही लूंगा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी बीवी को बड़ा बुरा लगेगा कि मेरी आँख नहीं है। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्करा दिए। वही क़ीमा था उठाया उसको आँख के ढेले में रखा और यूं हाथ फेरा ﴾اللهم جعلها احسن عينين﴿ ऐ अल्लाह इस आँख को दूसरी से ख़ूबसूरत कर दे फिर वह आँख दूसरी से ज़्यादा ख़ूबसूरत हो कर चमक रही थी। शाफ़ी तो अल्लाह है जो चाहे कर दे तो भाई अल्लाह को साथ लो।

अल्लाह के बग़ैर ग़ैर कुछ नहीं कर सकता

वह अल्लाह जब इरादा करेगा आप के काम बनाने हैं तो कोई उसको रोक नहीं सकेगा। सारा जहां आपके पीछे और अल्लाह आपके आगे तो सारा जहां क़रीब खड़ा नहीं हो सकता। सारा जहां आपके आगे आ जाए हिफ़ाज़त को और अल्लाह तआला का

इरादा हलाकत का हो तो ये सब मिट्टी के मूरत साबित होंगे, कुछ नहीं कर सकते ﴿وان يمسسك الله بضر فلا كاشف له الا هو﴾ मैं मुसीबत में डाल दूं पाकिस्तान को तो सारी दुनिया के माहिरीन माशियात उस मुसीबत को दूर नहीं कर सकते। लोग पागल हैं अन्धों से पूछ रहे हैं कि रास्ता बताओ ﴿وان يردك بخير﴾ और अगर मैं भलाई का इरादा कर लूं तो सारा जहां मिलकर तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। अमरीका ने यह कर दिया, वह कुछ कर सकता है उसकी ढील के बग़ैर। उसकी ढील है बातिल को, उसकी ढील है काफ़िर को जिस से वह नाच रहा है, कूद रहा है। मैं रहमत का दर खोलूं कोई बन्द नहीं कर सकता ﴿وما يمسك فلا مرسل له من بعده﴾ और मैं बन्द कर दूं तो कोई ऐटमी ताक़त से खुलवा नहीं सकता।

यह दुनिया काफ़िर की जन्नत है उस पर हसद न करो

और काफ़िरों की ज़ेब व ज़ीनत से धोका न खाना कि वे तो मज़े में हैं और हम मुसीबत में हैं। क़ुरआन कह रहा है ﴿متاع قليل﴾ चार दिन के लिए दिया है कब तक, छोड़ दो उनका क़िस्सा ही छोड़ दो अगर समझो दफ़ा करो क्या ज़िक्र कर दिया तुम ने अगर जानवर को अच्छा खाने को मिले तो इन्सान को अगर यह हसद होता है भाई एक गधा अच्छा खाना खा रहा है तो आपको हसद होगा, और वह दुलत्तियां मार रहा हो तो आपको कोई हसद होगा। वे तो जानवर हैं खा लें ﴿وليتمتع﴾ कुछ नाच लें ﴿يخوضوا﴾

﴿ويلعبوا﴾ कुछ कूद लें, कुछ गा लें ﴿حتى يلقوا يومهم الذى يوعدون﴾ उस दिन जिस दिन मौत आए बस छुट्टी ﴿ويا ايها المجرمون﴾ ऐ मुजरिमीन अलग हो जाओ, एक तरफ़ हो जाओ।

दुनिया की ज़ाहिरी तरक़्क़ी कुछ नहीं

चीज़ों का मिल जाना, सड़कों का खुला होना, अस्पताल बन जाना, दवाओं का पहुँच जाना इसी को आप कामयाबी व तरक़्क़ी समझ रहे हैं। तरक़्क़ी-याफ़्ता मुल्क कौन है जिसकी सड़के खुली हों, जिसके अस्पताल हों या तालीम हो, टेलीफ़ोन हो और सारी अय्याशी और फ़हाशी का सामान हो, वह तरक़्क़ी- याफ़्ता मुल्क हैं? तरक़्क़ी वाला मुल्क वह है जहां हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर ज़िन्दगी हो, बाक़ी सब बदमाशियों के अड्डे हैं। तरक़्क़ी-याफ़्ता वह है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर, बाक़ी सब ज़वाल। क़रीब ही अल्लाह की पकड़ में आने वाले हैं ﴿وكذلك اخذ ربك اذا اخذ القرى ان اخذه اليم شديد﴾ अभी अल्लाह को पकड़ने तो दो पहले ही शोर मचाते रहे हो, होता ही नहीं, हो जाएगा। अल्लाह का निज़ाम है जब बेहयाई बढ़ती है फिर अल्लाह तआला छोड़ता नहीं उनको मौत तक मोहलत दी हुई है। हमारी मोहलत कोई नहीं अगर हम नाफ़रमानी करेंगे तो फ़ौरन हमारी पकड़ हो जाएगी। माँ बाप अपने ब्रच्चे की पिटाई करते हैं या गली के बच्चों को मारना शुरू कर देते हैं? गली के बच्चे खेल रहे हैं और माँ बाप ने निकल कर पिटाई शुरू कर दी तो वहां बड़ी लड़ाई शुरू हो जाएगी। वे अपने बच्चे से पूछते हैं कि पढ़ा है कि नहीं पढ़ा, स्कूल गए थे या नहीं

गए, काम किया या नहीं, नमाज़ पढ़ी थी या नहीं पढ़ी। मुसलमान ग़रीब है यह बदमाशी करेगा फ़ौरन थप्पड़ आएगा, सीधे चलो वह काफ़िर गली का बच्चा है, छोड़ दो, खेलने दो, कूदने दो।

काफ़िर आख़रत में सख़्त अज़ाब में होंगे

﴿ان جهنم كانت مرصادا﴾ जहन्नुम उनका इन्तेज़ार कर रही है, ﴿مابا﴾ ठिकाना है ﴿لبثين فيها احقابا﴾ इसमें हमेशा रहेंगे ﴿لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا﴾ अब उन्हें कोई मस्ती नहीं सूझेगी, न ठन्डा पानी न ठन्डी ज़िन्दगी ﴿الا حميم﴾ खौलता हुआ पानी ﴿وغساق﴾ कांटे दार झाड़ियां ﴿جزاء وفاقا﴾ पूरा बदला ﴿انهم كانوا لا يرجون حسابا﴾ यह कहता था मिट्टी हो गया मर गया, कभी कोई उठा? कभी किसी को देखा कि उठकर आ गया? कोई ज़िन्दगी नहीं। ﴿هيهات هيهات لما توعدون﴾ मौत के बाद कोई ज़िन्दगी नहीं, अब देखो ऐ कुफ़्फ़ार की जमात यह देखो, यह देखो। यह दिन आ गया कि नहीं। ﴿وقترب الوعد الحق﴾ वह हक़ वायदा क़रीब आया कि नहीं आया। अब देखो तुम्हें यह नज़र आ रहा है ﴿ذالك ما كنت﴾ इसी से घबराता था और डरता था और अब ﴿انهم كانو لا يرجون حسابا وكذبوا بايتنا كذابا﴾ मुझे झुठला दिया मेरे दीन को झुठला दिया ﴿وكل شئ احصينه كتابا﴾ और हम भी हर चीज़ लिखते रहे ﴿فذوقوا﴾ चखो ﴿فلن نزيد كم الا عذابا﴾अब तुम्हारा अज़ाब हमेशा बढ़ेगा कभी कम नहीं होगा तो उन पर रश्क करना तो ऐसा है जैसे खोटे पहाड़ पर देखो कितना अच्छा चारा गधा खा रहा है काश! मैं भी यह चारा खाता।

छोटे मुजरिमों के लिए छोटा अज़ाब बड़े मुजरिमों के लिए बड़ा अज़ाब

हम अल्लाह के फ़ज़ल से अल्लाह की नज़र में इन्सान हैं चाहे हम जितने भी बुरे हैं, अल्लाह हमें जानवर नहीं कहता हमें इन्सान ही कहता है और ये जितने अल्लाह को नहीं पहचानते और अल्लाह की ज़ात का शरीक ठहराते हैं ये जितने भी अच्छे हो जाएं अल्लाह की नज़र में हैवान हैं कि उन्होंने अल्लाह की पहचान और अल्लाह को जानने से इन्कार कर दिया। ये बड़े मुजरिम हैं, हम छोटे मुजरिम हैं। छोटे मुजरिम को तो दो चार थप्पड़ मार कर छोड़ दिया जाता है और बड़े मुजरिम का केस चलता है और पता नहीं कब जाकर वह फांसी चढ़ता है और जो छोटा मुजरिम होता है दो चार थप्पड़ मार कर वहीं से फ़रार करा दिया, चल भाग। यह जो दुनिया में जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अज़ाबों से गुज़र रही है यह हमारी नाफ़रमानी की वजह है अगर हम तौबा कर लें, अल्लाह की तरफ़ रुजू कर लें तो अल्लाह तआला ने यह काएनात अपने बन्दों के लिए बनाई है ﴿ان الارض یرثھا عبادی الصلحون﴾ ज़मीन अल्लाह तआला की है और उसके वारिस अल्लाह के नेक बन्दे हैं ﴿لو ان اھل القرٰی امنوا واتقوا لفتحنا﴾ अगर ये लाहौर वाले तक़्वा इख़्तियार कर लें ईमान में पक्के हो जाएं तो ज़मीन व आसमान ﴿من فوقھم﴾ ऊपर आसमान ﴿ومن تحت ارجلھم﴾ ज़मीन से रिज़्क़ अता होगा यह अल्लाह का निज़ाम है कि अगर इताअत होगी तो दरवाज़े खुलेंगे, उनकी दुआओं से मौसम बदलेंगे, उनकी दुआओं से हालात बदलेंगे, उनकी दुआओं से निज़ाम बदलेगा,

उनकी दुआओं से हर नामुमकिन मुमकिन हो जाएगा। अल्लाह के बन जाएं बस अपने आपको अल्लाह का बना दें।

हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए समन्दर का थम जाना

हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु समन्दर में जा रहे थे, तूफ़ान आ गया तूफ़ान ﴿اسكن يا بحر هل انت الا عبد حبشی﴾ ऐ समन्दर थम जा तू काला हब्शी ही तो है। यह काला हब्शी क्यों कहा? समन्दर जब गहरा होता है तो पानी काला झाग देता है तो कहने लगे ठहर जा ऐ समन्दर तू काला हब्शी ही तो है इसके बाद दूसरी मौज नहीं उठी वहीं थम गया और किश्ती में सफ़र कर रहे थे और अपना क़ुरआन सी रहे थे। क़ुरआन के पन्ने सी रहे थे तो सूंई हाथ से गिर कर पानी में चली गई पानी में ﴿اعظمت عليك يا رب الا رد علیك عبرتی﴾ या अल्लाह मैं तुझे क़सम देता हूँ कि मेरी सूंई मुझे वापस कर कि मेरे पास दूसरी सूंई नहीं है तो वह सूंई पानी में यूं खड़ी हो गई, ऐसे। उस अल्लाह को साथ ले लें, उस अल्लाह को अपना बना लें और वह सब का बनने को तैयार है, काला, गोरा, मर्द, औरत सबसे मुहब्बत का ऐलान कर चुका है।

अल्लाह का नाफ़रमानों से मुहब्बत का तज़किरा

ऐ दाऊद अगर मेरे नाफ़रमानों को पता चल जाए कि मैं उनसे कितनी मुहब्बत करता हूँ तो उनके जोड़ जोड़ जुदा हो जाएं इस बात को सुन कर। जब नाफ़रमानों का यह हाल है तो बता फ़रमा

बरदारों से मुहब्बत मेरी कैसी होगी। यह अलग बात है कि कभी आज़माने के लिए अल्लाह हालात ले आता है। देखो मेरे भाईयो अल्लाह को साथ लिए बग़ैर न किसी का बना है न बन सकेगा। यही तबलीग़ में मेहनत हो रही है यह कोई अलग जमात नहीं बन गई, हर मुसलमान की मेहनत है। हमने आज तक ज़िन्दगी ग़फ़लत में गुज़ारी। जब नमाज़ में अल्लाह याद न आए तो कब याद आएगा?

तबलीग़ का काम है अपने अल्लाह को साथ लेना है

अल्लाह से ताल्लुक़ बना लें अपने अल्लाह को अपना बना लें जिसकी वफ़ाओं का यह हाल हो कि या अल्लाह! एक बार कहे वह सत्तर मर्तबा कहता है मेरे बन्दे तू क्या कहता है। अच्छा एक आदमी दुआ मांगता है या अल्लाह तो अल्लाह तआला कहता है जल्दी दे दो जल्दी दे दो, सुनना नहीं चाहता, नाफ़रमान है, दे दो। एक आदमी रो रहा है या अल्लाह! या अल्लाह! दूसरी रात या अल्लाह! या अल्लाह! फिर तीसरी रात या अल्लाह! या अल्लाह! कभी कई महीने गुज़र गए, कभी साल गुज़र गए या अल्लाह! या अल्लाह! यहाँ तक कि फ़रिश्ते सिफ़ारिश करते हैं या अल्लाह तेरा फ़रमाबरदार बन्दा है उसे देता क्यों नहीं ﴿انی احب﴾ इसकी हाय हाय मुझे अच्छी लग रही है ज़रा रोने तो दो अगर दे दिया तो कब रोएगा हां दे दिया तो कब रोएगा अच्छा लग रहा है रोने दो इसका रोना मुझे पसन्द आ रहा है क्योंकि हमें

दीन से गहरी वाक़फ़ियत नहीं है इस लिए हम हालात से परेशान हो कर अल्लाह ही के नाशुक्रे बन बैठे हैं और कोई मिला नहीं अल्लाह को आज़माने के लिए हम ही रह गए थे। तो भाईयो यह तबलीग़ का काम अल्लाह को साथ लेने का काम है, उस ज़ुलजिला वल इकराम को साथ लिए बग़ैर न क़ौमें बन सकती हैं और न मुल्क बन सकते हैं और न अफ़सरान बन सकते हैं और न औरतें बन सकती हैं और न औलाद बन सकती है। अल्लाह तआला को साथ लेना पड़ेगा।

जब तू मेरा तो मैं तेरा

तू मुँह मोड़ जा, तू मुँह मोड़ जा फिर भी मैं तुझे बुलाता रहूंगा आ जा, आ जा, ﴿من تقرب الی تلقیته من بعید﴾ ऐ मेरे बन्दे जब तू मेरे ज़्यादा करीब होता है तो मैं तेरा कान बन जाता हूँ जिससे तू सुनता है ﴿وعین﴾ तेरी आँख बन जाता हूँ जिससे तू देखता है ﴿ویدع التی وبطشتها﴾ मैं तेरा बन जाता हूँ जिससे तू पकड़ता है ﴿ورجل التی یمشی بها﴾ मैं तेरा पाँव बन जाता हूँ जिससे तू चलता है। इतना ऊँचा मुक़ाम जो अल्लाह तआला की बारगाह में ले लेता है। जिबराईल अलैहिस्सलाम भी उसकी गर्द को देखते रह जाते हैं। इस ला इलाहा इलल्लाह में सब कुछ छुपा हुआ है यह इक़रारे मारफ़त, इक़रारे अबदियत, इक़रारे तौहीद, इक़रारे नबुव्वत है कि या अल्लाह बस हम तेरे हो गए हैं। अपनी सवारी को अल्लाह तआला की तरफ़ छोड़ दे और अपने महबूब की तरफ़ लौट जा।

बदन का हर अमल अल्लाह के लिए

तो मेरे शौक़ ने मुझे पुकारा कि रुक जा, थम जा, ठहर जा, सामान रख तेरी मन्ज़िल आ गई कि तेरे महबूब का घर आ गया। देखो भाईयो इन्सान मुहब्बत करने वाली मख़लूक़ है यह मुहब्बत के बग़ैर नहीं रह सकता किसी न किसी पर ज़रूर दिल आएगा। यह दिल किसी पर ज़रूर आएगा। अल्लाह तआला चाहता है कि मुझ पर तेरा दिल आ जाए, तू दिल में मुझे बसा ले। यह अल्लाह हम से चाहता है ﴿والذين امنوا اشد حبا لله﴾ अल्लाह पर मर मिटे यह जज़्बा अल्लाह हमारे दिल में चाहता है ﴿ان صلوتی نسکی ومحیای ومماتی لله رب العالمین﴾ मेरा जीना, मेरा मरना, मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरा सब कुछ मेरे अल्लाह के लिए बन जाए। अल्लाह तआला इस दिल में यह देखना चाहता है। देखो भाईयो जैसे वह अपनी ज़ात में शिरकत को बर्दाशत नहीं करता अपनी मुहब्बत में भी शिर्क बर्दाश्त नहीं करता, यह तो मख़लूक़ बर्दाश्त नहीं करती, औरत को सौतन से आर क्यों आती है कि मुहब्बत में शरीक दाख़िल हो गया, वह अन्दर ही अन्दर तड़प रही है और अन्दर ही अन्दर आग जल रही है और जो है ही ग़य्यूर ज़ात वहदहु ला शरीक ज़ात वह भी अपने बन्दे या बन्दी के दिल में किसी ग़ैर को देखना नहीं चाहता। अल्लाहु अकबर नमाज़ की नियत बांध कर खड़े हो जाइए अभी पता चल जाएगा कि दिल में अल्लाह है कि और। हमने ग़ैरों को बसाया हुआ है, इस दिल को वीरान कर दिया, बे आवाज़ कर दिया, जाले बन गए, घर में जाला नज़र आ जाए तो नौकर की शामत, बेगम की शामत कि ऐसी फ़ुवड़ और बदतमीज़ है कि जाले लटके हुए हैं

हमारा दिल ग़ैर की मुहब्बत में ज़ंग आलूद हो चुका है

यह जो मेरे दिल में जाला बन गया है सालो साल का है, अल्लाह के ग़ैर की मुहब्बत का इसका ग़म कोई नहीं कपड़े पर दाग़ नज़र आ जाएं हम अपने आपसे नफ़रत करने लग जाएं, बर्तन में बदबू आ जाए तो हम उसे उठाकर फेंक देते हैं अगर हमारे दिल की बदबू अल्लाह सुंघा देता तो हम दिल उठाकर बाहर फेंक देते। ये कितने गन्दे हो चुके हैं कि इसमें ग़ैर ही ग़ैर है वह नहीं जिसको इसमें बसाना था। अल्लाह की क़सम अर्श भी इसके सामने छोटा पड़ जाता है जिसमें अल्लाह की मुहब्बत उतर जाती है, अर्श भी छोटा है जिसमें अल्लाह आ गया जबकि सूंई की नाक से भी तंग है वह दिल जिससे अल्लाह निकल गया। जिससे अल्लाह का ताल्लुक़, मुहब्बत, मारफ़त, निकल गया सूंई के नाके से भी तंग है तो मरने से पहले अपने अल्लाह से जी लगा लें। अल्लाह की क़सम कोई काएनात की शक्ल, कोई नग़मा, कोई नेमत, कोई मशरूब, कोई ग़िज़ा, कोई तख़्त, कोई जलवा, कोई नज़ारा दिल की दुनिया को आबाद नहीं कर सकता यह आबाद सिर्फ़ अल्लाह से होता है. अगर अल्लाह होगा तो यह आबाद होगा अगर अल्लाह न होगा तो काएनात का हसीन से हसीन मन्ज़र भी इसकी दुनिया को वीरान रखेगा। इसके दिल का दिया न जल सका न कोई जला सकता है न कभी जलेगा उसका दिल अल्लाह से कट गया है उसके दिल की शमा बुझी हुई है यह कभी न जलेगी न राग व रंग से न जलवों में न नज़ारों में, न काएनात की

दौलत में, न अर्श व फ़र्श में इसको जलाना है इस दीप को रोशन करना है तो इसमें अल्लाह को ले लें अल्लाह को जो तैयार बैठा है कि मुझे बुला कि मैं आ जाऊँ। दुनिया के बादशाह से ताल्लुक़ जोड़ना है तो क्या क्या पापड़ बेलने पड़ते हैं और उस बादशाह से ताल्लुक़ जोड़ना हो तो बस दो लफ़्ज़ बोलने पड़ते हैं।

तौबा के बग़ैर अल्लाह से ताल्लुक़ मुमकिन नहीं

या अल्लाह! मेरी तौबा, मैं तेरा हो गया

﴿يا ابن آدم كنت تزينا لناس فهل تزينني لا جلي﴾

मेरे बन्दे तू लोगों के लिए कितना बनता सवंरता है कभी मेरे लिए भी तू बन कर आया, कभी आगे देखे, कभी बाएं देखे, कभी दाएं देखे, कभी पीछे देखे, कभी कुर्ता देखे, कभी कुछ देखे, कभी पतलून देखे कि मैं कैसा लग रहा हूँ। इसी को अल्लाह तआला कह रहा है कि तू लोगों के लिए कैसे बनता है, मेरे लिए भी तो बन कर आ तो अल्लाह के लिए बनने का क्या मतलब है कि बड़े अच्छे कपड़े पहन लो, अल्लाह के लिए बनने का मतलब यह है कि दिल में अल्लाह की मुहब्बत ले लो और जिस्म में आंहज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा ले लो तो आज तक जो हम उसकी नाफ़रमानी और ज़ुल्म कर चुके हैं हम उससे तौबा करें हम ग़फ़लत में हैं, हम अन्धेरों में पड़े हैं। अल्लाह को लिए बग़ैर मुसलमान न फ़र्द कामयाब हो सकता है न क़ौम न मुल्क, यह अल्लाह का फ़ैसला है।

लाखों बरस के गुनाह एक पल में मॉफ़

देखो मेरे भाईयो! अपने अल्लाह के सामने सिर झुका दो। अल्लाह मेरी तौबा मैं आ गया ﴿اذن فاقبلنی﴾ मेरी तौबा बस तू क़ुबूल फ़रमा और उसका इधर भी खुला दरबार है ﴿لا اله الله﴾ शैतान ने कहा ﴿ما اضال لا ادرك عبادك﴾ तेरे बन्दों को मुसलसल गुमराह करूंगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया और मैं भी उन्हें मुसलसल मॉफ़ करूंगा जब तक वे तौबा करते रहेंगे। चल भाई शैतान ने गुमराही का दर खोला और अल्लाह तआला ने मॉफ़ी दर खोला। उसने गुमराही के असबाब बनाए अल्लाह तआला ने तौबा के असबाब बनाए कि चल तौबा कर ले हज़ार बरस के हों या लाख बरस के हों तेरे एक बोल पर सब मॉफ़ कर दूंगा। कहाँ तक हों? आसमान की छत तक गुनाह चले जाएं इतने करेगा कौन और कौन कर सकता है और कैसे कर सकता है और कैसे हो सकते हैं पर अल्लाह कहता है कि तू सारे दिल के अरमान निकाल और काएनात को गुनाहों से भर दे आसमान की छत के साथ अपने गुनाहों को पहुँचा दे फिर तेरे एक बोल पर कि या अल्लाह मुझे मॉफ़ कर दे, मैं सारे मॉफ़ कर दूंगा मुझे कोई परवाह नहीं होगी। ﴿لا ابالی﴾ मुझे कोई परवाह ही नहीं। क्या हुआ अगर तू फिर तौबा करके तोड़े और मुँह मोड़ ले गुनाहों में आ जाए फिर तौबा कर ले फिर हम मॉफ़ कर दें फिर टूट गई फिर तौबा कर ले फिर मॉफ़ कर देंगे क्यों ﴿لا تضره الذنوب ولا تنقصه المغفرة﴾ हमारे गुनाहों से उसे नुक़सान नहीं होता मॉफ़ करने से वह कम नहीं पड़ता तो लिहाज़ा वह इन्तेज़ार ही में रहता है कि कब तौबा करे और हमारी मॉफ़ी का परवाना दे दिया जाए।

नेमत की नाशुक्री से बचना चाहिए

भाईयो बग़ैर तौबा के कोई न रहे, यह ज़ुल्म न करे, यह ज़ुल्म न करे अल्लाह के वास्ते। उसका खा कर उसी को ग़ुर्राना कुत्ता भी नहीं करता, यह तो बिल्ली भी नहीं करती, यह तो शेर भी नहीं करता, यह जो चिड़ियाघर में या सर्कस वाले होते हैं वह उनको गोश्त खिलाते हैं वह उनके सामने बकरी बन कर रहता है और फिर ज़मीन गुनाहों से जला दें, अल्लाह की हवाओं को इस्तेमाल करें और सारी फ़िज़ा में गुनाहों का धुंआ भर दें। आँखों की शमा उसने जलाई हम उससे ग़ैर औरतों को देखें, कानों के टेलीफ़ोन उसी ने दिए और हम उनसे रन्डियों के गाने सुने, दिल व दिमाग़ उसी ने दिया और हम नाफ़रमानी में उसे इस्तेमाल करें, शहवत उसने रखी और वह ज़िना में इस्तेमाल हो, जिस्म उसने दिया और नाफ़रमानी में इस्तेमाल हो यह तो कोई अक़्ल की बात ही नहीं है। कुत्ता एक रोटी खाकर सारी ज़िन्दगी उसकी वफ़ादारी करता है। आप सोते हैं वह जागता है, सारी रात पहरा देता है तो मैं कुत्ते से भी नीचे चला जाऊँ जो एक रोटी पर ऐसी वफ़ा कर जाए और मैं सारी जहां की नेमतें खाकर उसको ठुकरा जाऊँ, यह इन्सानियत नहीं है।

अपने हबीब को हर चीज़ चुन चुन कर दी

और भाई दूसरा क़दम क्या उठाना हे वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक तरीक़ा है न हम अपने अल्लाह को जानते हैं न अपने रसूल को जानते हैं, अल्लाह

की शान जो सबसे बड़ी मोहसिन ज़ात है उनके बारे में कोई पता नहीं। किसी कारोबार-याफ़्ता का कारोबार है तो उस में एक घन्टा तक़रीर कर सकते हैं। किसी औरत से पूछोगे कि आपके घर की क्या तरतीब है तो एक घन्टा समझाने में लगा सकती है। किसी से अगर अपने अल्लाह का तार्रुफ़ कराने के लिए कहो तो भाई हमें पता ही नहीं, बस अल्लाह एक है। अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई पता बता दो क्या थे कौन थे, कैसे थे? पता ही कोई नहीं। जिसका पता न हो उसकी अज़मत कैसे आएगी। अल्लाह ने सारी काएनात को देखा ﴿اختار العرب﴾ इसमें से अरबों को अलग किया ﴿تخير العرب﴾ फिर सारे अरब को देखा ﴿تختار المضر﴾ उसमें से क़बीले मुज़िर को अलग किया अब उसमें से एक छांटनी हो रही है ﴿تخير المضر، تختار القريش﴾ फिर मुज़िर को देखा उसमें से क़ुरैश को अलग किया ﴿تخير القريش﴾ फिर उसमें से क़ुरैश की छंटनी की ﴿تختار بنی هاشم﴾ इसमें से हाशिम को अलग किया ﴿تخير بنی هاشم﴾ फिर बनी हाशिम को देखा ﴿تختارنی﴾ सारे बनी हाशिम को देखा उसमें से मेरे अल्लाह ने मुझे मुन्तख़ब किया ﴿فان خيركم ابن ونفسه﴾ मैं काएनात का सबसे आला और अफ़ज़ल हसब नसब वाला हूँ यह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पहला इन्तेख़ाब है। छांट में इतने ऊँचे पहुँचे सिर्फ़ छांटने में, इन्तेख़ाब में, काएनात को छांटा उसमें से इन्सानों को निकाला, अरबों का छांटा, उसमें से क़बीला मुज़िर को निकाला, मुज़िर को छांटा, उसमें से क़ुरैश को निकाला, क़ुरैश को छांटा उसमें से बनू हाशिम को निकाला, बनू हाशिम को छांटा उसमें से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वजूद बख़्शा। इतने आला

नसब पर जो आए उसका तरीक़ा छोड़ दिया जाए, हम खढ में नहीं जाएंगे तो कहां जाएंगे।

आपकी विलादत पर सारी दुनिया में हलचल मच गयी

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने चुना और सारी दुनिया के बुत ज़मीन पर गिर गए और बादशाहों के तख़्त उलट गए, बुत ज़मीन पर जा गिरे, एक समन्दर की मच्छली ने दूसरे समन्दर की मच्छिलयों को मुबारक बाद दी कि काएनात का सरदार आ गया है और किसरा के महल में एक हज़ार बकरा, फ़र्श अंबार, तीन हज़ार एक सौ चौसठ बरस तक वह सलतनत चली है। दुनिया की सबसे क़दीम सलतनत जिसने मुसलसल हुकूमत की है। ये अर्शीन थे जिसको किसरा कहा जाता है तीन हज़ार एक सौ चौसठ बरस। हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में उसने जा कर दम तोड़ा। वह अपने उरूज पर थी। नौशेरवां का ज़माना था और नौशेरवां आदिल के नाम से मशहूर था उसका ज़माना था और उसके महल में पिछले बाप दादा से एक हज़ार बरस से आग जल रही थी इस लिए कि वे आग के पुजारी थे एक दम पूरी आग बुझ गई और उसने एक सफ़ेद पत्थर का महल बनाया था उसके चौदह बड़े बड़े मीनार थे वे एक धमाके के साथ ज़मीन पर गिर गए तो सारी काएनात में हल चल मच गई एक यक़ीन के पैदा होने पर। एक यहूदी आया हुआ था मक्के में, कहने लगा आज कोई क़ुरैशी पैदा हुआ है? कहने लगे

हाँ, फलां का बेटा। बाप ज़िन्दा है? कहने लगे हाँ। कहने लगा कि कोई ऐसा बच्चा बताओ जो आज पैदा हुआ हो और बाप उसका मरा हुआ हो। उन्होंने कहा हाँ अब्दुल मुत्तलिब का पोता, अब्दुल्लाह का बेटा पैदा हुआ है। कहा मुझे दिखाओ। खुद गया जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बाहर लाया गया और शकल पर जो निगाह पड़ी तो ज़मीन पर उलट कर गिरा, कहने लगा ﴾ويل النبى اسرائيل﴿ हाय बनी इसराइल आले नबुव्वत तुम से निकल गई तो वह किसरा पेरशान, नौशेरवां यह क्या हुआ। उसने अब्दुल मसीह एक बहुत बड़ा इसाई पादरी था उसको बुलाया और उसको कहा क्या क़िस्सा है? कहने लगा मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा है। मेरा एक मामू तौरात और इन्जील का आलिम है वह शाम में रहता है मैं उससे जा कर पूछता हूँ तो कहा जाओ पूछ कर आओ। अब्दुल मसीह को रवाना किया जब वह शाम पहुँचा तो मामू सकरात में थे कुछ ग़शी कुछ होश। जब यह पहुँचे तो उसको बुलाया कि मैं आपका भांजा अब्दुल मसीह आया हूँ तो उसको यूं देखा और उसके बोलने से पहले वह कहने लगा कि बादशाह ने तुझे भेजा है कि उसके बुर्ज टूट गए हैं और उसकी आग बुझ गई तो इस लिए तुझे भेजा है। कहने लगा हाँ हाँ इस लिए भेजा है तो कहा उससे जा कर कहोः

अन्क़रीब सारा जहां मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुलाम बन जाएगा

क्या कहा कि जा कर कहो वह शख़्सियत ज़ाहिर हो गई जो क़ुरआन को ले कर आएगी और उसका क़ुरआन पढ़ा जाएगा और

वादी समा वह पानी से भर जाएगी और बुख़रात ख़ुश्क हो जाएंगे, क़ुरआन आम हो जाएगा तो उसको बता दो कि शाम भी उसका ग़ुलाम बनेगा और ईरान भी आले साअसान के हाथ से निकल कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलामों के क़ब्ज़े में चला जाएगा फिर न मेरा शाम शाम है और न तेरा ईरान ईरान है। वह सब उसके ग़ुलामों का बन जाएगा और मुझे यह लगता है कि वह आख़िरी नबी आ गया है यह उसकी वजह से हो रहा है। यह बाहर हो रहा है और कमरे में क्या हो रहा है? जन्नत की हूरों को ज़मीन पर उतार दिया गया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाईश के वक़्त, आसमान के फ़रिश्ते उतर आए और वालदा ने देखा कि सितारे फ़र्श पर आ गए, सितारे नीचे झुका दिए गए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्तक़बाल के लिए। फ़रमाती थीं कि मुझे यों लगता था सितारे मेरे ऊपर गिर जाएंगे। मलाइका उतर आए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब पैदा हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाफ़ काटना नहीं पड़ा कटा हुआ था आंत के साथ जकड़े हुए नहीं थे, कटे कटाए। ख़तना किया हुआ और धुले धुलाए पैदा हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्म पर गंदगी का निशान नहीं था और पैदा होते ही सिर सज्दे में रख दिया और उंगली को आसमान की तरफ़ उठा दिया और जब हज़रत आमना रज़ियल्लाहु अन्हा ने गोद में लिया तो एक बादल आया जिस बादल ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने अन्दर छुपा दिया और बादल के अन्दर से आवाज़ आई ﴿طوفوا بها مشرق الارض و مغربها﴾ इस बच्चे को मशरिक़ मग़रिब में फिराओ ﴿يعرف جسمه ونعته وصورته﴾ ताकि सारा

जहां उसकी शकल व सूरत, ज़ात सिफ़ात को पहचान ले।

ज़ाहिर और बातिन दोनों को एक कर लो

मुहब्बत एक लफ़्ज़ पर राज़ी नहीं हो रही, कसरत अलफ़ाज़, मुहब्बत अक्सर अलफ़ाज़ को खेंचती है, मुहब्बत की शिद्दत को लाती है तो अल्लाह तआला ने एक नाम यह एक दफ़ा नहीं कहा तू मुहम्मद है, तो अहमद है, तू माही है, तो हाशिर है, तू साक़िब है, तू हातिम है, तू अबुल क़ासिम है, तू ताहा है, तू यासीन है और तू मेरा हबीब है तो यह तबलीग़ की मेहनत उस ज़ात की मेहनत है कि मुहम्मदी नज़र आने लग जाओ। मैं ने कल भी कहा था कि ज़ाहिर में भी मुहम्मदी बनना पड़ेगा और बातिन में भी बनना पड़ेगा। यह ऐसे ही दोगली चाल नहीं चलेगी अल्लाह की बारगाह में बातिन का ठीक होना भी ज़रूरी है और ज़ाहिर का ठीक होना भी ज़रूरी है। शैतान ने जिहालत फैलाई है कि दिल साफ़ होना चाहिए ज़ाहिर की ख़ैर है। बिल्कुल साफ़ सुथरा गिलास लाया गया बिल्कुल साफ़ सुथरा उसके एक तरफ़ पेशाब का क़तरा है तो कोई पानी पिएगा? अपने लिए तो एक क़तरा गंदगी बर्दाश्त नहीं की इस पूरे वजूद को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े से हटा कर गंदा कर दिया तो अल्लाह इस वजूद को कैसे बर्दाश्त करेगा। कपड़ा मैला हो जाए तो हम उतार देते हैं कोई नापाक हुआ है सिर्फ़ उसका ज़ाहिर ख़राब हुआ है। मैं अपने लिए तो कहता हूँ ज़ाहिर भी अच्छा हो बातिन भी अच्छा हो और मुसलमान है कि मेरे ज़ाहिर को मत देखो मेरे अन्दर को देखो नहीं नहीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके में ही कामयाबी है

वे अदाएं इख़्तियार करें जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इख़्तियार कर गए। बस उसी में दुनिया व आख़िरत की निजात और कामयाबी है इसके अलावा हलाकत है, तबाही है, बर्बादी है। अल्लाह की क़सम दो टके न बन सकेगें क़यामत के दिन अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तरीक़े छोड़ कर मर गए। हज़रत बिलाल सरदार बन गए मुहम्मदी होने की वजह से, अबू लहब मरदूद हो गया चचा हो कर, तरीक़ा छोड़ने की वजह से। तो यह तबलीग़ की मेहनत यह मेहनत है कि घरों से निकलो और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली ज़िन्दगी इख़्तियार करो। अल्लाह की मुहब्बत उसके हबीब की इताअत सीखने के लिए घरों से निकलना और दर दर इसकी सदा लगाना, आवाज़ लगाना। यह आवाज़ दिल पर भी असर करती है, आप पर असर होता है तो मेरे पर भी असर होता है और हर बोलने वाले का बोल उस पर भी असर करता है और उसके ग़ैर पर भी असर करता है। बोल में बड़ी ताक़त है। हम तबलीग़ में निकल कर कहते हैं कि सदा लगाओ। अल्लाह और रसूल की इतनी सदा लगाओ कि दिल व दिमाग़ अल्लाह अल्लाह पुकार उठे। यह घर बैठे हासिल नहीं होती इसके लिए निकलना पड़ता है। घर बैठने की गुंजाइश होती तो हम पहले अपने लिए निकालते ज़माना हो गया क़ुरआन व हदीस पढ़ते हुए तो हम अपने लिए कितनी गुंजाइश निकाल सकते थे। बच्चे किसको अच्छे नहीं लगते, घर

किसको अच्छा नहीं लगता, गर्मी सर्दी में धक्के खाना क्यों? घर से निकाले हुए हैं या कहीं से पैसे मिल रहे हैं, कुछ अन्दाज़ा मिल रहा है कि चल भाई माल पराया चलो नाना जी के पास से हलवाई की दुकान कोई ऐसा क़िस्सा भी नहीं। फिर क्यों एक मजमे का मजमा खिंचा चला जा रहा है? यह एक मेहनत है कि अल्लाह और उसके रसूल के तरीक़ों को सीखना है मरने से पहले पहले। अल्लाह के सामने खड़े होने वाला हूँ आप भी मैं भी और कोई नबी नहीं आएगा, कोई पैग़ाम नहीं आएगा। अब हमें और आपको पैग़ामें इलाही घर घर जा कर पहुँचाना है या तो आप बताइए कि हमारे ज़िम्में नहीं किसी और के ज़िम्मे है फिर अगर कोई और नज़र नहीं आए तो हिरे फिरे क़ुर्रा आप ही के नाम पर पड़ेगा।

ऐ मेरे नबी इन नाफ़रमानों से कहो कि तौबा करें

तो अब सारा क़ुरआन देखें और सारी हदीस देखें यह उम्मत ज़िम्मेदार है दुनिया में इस्लाम फैलाने की और कोई अरब नहीं आएगा। अपनों को संभालना भी इन पर फ़र्ज़ और ग़ैरों का संभालना भी इनका फ़र्ज़ और काफ़िरों को तबलीग़ करने के लिए भी नबी आए और मुसलमानों को तबलीग़ करने के लिए भी नबी आए। बहुत से भाई कह देते हैं जाओ काफ़िरों को तबलीग़ करो मैं उनको बता रहा हूँ कि चार सौ नबी मुसलमानों को तबलीग़ करने के लिए आए कम से कम और ज़्यादा भी हो सकते हैं

इससे कम नहीं हैं। इन मुसलमानों को दावत देने के लिए चार सौ नबी ऊपर नीचे, ऊपर नीचे अल्लाह तआला ने भेजे कि जाओ इन नाफ़रमानों से तौबा कराओ तो नाफ़रमान मुसलमान को भी दावत देने के लिए अल्लाह तआला ने नबी भेजे, काफ़िरों को दावत देने के लिए भी अल्लाह तआला ने नबियों को भेजा।

फ़क़ीर कौन है?

इसी तरह मेरे भाईयो यह उम्मत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद पूरी दुनिया के इन्सानों को अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुँचाने के लिए चुन ली गई है ﴿هو اجتبكم﴾ हम ने तुम को चुन लिया है कि दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम लेकर फिरो। अब हम इस को तसलीम कर लें। यह तो बहुत बड़ी परेशानी की बात है कि हमारे ज़िम्मे तो है कोई नहीं, यह नसल आवारा हो गई। इस नसल को अल्लाह की तरफ़ न फेरा जाए तो हम तो वह फ़क़ीर नहीं जिन के पास पैसे न हों फ़क़ीर वे क़ौमें हैं जिनकी नसलें डूब जाएं जिनकी नसल आवारा हो जाएं। वह क़ौम फ़क़ीर क़ौम है। दुनिया के सबसे बड़े फ़क़ीर अमरीका और यूरोप वाले हैं जिनकी नसल ख़तम हो चुकी हैं। यह आख़िरी हिचकियां हैं। फूला हुआ मरीज़ वरम वाला गुर्दे का मरीज़ फूल जाता है। मेरे जैसा कहेगा कि कितना मोटा ताज़ा ख़ूबसूरत है। डाक्टर कहेगा कि मरने वाला है। यह फूला हुआ मरीज़ है, यह कुफ़्र का वरम है जो चढ़ गया है जिसको अन्क़रीब तोड़ने वाला है। अंडे के छिलके से ज़्यादा आसानी से अल्लाह तआला इसको तोड़कर

ज़िन्दा रहने वालों को दिखा देगा कि बेहया क़ौमो का अंजाम होता है। बेहया क़ौमों को ज़मीन पर जीने का कोई हक़ नहीं। दुनिया का सबसे बड़ा मुजरिम मेरे ख़याल से फ़िरऔन था। जिसने कहा कि मैं खुदा हूँ और आज तक कोई इन्सान नहीं आया जिसने कहा कि मैं खुदा हूँ। अल्लाह तआला ने मिस्र के दरिया डाल दिया। समंदर में डाल दिया, क़ौमे आद मुतकब्बिर हुई उसे उड़ा दिया, क़ौमे समूद नाफ़रमान हुई फ़रिश्ते की चीख़ से उड़ा दिया, कौमे शुऐब आग की बारिश से हलाक कर दी गई और क़ौमें लूत बेहया थी, बुतों के पुजारी थे, बेहया थे, क़ौमे लूत को अल्लाह तआला ने ये पाँच अज़ाब मारे। इकठ्ठे किसी क़ौम पर इतने अज़ाब नहीं आए जितने लूत की क़ौम पर अज़ाब आए। ज़मीन पर ज़लज़ला आया, दीवारें उखाड़ दीं, ऊपर ले जाकर ज़मीन की तरफ़ लौटा के फेंका, फिर पत्थरों की बारिश की, फिर चेहरों को मसख़ कर दिया, फिर आँखों का धंसा दिया। यह पाँच अज़ाब अल्लाह ने उन पर मारे। सब अल्लाह तआला ने क़ुरआन में ज़िक्र फ़रमाए ﴿جعلنا عاليها سافلها فطمسنا اعينهم﴾ यह सारे अज़ाब अल्लाह ज़ुलजिलाल की तरफ़ से उस क़ौम पर आए उनकी बेहयाई की वजह से। हमारी नसल बेहयाई की तरफ़ चल रही है। शराफ़त बाज़ार में अब देखने को नज़र नहीं आती।

तबलीग़ हमारा फ़रीज़ा है

इस वक़्त सबसे बड़ी ज़रूरत है कि हम फिर फिर के लोगों को इससे तौबा करवाएं अगर अल्लाह की पकड़ आ गई तो फिर कोई

चीज़ न बचा सकेगी तो यह तबलीग़ को जमात का काम न समझें इसको अल्लाह का फ़रीज़ा समझें तो भाई मेरे ज़िम्मे है दीन पर चलना, दीन को फैलाना। वह तो नाम पड़ गया तबलीग़ी जमात। हर मुसलमान कारकुन है, हर मुसलमान इसको करने वाला है, माने या न माने नमाज़ तो सब पर फ़र्ज़ है वह माने या न माने नमाज़ तो सब पर फ़र्ज़ है पढ़े या न पढ़े। वह माने या न माने ख़त्मे नबुव्वत को मानने के बाद तबलीग़ उसके ज़िम्मे है। मेरा नबी आख़िरी नबी है उसके बाद कोई नबी नहीं यही अक़ीदा उसके ज़िम्मे तबलीग़ का कर लेता है। इस लिए मेरे भाईयो अल्लाह के यहां तौबा भी करें हरकत भी करें और एक बात बताऊँ तबलीग़ के लिए आलिम होना भी शर्त नहीं है दावत देने के लिए नेकी की बात करने के लिए ख़ुद अमल भी शर्त नहीं है।

एक आयत की सही तफ़सीर और ग़लत फ़हमी का इज़ाला

﴿لمـا تـقـولـو ن ما لا تفعلون﴾ के तर्जुमे से ग़लत समझा जाए, आगे ज़ुबान मुहावरा न जानने की वजह से सिर्फ़ तर्जुमा पढ़ कर वे ग़लत पटरियों पर चढ़ गए। तर्जुमे से कभी कोई बात समझ में नहीं आया करती। यह अल्लाह तआला यूं कह रहा है जिस चीज़ को करते नहीं उसका दावा मत किया करो ﴿ولم تقولون ما لا تفعلون﴾ जो तुम करते नहीं वह तुम क्यों कहते हो ﴿لـمـا تبـلـغون﴾ तो नहीं कहा कि तुम क्यों दावत देते हो उसकी जो तुम करते नहीं हो। क़ौल और दावत इन अलफ़ाज़ का फ़र्क़ समझ में आए तो बात

वाज़ेह हो जाती है कि दावत देने के लिए अमल शर्त नहीं। अमल निजात के लिए शर्त है। बाज़ मौक़ों पर एक कमज़ोर आदमी, नाफ़रमान का बोल भी ज़िन्दगियों को पलटने का ज़रिया बन जाता है। मैं कोई अमल की छुट्टी नहीं कर रहा हूँ कि अमल की छुट्टी हो गई। मैं एक इशकाल को हल कर रहा हूँ कि यह एक आम इशकाल है कि ख़ुद आमिल हो तो दावत दे, अगर ख़ुद अमल न हो तो कैसे दावत दें। अल्लाह तआला का क़ौल है ﴿لم تقولون مالا تفعلون﴾ क़ौल है। क़ौल और दावत में फ़र्क़ है क्यों दावा करते हो इस बात का जो करते नहीं। तहज्जुद पढ़ता ही नहीं और आकर कहता है कि मेरी तहज्जुद कभी क़ज़ा ही नहीं हुई। यह किस की नफ़ी अल्लाह तआला फ़रमा रहा है। अरबी मुहावरे को नहीं समझा इस लिए ग़लत सुन कर और उस पर एक हदीस भी सुनाते हैं।

एक औरत का वाक़िया

वह क्या है कि एक औरत आई कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा बेटा गुड़ खाता है इसको कहिए कि गुड़ न खाया करे। ऐ बेटे मदीने में गुड़ तो सावित करो फिर हदीस भी सावित हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि कल आना। वह कल आई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि बेटा गुड़ न खाया कर तो कहा कि यह बात आप कल ही कह देते। कहा कल मैंने ख़ुद गुड़ खाया था। यह बकवास है और अल्लाह के नबी पर बोहतान है। यहां तीस साल हो गए किताबों

के साथ ज़िन्दगी गुज़ारते हुए कहीं नहीं मिली। यह सब झूठ है और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि जिसने यह झूठ बोला वह अपना ठिकाना जहन्नुम में बना ले। हाय! आवाज़ तो लगानी है ﴿رب مبلغ اوعامر سامع﴾ यह अल्लाह के नबी का कौल तो सारी हदीस की किताबों में मौजूद है, यह खुद इसकी निशान देही कर रहा है कि दावत देने के लिए अमल शर्त नहीं ﴿رب مبلغ اوعامر سامع﴾ अज़ान का वक़्त हो गया वरना तो मैं इसको बयान करता कि दावत देने के लिए अमल शर्त नहीं ﴿رب مبلغ اوعامر سامع﴾ किसी का बोल कान में पड़ता है यह कहना भी एक दिन अमल का दाग़ देगा। इसके लिए निकाला जाता है कि भाई निकलो निकलो, दीन का सीखना भी फ़र्ज़ है, फैलाना भी फ़र्ज़ है तो इसी लिए तबलीग़ी जमातों में निकलते हैं। कभी इज्तिमा करते हैं। अभी इज्तिमा हो रहा है अगले हफ़्ते की शाम से जो आ रहा है हफ़्ता। भाई अल्लाह की राह में निकलना चार चार महीने के लिए यह तो असल में बहाने हैं किसी तरह लोगों को निकाला जाए, निकलने का रिवाज ही निकल गया। घरों में पैदा हुए, घरों में परवान चढ़े, घरों में रहते हुए मर गए। भाई यह रिवाज टूटे। पैदा कहीं हों, परवान कहीं चढ़ें, मौत कहीं आए। जो अल्लाह के रास्ते में मरा वह अल्लाह के ज़िम्मे हो गया ﴿فقد وقع اجره على الله﴾ कहा मेरे ज़िम्मे हो गया, मेरे ज़िम्मे हो गया। अल्लाह के ज़िम्मे लग कर मर जाएं। मर तो जाएंगे तब भी, अस्पताल में मरने के बजाए अल्लाह की राह में मर जाएं कि डिफ़ैन्स में मरने के बजाए अल्लाह की राह में मर जाएं कि अल्लाह के ज़िम्मे लग गए तो भाई इसके सारे भाई इरादे करो।

इसका थोड़ा सा इज़्हार भी करो ताकि पता चल जाए कि कौन भाई इजतिमा से अपनी अपनी मस्जिदों से डिफ़ैन्स से, इस मस्जिद से चार महीने, चिल्ले की जमाते कौन कौन भाई नक़द पेश करेगा, जल्दी बता दो।

وآخر دعوانا عن الحمد لله رب العلمين

काएनात के अजाएबात

जो नज़र आता वह हक़ीक़त नहीं

मेरे भाईयों और दोस्तों! दुनिया में जो हाल आते हैं उनका पैदा करने वाला तो अल्लाह ही है। ख़ैर आए या शर इरादा इसमें अल्लाह ही का होता है, असबाब बनते हैं इन्सानों के ज़रिये से चीज़ों के ज़रिये से लेकिन इस दुनिया में फैली हुई चीज़ों की कमी ज़्यादती के ज़रिए से हालात का बनना बिगड़ना नज़र आता है। पानी में दरख़्त का साया नज़र आता है वह दरख़्त नहीं होता सिर्फ़ साया होता है। हालात अल्लाह तआला पैदा फ़रमाते हैं और चीज़ें भी अल्लाह तआला पैदा फ़रमाते हैं। हालात के ख़ज़ाने अल्लाह के पास अलग हैं और चीज़ों के ख़ज़ाने अल्लाह के पास अलग हैं। दुनिया में ज़ाहिरी तौर से एक दूसरे के साथ मिले हुए नज़र आते हैं, हक़ीक़त में ये दोनों अलग अलग हैं। जिस्म और जगह बनता है और रूह और जगह बनती है। रूह के बनने का निज़ाम और है और जिस्म के बनने का निज़ाम अलैहिदा है और अल्लाह तआला इन दोनों को माँ के पेट में जमा कर देता है। नज़र में दोनों एक लगते हैं हक़ीक़त में ऐसा नहीं है। जिस्म एक जगह से आया है और रूह दूसरी जगह से आई है। ऐसे ही मेरे भाईयों चीज़ें आयीं,

इज़्ज़त आई, माल आया, माल आ गया इज़्ज़त आ गई, माल चला गया इज़्ज़त भी चली गई, दवा आई सेहत भी आ गई, दवा चली गई सेहत भी चली गई, क़ुव्वत आई ग़लबा आ गया और क़ुव्वत हाथ से चली गई तो ग़लबा ख़त्म हो गया। अब यह बड़ा ज़बर्दस्त इम्तेहान है कि जो नज़र आता है वह हक़ीक़त में रहता नहीं, अण्डा फटता है तो बच्चा निकला। हम कहते हैं कि अण्डे ने बच्चा दिया, ज़मीन फटी दरख़्त निकला, हम ने कहा दाना बोया दरख़्त बना, गुठली से दरख़्त बना। यह सारा नज़र का यक़ीन है, मुशाहिदे वाला यक़ीन है।

अल्लाह तआला ने हर चीज़ को बग़ैर नमूने के बनाया है

अल्लाह तआला क्या फ़रमाते हैं कि ﴿ان الله فالق الحب النوى﴾ यह दाने और गुठली को फाड़ने वाला मैं हूँ, उसे दरख़्त बना दूं या इसके बग़ैर बना दूं। हर चीज़ का पहला नमूना अल्लाह तआला ने ख़ुद बनाया। मर्द औरत के मिलने से बच्चा पैदा होता है, नज़र यह आता है। अल्लाह तआला क़ुरआने पाक में इसकी नफ़ी फ़रमाता है ﴿ءانتم تخلقونه ام نحن الخالقون﴾ तुम्हारे मिलने से पैदाइश होती है या मैं पैदा करता हूँ। तुम्हारे बग़ैर भी पैदा कर सकता हूँ। फ़रिश्ते पैदा किए तो कोई माँ बाप नहीं, आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया तो कोई माँ बाप नहीं, हज़रत मरियम को बेटा दिया बाप के बग़ैर, जन्नत की लाखों करोड़ों हूरें पैदा की न उनका कोई बाप न उनकी कोई माँ है। जन्नत में हज़ारों ग़िलमान पैदा किए।

अदना दर्जे का जो जन्नती है, सबसे छोटा जन्नती जो है उसकी जन्नत इस जहां से दस गुना बड़ी है और उस जन्नती को अस्सी हज़ार ख़ादिम मिलेंगे और इससे ऊपर वाले को पता नहीं कितने करोड़ों नौकर मिलेंगे, अदना दर्जे के जन्नती को बहत्तर बीवियां मिलेंगी और आला दर्जे के जन्नती को पच्चीस लाख बीवियां मिलेंगी, उन सबको अल्लाह तआला ने पैदा किया। इसमें न मर्द ने न औरत ने कोई किरदार अदा किया। इतने ग़ुलाम पैदा हुए, इतनी औरतें पैदा हुईं, इतने बड़े बंगले, कोई गारा नहीं, कोई मिट्टी नहीं, कोई ईंट, ईंटों के कारखाने, सीमेंट के कारखाने, मज़दूर इंजीनियर सारे लगते हैं तब जाकर बिल्डिंगे तैयार होती हैं कोई सौ मंज़िला कोई दस मंज़िला।

जन्नत के महल की वुसअत

अल्लाह तआला ने जन्नत में ऐसे बड़े महल बनाए हैं कि अगर सारी दुनिया इसमें रखी जाए तो यह एक बकरी की तरह नज़र आएगी जैसा कि दुनिया में कोई एक बकरी खड़ी हुई हो। यह सारी दुनिया इस महल में रखी जाए तो बकरी की तरह नज़र आएगी। ऐसे हज़ारों महल अल्लाह तआला ने और भी बनाए हैं। फ़िज़ा में अल्लाह तआला ने अरबों खरबों सय्यारे पैदा किए हैं। पाँच अरब कहकशाएं हैं, एक एक कहकशा में कम से कम दस दस खरब सय्यारे हैं और यह सूरज ज़मीन से तेरह लाख गुना बड़ा है और सूरज से भी दस गुना बड़े सय्यारें फ़िज़ा में गर्दिश कर रहे हैं। अल्लाह तआला ने इन को बग़ैर किसी नमूने के बनाया और हुक्म दे दिया

बन गए। नज़र आता है कि असबाब की दुनिया है हकीकत में है अल्लाह तआला के अम्र की दुनिया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन से कहा कि मेरा रब वह जो हर चीज़ को पैदा करता है फिर उसे हिदायत देता है।

बिल्ली की तरबियत कौन कर रहा है

बिल्ली हामला होती है तो वह कोना तलाश करने लगती है बच्चे देने के लिए। उसको उसकी माँ ने नहीं बताया कि तुझे बच्चा देना है तो किसी कोने में छिपने की जगह देखनी है। किसी टीचर सैन्टर से नहीं सीखा, किसी नर्सिगं होम से ट्रेनिगं नहीं ली। उसको ऊपर से इल्हाम है कि मैं एक ऐसी जगह बच्चा दे दूं कि वह ज़ाए न हो जाए। उसका कोई टीचर या उस्ताद नहीं है। अल्लाह तआला का ऊपर से निज़ाम है, उनको भी हिदायत देता चला आ रहा है। बिल्ली किसी कोने में जा कर बच्चा देती है तो बच्चे को नहीं पता कि मेरी माँ की छाती कहाँ है और उस में मेरी ग़िज़ा है, उसको माँ ने नहीं बताया।

हम तो खुद अपने बच्चे को सीने से लगाते हैं और उसके मुहँ में छाती देते हैं, वह चूसता है, बिल्ली तो ऐसा नहीं करती। उसके बच्चे की आँखें बन्द होती है खुद सरकता हुआ उधर को चल रहा है उसकी तक़दीर और अल्लाह की रबूबियत उसको इस तरफ़ ले जा रही है, उसके चूसने का तरीक़ा बता रही है। हम तो बच्चे के मुहँ में चुसनी दे देते हैं तो उसको चूसने का तरीक़ा आ जाता है और उसकी मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से तरबियत करते हैं तो वह सीखता

है। बिल्ली का बच्चा है जिसने कभी देखा नहीं कभी सुना नहीं, वह ख़ुद ब ख़ुद छाती की तरफ़ लपकता है और दूध पीता है। यह सारा का सारा निज़ाम अल्लाह तआला ग़ैब के पर्दों से चला रहा है।

एक मादा है वह अण्डा देती है। अण्डा देने के बाद वह कीड़े को डंक मारती है ऐसे डंक मारती है कि वह मरे नहीं बेहोश हो जाए। मर जाएगा तो गिर जाएगा सड़ जाएगा तो इतना डंक मारती है कि बेहोश हो जाए मरे नहीं। वह इन कीड़ों को अपने अण्डे के पास रख लेती है और उनकी बेहोशी इतनी होती है कि जब तक वह बच्चे अण्डे से बाहर नहीं आते तो उनको होश नहीं आता। जब वह बच्चा अण्डे के अन्दर से निकलता है तो पहले से उसके लिए गोश्त का इन्तेज़ाम किया जा चुका होता है। वह माँ चली जाती है अण्डे से निकलने वाला बच्चा जब देखता है कि मेरे लिए खाना तैयार है तो फिर उसको खाता है, परवान चढ़ता है। फिर उसको पर लगते हैं, फिर पूरे गांव में बिखर जाते हैं। यह बच्चा जब बड़ा होकर अण्डे देने पर आता है तो इसी काम को करता है जो उसकी माँ नहीं किया था न वह अपनी माँ को देखता है न अपनी माँ से सुनता है न अपनी माँ से सीखता है।

अल्लाह तआला का अपनी मख़्लूक़ की रहनुमाई करना

यह अल्लाह तआला है अपनी मख़्लूक़ उनकी ज़रूरियात की हिदायत देता चला जाता है और वे इतनी समझदार हैं कि इन्सानों

से भी ज़्यादा। शेर के सामने घास रख दो तो वह कहेगा अरे भाई तेरे जैसा अहमक़ मैंने कभी नहीं देखा क्या मैं घास खाने वाला हूँ? मैं तो गोश्त खाता हूँ, यह मेरे परहेज़ की चीज़ है। गोश्त रख दो खाएगा, घास नहीं खाएगा। इन्सान इतनी अक़्ल के बावजूद बद परहेज़ी करता है। खुद डाक्टर भी है, शूगर भी है फिर भी मीठा खाता है मैं तो खा लूंगा कोई हरज नहीं। शेर इससे ज़्यादा अक़्ल वाला है वह बदपरहेज़ी नहीं करता, वह कभी भी घास नहीं खाता। बकरी के सामने गोश्त रख दो तो वह कहेगी तेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है मैं तो घास खाने वाली हूँ घास लाओ तो खाउंगी। ये तमाम जानवर पूरा परहेज़ करते हैं। इन्सान इस मामले में थोड़ा सा इनसे भी नीचे है। डाक्टर होकर शूगर का मरीज़ है औरों को कहता है कि मीठा नहीं खाना और खुद खाता है।

मच्छली को तरबियत कौन देने वाला है?

अल्लाह तआला हर चीज़ का निज़ाम समझाने वाला है, उसकी ज़रूरत की हिदायत देने वाला है और उसकी ज़िन्दगी की तरतीब बताने वाला है, समन्दर की तह में चलने वाली मच्छलियों की रहबरी करने वाला, समन्दर में एक मच्छली है वह बर बूढ़े के पास जाकर अण्डा देती है इसके अलावा किसी और जगह अण्डा नहीं देती। हज़ार मील का सफ़र करेगी बर बूढ़ा पहुँचेगी वहाँ अण्डा देगी, उसके अलावा इस पूरे समन्दर में उसके लिए और जगह ही नहीं कि वहाँ जा कर अण्डा दे। यह पूरे समन्दर में पाई जाती है और अण्डा देने के लिए बर बूढ़ा पहुँचती है और अण्डा देकर मर

जाती है। बच्चों के ज़िन्दा होने तक भी ज़िन्दा नहीं रहती। अब वह बच्चा अण्डे से निकलता है तो उसके सामने खुला समन्दर है उसको पता नहीं कि मेरी माँ कहाँ है। उनमें से कोई बहरे हिन्द में होता है कोई बहरे औक़ियानूस में होता है कोई बहरे काहिल में होता है लेकिन तीनों सफ़र करते हैं। आज तक ऐसा नहीं हुआ कि यूरोप के समन्दर की व्हेल मच्छली अफ़्रीक़ा में चली गई हो और अफ़्रीक़ा की व्हेल मच्छली भटक कर यूरोप चली गई हो। बहरे हिन्द की व्हेल मच्छली भटक कर अमरीका चली गई हो। हर एक बच्चा ठीक उसी मक़ाम पर चला जाता है जहाँ उसकी माँ रहती थी और रास्ते में किसी से नहीं पूछता है तीन हज़ार मील सफ़र करता है उसका कोई रहबर नहीं कि उसकी रहनुमाई करे। अल्लाह तआला ने उनको ऐसा निज़ाम दिया है कि उसका कोई रहबर नहीं, कोई रास्ता बताने वाला नहीं, सिर्फ़ एक अल्लाह है जो आसमान पर बैठ कर उसकी रहबरी करता है।

शहद की मक्खी की रहबरी

अब अल्लाह तआला ने शहद की मक्खी को हुक्म दिया कि ﴿فاوحى ربك إلى النحل أن اتخذى من الجبال بيوتا ومن الشجر ومما يعرشون ثم كلى من كل الثمرات فاسلكى ذللا﴾ चल मैंने तेरे लिए रास्ता मुसख़्ख़र कर दिए तू चल शहद को तलाश कर, मेरे बन्दों को इसकी ज़रूरत होती है, वह शहद की मक्खी निकलती है शहद की तलाश में कई सौ मील चली जाती है। जहाँ देखती है कि यहाँ शहद मौजूद है वहाँ से अपने छत्ते तक बीस मील दूर है मश्रिक़ की तरफ़ है या मग़रिब की तरफ़, सौ फ़ीट ऊँचाई पर या सौ फ़ीट

निचाई पर, यह सारे नक़्शे वह अपने ज़हन में ले लेती है, फिर वहीं जहाँ उसने शहद को तलाश किया हुआ है उन्ही के थोड़ा ऊपर वह रक़्स करती है और उसमें वह अपनी जगह का पैग़ाम छोड़ देती है और उसके छत्ते में ऐसा सिस्टम है कि वह उस आवाज़ को क़ुबूल करती है और यह ऐसा ज़बर्दस्त निज़ाम है कि उसका छोड़ा हुआ जो पैग़ाम है उसको दूसरी शहद की मक्खी कैच नहीं कर सकती। यहाँ तो पाँच मीटर पर दूसरों की कैच कर लेते हैं लेकिन शहद की मक्खी को अल्लाह तआला ने ऐसा आला दिया हुआ है जो अपना पैग़ाम छोड़ती है तो सिर्फ़ उसी की मक्खियां उसको वसूल करती हैं, दूसरे छत्तों की मक्खियां उसे वसूल नहीं कर सकती हैं। उसके सिर के ऊपर एक ऐन्टीना है उसको वह इधर उधर घुमाती है, उसी को बस कुछ बताती है कि मैं मश्रिक़ में हूँ या मग़रिब में हूँ, सौ फ़ीट नीचे हूँ या सौ फ़ीट ऊपर हूँ तो वह पुकारती है कि आ जाओ तो वहाँ से तीस हज़ार मक्खियों का लश्कर निकलता है तो वे मक्खियां सीधी वहीं आती हैं, वहाँ आकर उसको लेकर वापस चली जाती हैं तो ऊपर वाली मक्खियां उसको चैक कर लेती हैं न उनकी कोई ख़ुर्दबीन है न अल्ट्रा साउन्ड है बस उनकी आँख सब कुछ है। जिस मक्खी में ज़रा गन्दगी होती है उसको पर तोड़कर उसको नीचे फेंक देती है इस लिए शहद सौ साल पड़ा रहे तो ख़राब नहीं होता। हर चीज़ का ऐग्रीमेन्ट है, छः महीने बाद ख़त्म हो जाता है और उस चीज़ को फेंका जाता है। शहद का कोई एग्रीमेंट नहीं पक जाए, पके हुए को उतारा जाए तो दो सौ साल भी कुछ नहीं होता, यह अल्लाह का निज़ाम है।

अण्डे पर ख़ुदा का हुक्म

अण्डा ख़ोल है उसके अन्दर बच्चा तैयार होता है जब अल्लाह तआला उसको बाहर निकालना चाहता है जो बच्चे की चोंच के नीचे एक सख़्त झिल्ली आ जाती है अगर वह सख़्त झिल्ली अल्लाह तआला पैदा न करे तो वह अण्डे को तोड़ नहीं सकता। वह सख़्त झिल्ली उसकी सख़्त ज़रूरत है उसके ज़रिए वह अण्डे को ठोंग मार कर तोड़ देता है फिर वह बाहर आता है। अब उस झिल्ली की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि उसके साथ वह दाना नहीं चुग सकता। यह झिल्ली उसके उसके दाना खाने में रुकावट है जब बाहर आ जाता है तो यह झिल्ली टूट कर ख़त्म हो जाती है फिर उसकी अपनी चोंच बाक़ी रह जाती है अगर यह झिल्ली अन्दर न हो तो अण्डे से बाहर नहीं आ सकता और अगर वह झिल्ली बाहर भी रहे तो वह बच्चा दाना नहीं चुग सकता। यह अल्लाह तआला का निज़ाम है जो मख़्लूक़ के लिए भी हिदायत पर है और इन्सान के लिए भी हिदायत पर है यानी अपनी ज़रूरियात ज़िन्दगी पेरी करने की हिदायत अलाह तआला ने सब को दे रखा हे।

तो मेरे मोहतरम भाईयो! अल्लाह ही अकेला बादशाह है। इस काएनात में आसमान से फैसले उतरते हैं ज़मीन में ज़ाहिर होते हैं अगर ज़मीन वाले फैसला करें और आसमान वाले न करें तो कुछ भी नहीं होगा और आसमान वाले फैसला कर लें और ज़मीन वाले न करें तो हो जाएगा।

बग़ैर इन्जन वाला जहाज़

तुम परिन्दों को नहीं देखते कि कैसे हवाई जहाज़ हैं जो हवा में फिरते रहते हैं। न उनमें कोई इन्जन है न कोई ईंधन की ज़रूरत है न उनको किसी बार्डर पर उड़ने की ज़रूरत है, वे अपनी उड़ान उड़ते हैं अल्लाह तआला उनको हवाओं में थामता हैं और उनके लिए लम्बे चौड़े एयरपोर्ट की ज़रूरत नहीं न रन वे की ज़रूरत है उतरने के लिए न चढ़ने के लिए। दरख़्त की एक छोटी सी शाख़ उसका एयरपोर्ट है, वह उस पर लैन्डिंग करता है बड़ी बुलन्दी साथ और बड़ी तेज़ी के साथ उसी शाख़ पर बैठता है जिसका वह इरादा करता है आपने नहीं देखा होगा कि वह गिरा हो आज कल के टैकनालोजी कभी ऊपर हवा में उड़ते रहते हैं कि एयरपोर्ट मसरूफ़ है कभी आपस में टकराते हैं कभी नीचे गिर जाते हैं, कभी उलटे होते हैं इसी तरह कई हादसात होते हैं अल्लाह का बनाया हुआ छोटा सा जहाज़ एक छोटी सी शाख़ को अपना रन वे बनाता है और सीध वहां जा के उतरता है कभी ऐसा नहीं होता कि उतने में फिसल कर गिर गया हो, फिर उड़ने के लिए थोड़ा सा पर हिलाता है और हवा में नज़र आता है, न उसे कप्तान की ज़रूरत है न उसे इन्जन और ईंधन की ज़रूरत है। अल्लाह फ़रमाते हैं इनमें ग़ौर करोगे तो मेरी क़ुदरत नज़र आएगी।

पत्थरनुमा फल में अल्लाह की क़ुदरत

इसी तरह नारियल का दर्ख़्त पचास फिट ऊँचा है उसके फल पत्थर जैसे हैं अल्लाह तआला ने उसको ऐसे पत्थर की तरह

बनाया जिसके ऊपर तीन सुराख़ हैं मेरा बन्दा पिएगा तो इसका पानी इस सुराख़ से पी सकता है और उसके अन्दर ऐसा पानी रखा है कि वह पानी ज़मीन खोदें तो उस में नहीं। पत्तों को तोड़ें तो उसमें नहीं, दरख़्त को काटें तो उसमें नहीं, शाख़ों का चीरें तो उसमें नहीं, पानी वह नहीं जो ज़मीन वाला है, यह अन्दर ऐसा पानी है जो कई बीमारियों के लिए शिफ़ा और इलाज है। इसमें इस मालिक का निज़ाम है जिसने इस दरख़्त को हिदायत दी हुई है। अल्लाह की हुकूमत इसमें चलती है। आज हम समझते हैं कि अल्लाह ने यह दुनिया बनाई है और ख़ुद फ़ारिग़ हो कर बैठ गया है, अब जो करना है हम ने करना है। हुकूमत हमने चलानी है। कहते हैं जो करते हैं वह खाते हैं। हक़ीक़त में अल्लाह खिला रहे हैं।

अहकमुल हाकिमीन सिर्फ़ एक ही है

पैसे से कुछ नहीं होता और सब कुछ होता है, पैसे से इज़्ज़त नहीं मिलती है और हम देखते हैं कि इज़्ज़त पैसों से मिल रही है, फ़ौज, बड़े अस्लेहे की वजह से है और फ़ौजियों में अस्लेहे नज़र नहीं आता यह तो आप उनके ज़ाहिर की नफ़ी कर रहे हैं हां अल्लाह ने हमें कलिमे में यह बताया कि «لا اله الا الله» तलवार सब से ऊपर हो «لا اله» कोई ख़ालिक़ नहीं, कोई नफ़ा देने वाला नहीं, कोई नुक़सान देने वाला नहीं, कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, कोई ज़िल्लत देने वाला नहीं, कोई ज़िन्दगी देने वाला नहीं, कोई हालात के लाने वाला नहीं, कोई हालात के बनाने वाला और बिगाड़ने वाला नहीं, सब से हो "ला" यह "ला" की तलवार सब

पर लटाकई, अर्श के फ़र्श के, फ़रिश्ते, इन्सान और जिन्नात हवाएं, पत्थर और पहाड़ व क़तरे से लेकर सबसे बड़ी मख़लूक़ जिबराईल अलैहिस्सलाम तक एक पत्ते से लेकर बड़े से बड़े जंगल तक, एक छोटे से छोटे मेंढक से लेकर मगरमच्छ तक, सब के सब पर अल्लाह का क़ब्ज़ा है यह सब उसके हाथ में हैं, अल्लाह के इरादे में हैं इनसे वही होगा जो अल्लाह चाहेगा, जो अल्लाह न चाहे वह नहीं होगा "इलल्लाह" उनसे कुछ नहीं होगा, यह नफ़ा नहीं दे सकते, ये नुक़सान नहीं दे सकते। ये सिफ़र हैं सिफ़र से पहले एक हो तो सिफ़र की ताक़त है और सिफ़र से पहले एक को हटाया जाए और पूरी कापी को सिफ़र से भर दिया जाए तो बेकार है, इस से कुछ नहीं होगा, अगर इस से पहले एक बढ़ा दें तो हर एक की ताक़त को बढ़ा देगा, कुछ न था 10 बन गया फिर उसके साथ सिफ़र लगाया जाए तो हर सिफ़र काम देगा 10 से 100, 1000, 10000 वग़ैरह इन तमाम सिफ़रों के पीछे सिर्फ़ एक लगा हुआ है।

अल्लाह के बग़ैर कोई कुछ नहीं कर सकता

मेरे भाईयो! अगर इस सारी काएनात के पीछे अल्लाह की ज़ात का हुक्म है तो इन सब में ताक़त नज़र आएगी और अगर अल्लाह अपने हुक्मों का हटा दें तो यह सब सिफ़र है। सोना भी सिफ़र है, पहाड़ भी सिफ़र है, ऐटम बम भी सिफ़र है, चियूंटी भी सिफ़र है, जैसे चियूंटी बेकार है ऐसे ही ऐटम बम भी बेकार है, जैसे हवा में उड़ती हुई मक्खी बेकार है इसी तरह बड़े बड़े हवाई

जहाज़ जो तबहियां फैलाते हैं अल्लाह की नज़र में बेकार हैं अल्लाह के अम्र के अलावा कुछ नहीं होता बल्कि जो कुछ होता है वह अल्लाह के इरादे से, अल्लाह के फैसले, अल्लाह की चाहत से होता है।

अल्लाह तआला हथियार व असबाब का मोहताज नहीं

हालात करने के लिए इन हथियारों का अल्लाह मोहताज नहीं है, उसके इरादे का नाम हलाकत है, क्या क़यामत के लिए कोई ऐटम बम फटेगा? क्या क़यामत में कोई लड़ाई होगी? बस सिर्फ़ एक फ़रिश्ते की चीख़ की ज़रूरत है, एक फूंक से सब तोड़ देगा, अब्राह के लश्कर को मारा तो किसके ज़रिये से? क्या फ़रिश्तों के ज़रिए? उसके लिए सिर्फ़ एक छोटे छोटे परिन्दों को लाया जिन के मुँह में एक कन्करी और एक कन्कर नीचे फेंका हाथी के ऊपर, आदमी के सिर में लग गया और उसकी खोपड़ी को चीर दिया और गर्दन में उतरा, फिर पेट में उतरा और पाख़ाने के रास्ते से निकल कर हाथी के अन्दर उतरा और हाथी के पेट को चीर कर नीचे उतर जाता था तो एक दम हाथी भी ख़त्म और आदमी भी ख़त्म और हथियारों का क्या इस्तेमाल किया? एक छोटा सा तिनका।

लुक़्मे का अल्लाह तआला से सवाल

सेहत देने के लिए दवाई का मोहताज नहीं, दवाई सेहत देने के

लिए अल्लाह के हुक्म की मोहताज, निवाला मुँह में होता है और हम कहते हैं कि कमाया है तो खाया है। निवाला मुँह मे जाकर अल्लाह तआला से पूछता है कि या अल्लाह! साँस की नाली में जाऊँ या ग़िज़ा की नाली में जाऊँ? यहाँ एक पर्दा है जो साँस की नाली को बन्द कर देता है और एक फ़रिश्ता है जो उसको बन्द करता है, पर्दा नज़र आता लेकिन फ़रिश्ता नज़र नहीं आता अगर अल्लाह फ़रिश्ते को पीछे हटा दें तो अपने हाथ का कमाया हुआ मौत का पैग़ाम ले कर आएगा, फिर वह मैदे में जाता है कौन सी ताक़त है जिस से हम मैदे को हरकत देते हैं? कहते हैं कि करेंगे तो कुछ मिलेगा नहीं करेंगे तो कुछ नहीं मिलेगा, करेंगे तो काम बनेगा आप बताइए मैदे को इस्तेमाल करने के लिए कौन सा कारोबार इख़्तियार किया हुआ है।

अजज़ाए इन्सानी दरसे इबरत हैं

बोलिए भाई! अमरीका में कौन सा ऐसा कारोबार है जिससे मैदा हरकत करता है, आँखों की रौशनी को बरक़रार रखने के लिए कौन सी दुकान खोली हुई है, एक छोटी सी आँख हे जिस में 130 कैमरे हैं, उन कैमरों को सैट करना, उनकी लाइट को सही रखना, फोटुओं को सही खींचना, इसके लिए आपने कौन सा स्टूडियो खोला हुआ है जो अपनी अपनी आँखों के नूर को बरक़रार रखते हैं? दिमाग़ सोचता है इसमें कितने करोड़ सैल्स हैं एक एक सैल्स पेरे निज़ाम को कन्ट्रोल कर रहा है इसके लिए हम ने कौन सा इन्तेज़ाम किया हुआ है। यह मुँह के अन्दर बत्तीस छुरियां हैं ज़ुबान को इन छुरियों से बचाने के लिए हम कौन सा

काम करते हैं, यह अल्लाह की क़ुदरत है कि बत्तीस छुरियों में ज़ुबान हरकत करती है छुरियों से लगने नहीं देती, अल्लाह इन दांतों को निकालता है फिर एक जगह ख़त्म कर देता है अगर अल्लाह तआला इन दांतों को बढ़ाना शुरू कर दें, मुँह से बाहर कर दें तो हम क्या कर सकते हैं, ग़िज़ा पेट में जाती लेकिन पूरे जिस्म में हरकत करती है, दवा गई पेट में सिर का दर्द ख़त्म हो गया, यह दवाई का असर पेट से ले कर सिर तक डाक्टर ले जाता है, ख़ून के निज़ाम को अल्लाह चलाता है, चार महीने में पहला ख़ून ख़त्म कर के नया ख़ून पैदा कर देता है, दस बरस में पूरा जिस्म तब्दील हो जाता है, हम कहते हैं यह जिस्म वह जिस्म है, नहीं हर वक़्त हमारा जिस्म टूट रहा है और बन रहा है, टूट रहा है बन रहा है, पहले ख़लिए मर रहे हैं नए ज़िन्दा हो रहे हैं, दस बरस के अन्दर पूरा इन्सान ख़त्म हो जाता है नया इन्सान वजूद में आ जाता है, यह सारे निज़ाम को बरक़रार रखने के लिए हम ने कौन सी दुकान खोली हुई है, जो करते हैं तो खाते हैं इस गुमराही को हमने मिटाना है।

इन्सान की अन्दुरूनी साख़्त खुदाई दलील है

हांलाकि यह सब कुछ अल्लाह के इरादे और अल्लाह के फ़ैसले से होता है। आप यह देखो न कि हम अपने जिस्म में कितने बेबस हैं, हमारा कोई बस नहीं चलता अपने जिस्म के ऊपर। फैक्ट्रियों की फैक्ट्री चलती हैं, कितनी ताक़त से अन्दर की हवा को साफ़ कर रही हैं और गन्दी हवा को बाहर फेंकती हैं और इस से ख़ून निकलता है साफ़ होता

चला जाता है। यह दिलों का पम्प है इसकी सफ़ाई की कोई ज़रूरत ही नहीं होती यह दुनिया में जितने पम्प हैं उनकी चन्द दिनों में सफ़ाई करनी होती है और दिल का पम्प ख़राब ही नहीं होता जब ख़राब होता है तो अल्लाह को वापस बुलाना होता है, हर मशीन को काम करने के बाद सर्विस करना होता है अल्लाह ने माँ के पेट में दिल का पम्प बनाया है और उस वक़्त से यह पम्प धड़कना शुरू हुआ है, सालों से यह धड़कता रहता है आराम ही नहीं करता मैदा आराम मांगता है हर वक़्त हिलाने से यह बीमार हो जाएगा, दिमाग़ आराम मांगता है, आँख देखते देखते थक जाती है, कान सुनते सुनते थक जाते हैं आराम चाहते हैं। दिल का एक वज़ीफ़ा है अगर यह आराम करे तो फिर क़ब्र में जाएगा अल्लाह तआला इसको थकने नहीं देता। यह दिल रेशों से बना है यह नहीं थकता, चल रहा है। हम तो अपनी दुनिया में भी बेबस हैं। अपनी दुनिया में नज़र आता है कि सब कुछ अल्लाह कर रहा है, हम से कुछ नहीं हो रहा।

ज़बान के फ़ायदे

ज़ुबान में तीन हज़ार छोटे छोटे ख़ाने हैं जो हमें बताते हैं कि मीठा खा रहे हो या नमकीन खा रहे हो, गर्म खा रहे हो, सर्द खा रहे हो अगर अल्लाह तआला इन ख़ानों को बन्द कर दें तो मुँह में मिट्टी रख दो या हलवा रख दो बराबर है। यह ख़ाने हमने नहीं बनाए यह अल्लाह तआला ने बनाए। यह अल्लाह ने हमारी ख़िदमत के लिए तैयार करके रखे हैं ताकि दुनिया की नेमतों से

लुत्फ़ उठा सकें अगर अल्लाह तआला इन ख़ानों के ऊपर चमड़ा चढ़ा दें तो खाओ मिठाई लगे मिट्टी।

बालों की अजीब ख़लक़त

हम तो अपनी ज़ात में ऐसे बेबस हैं कि अपने बालों पर भी कन्ट्रोल नहीं कर पाते अगर अल्लाह तआला सिर के बालों की तरह सीने और पिन्डलियों के बालों को भी बढ़ा दें तो हम में ओर रीछ में क्या फ़र्क़ रह जाए। अल्लाह तआला यह बाल नहीं बढ़ाता और जिस्म के दूसरे हिस्से के बालों को भी नहीं बढ़ने देता। यह पलकों के जो बाल हैं उनको एक ख़ास मिक़दार में बढ़ा कर बन्द कर देता है, उनको बढ़ाना शुरू कर दें ﴿وفی انفسکم افلا تبصرون﴾ अल्लाह तआला कहता है कि अपने में भी कभी ग़ौर करो, सांइस में ग़ौर करता है, ऐटम में ग़ौर करता है, पानी में क्या है? पाख़ाने में क्या है? पेशाब में क्या है? अपने पेशाब पाख़ाने में सोचता है लेकिन ज़ात में नहीं सोचता है कि मुझ पर अल्लाह तआला के कितने ईनामात हैं तो इस काएनात में वह होगा जो अल्लाह चाहेगा ﴿لا الہ الا اللہ﴾ मख़्लूक़ से कुछ नहीं होता लिहाज़ा मख़्लूक़ से उम्मीदें हटा लो, उन से जी हटा लो, अल्लाह को मतलूब बना लो।

हमारी ज़रूरियात का इल्म अल्लाह तआला को है

मेरे भाईयों! अल्लाह हमारी तमाम ज़रूरियात को जानता है आज हम अपनी ज़रूरतों को नहीं जानते। कल हमारी क्या

ज़रूरत है? अल्लाह तआला हमारी कल की ज़रूरतों को, परसों की ज़रूरतों को भी जानता है, जो होता है उसको भी जानता है, जो होगा उसका भी पता है जो हो चुका है उसका भी पता है, जो हमारे लिए नुक़सान देह है उसको भी जानता है और जो हमारे लिए मुफ़ीद है उसको भी जानता है। इन सब के बावजूद हम से हमारी माँओं से सत्तर गुना ज़्यादा प्यार करता है फिर अगर वह यह कह दे यह काम कर लो तो यह काम हमारे लिए कैसे नुक़सान देह हो सकता है। अल्लाह तआला की ज़ाते अक़दस को लेने का जो रास्ता है कि अल्लाह तआला दुनिया व आख़िरत के काम बना दे वह कोई रुपया पैसे से काम नहीं बनते। हर खाने से पेट नहीं भरता, हर माल से इज़्ज़त नहीं मिलती, हर दवाई से सेहत नहीं मिलती। अल्लाह का इरादा होता है तो सेहत आती है।

ज़कात देने से माल महफ़ूज़ हो जाता है

﴾واحفظوا اموالكم بالزكوة﴿ अपने अमवाल की हिफ़ाज़त करो ज़कात के साथ, रुपए बैंक में रखने से हिफ़ाज़त नहीं होगी अगर बैंक ही बैठ जाए तो कितनी बैंकें हैं जो बैठ गयीं अब अल्लाह ने दिखा दिया कि बैंकों में कोई हिफ़ाज़त नहीं और नबी की ख़ैर है कि ﴾احسنوا اموالكم بالزكوة﴿ अपने माल की हिफ़ाज़त करो ज़कात के साथ।

ख़ुदा की हिफ़ाज़त करने का वाक़िया

सहारन पुर में एक साथी के घर में खड़ खड़ होती है तो देखा

तो चोर लगा हुआ ताला तोड़ने में, उनकी आँख खुल गई, कहने लगे भाई यह ताला दो आने का है और इसमें जो पैसे पड़े हुए हैं उनकी ज़कात अदा हो चुकी है, मैं तो सो रहा हूँ सुबह तक तुम्हें इजाज़त है जो ज़ोर लगा सकते हो लगा लो। सुबह की अज़ान तक वह चोर ज़ोर लगाता रहा, न ताला टूटा और न दरवाज़ा खुला सुबह का घर का मालिक हज़रत शैखुल हदीस मौलाना ज़करिया रहमतुल्लाहि अलैहि वसल्लम के पास आया और सारा माजरा सुनाया। फ़रमाने लगे जिस माल की ज़कात अदा होगी वह ज़ाए नहीं हो सकता। बैंकों में ज़ाए हो जाएगी। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि अपने अमवाल की हिफ़ाज़त ज़कात के साथ करो।

सदक़े से इलाज करो

﴿داوٗ بالصدقات﴾ और अपने मरीज़ों का इलाज करो सदक़ा देने के साथ। सदक़ा दो अल्लाह सेहत देगा, भाई इसका क्या ताल्लुक़ है कि कोई चीज़ पेट में जाएगी तो कुछ होगा और ग़रीब को देने से मेरी बीमारी कैसे जाएगी? यह तो नज़र नहीं आता वह नज़र आता है। जो आजकल का माहौल है गोली पेट में गई आराम आ गया सिर में। ग़रीब को सदक़ा देने का बीमारी के साथ क्या ताल्लुक़? यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम की ख़बर है। यह आज़माई नहीं जाती। यह बग़ैर आज़माए सच और हक़ है। सदक़ा दो अल्लाह सेहत देगा, अपने ख़ज़ानों से देगा, अपनी क़ुदरत से देगा। सेहत देने के लिए किसी का मोहताज नहीं है।

दुआ से शिफ़ायाबी

एक औरत आई लाहौर में, बड़े मालदार आदमी की बेटी थी और अभी भी ज़िन्दा है। उसके जिगर में कैंसर हो गया। वहाँ एक बुज़ुर्ग के पास गई कि मैं अमरीका में इलाज के लिए जा रही हूँ आप मेरे लिए दुआ करें। उन्होंने उसको एक छोटी सी दुआ दी ﴿يا بديع العجائب بالخير يا بديع﴾ यह पढ़ लिया करो। एक महीने तक उस औरत ने यह वज़ीफ़ा पढ़ा। एक महीने के बाद अस्पताल में चैक अप कराया तो डाक्टरों ने कहा कि यह वह मरीज़ नहीं जो पहले हमारे पास लाया गया था। अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता है तो नामुमकिन बीमारियों को सेहत भी दे सकता है।

बादशाह की ख़ुशी ग़मी में तब्दील होने का वाक़िया

यज़ीद बिन मलिक अमवी ख़लीफ़ा गुज़रे हैं। यह नए ख़लीफ़ा थे हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के बाद आए थे। एक दिन कहने लगे कि कौन कहता है कि बादशाहों को ख़ुशियां नसीब नहीं होतीं। मैं आज का दिन ख़ुशी के साथ गुज़ार कर दिखाऊँगा। अब मैं देखता हूँ कौन मुझे रोकता है? कहा आजकल बग़ावत हो रही है, यह हो रहा है, वह हो रहा है, तो मुसीबत बनेगी। कहने लगा कि आज मुझे मुल्क की ख़बर न सुनाई जाए, चाहे बड़ी से बड़ी बग़ावत हो जाए, मैं कोई ख़बर सुनना नहीं चाहता, आज का दिन ख़ुशी के साथ गुज़ारना चाहता हूँ। उसकी

बड़ी ख़ूबसूरत लौंडी थी उसके हुस्न व जमाल का कोई मिस्ल नहीं था। उसका नाम हिबा था। बीवियों से ज़्यादा उससे प्यार करता था। उसको लेकर महल में दाख़िल हो गया। फल आ गए, चीज़ें आ गयीं, मशरूबात आ गए। आज का दिन अमीरुल मुमिनीन ख़ुशी से गुज़ारना चाहते हैं। आधे से भी कम दिन गुज़रा है हिबा को गोद में लिए हुए है, उसके साथ हंसी मज़ाक़ कर रहा है और उसको अंगूर खिला रहा है। अपने हाथ से तोड़ तोड़ कर उसको खिला रहा है एक अंगूर का दाना लिया और उसके मुँह में डाल दिया, वह किसी बात पर हंस पड़ी तो वह अंगूर का दाना उसके सांस की नाली में जा कर अटका और एक झटके के साथ उसकी जान निकल गई। जिस दिन को वह सबसे ज़्यादा ख़ुशी के साथ गुज़ारना चाहता था उसकी ज़िन्दगी का ऐसा बदतरीन दिन बना कि वह दीवाना हो गया, पागल हो गया, तीन दिन तक उसको दफ़न नहीं करने दिया तो उसका जिस्म गल गया, सड़ गया, ज़बरदस्ती बनू उमैया के सरदारों ने उसकी मैयत को छीना और दफ़न किया और दो हफ़्ते बाद दीवानगी में मर गया।

ख़ुशी और ग़मी सब अल्लाह तआला की तरफ़ से है

ख़ुशी इन्सान लेता है, ख़ुशी अपनी ताक़त से कोई ख़रीद सकता है? सब कुछ अल्लाह के ख़ज़ानों में है, तो मेरे भाईयो! यह है ﴿لا اله الا الله﴾ अल्लाह सब कुछ कर सकता है, मख़्लूक़ क्या कर सकती है अल्लाह के बग़ैर? यह सब कुछ तो असबाब हैं अल्लाह

का इरादा होगा तो इन से काम बनेगा। दुनिया के कितने करोड़पति इन्सान हैं उनको कोई जानता ही नहीं, दुनिया में कितने फ़क़ीर ऐसे हैं कि उनके पीछे दुनिया दौड़ती है, दुनिया में कितने हुक्मरान ऐसे हैं जिनके दिलों में नफ़रत के दाग़ उबलते हैं, कितने झोपड़ी में रहने वाले हैं जिनके लिए दिल क़ुर्बान होते हैं। यह कौन है जो इस निज़ाम को चला रहा है। दुनिया में कितने मालदार हैं जिनका हिर्स ख़त्म नहीं होता वे भूले बैठे हुए हैं और दुनिया में कितने फ़क़ीर बादशाहों से भी ज़्यादा ग़नी हैं जिनकी नज़र में दुनिया एक कौड़ी के बराबर भी नहीं है।

हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु अन्हु का दुनिया से बेरग़बती का वाक़िया

हिशाम बिन अब्दुल मलिक शामी ख़लीफ़ा तवाफ़ कर रहा था। उसके साथ हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते भी तवाफ़ कर रहे थे तो हिशाम ने कहा सालिम कोई ज़रूरत हो तो बताओ मैं पूरी कर दूं। हज़रत सालिम ने कहा ﴿اتق الله﴾ अल्लाह से डरता नहीं, मैं अल्लाह के घर में हूँ और तू मुझे अपनी तरफ़ मुतवज्जे करता है तो हिशाम चुप हो गया, जब बाहर निकले तो कहा अब तो बताओ। कहने लगे दुनिया की बताऊँ या आख़िरत की बताऊँ? हिशाम ने कहा कि दुनिया की बताओ आख़िरत की मैं क्या पूरी कर सकात हूँ तो कहने लगे ﴿ما سالت من يجعلها وكيف من يملكها﴾ दुनिया तो मैं ने दुनिया बनाने वाले से नहीं मांगी तो तुझ से क्या मांगूगा।

समन्दर पर हुकूमत रब्बानी

बहुत से ऐसे फ़क़ीर हैं जो दिल के बादशाह हैं बहुत से बादशाह ऐसे हैं जो दिल के फ़क़ीर हैं। आप ग़ौर तो कीजिए नज़र की दुनिया खुद खुली नज़र आएगी और पता चल जाएगा कि उनसे कुछ नहीं हो रहा है, अल्लाह के इरादे से हो रहा है। रात को कौन लाता है, दिन को लाने वाला कौन है, चाँद को अल्लाह पाक ने बढ़ाता है तो लहरें उठती हैं जब घटाता है तो लहरें उैठती हैं इन मदो जज़र में अल्लाह समन्दर के पानियों को साफ़ व पाक रखते है, अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम उनको साफ़ करता रहता है, अल्लाह पाक ने खुद उनकी सफ़ाई का इन्तेज़ाम फ़रमा दिया और उसे कड़वा बना दिया, कड़वा पानी बदबू नहीं छोड़ता फिर लहरों की तेज़ी रख दी जो इसको साफ रखती है। एक बंगाली आया कहने लगा कि मैं जहाज़ में समन्दरी जहाज़ का काम करता था। एक लहर ने मुझे उठा कर समन्दर के दर्मियान में फेंक दिया दूसरी लहर आई उसने मुझे वापस जहाज़ में पहुँचा दिया, या अल्लाह पार लगा दे फिर कभी समन्दर में नहीं आऊँगा। ऐसी मौजे अल्लाह उठाता है। इस सारे निज़ाम में फ़ैसला कुन ताक़त अल्लाह पाक की है। अल्लाह इस सारे ग़ैबी निज़ाम के साथ हमारा बन जाए। अलहम्दुलिल्लाह इसके लिए न रुपया चाहिए न हुस्न चाहिए न ख़ानदान चाहिए सिर्फ़ एक हस्ती चाहिए मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दर्द हमारे अन्दर आ जाए। अल्लाह ने रास्ता बादशाह को भी बता दिया है और फ़कीर को भी बता दिया, मर्द

को भी बता दिया औरत को भी बता दिया। मेरा हबीब मुझे प्यारा है उसके सांचे में ढल जाओ तुम भी मेरे प्यारे बन जाओगे। जो भी ढल जाए।

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ईमान

इस्लाम की ख़ुशी

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु क़त्ल को आ रहे हैं बदतरीन इन्सान बन के आ रहे हैं, जब से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दामन पकड़ा ऐसा ऊँचा उठ गए कि आसमान से जिबराईल अलैहिस्सलाम आ गए और कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उमर के इस्लाम की ख़ुशी हो रही है। कहा हाँ आसमान के फ़रिश्ते भी ख़ुश हो रहे हैं उमर के इस्लाम लाने पर। यहाँ ज़िन्दगी की गन्दगी के ढेरों पर की गहराई पर पड़ा है और उधर हज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दामन पकड़ता है तो अर्श के ऊपर उसकी परवाज़ चली जाती है।

तीन सौ साठ बुतों के पुजारी हैं जब कहता है ﴿أشهد ان محمدا رسول الله﴾ तो फ़रिश्ते उसके क़दमों में आ कर बैठ जाते हैं।

हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु के

जनाज़े पर फ़रिश्तों की आमद

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तबूक के सफ़र में थे, सूरज निकला बड़ा चमकदार, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फ़रमाया सूरज बड़ा चमकदार निकला क्या बात है? हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम आए कहा कि यह सूरज की चमक नहीं है मदीने में आपके साथी माविया बिन माविया का इन्तेक़ाल हो गया है उनके जनाज़े में सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आए हैं यह उनका नूर है जो सारे जहान में फैला हुआ है कहा मैं उसका जनाज़ा हाज़िर करता हूँ। हुक्म हुआ तो ज़मीन सिकुड़ती चली आई। थोड़ी देर में माविया रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा तबूक में पहुँच गया।

ये तीन सौ साठ के पुजारी हैं जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी ने इतना ऊँचा कर दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनाज़ा पढ़ा फिर इशारा किया तो दोबारा जनाज़ा वापस मदीने में जा पहुँचा।

हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की मौत पर अल्लाह का अर्श हिल गया

साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु जो मुसैब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु को निकालने के लिए आए थे। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसैब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीने मुनव्वरा में तबलीग़ के लिए भेजा था तो साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु उनको मारने आए और निकालने आए। तुम हमारे दीन का ख़राब करने आए हो। जब उनका यानी हज़रत साद बिन माज़ का इन्तेकाल हुआ तो हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम आए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आज कौन फ़ौत हुआ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

कहा पता नहीं कि क्या बात है? कहा अल्लाह तआला का अर्श हिल गया है उनकी मौत पर। ﴿اهتز عرش الرحمن سعد﴾ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया साद बीमार था उसका पता लो। पता किया तो उनका इन्तेक़ाल हो गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद से ऐसे तेज़ी के साथ निकले के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के जूतों के तस्में टूट गए और चादरें गिर गयीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप ने थका दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जल्दी करो मुझे ख़तरा है कि कहीं फ़रिश्ते साद को ग़ुस्ल न दे दें और हम महरूम हो जाएं। यह कौन हैं यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मानने वाले हैं। यह मक़ाम अपने पैसे नहीं, अपनी जाएदाद से नहीं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी से हासिल किया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहुँचे तो कमरे में सिर्फ़ मैयत पड़ी थी और कमरा ख़ाली था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे दाख़िल हुए जैसे कोई मज्मा चीरता हुआ दाख़िल होता है। साद रज़ियल्लाहु अन्हु के सिरहाने के पास जा कर बैठ गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम यह सारा कमरा फ़रिश्तों से भरा हुआ है मेरे लिए कोई जगह नहीं थी इस लिए पैर सिकुड़े हुए बैठा हूँ आज साद के जनाज़े में ऐसे फ़रिश्ते उतरे हैं जिन्होंने कभी ज़मीन को छुआ नहीं। उनको अल्लाह तआला ने भेजा है कि जाओ मेरे साद का जनाज़ा पढ़ कर आओ।

यह इज़्ज़त हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी से मिली थी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

इताअत से मिली थी। सांइस की तरक्क़ी में क्या इज़्ज़त मिलती है? हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी में दुनिया में इज़्ज़त और आख़िरत की हमेशा हमेशा की इज़्ज़त मिलेगी।

आक़ा ने हमें दो चीज़ें दी हैं

मेरे भाईयो! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें दो बातें दे कर गए हैं एक अपनी ज़िन्दगी देकर गए हैं एक अपनी ज़िन्दगी को फैलाने का हुक्म दे कर गए हैं जो इन दो बातों को करेगा वह अल्लाह का महबूब बन जाएगा। आगे दो जहां की गुलामी भी है और फ़रमाबरदारी भी है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी को में लाकर फिर दुनिया में उसको फैलाना है। सांइस की ताक़त मख़लूक़ की ताक़त है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में जो ताक़त है उसके सामने कोई ताक़त टिक नहीं सकती और यह अल्लाह की ताक़त है। यह ज़िन्दगी हमारी ज़िन्दगी में आ जाए तो अल्लाह साथ होगा। सांइस की ताक़त के साथ अल्लाह तआला नहीं है। सांइस की ताक़त क्या ताक़त है? छोटी छोटी ताक़त है। मिट्टी आग और पानी की ताक़त है।

अल्लाह की ताक़त क्या है?

अल्लाह की क्या ताक़त है बताऊँ?

अल्लाह ने ज़मीन को पैदा किया तो यह हिलती थी फिर अल्लाह ने पहाड़ लगाए। फ़रिश्तों ने कहा या अल्लाह! इन

पहाड़ों से ज़्यादा ताक़त वर क्या है? फ़रमाया ﴿الحديد﴾ पूछा ﴿اى شى من الحديد﴾ फ़रमाया ﴿نار تذيبه﴾ आग है जो उसको पिघला देती है, पूछा ﴿اى شى من النار﴾ फ़रमाया ﴿مآء يطفئها﴾ पानी है जो जो उसको बुझा देता है, पूछा ﴿اى شى من مآء﴾ फ़रमाया हवा जो उसको उठा कर ले कर चलती है। हवा इस काएनात में सबसे ताक़त वर मख़लूक़ है, फिर उन्होंने पूछा हवा से ताक़तवर चीज़ क्या है? फ़रमाया जब मेरा बन्दा चुपके से मेरी रज़ा के लिए किसी की मदद करता है कि उसके बाएं हाथ को भी पता न चले कि दाएं हाथ ने क्या दिया है यह अमल इतना ताक़त वर हे कि हवा को भी उड़ा देता है क्यों? इस लिए कि यह अमल मेरे ग़ुस्से को ठंडा कर देता है। अच्छा यह अल्लाह के नाम पर माल ख़र्च करना इतना छोटा अमल है, इसके मुक़ाबले में फ़राईज़, वाजिबात, सुनन उनके कितने बड़े दर्जात हैं? जब नफ़ल में इतनी ताक़त है तो फ़र्ज़ में कितनी ताक़त होगी? यह तो क़ुव्वत के ऐतिबार से है और क़ीमत के ऐतिबार से ﴿من صام يوما تطوعا ثم بالا الخ﴾ जो नफ़ल रोज़े रखे फिर पूरी सोने से भरी दुनिया उसके नफ़ल रोज़े का बदला नहीं बन सकती जब नफ़ल की यह क़ीमत है तो फिर पूरे दिन में फ़र्ज़ रोज़े की क्या क़ीमत होगी?

सांइस ने अपने बानियों के मसाइल हल नहीं किए

तो मेरे भाईयो! हमारी इज़्ज़त का दारोमदार सांइस की तरक़्क़ी पर नहीं, सांइस की ज़रूरत है ज़रूरत से किसको इन्कार है हम

भी ये चीज़े इस्तेमाल करते हैं लेकिन ये ज़रूरत की चीज़ें हैं हमें इज़्ज़त नहीं दे सकतीं। ये चीज़ें हमारे मसाइल हल नहीं कर सकतीं जो इन चीज़ों के बानी थे उनके मसाइल हल नहीं हुए, हमारे कैसे होंगे।

अल्लह तआला की अपने हबीब से मुहब्बत

मसुअलों का हल नबी का दर्द है जो मुहब्बतों की फ़िज़ाएं क़ायम करता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी हमारे अन्दर ज़िन्दा हो दिन को भी रात को भी। रात में क्या हो ﴿قم الليل الا قليلا ورتل القران ترتيلا الخ﴾ यह बड़ी अजीब आयत है चूँकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारा दिन दावत देते थे तो मौक़ा कम मिलता था अल्लाह के साथ राज़ो नियाज़ का, अल्लाह तआला ने आयत उतारी कि सारा दिन लोगों के लिए निकालते हो तो मेरे लिए भी कुछ दो न जब तू मेरा हबीब है। ﴿قم الليل﴾ सारी रात मेरे पास खड़े हो कर मुझ से बातें किया कर, फिर ख़याल आया कि सारी रात तो खड़ा तो नहीं हो सकता ﴿الا قليلا﴾ अच्छा थोड़ा आराम भी कर लिया कर। मुहब्बत ने जोश मारा तो कहा कि सारी रात खड़े रहो, शफ़क़त ने जोश मारा तो इजाज़त मिल गई फिर मुहब्बत ने जोश मारा ﴿نصفه﴾ आधा मेरे सामने खड़ा होना पड़ेगा फिर शफ़क़त ने जोश मारा ﴿اونقص منه قليلا﴾ निस्फ़ से भी थोड़ा कम वक़्त दे दो, फिर मुहब्बत ने जोश मारा ﴿اوزد عليه ورتل القرآن ترتيلا﴾ फिर इससे ज़्यादा वक़्त लगा लें। यह मुहब्बत और शफ़क़त आपस में लड़ती रहीं। कभी कहते हैं पूरी रात खड़े

रहो, कभी कहते हैं आधी रात खड़े रहो, कभी सुलुस (तिहाई) रात, कभी इससे ज़्यादा कि इन दोनों आयतों में ऐसी मुहब्बत है कि कोई बात नहीं सकता।

तहज्जुद के फ़ज़ाइल

मुहब्बत चाहती है कि रात सारी मेरे पास हो शफ़क़त चाहती है कि यह तो नहीं हो सकता, मेरे नबी को बीवी का भी हक़ अदा करना है और जिस्म का भी लेकिन रात का ज़्यादा हिस्सा मुझे दिया कर, क्यों? ﴿ان ناشئة الليل هى اشد وطأ واقوم قيلا﴾ रात को कोई शोर गुल नहीं होता। रात को बात करेंगे मज़े से एक दूसरे को सुनाएंगे और यही हुक्म इस उम्मत को भी मिला है तुम पर फ़र्ज़ तो नहीं करता लेकिन तुम से मुतालबा ज़रूर करता हूँ कि रात को मेरी मुहब्बत में खड़ा तो ज़रूर हुआ कर, फ़ज़ाईल सुना दिए ﴿تتجافى جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم خوفاً و طمعاً﴾ रात को मेरे लिए खड़े हो मेरे लिए जब तुम मिसवाक करके तहज्जुद पढ़ोगे तो एक फ़रिश्ता आएगा और पाँव में पाँव रखेगा और कहेगा कि क़ुरआन सुना और क़ुरआन सुना। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कितना ख़ुशक़िस्मत होगा वह जो रात को उठता है कि वुज़ू करता है फिर बीवी को कहता है कि आ जा तू भी तहज्जुद पढ़ ले। बिस्तर से जुदा होता है और उसके मुँह पर छींटें मारता है फिर ये दोनों उठ कर नमाज़ पढ़ते हैं तो अल्लाह इनको देख कर ख़ुश होता है। फ़रिश्तों से कहता है कि देखो ये क्या कर रहे हैं? अपने आराम को मेरे लिए क़ुर्बान कर रहे हैं। कितनी

खुशक़िस्मत है वह औरत जो रात को उठती है और वुज़ू करके नमाज़ की तैयारी करती है और शौहर को भी उठाती है दोनों मियां बीवी नमाज़ पढ़ते है अल्लाह उन दोनों को देख कर खुश होता है। यह रात को अल्लाह के नबी के मुशाबे होता है, रात को रोना, रात की आहें। अब तो कोई रोने वाला ही नहीं रहा। दुनिया के साज़ो सामान में दुनिया के रंग व रौनक़ में रात की चमक को बुझा दिया हांलाकि हदीस में आता है कि मेरे आक़ा रातों को मेरी याद में उठते थे और ऐसे रोते थे और क़ुरआन पढ़ते थे कि हल्की सी गुनगुनाहट अर्श के गिर्द चक्कर लगाती थी। यह घर में कह रहा है ﴿الحمد لله رب العالمين﴾ ऊपर अल्लाह के अर्श के गिर्द यह कलिमा चक्कर लगाता है। अब रात की फ़र्ज़ नमाज़ छोड़ दी तहज्जुद कौन पढ़े, फ़राईज़ छूट गए।

नमाज़ की बरकतें

﴿قم فانذر وربك فكبر، وثيابك فطهر﴾ ऐ कम्बली वाले खड़े हो और लोगों को डराओ और अपने रब की बड़ाई बयान करो और अपने कपड़ों को पाक रखो और उनमें नमाज़ पढ़ कर मुझ से मदद तलब करो ﴿واستعينوا بالصبر والصلوة﴾ मसाइब और मुश्किलात आएंगी उन मसाइब का हल नमाज़ में रख दिया है। नमाज़ पढ़ लें तो मसाइल हल होते चले जाएंगे, नमाज़ पढ़ोगे तो काम बनते चलते जाएंगे, मसाइल हल हो जाएंगे। नमाज़ के पाँच दर्जे हैं।

नमाज़ मामूली चीज़ नहीं। सारी दुनिया की ताक़तों से ज़्यादा ताक़तवर नमाज़ है। हम समझते नहीं कि अल्लाह ने नमाज़ में

क्या क्या रखा है। यह मुहब्बतों का माशरा लाता है। मुहब्बतों के माशरे के तीन उसूल हैं ﴿صل من قطعك، وأعط من حرمك واعف عمن ظلمك وأحسن إلى من أساء اليك﴾

मसलकी इख़्तेलाफ़ात का आसान हल

अख़्लाक न हों तो तमाम इबादतें इस्लामी माशरा क़ायम नहीं कर सकतीं। आज अपने मसलक को साबित करना इस्लाम की ख़िदमत समझा जाता है। क़ुरआन व हदीस गोया उसके मसलक को साबित करने के लिए आए हैं। मेरे मसलक के लोग जन्नती हैं बाक़ी सब जहन्नुमी, ऐसा ज़ुल्म हो रहा है। ऐसी जिहालत है कि उम्मत का टकरा दिया है आपस में हांलाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस दीन में वुसअत रखी है। इन चीज़ों पर आज लड़ रहे हैं । इन चीज़ों पर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम नहीं लड़ते थे। एक कहता है रफ़ूअ-यदैन करना है दूसरा कहता है नहीं करना है। यह मुनाज़रा हो रहा है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम करते भी थे छोड़ते भी थे। वह कहते हैं कि हमारीदलील ज़्यादा क़वी है यह कहता है कि हमारी दलील ज़्यादा क़वी है इस पर झगड़ा हो रहा है। किसी सहाबी से साबित नहीं कि इस तरह झगड़ा किया हो कि फ़ातेहा के बग़ैर नमाज़ नहीं होती। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम इसमें कोई नहीं लड़ते थे। सूरहः फ़ातेहा नमाज़ में पढ़ते भी थे नहीं भी पढ़ते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लश्कर भेजा, फ़रमाया कि अस्र की नमाज़ बनू क़रीज़ा में जाकर पढ़ना। रास्ते में अस्र का वक़्त हो गया। एक जमात ने

हदीस के ज़ाहिर पर अमल करते हुए वहाँ जाकर नमाज़ पढ़ी, दूसरी जमात ने इधर उतर कर नमाज़ पढ़ी। यह किस्सा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पेश हुआ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम दोनों ने सही किया इसमें झगड़े की क्या बात है। आज ऐसी दलील दी जा रही है और मुनाज़रे का बाज़ार गर्म है।

इख़्तेलाफ़ उम्मत ख़त्म नहीं होगा

एक दूसरे को मजबूर किया जाता है कि मेरे मसलक को मानो। हर एक का मिज़ाज अलग है, तबियत अलग है, ज़हन अलग अलग है, एक के पास कैसे जमा हो सकते हैं और लोग कहते हैं कि देखो जी कि ये दोनों मुसलमान एक बात पर जमा नहीं हो सकते हैं। इसको तो अल्लाह ने क़ुबूल ही नहीं किया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की या अल्लाह मेरी उम्मत क़हत से हलाक न हो तो अल्लाह तआला ने क़ुबूल की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की मेरी उम्मत पर ऐसा बादशाह न आए जो इनको हलाक कर दे और ख़त्म कर दे। अल्लाह ने इसको भी मन्ज़ूर कर लिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की या अल्लाह! मेरी उम्मत में इख़्तेलाफ़ न हो। अल्लाह तआला ने फ़रमाया मुझे मन्ज़ूर नहीं।

तमाम मसलक इख़्तेलाफ़ के बावजूद सही हैं

अल्लाह पाक क़ुरआन ऐसा उतार सकता था कि हर लफ़्ज़ का

एक मतलब बनता, दो न बनते, अल्लाह से ज़्यादा कलाम पाक पर क़ुदरत किसे हासिल है? अल्लाह ने क़ुरआन उतारा उसका एक लफ़्ज़ एक ही माइनि रखता और उसके कई माईने न बनते, तो ख़ुद ब ख़ुद एक ही पर जमा हो जाते, क़ुरआन में आता है ﴿ولا مستم النسآء فلم تجدوا مآء فتيمموا صعيدا طيبا﴾ जब तुम औरत को छुओ और पानी न हो तो तय्यमुम कर लो अब यहाँ पर दो राए हो गयीं। इमाम शाफ़ई रह० ने फ़रमाया कि सिर्फ़ औरत को छूने से वज़ू टूट जाता है और इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने फ़रमाया कि सिर्फ़ औरत को छूने से वज़ू नहीं टूटता और इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने फ़रमाया ﴿لا مستم﴾ से मुराद जमा है, हमबिस्तरी है अगर औरतों से शहवत पूरी करो तो फिर ग़ुस्ल करो, पानी नहीं तो तय्यमुम कर लो। अल्लाह तआला अगर ﴿جامعتم﴾ कह देता तो ये दो ज़हन बन नहीं सकते थे क्योंकि ﴿جامعتم﴾ का मतलब और कोई बनता ही नहीं। एक और मिसाल है ﴿يتربصن بانفسهن ثلاثة قروء﴾ जिस औरत को तलाक़ हो जाए वह तीन हैज़ तक इन्तेज़ार करे, ﴿قروء﴾ का मतलब हैज़ भी है और ﴿قروء﴾ का मतलब पाकी भी है इमाम शाफ़ई रह० ने फ़रमाया इससे मुराद पाकी है और इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने फ़रमाया इससे मुराद हैज़ है दोनों सही हैं अगर इनमें लड़ाई शुरू हो जाए एक कहे मेरी दलील सच्ची है दूसरा कहे कि मेरी दलील सच्ची है तो दोनों के पास दलील है यह तो आज की सुन्नत है कि हम उस पर लड़ते हैं और इसी को इस्लाम की ख़िदमत कर रहे हैं। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में यह नहीं था कि मेरी मानो, मेरा जो मज़हब है उसको इख़्तियार करो यह कोई नहीं था।

दिल बुरे आमाल से टूटते हैं

अल्लाह ने वुसअत रखी है, तुम उलमा से पूछ पूछ कर चलो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें ऐसी पाक व साफ़ सुथरी ज़िन्दगी देकर गए हैं कि अगर हम उसको अपनी ज़िन्दगी बना लें तो मुहब्बत का माशरा वजूद में आएगा। आज वह कौन से बुरे आमाल हैं जो हम नहीं करते, सारा दिन ग़ीबत करते हैं, सूद खाते हैं, झूठ बोलते हैं, चोरी करते हैं, मुसलमानों के ऐब तलाश करते हैं, दिलों को तोड़ते हैं, दिलों के टूटने के आमाल अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में बताए हैं वह कौन से आमाल हैं। अगर ऐसा न हो तो पूरी दुनिया में दिन एक होना चाहिए, हर जगह चाँद अलग नज़र आता है। आपका अमरीका इतना बड़ा है यहाँ पर दिन एक नहीं है। दिनों का एक होना हमारी अलामत नहीं है लेकिन दिलों का एक होना हमारी अलामत है। अलजज़ाइर में एक वक़्त चाँद निकलेगा, मराकश में दूसरे वक़्त चाँद निकलेगा, सऊदी अरब में किसी और वक़्त चाँद निकलेगा और न जाने क्या क्या है। नमाज़ का वक़्त एक मुक़र्रर नहीं। शाफ़ई, हंबली, मालिकी यह सारे आख़िर वक़्त में नमाज़ पढ़ते हैं और हनफ़ी अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ते हैं। इनकी नमाज़ का वक़्त एक नहीं, तरीक़ा सब का अलग अलग है, कोई रफ़उ-यदैन करता है कोई नहीं करता, कोई नीची आमीन कहता है कोई ऊँची आमीन कहता है, कोई इमाम के पीछे फ़ातेहा पढ़ते हैं कोई नहीं पढ़ते, किसी के नज़दीक कोई सुन्नत है किसी के नज़दीक कोई वाजिब है। इसके अन्दर मसाइल का इस क़द्र इख़्तिलाफ़ है लेकिन कोई तोड़ नहीं,

मसाइल से कोई तोड़ पैदा नहीं हुआ करता, मसलक चार होने से कोई तोड़ नहीं होता, ये बाज़ आमाल ऐसे हैं जो दिलों को तोड़ देते हैं।

पाँच बुरे आमाल

हदीस पाक में है ﴿ولا تجسسوا، ولا تحاسدوا، ولا تدابروا، ولا تباغضوا﴾ ये पाँच आमाल हैं जो दिलों को तोड़ते हैं और छठा ﴿ولا يغتب بعضكم بعضا﴾ यह छः हुए अगर ये छः चीज़ें न हों तो आपके न्यूयार्क में दस दीन हो जाएं तो कुछ भी नहीं होगा मुहब्बतें ही मुहब्बतें होंगी अगर ये छः हों तो सारे के सारे एक ही मुसल्ले पर आ कर खड़े हो जाएं फिर भी बुग़्ज़ और नफ़रतों से भरे हुए होंगे। ﴿ولا تجسسوا﴾ किसी के ऐब तलाश न किया करो, किसी की बुराईयों की ताक झांक न किया करो, क्या करता है क्या नहीं करता। ﴿ولا تحاسدوا﴾ हसद न किया करो ﴿ولا تدابروا﴾ किसी को आगे बढ़ते हुए देख कर उसकी टांगे न खींचा करो। उस पर रश्क करें अल्लाह और दें अल्लाह और दें, या अल्लाह मुझे भी दे इसे भी दे। हसद मत करो, तजसुस मत करो। ﴿ولا يغتب﴾ ग़ीबत मत करो बुग़्ज़ मत रखो, ये छः काम हैं होंगे तो उम्मत मुहब्बत से महरूम हो जाएगी, सारी उम्मत आपस में टूट पड़ेगी, चाहे सब के सब एक ही मुसल्ले पर नमाज़ क्यों न पढ़ रहे हों।

जोड़ पैदा करने वाले आमाल

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मत को टूटने के उसूल

भी बता दिए कि ये छः उसूल हैं इनसे उम्मत टूट जाएगी और जोड़ के उसूल भी बता दिए। इसके चार उसूल हैं ﴿صل من قطعك﴾ तोड़ने वाले से जोड़ लें ﴿اعط من حرمك﴾ छीनने वाले को दें ﴿واعف عمن ظلمك﴾ ज़ुल्म करने वाले से दरगुज़र कर जाएं ﴿واحسن الى من اساء اليك﴾ जो तेरे साथ बुरा करे उसके साथ अच्छा बन जा। ये चार उसूल हैं जो उम्मत को जोड़ देंगे अब चाहे सारे इख़्तेलाफ़ी मसअले हों।

इमाम आज़म रह० और इमाम मालिक रह० का इल्मी मुबाहिसा

इमाम अबू हनीफ़ा रहतुल्लाहि अलैहि और इमाम मालिक रहतुल्लाहि अलैहि में एक हदीस पर बहस शुरू हुई। इशा की नमाज़ पढ़ कर निकले, मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर। सर्दियों की रात थी। इमाम मालिक रहतुल्लाहि अलैहि ने एक हदीस बयान फ़रमाई, इमाम साहब रहतुल्लाहि अलैहि ने अपनी राय दी। फ़ज्र की आज़ान हो गई। दोनों एक ही जगह खड़े हुए हैं। वह बात कर रहे हैं यह भी बात कर रहे हैं। एक दूसरे का अज्र भी है।

अहले हदीस का हनफ़ी आलिम की क़द्र करना

दाऊद ग़ज़नवी रहतुल्लाहि अलैहि अहले हदीस के बहुत बड़े आलिम थे। अस्र की नमाज़ के बाद मुसल्ले पर बैठे हुए थे। मुफ़्ती फ़क़ीरुल्लाह साहब तशरीफ़ लाए जो मेरे उस्ताद के वालिद

हैं, उनको देख कर मुसल्ले से उठे टोंटियों पर गए, पगड़ी उतार कर सिर पर मसह करके वापस आकर बैठ गए। वह जो साथ हुए ऐसे ही बुज़ुर्गों को ज़्यादा चमकाने वाले ﴿مریداں می برند پیراں﴾ पीरों के पैर नहीं होते मुरीद पीरों को उड़ा देते हैं। उन्होंने कहा यह आपने क्या किया। अहले हदीस के नज़दीक पगड़ी के ऊपर मसह करना जाएज़ है तो वह फ़रमाने लगे कि वह शख़्स जो आया है ना उसके एहतिराम में जाकर मसह किया है, उसके नज़दीक पगड़ी पर मसह जाएज़ नहीं इस लिए मसह करके आया हूँ।

इमाम शाफ़ई रह० इमाम आज़म रह० की क़ब्र पर

इमाम शाफ़ई रहतुल्लाहि अलैहि जब बग़दाद में तशरीफ़ लाए तो जिस मस्जिद में नमाज़ पढ़ी वह मस्जिद इमाम अबू हनीफ़ा रहतुल्लाहि अलैहि की क़ब्र के नज़दीक है। वहाँ पर आप ने रफ़ूअ-यदैन नहीं किया। कहा आपने रफ़ूअ-यदैन नहीं किया? कहा इस क़ब्र वाले के एहतिराम में छोड़ा है और यहाँ ऐसा शिद्दत हो गई है कि उम्मत को भी तोड़ कर रख दिया है। सारा जिहाद इसी में है कि मुसलमान मुसलमान के पीछे पड़ जाए और इसी को जिहाद कहते हैं।

मुहब्बत से चलना इख़्तेलाफ़ के साथ भी हो सकता है चाहे राय एक न हो लेकिन वे छः बातें हैं जो दिलों को तोड़ देती हैं और वे चार बातें हैं जो दिलों को जोड़ देती हैं। ये चार बातें दुश्मनों को

भी अपना बना देंगी और ये छः बातें दोस्तों और अपनों को भी तोड़ कर रख देंगी, भाई भाई टूट जाएगा, दोस्त दोस्त का दुश्मन बन जाएगा। एक कलिमा पढ़ने वाले एक दूसरे का गला काटेंगे। ये चार बातें आपस में ज़िन्दा कर दें तो काफ़िर भी झुकते चले आएंगे।

बद्दू का आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ से मुतास्सिर होकर इस्लाम लाना

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सो रहे थे। एक बद्दू ने तलवार उठाई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखें खुल गयीं उस बद्दू ने कहा आप को कौन बचाएगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह बचाएगा और कौन बचाएगा फिर इतने में हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और उसके सीने पर एक मुक्का मारा वह दूर जा कर गिर पड़ा और तलवार भी गिर गई फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तलवार उठा ली और फ़रमाया कि अब तुझे कौन बचाएगा? उसको अल्लाह का पता नहीं कहने लगा मुझे और कौन बचाएगा तू बचाएगा तू बचाएगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि चला जा, तू मुझे नबी मानता है या नहीं? कहा नहीं मानता। क़ौम के पास गया और उनको बतला कर आया फिर मुसलमान हुआ। मेरे भाईयो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले अख़लाक़ सीखो।

नबी वाले अख़लाक़ क्या हैं

एक आदमी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु को गालियां दीं तो वह उसके पीछे गया दरवाज़े पर दस्तक दी के भाई जो कुछ आपने कहा है अगर यह सच है तो मेरे लिए मुसीबत है वरना अगर ग़लत है तो अल्लाह तआला तुझे माफ़ कर दे तो वह क़दमों पर गिर गया, नहीं नहीं मैं ने बकवास की। आप मुझे माफ़ करें ये हैं अख़लाक़े नबुव्वत।

इबादत, अख़लाक़, यक़ीन इन चीज़ों को लेकर दर दर जाकर सदा लगाना यह है मेरे भाईयो तबलीग़ का काम। इसकी हम दावत दे रहे हैं। कहते हैं हम नमाज़ पढ़ रहे हैं हमें क्या कहते हो। अरे! अपने नताइज सामने आएंगे तो रोते फिरोगे। अपने आप को यह कहना कि सब कुछ ठीक है यह सबसे बड़ा नुक़्स है, यह सबसे बड़ी जिहालत है। मैं जानता हूँ, मैं ठीक हूँ तो उससे बड़ा अहमक़ कोई नहीं जो ठीक होता है वह कहता है कि मैं सबसे बुरा हूँ।

तवाज़े रफ़्अत का सबब है

अरे मेरे भाईयो! किसी ऐसी फल दार शाख़ को देखा कि ऊपर चली गई हो, फल दार शाख़ नीचे को आती है और जिस पर कुछ नहीं होता वह ऊपर को खड़ी होती है हत्ता कि बाज़ शाख़ें ज़मीन तक आ जाती हैं जितना फल ज़्यादा होता है उतना ज़मीन पर चली जाती हैं। आम के बाग़ात में गुच्छे ज़मीन तक नीचे आते हैं बाज़ बाग़ वाले आते हैं और उनके नीचे लकड़ियां लगा कर उन

गुच्छों को ऊपर को करते हैं। इसी से वह हदीस समझें ﴿من تواضع لله فقد رفعه الله﴾ जो अल्लाह के लिए झुक जाता है अल्लाह तआला उसको उठा लेता है जिस तरह आम वाला आम के गुच्छों का ऊपर उठा लेता है इसी तरह जो अल्लाह के लिए झुकता है अल्लाह उसको ऊपर उठा लेता है।

तो मेरे भाईयो! तबलीग़ एक मेहनत है और यह हमारा काम है और यह हमारी ज़िन्दगी का मक़सद है, हमारा काम है जो पूरी दुनिया में नबी वाली ज़िन्दगी ज़िन्दा हो जाए, नबी वाले तरीक़े ज़िन्दा हो जाएं, नबी वाले अख़लाक़ ज़िन्दा हो जाएं, उसके लिए अपनी जान व माल सब लगा लें।

आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पहलवान से मुक़ाबला

क़ुर्बान जाइए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर एक पहलवान आया उसका नाम था रुकामा, कहने लगा मैं तुझे उस वक़्त मानूं जब तू मुझ से कुश्ती करे। नबी की शान कितनी ऊँची है और अपनी शान से नीचे उतर कर कुश्ती के लिए अमादा है ताकि एक आदमी जन्नती बन जाए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुश्ती के लिए तैयार हो गए कि रुकामा जन्नती हो जाए।

रुकामा एक हज़ार आदमियों के बराबर थे। उसकी ताक़त का अन्दाज़ा उसके पोते से लगाओ। हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक घोड़ा लाया गया। वह घोड़ा उछलते उछलते

अपने ऊपर से आदमी को गिरा देता था कोई उस पर सवार नहीं हो सकता था हत्ता कि किसी को उसने ऊपर सवार नहीं होने दिया। मुहम्मद बिन यज़ीद ने रुकामा को बुलाया। उनसे कहा यह घोड़ा किसी के क़ाबू में नहीं आ रहा है आप इसको क़ाबू कर सकते हैं तो कर लें तो उसने उसी वक़्त उस पर छलांग लगाई और उस पर बैठ गया तो घोड़ा उसको गिराने के लिए एक दम उछल गया तो उन्होंने अपनी दोनों रानों से उसको दबा दिया तो उस घोड़े का पेट फट गया और आंते बाहर निकल गयीं। आप उसके दादा की ताक़त का अन्दाज़ा लगाइए कि वह कितने ताक़त वर थे चूँकि हर नसल के बाद ताक़त घटती है तो वह कितने ताक़त वर थे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि अगर आप कलिमा पढ़ लें तो मैं कुश्ती करता हूँ। कहा पहले आप मुझे गिरा दें चुनांचे कुश्ती हुई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको उठा कर ज़मीन पर दे मारा तो उसने कहा यह क्या हो गया? मैं फिसल गया, फ़रमाया फिर आ जाओ फिर कुश्ती लड़ी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ोर आज़माई करके फिर उसको ज़मीन पर मारा। कहने लगा नहीं नहीं यह ग़लती से हो गया फिर लड़ो, अब गिरा दिया तो मुसलमान हो जाऊँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर उठा कर ज़मीन पर दे मारा। कहा ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब से पैदा हुआ हूँ मेरी कमर ज़मीन पर किसी ने नहीं लगाई सिवाए तेरे, मान गया तू सच्चा नबी है। नबुव्वत की शान कितनी बड़ी बात है, उसको भी नीचे ले गए कि चलो इसकी जन्नत का सौदा हो जाए।

मक़सदे हयात क्या है?

तो मेरे भाईयो! तबलीग़ हमारी ज़िन्दगी का मक़सदे हयात है। हम इसके लिए भेजे गए हैं। अल्लाह के पैग़ाम को लेकर दर दर की ठोकरें खाना और उसके लिए जान भी लगाना और सख़ी बन कर लगाना। मुसलमान बख़ील नहीं होता। जान लगाता है माल भी लगाता है। आज जान भी नहीं लग रही है माल भी नहीं लग रहा है। अपनी ख़्वाहिशात को इतना बढ़ाया है कि पैसे जेब से निकालते हुए डरता है कि फ़लॉं चीज़ ख़त्म हो जाएगी, फ़लॉं चीज़ ख़त्म हो जाएगी। बुख़्ल की इन्तेहा को पर उतर आया। मुसलमान क़र्ज़े लेकर सख़ावत करते थे यहाँ तो अपनी ख़्वाहिशात को छोड़ना मुश्किल हो गया है अरे भाई दिल को बड़ा करो तो अल्लाह तआला रिज़्क़ के दरवाज़े खोल देता है। जान भी लगे तबलीग़ में माल भी तबलीग़ में। मुसलमान की जान बड़ी क़ीमती है। ऐसे ही मामूली आदमी नहीं है मुसलमान।

मुसलमान का ख़रीदार अल्लाह है

इस जान का ख़रीदार अल्लाह है अल्लाह ﴿ان اللــــه اشتــــرى من المؤمنين انفسهم وأموالهم بأن لهم الجنة الخ﴾ मैंने तुम्हारे जान व माल को जन्नत के बदले ख़रीदा है।

यूँ नहीं कहा कि अपने जान व माल के बदले में जन्नत को ख़रीद लो। जन्नत तो बड़ी आला चीज़ है उसके सामने इन्सान की क्या हैसियत। अल्लाह कहता है मैंने तुम्हारे जान व माल को जन्नत के बदले में ख़रीद लिया है। जन्नत क़ीमत है मुसलमान

की तो जिसकी क़ीमत जन्नत है वह मुसलमान कितना क़ीमती होगा। ख़रीदा भी है और वापस भी कर दिया है। वापस करके क्या करें? तो वह करें जो मैं कहता हूँ ﴿يقاتلون في سبيل الله فيقتلون ويقتلون وعداً عليه في التوراة والانجيل والقرآن﴾ मेरे पैग़ाम को लेकर दुनिया में फिर जाओ मारो या मर जाओ हर हाल में कामयाब है और इसमें जन्नत का सौदा नक़द नहीं उधार है और उधार को भूल जाते हैं तो अल्लाह तआला ने दस गारन्टियां दी हैं। अल्लाह पाक की बात किसी गारन्टी की मोहताज नहीं लेकिन इन्सान क्योंकि जल्द बाज़ है उधार से घबराता है तो अल्लाह ने गारन्टी दी है और उधार इस लिए है कि दुनिया में जन्नत नहीं आ सकती। मसलन जन्नत की हूर है अगर यूँ देख ले तो हमारी आँखें फट जाएंगी हम बर्दाशत नहीं कर सकते।

दुनिया की आँख हूर को नहीं देख सकती

मिरी में हमारे एक दोस्त ने ख़्वाब में एक हूर देखी तो तीन महीने बेहोश रहा। सारे डाक्टरों ने पूछा कि क्या हुआ तो कहा कि हूर देखी है और कुछ नहीं, सच्ची बात है, जब ख़्वाब में नशा तारी हो गया तो वैसे देख लें तो क्या होगा? इसी लिए उधार रखना पड़ा, जिस सूरज की उंगली को सूरज नहीं देख सकता, उस हूर के चेहरे को हम कैसे देख सकते हैं।

अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी पर क़ुर्बान करें

जिबराईल अलैहिस्सलाम से अल्लाह ने कहा कि जा कर मेरी

जन्नत को देख लो। जब वह आए जन्नत को देखने के लिए तो नूर की तजल्ली पड़ी तो कहा सुब्हानल्लाह आज तो अल्लाह का दीदार हो गया, सज्दे में चले गए। सिदरतुल-मुन्तहा तक जिबराईल अलैहिस्सलाम की रसाई है। उससे आगे अल्लाह के अलावा किसी को नहीं पता वहाँ हर वक़्त अल्लाह की तजल्ली पड़ती है लेकिन जन्नत की तजल्ली देखी तो कहा सुब्हानल्लाह आज तो अल्लाह का दीदार हो गया और सज्दे में गिर गए। आवाज़ आई ऐ रूहुल-अमीन कहाँ गिर गया सिर उठाकर तो देख जब सिर उठा कर देखा तो जन्नत की हूर मुस्करा रही है और उसके दांतों से जो चमक फूट फूट कर निकल रही थी उसे जिबराईल अलैहिस्सलाम ने समझा कि अल्लाह का दीदार हो गया तो अब बताइए दुनिया में जन्नत कैसे मिलेगी।

कहले लगे ﴿سبحان الذی خلقك﴾ क़ुर्बान जाएं उस पर जिसने तुझे पैदा किया, कहने लगी पता भी है मैं किसकी हूँ? कहा नहीं ﴿لمن اثر مرضاة الله على هوا﴾ मैं उसकी हूँ जो अपनी मर्ज़ी को छोड़ कर अल्लाह की मर्ज़ी में लग जाए।

अल्लाह तआला की जानिब से दस गारन्टियाँ

मेरे भाईयो! तबलीग़ का काम हमें यहाँ से उठा कर जन्नतुल-फ़िरदौस की वादियों में पहुँचा देगा। तबलीग़ में माल जाता हुआ नज़र आता है और आता हुआ नज़र नहीं आता। इस लिए दिल घबराता है। इस लिए अल्लाह तआला ने दस गारन्टियां दी हैं। मेरी मान लोगे यह, यह, यह लफ़्ज़ हैं ﴿اشتراء، عدا، حقا فی التورات، والانجيل، والقرآن، فاستبشروا ببيعكم الذی با يعتم به وذالك هو الفوز

﴿العظيم﴾ यह दस गारन्टियां हैं और मेरा सौदा सच्चा है, मैं अपने वायदे से नहीं फिरता तुम फिरते हो तो फिर जाओ। काम क्या है तबलीग़ है, आगे सिफ़ात बतायीं कि इन सिफ़ात के साथ करना है

التائبون العابدون الحامدون السائحون الراكعون الساجدون
الامرون بالمعروف والناهون عن المنكر والحافظون لحدود الله.

ये मेरे काम करने वाले हैं और अल्लाह की हुदूद पर क़ायम हैं उसकी नाफ़रमानी नहीं करते हैं।

क़ुरआन सारा तबलीग़ है

पूरा क़ुरआन तबलीग़ ही तबलीग़ है, अल्लाह की क़ुदरत है जिस चीज़ का अमल मिटता है उसका इल्म भी मिट जाता है। अब तबलीग़ का अमल मिट गया तो तबलीग़ का इल्म भी मिट गया। क़ुरआन पाक से तबलीग़ समझ में नहीं आती मुसलमान को, अल्लाह तआला ने सूरहः बक़रा में यहूद को दावत दी है ﴿ذالك الكتاب لا ريب فيه﴾ यहूदी शक करते थे तो कहा देखो इसमें कोई शक नहीं। सूरहः आले इमरान में अल्लाह तआला ने इसाइयों को दावत दी हैं वे कहते हैं कि तीन ख़ुदा हैं ﴿الم الله لا اله هو الحي القيوم﴾ अल्लाह एक है तीन नहीं आगे सूरहः निसा और सूरहः माइदा में अल्लाह तआला ने क़बाईले अरब को दावत दी है, सूरहः ईनाम में मजूस को दावत दी। मजूस कहते हैं दो ख़ुदा हैं एक नेकी का और एक बदी का ﴿الحمد لله الذى خلق السموات والارض وجعل الظلمت والنور﴾ बदी का ख़ालिक़ भी अल्लाह है और नेकी का ख़ालिक़ भी अल्लाह है। सूरहः एराफ़ में पूरे अक़वामे

आलम को दावत दी है कि ऐ पूरी दुनिया के इन्सानों! मैं तुम को अपनी तरफ़ बुलाता हूँ। सूरहः अनफ़ाल में अल्लाह तआला ने तबलीग़ के चौदह उसूल बताए फिर सूरहः बरात में अल्लाह तआला ने ऐलाने जंग किया है कि मेरी बात को मान लो तैयार हो जाओ हलाकत है और बर्बादी के लिए। क़ुरआन का रुख़ ही दावत का है और यह उम्मत आई ही दावत के लिए। क़ुरआन ने साबक़ा अंबिया अलैहिस्सलाम के वाक़ियात क्यों सुनाए हैं अल्लाह तआला ने हमारे ज़हन को तैयार किया है।

क़ुरआन और मूसा अलैहिस्सलाम

तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम दावत को लेकर आए थे। क़ुरआने पाक में एक सौ साठ मर्तबा मूसा अलैहिस्सलाम का नाम आया है, आठ पारों में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का तज़्किरा आया है और अल्लाह तआला एक दफ़ा सुना देता तो काफ़ी होता था? वजह इसकी यह है कि इस उम्मत को मूसा अलैहिस्सलाम के साथ तश्बीह है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम में काम करते थे कि अपनी नमाज़ ठीक करो और फ़िरऔनियों का कहा करते थे कि तुम कलिमा पढ़ो। यह उम्मत ऐसी ही है कि अपनों में काम करें, अपने ईमान को ठीक करें और काफ़िरों को दावत देंगे कि तुम कलिमा पढ़ो। हमारी मुशाबिहत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से है। इसी लिए हमारी किताब क़ुरआन मजीद में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र बार बार आता है और अल्लाह ने ऐसी जर्बदस्त मदद फ़रमाई।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह की मदद

हमें ऐसा सुनाया कि जब तुम दीन के काम करोगे तुम्हारे साथ अल्लह की ऐसी मदद होगी जैसे मूसा अलैहिस्सलाम के साथ, मैंने तफ़सीर में पढ़ा तीन दिन तक फ़िरऔन के दरबार में जाने नहीं दिया गया कि तुम कैसे जाओगे अन्दर? तुम्हारे कपड़े फटे पुराने हैं, मुश्किल से तीसरे दिन अन्दर दाख़िला मिला। फ़िरऔन ने कहा अरे तुम कहाँ से आ गए, कहा कि मैं अल्लाह का नबी हूँ ﴿الم نربك فينا وليداً ولبثت فينا من عمرك سنين، وفعلت فعلتك التى فعلت وانت من الكفرين﴾ तू वही है जिसे मैंने अपनी गोद में पाला, परवान चढ़ाया फिर मेरा बन्दा मार कर भाग गया फिर कहते हो कि मैं नबी हूँ, वह ज़माना गया, वह दिन गए, अब नबी बन कर आया, तुझे क़ैद में डाल दिया जाएगा ﴿ولو جئتك بشى مبين﴾ कोई निशानी दिखाओ ﴿فات به ان كنت من الصادقين﴾ कौन सी निशानी है लाइए। ﴿فالقى عصاه﴾ आपने लाठी को यूं फेंका ﴿فاذا هى ثعبان مبين﴾ वह बड़ा अज़दहा बना और ऐसा मुँह खोला कि फ़िरऔन का मैदा ऐसा मज़बूत था कि कई दिन उसे फ़रागत नहीं होती थी। जब अज़दहे ने उसकी तरफ़ मुँह किया तो वह तख़्त से नीचे गिरा और वहीं पाख़ाना निकल गया तो अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का क़िस्सा क़ुरआन पाक में बार बार ज़िक्र किया है।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम और क़ुरआने पाक

इकसठ मर्तबा इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तज़किरा किया है।

नबियों के नाम पर सूरते आयीं हैं। कितने नबियों के नाम पर सूरतें आयीं हैं। अल्लाह तआला हमारा ज़हन बना रहा है कि नबियों वाला काम करो तो उसमें माल भी कम होता है, घर भी छूठते हैं, बीवी बच्चे भी छूटते हैं। अल्लाह कहता है हम जो मामला नबियों के साथ करते हैं वह मामला करेंगे। तुम्हारे साथ अमरीका हो या अफ़्रीका हो। यह अमरीका है पाकिस्तान नहीं है, अच्छा अमरीका अल्लाह की ताक़त से आगे चला गया है, अल्लाह ने अमरीका में क़ानून ख़त्म कर दिया है? क्यों यहाँ डालर ज़्यादा हैं इस लिए क़ानून बदल दो नहीं बल्कि अल्लाह का क़ानून ऊपर से एक होता है, जहाँ अल्लाह के काम और नबी की सुन्नतों को हम ज़िन्दा करेंगे तो अल्लाह वहाँ भी सारी तन्ज़ीमों को तोड़ देगा।

उम्मते मुहम्मदिया की निशानी

तो मेरे भाईयो! हम उन से बहुत ऊँचे हैं, हम नबी के नाएब हैं, क़यामत तक इस उम्मत को पुकारा जाएगा ﴿اين امتى النبى الامى ونبيها﴾ नबी उम्मी और उसकी उम्मत कहाँ है? और अल्लाह तआला इस उम्मत को अर्श के नीचे सबसे ऊँची जगह पर खड़ा कर देगा ऐसा ऊँचा दर्जा अल्लाह तआला ने हमें दिया है क्योंकि उन्होंने अपने घर छोड़ कर मेरे लिए धक्के खाए और आज के दौर में कोई यह काम करेगा तो उसे पचास सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का सवाब मिलेगा। बाबा हुसैन साहब के नाना (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमायाः

ان تمسك فيها اى خمسين منكم اجر خمسين منا، واجر خمسين منكم، لانكم تجدون على دينها اعوانا وانصارا

ऐ अबू तालिब जब वह दीन का काम करेंगे तो पचास का अज्र होगा तुम्हारे पचास का, कहा क्यों? इस लिए कि तुम अच्छी और नेक फ़िज़ा में हो, तुम्हारे मददगार हैं दीन पर चलने के लिए और वे ऐसी फ़िज़ा में होंगे जब वे दीन पर चलेंगे और दीन को फैलाएंगे तो उनका कोई मददगार नहीं होगा, माँ बाप मुख़ालिफ़ होंगे, बीवी मुख़ालिफ़ होगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भाई कौन हैं?

इस लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा दिल चाहता है कि मैं अपने भाईयों की ज़ियारत करूं। सहाबा किराम रज़ियअल्लाहु अन्हुम ने कहा ﴿ولسنا اخوانا يا رسول الله﴾ क्या हम आपके भाई नहीं हैं? कहा नहीं ﴿انتم اصحابى، ولكن اخوانى الذين امنوبى ولم يروانى﴾ मेरे भाई तो वे जो मुझे देखेंगे नहीं लेकिन मुझ पर ईमान लाएंगे।

बिन देखे ईमान] लाने वालों को सात दफ़ा मुबारक

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे ﴿طوبى لمن ذاك يا رسول الله﴾। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कितना मुबारक और कितनी बरकत वाला है वह शख़्स जिसने आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम को देखा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿طوبی ثم طوبی سبع مرات لمن امن بی ولم یرانی﴾ जिसने मुझे देखा और ईमान लाया उसके लिए एक दफ़ा बरकत जो मुझ पर ईमान लाया और मुझे देखा नहीं तो उसके लिए सात दफ़ा बरकत है। इसी पर बस नहीं आगे भी बढ़ाया था यह बेचारे झटके खा कर गिरते हैं, कभी बीवी पाँव खींचती है, कभी बच्चे टांग खींचते हैं, कभी माँ बाप पीछे पड़ते हैं। वड़ी क़ुर्बानियां हैं।

अरब नौजवानों की दीन पर इस्तेक़ामत

एक अरब नौजवान यहाँ पर पढ़ता था एक तबलीग़ी ने कहा कि चिल्ला लगाओ। तबलीग़ में गए तो सारी फैमली पीछे पड़ गई कि दाढ़ी मुंडवाओ यह कोई वक़्त है दाढ़ी रखने का। जब मंगनी हुई तो लड़की वालों ने कहा कि हम लड़की नहीं देंगे पहले दाढ़ी मुंडवाओ तो वह नौजवान सिर पकड़ कर रो रहा था मैंने कहा क्यों रो रहे हो कहने लगा कि अमरीका में अल्लाह तआला ने मुझे हिदायत दी और अरब में गए तो वहाँ मुझे गुमराह कर रहे हैं। माँ बाप और सुसरालवाले कहते हैं कि शादी करनी है तो दाढ़ी मुंडवाओ वरना लड़की नहीं देंगे। उन्होंने कहा गर्दन काट दो तब भी नहीं काटूंगा।

एक नौजवान के दिल में सुन्नत की क़द्र

एक हमारे कराची का बच्चा कनाडा में पैदा हुआ। यहाँ परवान

चढ़ा, यहाँ की ग़िज़ा खाई। यह बहुत बड़ा मालदार था। माँ उसकी यहाँ रही बाप उसको लेकर कराची आया। एक दिन जा रहा था कि हमारा कोई साथी उन से मिला मुहब्बत व प्यार से कहने लगा आप मस्जिद में आइए और हमारी बात सुनें तो वह साथ चला गया और बात सुनी, दिल को लगी तो उसने समझा कि हर मुसलमान तबलीग़ वाला है तो कहा मैं क्या तबलीग़ करूं? मुझे तो कुछ भी नहीं आता। उन्होंने कहा नमाज़ का तो पता है ना, बस अपने दोस्तों से कहा नमाज़ पढ़ो, नमाज़ पढ़ो। उसको अल्लाह तआला ने कुबूल किया। चलते चलते चार महीने लगे। जब दाढ़ी रख कर घर में आया तो बाप ने घर से निकाल दिया। एक साल तक घर में आने नहीं दिया फिर मिन्नत करके बाप को राज़ी करके घर में आया, उस बाप ने भी कहा कि बेटा तूने इस उमर में दाढ़ी रखी तुम्हें कौन लड़की देगा। उसने कहा मैंने जिस नबी की सुन्नत को इख़्तियार किया है उसको अल्लाह तआला ने बड़ी ख़ूबसूरत बीवियां दीं थीं मुझे भी अल्लाह देगा उसकी उमर पन्द्रह सोलह साल थीं आज हर तरफ़ से रुकावट है।

इस्लाह का आसान नुस्ख़ा

एक साथी ने तबलीग़ में तीन दिन लगाए तो दाढ़ी रखने का जज़्बा पैदा हुआ तो बीवी पीछे पड़ गई तो वह बड़ा परेशान हुआ कि क्या करूं। उसने एक तरकीब सोची और बीवी से कहने लगा सोच रहा हूँ दूसरी शादी करने की आप मेरे हक़ूक़ अदा नहीं कर रही हो। उसने कहा आप दाढ़ी रख लें शादी को छोड़ दें।

असल ग़र्ज़

मेरे भाईयो! आप को क्या बात बताऊँ हमारे साथी कैसी कैसी मुशक़्क़तों से गुज़र रहे हैं और मुशक़्क़तों के बग़ैर यह काम तमाम नहीं होता तो भाई इसके लिए बतओ हमारा का ख़त्मे नबुव्वत की वजह से है, दुनिया के इन्सानों को हमें दीन पहुँचाना हैं, समझाना है, बताना है। यह काम हमें करना है, अमरीका में रहते हुए भी और पाकिस्तान में रहते हुए भी, जहाँ कहीं भी हों पूरी दुनिया को कलिमा पहुँचाना हमारा काम है और हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुलाम हैं। हाँ भाई इसके लिए बताओ, चार महीने नक़द मांगते हैं। पाकिस्तान के लिए हिन्दुस्तान के लिए कौन नक़द देगा? जाकर इस काम को सीख लो, भाई कौन तैयार है?

❑ ❑ ❑